खुराककी कमी और खेती

लेखक
मोहनदास करमचंद गांधी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाऔ देसाऔ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदावाद

पहला संस्करण, ३०००

ढाऔ रुपये

दिसम्बर, १९४

सम्पादकके दो शब्द

हम खुराककी कमीका मुकाबला कैसे कर सकते हैं और अिसी सम्बन्धमें हिन्दुस्तानकी खेतीको सुधारनेके लिअे क्या किया जाना चाहिये —अिन दो बड़े प्रश्नोंसे सम्बन्ध रखनेवाले गांधीजीके और दूसरोंके 'हरिजन' में छपे लेखोंका संकलन करना ही अिस पुस्तकका अुद्देश्य है।

खुराककी कमीके बारेमें गांधीजीके ज्यादातर सुझाव १९४६ और १९४७ में किये गये थे, हालाँकि खुराककी असाधारण कमी तो हिन्दुस्तानमें अिसके तीन चार साल पहलेसे ही थी। १९४२ से १९४६ के बीचके अरसेमें अिस विषयमें गांधीजीके मौनका कारण यही था कि अगस्त १९४२ से सरकारने 'हरिजन' पर प्रतिबन्ध लगा दिया था और १९४६ में ही अुसे फिरसे जारी करनेकी अिजाज़त दी थी।

गांधीजीके सारे लेखोंका निचोड़ यही है कि खुराकके मामलेमें हमें स्वावलम्बी होना चाहिये, और विदेशोंसे मददकी आशा न रखकर अपनी समस्यायें हमें खुद ही हल करनी चाहियें। खुराककी कमीके बारेमें अुनका यह पक्का विश्वास था कि अगर हममें से हरअेक—गरीब और अमीर, किसान और व्यापारी, सरकार और जनता—अपना अपना फ़र्ज़ पूरा करे, तो हमारे देशमें काफी अन्न पैदा हो सकता है और हमें बाहरसे भीख माँगनेकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अुनकी यह राय थी कि हिन्दुस्तान जैसे खेती-प्रधान देशको न सिर्फ अपने ही लोगोंको भोजन देने लायक बनना चाहिये, बल्कि दूसरोंको भी भोजनकी मदद करनी चाहिये।

स्वावलम्बनके सिद्धान्तमें अुत्कट विश्वास होनेके कारण ही गांधीजी खुराकके सरकारी कण्ट्रोलको बहुत ज्यादा नापसन्द करते थे। जीवनकी अिस सबसे बड़ी प्राथमिक ज़रूरतके लिअे लोगोंको सरकार पर निर्भर

वनानेका विचार अुन्हें असह्य मालूम होता था। लड़ाअी जैसे संकट कालमें पैदा होनेवाली आर्थिक अव्यवस्थाके असरको मिटानेके लिअे यदि सरकार खुराक पर कण्ट्रोल लगावे, तो अिसे वे समझ सकते थे। लेकिन लड़ाअीको वन्द हुअे लम्वा अरसा हो जाने पर भी कण्ट्रोल और रेशनिंग जारी रखनेकी सरकारी नीतिको वे निश्चित रूपसे गलत मानते थे। अुनका कहना था कि लोगोंको अपने पाँवों पर खड़े होना चाहिये और अपने भोजनके लिअे सरकारकी मेहरवानी पर निर्भर नहीं करना चाहिये। वर्ना, लोकशाही अेक मज़ाक वन जायगी और स्वराज्य निरा भ्रम। सच्ची लोकशाही कायम करनेके लिअे यह ज़रूरी है कि लोग अपनी वातोंका प्रवन्ध खुद करें। अिसलिअे सरकारके लिअे जितनी कम गुंजाअिश हो अुतना ही अच्छा। अिसके वजाय, खुराकका कण्ट्रोल लोगोंके जीवनपर सरकारके प्रभुत्वको वढ़ाता है। अिसलिअे अुन्होंने हमेशा कण्ट्रोलका कड़ा विरोध किया।

अिसके अलावा, खुराकके कण्ट्रोलने भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और काला-वाजारको जन्म दिया है। कण्ट्रोलके ज़मानेमें हमारे व्यापारी नैतिक दृष्टिसे जितने नीचे गिरे हैं, अुतने कभी नहीं गिरे थे। कण्ट्रोलके कारण व्यापारी अनाज और दूसरी खानेकी चीज़ें अिकट्ठी करते हैं और अिस तरह अुनकी कमीको वढ़ाते हैं, अुन्हें कालेवाजारमें वेचते हैं और अनाप-शनाप नफा कमाते हैं। कण्ट्रोल शुरू होनेसे छोटे-वड़े सभी सरकारी अफ़सरोंमें रिश्वत लेनेका लालच वढ़ा है, और अुनमें से वहुतसे अुसके शिकार हो रहे हैं। अिसलिअे व्यापारी और सरकारी अफ़सर दोनों स्वभावतः कण्ट्रोल जारी रखना चाहेंगे और अुसे हटानेके खिलाफ जी-तोड़ कोशिश करेंगे। लेकिन अगर गांधीजीकी सलाह मानना हो, तो सरकारको दृढ़ वनकर कण्ट्रोल हटा ही देना चाहिये। संभव है अिससे कुछ समयके लिअे कीमतें अूँची चढ़ जायँ, लेकिन गांधीजीकी रायके मुताविक वे जल्दी ही ज्यादा सामान्य सतह पर आ टिकेंगी। अन्तमें अुनका यह विश्वास हो गया था कि देशमें खुराककी सच्ची कमी नहीं

है; सिर्फ सरकारकी खुराक पर कण्ट्रोल लगानेकी नीतिके कारण खाद्य पदार्थ अिकट्ठे करके रखनेवालोंने ही यह बनावटी या झूठी कमी पैदा कर दी है ।

खेती शीर्षकके नीचे अिस पुस्तकमें 'हरिजन' से अैसे ही लेख लिये गये हैं, जिनमें खेती-सुधारके तरीकोंके बारेमें सूचनायें दी गअी हैं । अुनका खुराककी कमीको मिटानेसे सीधा कोअी सम्बन्ध नहीं है । जहाँ तक खेतीका सम्बन्ध है, गांधीजीकी दृष्टि जैव खादोंके अुपयोगसे ज़मीनका अुपजाअूपन बढ़ाने और पशु-सुधार करनेके प्रश्न तक ही सीमित थी । अिसकी साफ वजह यही थी कि खेतीसे सम्बन्ध रखनेवाली दूसरी समस्यायें अितनी बड़ी थीं कि राज्यकी सहायताके बिना व्यक्तिगत प्रयत्नोंसे अुन्हें तुरंत हल नहीं किया जा सकता था । अिसलिअे अिस पुस्तकके खेती विभागमें अिकट्ठे किये गये सुझावोंका सम्बन्ध सिर्फ अिन दो ही विषयोंसे है — खेती-सुधार और पशु-सुधार । फिर भी अुनका बहुत बड़ा महत्व है, खासकर अिसलिअे कि आज हमारे देशके लोग रासायनिक खादों और ट्रैक्टरोंके अुपयोगकी तरफ झुकते दिखाअी दे रहे हैं, और पशुओंसे सम्बन्ध रखनेवाली अिन समस्याओंको हल करनेके भारी महत्वको नहीं समझते कि पशु हमारे पोषणके लिअे ज्यादा दूध और खेतीके लिअे अच्छी खाद और अच्छे बैल कैसे दे सकते हैं । खुद गांधीजीने खेतीके सम्बन्धमें ज्यादा नहीं लिखा, अिसलिअे अिस विभागमें दूसरोंके ही ज्यादा लेख लेना ठीक समझा गया है ।

१९४२ से पहलेके अैसे ही लेख लिये गये हैं, जिनका अिस पुस्तकमें चर्चा की गअी समस्याओंके साथ महत्वका सम्बन्ध है ।

दूसरों द्वारा लिखे हुअे लेख अिस पुस्तकके दूसरे भागमें दिये गये हैं । गांधीजीने अुन्हें 'हरिजन' में प्रकाशित किया, क्योंकि अुनमें प्रकट किये गये विचारोंका गांधीजीके विचारोंके साथ मेल बैठता था । अिस-लिअे यह माना जा सकता है कि अुन्हें गांधीजीका समर्थन और स्वीकृति प्राप्त थी । गांधीजीका अेक ही लेख — 'वैयक्तिक या सामुदायिक?'

—दूसरे भागमें शामिल किया गया है, क्योंकि विषयकी दृष्टिसे यहीं अुसका ज्यादा अुचित स्थान है। वह अिस पुस्तकका आखिरी लेख है।

चाहे गांधीजीका हो या दूसरोंका, पूरा लेख वहीं अुद्धृत किया गया है, जो अिस पुस्तकमें शामिल किये गये विषयोंके अुपयुक्त समझा गया है। वर्ना लेखके अैसे ही हिस्से दिये गये हैं, जिनका अिन विषयोंसे सम्बन्ध है। आम तौर पर लेखोंके मूल शीर्षक ही रहने दिये गये हैं। सिर्फ अेक-दो लेखोंके शीर्षक सुधारे या बदले गये हैं।

अगर गांधीजीमें हमारी सच्ची श्रद्धा है, तो सरकार और जनता दोनोंको अुनके अुपदेशों पर अमल करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अिसके अलावा, खुराककी कमी और खेतीकी जिन समस्याओंका हमें रोज-रोज और हर तरफसे सामना करना पड़ रहा है, अुन्हें तुरन्त हल करना ज़रूरी है। अिस दिशामें मदद पहुँचानेकी दृष्टिसे ही अिस पुस्तकका संकलन किया गया है।

बम्बअी, १२–४–१९४९ भारतन् कुमारप्पा

विषय-सूची

भाग पहला

अ० खुराककी कमी

ब० खेती

भाग दूसरा

अ० खुराककी कमी

व० खेती

खुराककी कमी और खेती

भाग पहला

अ. खुराककी कमी

१

सच्चा युद्ध प्रयत्न

आज सबसे ज़रूरी सवाल जो हमारे सामने खड़ा है, वह भूखसे पीड़ित लोगोंके लिअे रोटीका और वस्त्रहीन गरीब जनताके लिअे कपड़ेका बन्दोबस्त करनेका है। अिन दोनों चीज़ोंका देशमें दुष्काल है और अगर लड़ाअी लम्बी चली, तो यह संकट और भी बढ़ जायगा। बाहरसे अन्न-वस्त्रका आना बन्द हो गया है। धनिक वर्ग भले आज अिसकी तंगीको महसूस न करता हो, परन्तु गरीब लोग तो आज भी काफी तंगीमें हैं। धनिक वर्ग गरीबोंके शोषणसे ही आज अपने आपको जिन्दा रख रहा है। अिसके सिवाय और कोअी रास्ता अुसके पास नहीं है। तो गरीबोंके प्रति आज अिस वर्गका क्या धर्म है? कहावत है कि जो जितना बचाता है, वह अुतना ही कमाता या पैदा करता है। अिसलिअे जिनको गरीबों पर दया है, जो अुनके साथ अैक्य साधना चाहते हैं, अुन्हें अपनी आवश्यकताअें कम करनी चाहियें। यह हम कअी तरीकोंसे कर सकते हैं। मैं अुनमेंसे कुछ ही का यहाँ ज़िक्र करूँगा।

धनिक वर्गमें प्रमाण या आवश्यकतासे कहीं ज्यादा खाना खाया और ज़ाया किया जाता है। अेक समय अेक ही अनाज अिस्तेमाल करना चाहिये। चपाती, दाल-भात, दूध-घी, गुड़ और तेल ये खाद्य पदार्थ शाक-तरकारी और फलके अुपरान्त आम तौर पर हमारे घरोंमें अिस्तेमाल किये जाते हैं। आरोग्यकी दृष्टिसे यह मेल ठीक नहीं है। जिन लोगोंको दूध, पनीर, अंडे या मांसके रूपमें स्नायुवर्धक तत्त्व मिल जाते हैं, अुन्हें दालकी बिलकुल ज़रूरत नहीं रहती। गरीब लोगोंको

तो सिर्फ वनस्पति द्वारा ही स्नायुवर्धक तत्त्व मिल सकते हैं। अगर धनिक वर्ग दाल और तेल लेना छोड़ दे, तो गरीबोंको जीवन निर्वाहके लिअे ये आवश्यक पदार्थ मिलने लगें। अिन बेचारोंको न तो प्राणियोंके शरीरसे पैदा हुअे स्नायुवर्धक तत्त्व मिलते हैं और न चर्बी ही। अन्नको दलियेकी तरह मुलायम बनाकर कभी न खाना चाहिये। अगर अुसको किसी रसीली या तरल चीज़में डुबोये बगैर सूखा ही खाया जाय, तो आधी मात्रासे ही काम चल जाता है। अन्नको कच्ची सलाद, जैसे कि प्याज, गाजर, मूली, लेटिस, हरी पत्तियों और टमाटरके साथ खाया जाय तो अच्छा होता है। कच्ची हरी सब्जियोंकी सलादके अेक-दो औंस भी ८ औंस पकाअी हुअी सब्जियोंके बराबर होते हैं। चपाती या डबलरोटी दूधके साथ नहीं लेनी चाहिये। शुरूमें अेक वक्त चपाती या डबलरोटी और कच्ची सब्जियाँ और दूसरे वक्त पकाअी हुअी सब्जी दूध या दहीके साथ ले सकते हैं। मिष्टान्न भोजन बिलकुल बन्द कर देने चाहियें। अिनकी जगह गुड़ या थोड़ी मात्रामें शकर अकेले अथवा दूध या डबलरोटीके साथ ले सकते हैं।

ताजे फल खाना अच्छा है, परन्तु शरीरके पोषणके लिअे थोड़ा फल सेवन भी पर्याप्त होता है। यह महँगी वस्तु है और धनिक लोगोंके आवश्यकतासे अत्यन्त अधिक फल सेवनके कारण गरीबों और बीमारोंको, जिन्हें धनिकोंकी अपेक्षा अधिक फलोंकी ज़रूरत है, फल मिलना दुस्वार हो गया है।

कोअी भी वैद्य या डॉक्टर, जिसने भोजनके शास्त्रका अध्ययन किया है, प्रमाणके साथ कह सकेगा कि मैंने जो अूपर बतलाया है, अुससे शरीरको किसी प्रकारका नुकसान नहीं हो सकता। अुल्टे, तन्दुरुस्ती अधिक अच्छी अवश्य हो सकती है।

स्पष्ट ही भोजन सामग्रीकी किफायतका सिर्फ यही अेक तरीका नहीं है। अिसके सिवाय और भी कअी तरीके हैं। परन्तु केवल अिसी अेक अुपायसे कोअी अुल्लेख योग्य लाभ नहीं हो सकता।

गल्लेके व्यापारियोंको लालच और जितना मुनाफा मिल सके अुतना मुनाफा कमानेकी वृत्तिको त्यागना चाहिये। अुन्हें यथासंभव थोड़ेसे थोड़े मुनाफेमें ही संतुष्ट रहना चाहिये। यदि वे गरीबोंके लिअे गल्लेके भंडार न रखेंगे, तो अुन्हें लूटपाटका डर रहेगा। अुन्हें चाहिये कि वे अपने पड़ोसके आदमियोंसे संपर्क बनाये रखें। कांग्रेसियोंको चाहिये कि वे अिन गल्लेके व्यवसाअियोंके यहाँ जायें और यह संदेश अुन्हें दें।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य तो यह है कि गाँवोंके लोगोंको यह शिक्षा दी जाय कि जो कुछ अुनके पास है, अुसे बचाकर रखें और जहाँ-जहाँ पानीकी सुविधा है, वहाँ-वहाँ नअी फसल बोने और तैयार करनेके लिअे अुन्हें प्रेरित किया जाय। अिसके लिअे अैसे प्रचारकी आवश्यकता है, जो बड़े पैमाने पर और बुद्धिमत्तापूर्ण हो। यह बात आम तौर पर लोगोंको नहीं मालूम है कि केला, आलू, चुकन्दर, शकरकन्द, सूरन और कुछ हद तक लौकी, खानेके लिअे सरलतासे बोअी जानेवाली फसलें हैं और ज़रूरतके समय ये पदार्थ रोटीका स्थान ले सकते हैं।

आजकल पैसेकी भी बहुत कमी है। अनाज शायद मिल भी जाय, परन्तु अनाज खरीदनेको लोगोंके पास पैसा नहीं है। बेकारीके कारण ही पैसेका अभाव है। बेकारी हमें मिटानी है। अिसलिअे सूत कातना ही अिसका सबसे सरल और सहज अुपाय है। स्थानीय ज़रूरतें श्रमके दूसरे जरिये भी पैदा कर सकती हैं। बेकारी न रहने पाये, अिसके लिअे हरअेक प्रकारका साधन ढूँढ़ना होगा। सिर्फ वे ही भूखों मरेंगे, जो आलसी हैं। धीरजके साथ काम करनेसे अैसे लोग भी अपना आलस्य छोड़ देंगे।

काशी जाते हुअे, १९-१-'४२

हरिजनसेवक, २५-१-१९४२

भुखमरी कैसे मिटाअी जाय?

स० — ग्राम संरक्षक दलोंके संगठनकी अपेक्षा अिस वक्त अनाजकी तंगी और महँगाअीका सवाल देहातोंमें ज्यादा महत्व रखता है। भूखकी अग्नि भाषणोंसे कैसे शान्त होगी? देशमें न अितने पूँजीपति हैं और न अुनकी त्याग भावना ही अितनी तीव्र है कि वे अिस मामलेको सुधार सकें। कृपया मार्ग बतलाअिये।

ज० — मेरी दृष्टिसे तो संरक्षक दलोंका ही यह काम है कि जहाँ तक संभव हो लोगोंको भुखमरी और शोषणसे बचाया जाय। मैंने भुखमरीका अुपाय बताया तो है। आजसे ही अुसका अुपयोग होना चाहिये।

१. शास्त्रीय दृष्टिसे खाना। अिससे अनाज बचता है।

२. जो खाद्य फसल अिस ऋतुमें बोअी जा सकती है अुसे बोना।

३. जो जंगली भाजी अित्यादि खाद्य वस्तु बगैर प्रयत्नके अुगती है, अुसका संशोधन करना और अुपयोग करना।

४. बेकारी मिटाना। कोअी मनुष्य बेकार न बैठे। मज़दूरी न मिले, तो अपने लिअे पैदा करे, जैसे कातना।

५. मुझे डर है कि यदि लड़ाअी शीघ्र बन्द न हुअी और जापानका प्रवेश हिन्दमें हुआ, तो खाद्य पदार्थ अेक जगहसे दूसरी जगह ले जाना मुश्किल हो जायगा; असम्भव भी हो सकता है। अिसलिअे जिस जगह आवश्यकतासे अधिक अनाज वगैरा है, अुसे आवश्यक जगह पहुँचाना चाहिये।

मैं जानता हूँ कि अिन सब चीज़ोंका करना भी मुश्किल है। लेकिन अुसके सिवाय कोअी दूसरा अिलाज मैं नहीं पाता।

सेवाग्राम, १६–३–'४२

हरिजनसेवक, २२–३–१९४२

३

गांधीजीका बयान

गांधीजीने अखबारोंके लिअे नीचे लिखा बयान दिया है :

अनाजकी जो हालत पैदा हो गअी है, अुसके कारण वाअिसरॉयके खानगी मंत्रीको मेरे पास आना पड़ा। मेरे लिअे अगले कअी दिनों तक सभाओं और मुलाकातोंका कार्यक्रम तय हो चुका था। अुन्हें मैं टाल नहीं सकता था। फिर, मैं हवाअी जहाज़से सफ़र करना जानता नहीं और अुम्मीद रखता हूँ कि शायद मुझे अैसा करना भी न पड़े। अिसलिअे वाअिसरॉयके अनुरोधभरे बुलावेके जवाबमें मैंने यह चाहा कि वह मेरे पास किसीको भेज दें, जो अुनकी ओर से बात कर सके। अिस तरह वाअिसरॉयके खानगी मंत्री कल आये। सिर्फ़ अनाजकी हालतके कारण ही वह मेरे पास आये थे। क्या मैं अिस बारेमें कोअी अैसी बात कह सकता हूँ, जो अिस सवालको राजनीतिके दायरेसे अलग रख सके और सरकारके अिरादों और नीतिके बारेमें जो आम अविश्वास पाया जाता है, अुसका अिस पर कोअी असर न पड़े? अिस मामलेमें देरकी गुंजाअिश नहीं हो सकती, अिसलिअे मैंने जो कुछ कहा अुसका सार यहाँ दे रहा हूँ।

जहाँ तक कांग्रेसका ताल्लुक़ है, वाअिसरॉयको चाहिये कि वे मौलाना आज़ादको बुलायें और अगर वह न आ सकें, तो अुन्हें अपना नुमाअिन्दा भेजनेके लिअे कहें। मैं खुद यह महसूस करता हूँ कि मौजूदा गैरज़िम्मेदार कार्यकारिणी कौंसिलकी जगह फ़ौरन ज़िम्मेदार कौंसिल बनाअी जानी चाहिये और अुसके सदस्य केन्द्रीय धारासभाके चुने हुअे सदस्योंमें से लिये जाने चाहियें। मेरा यह भी खयाल है कि अिस ज़िम्मेदारीको, केन्द्रीय धारासभाके चुने हुअे सदस्योंको पार्टियोंका विचार न करते हुअे लेना चाहिये, कारण कपड़े और अनाजके अकालका खतरा देशके करोड़ों लोगोंको समान रूपसे है। सरकार अिस सुझावको स्वीकार

करेगी अथवा नहीं और केन्द्रीय धारासभाकी विविध पार्टियाँ अुसको व्यावहारिक मानेंगी या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। किन्तु बिना किसी खण्डनके डरके अेक बात तो मैं कह ही सकता हूँ। मुझे अिसमें ज़रा भी शक नहीं कि अगर व्यापारी-समाज और अधिकारी-जगत् अीमानदार बन जाय, खासकर आनेवाले सङ्कटका सामना करनेके लिअे, तो हमारा देश अितना बड़ा है कि बाहरी दुनियासे मदद न मिलने पर भी हम मुश्किलोंमें से पार हो जायँगे, क्योंकि बाहरी दुनिया तो खुद ही कष्टसे कराह रही है।

अनाज और कपड़ेके व्यापारियोंको संग्रह नहीं करना चाहिये; अुन्हें सट्टा भी नहीं करना चाहिये। जहाँ भी पानी हो या मुहय्या किया जा सकता हो, वहाँ खेतीके लायक़ सारी ज़मीनमें अनाज पैदा किया जाना चाहिये। फूलोंके बगीचोंमें अनाजकी फ़सलें अुगाअी जानी चाहियें। लड़ाअीके समयमें अैसा किया गया है। मौजूदा समय कुछ दृष्टियोंसे लड़ाअीकी बनिस्बत भी ज्यादा खराब है। अिससे पहले कि हम अपनी बचतका नाज खा-पका जायँ, हमको कंजूसोंके जैसी किफ़ायतशारीसे काम लेना चाहिये। सब तरहके सामाजिक अुत्सव या आयोजन बन्द कर दिये जाने चाहियें। औरतें अपनी घर-गृहस्थीमें किफ़ायत करके मौजूदा सङ्कटको कम करनेमें बड़ा हिस्सा ले सकती हैं। सरकारका रूप कैसा भी हो, अगर वह लोगोंके काममें दखल न दे, तो हम बिना सरकारकी मददके अपने रोज़मर्राके दसमें से नौ कामोंका अिन्तज़ाम खुद कर सकते हैं।

घबड़ाना तो हमको हरगिज़ न चाहिये। मौतके आनेसे पहले ही हमें मरनेसे अिनकार कर देना चाहिये। हमें हिन्दुस्तानके नर-कंकालोंकी बात सोचनी चाहिये और सोचना चाहिये कि हम अुनकी क्या मदद कर सकते हैं। फिर तो हमारे देशका भला ही होगा। हम अिस खयालके शिकार न बनें कि चूँकि हम खुद मौजसे रह सकते हैं, अिसलिअे हमारा पड़ोसी भी अुसी तरह रह लेता होगा।

हरिजनसेवक, १७-२-१९४६

४

अकाल

अपने बंगाल, आसाम और मद्रासके दौरेमें मैंने अनाज और कपड़ेकी कमीके कारण लोगोंके संकटके किस्से सुने हैं। हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंसे भी मेरे पास खबरें आ रही हैं। अुनमें भी अुसी हालतका ज़िक्र है। राजेन्द्रबाबूने मुझे बताया कि ज्यों ही सरकारने अनाजकी कमीकी आशंका प्रकट की, त्यों ही बाज़ारमें क़ीमतें दुगुनी हो गअीं। यह बुरी निशानी है। अिस तरहका सटोरियापन आज मुमकिन न होना चाहिये। व्यापारी-समाजमें अैसे लालचको दबानेकी ताक़त होनी चाहिये। सरकारकी गलतियों या नालायक़ीके कारण पैदा हुअे संकटको अुसे बढ़ाना नहीं चाहिये। देशमें व्यापारियोंकी संस्थायें और मंडल मौजूद हैं। अगर वे देशभक्तिकी भावनासे काम करें, तो घबराहट और सटोरियेपनको रोकनेमें बहुत मदद दे सकते हैं।

अकालके लिअे कुदरतको दोष देना अेक फ़ैशन-सा बन गया है। अकेले हिन्दुस्तानमें ही बरसात कम नहीं होती। दूसरे देशोंमें हालाँकि लोग बरसातका स्वागत करते हैं, पर वहाँ अगर अेक-दो मौसममें बारिश न हुअी, तो भी लोग क़रीब-क़रीब अपना काम चला लेते हैं। हमारे यहाँ सरकार यह माने बैठी है और जनतासे भी कहती है कि जब बरसात कम होती है तभी अकाल पड़ता है। अगर अुसका खयाल दूसरा बना होता, तो अुसने बरसातकी कमीके लिअे कुछ और अिन्तज़ाम किया होता। अुसने समस्याको हल करनेकी कोअी ठोस कोशिश नहीं की, और यह स्वाभाविक भी था। कारण, सरकारी अधिकारियोंको अिससे अच्छा सोचनेकी आदत ही नहीं डाली गअी। भारत-सरकारका जैसा अिकहरा, गुँथा हुआ संगठन है, अुसमें मौलिकताके लिअे जगह नहीं हो सकती। दुनियामें अुसके जैसा स्वेच्छाचारी संगठन शायद ही और कहीं मौजूद हो। लोकतंत्र तो केवल ब्रिटेनके लिअे ही सुरक्षित रखा गया है। और जब वह दूसरी क़ौमोंके करोड़ों आदमियोंपर हुकूमत करता है और अुनका शोषण

करता है, तो खालिस बुराअी बन जाता है। वह सारे देशको अिस बुरे खयालका शिकार बना देता है कि किसी भी प्रगतिशील लोकतंत्रके लिअे अिस तरहका शोषण सबसे अच्छी चीज़ है। अगर मेरा खयाल सही है, तो अिस मूलभूत बातको याद रखना ठीक होगा। तात्कालिक समस्या पर विचार करते समय हम अिस बातको मान लेंगे, तो मौजूदा कर्मचारियोंके प्रति हम धीरज रख सकेंगे। अिसका यह मतलब नहीं कि मैं बुराअीको सह लेनेकी अपील कर रहा हूँ। यह फ़र्क़ हमको बुराअीसे निपटनेमें ज्यादा समर्थ बनायेगा।

तो हमको सबसे पहले, जहाँ तक मुमकिन हो, अपने घरका ठीक प्रबन्ध करना चाहिये। साथ ही हमें विदेशी सरकारसे भी यह माँग करनी चाहिये कि चूँकि वह जो कहती है वही अुसका आशय भी है, अिसलिअे अुसे गैरज़िम्मेदार कार्यकारिणी कौंसिलकी जगह केन्द्रीय धारासभाके चुने हुअे और जिम्मेदार सदस्योंकी कार्यकारिणी कौंसिल क़ायम करनी चाहिये, चाहे धारासभा कितनी ही दकियानूसी और सीमित मताधिकारसे क्यों न बनी हुअी हो। वाअिसरॉय अगर आज ही अैसा करना चाहें, तो अुनके रास्तेमें कोअी रुकावट नहीं हो सकती। यहाँ मैं पहलेसे कठिनाअियोंका जवाब नहीं देना चाहता। 'जहाँ चाह है, वहाँ राह है'। अकेले अिस अेक क़दमसे विश्वास क़ायम होगा और घबराहट दूर होगी।

'ज्यादा अनाज पैदा करो'का नारा लड़ाअीके ज़मानेमें बुरा नारा न था। अुसकी आज और भी ज़रूरत है। राष्ट्रीय सरकार ही अिस पर अच्छी तरह अमल करवा सकती है। अुसकी ग़लतियाँ भी नामज़द कार्यकारिणी कौंसिलकी तुलनामें, चाहे वह कितनी ही लायक़ क्यों न हो, बड़ी नहीं जँचेंगी। आज जैसी हालत है, अुसमें अुसकी योग्यता और अीमानदारी पर भी शक होता है। अैसा होना सही है या ग़लत, यह अेक जुदा सवाल है। अुसका अिससे ताल्लुक़ नहीं। धरती माताके पेटसे पानी निकालनेकी हर कोशिश की जानी चाहिये। अिस कामको करनेके लिअे अिस देशमें काफ़ी योग्य आदमी मौजूद हैं। प्रान्तीय स्वार्थके स्थान पर राष्ट्रीय ज़रूरतको जगह दी जानी चाहिये।

अिसके अलावा, न कि अिन अुपायोंकी जगह, जहाँसे भी मुमकिन हो, अनाज मँगाया जाना चाहिये।

सेवाग्राम, १०–२–'४६

हरिजनसेवक, १७–२–१९४६

५

अितना तो करें ही

यह मानकर चलना चाहिये कि हमको अनाजके संकटका सामना करना पड़ेगा। अैसी हालतमें हमको नीचे लिखी बातें तो फ़ौरन शुरू कर देनी चाहियें :

१. हरअेक आदमीको अपने खाने-पीनेकी ज़रूरत कम-से-कम कर लेनी चाहिये; वह अितनी होनी चाहिये कि अुसकी तन्दुरुस्ती क़ायम रह सके। शहरोंमें जहाँ दूध, साग-सब्ज़ी, तेल और फल मिल सकते हैं, वहाँ अनाज और दालोंका अिस्तेमाल घटा देना चाहिये। अैसा आसानीसे किया जा सकता है। अनाजोंमें पाया जानेवाला स्टार्च या निशास्ता गाजर, चुकन्दर, आलू, अरवी, रतालू, ज़मींकन्द, केला वग़ैरा चीज़ोंसे मिल सकता है। अिसमें खयाल यह है कि अुन अनाजों और दालोंको, जिन्हें अिकट्ठा करके रखा जा सके, मौजूदा खुराकमें शामिल न किया जाय और अुन्हें बचाकर रखा जाय। साग-सब्ज़ी भी मौज-मज़ा और स्वादके लिअे न खानी चाहिये, खासकर अैसी हालतमें जब कि लाखों आदमियोंको वह बिलकुल ही नसीब नहीं होती और अनाज तथा दालोंकी कमीकी वजहसे अुनके भूखों मरनेका खतरा पैदा हो गया है।

२. हरअेक आदमी, जिसे पानीकी सहूलियत मिल सकती हो, अपने लिअे या आम लोगोंके लिअे कुछ-न-कुछ खानेकी चीज़ पैदा करे। अिसका सबसे आसान तरीक़ा यह है कि थोड़ी साफ़ मिट्टी अिकट्ठी

कर ली जाय, जहाँ मुमकिन हो वहाँ अुसके साथ थोड़ी सजीव खाद मिला ली जाय—थोड़ा सूखा हुआ गोबर भी अच्छी खादका काम देता है—और अुसे मिट्टीके या टीनके गमलेमें डाल दिया जाय। फिर अुसमें साग-भाजीके कुछ बीज, जैसे राअी, सरसों, धनिया, मेथी, पालक, बथुआ वगैरा बो दिये जायँ और अुन्हें रोज़ पानी पिलाया जाय। लोगोंको यह देखकर ताज्जुब होगा कि कितनी जल्दी बीज अुगते हैं और खाने लायक़ पत्तियाँ देने लगते हैं, जिनको बिना पकाये कच्चा ही सलाद या चटनीकी तरह खाया जा सकता है।

३. फूलोंके तमाम बगीचोंमें खानेकी चीज़ें अुगाअी जानी चाहियें। अिस बारेमें मैं यह सुझाना चाहूँगा कि वाअिसरॉय, गवर्नर और दूसरे अूँचे अफ़सर अिसकी मिसाल पेश करें। मैं केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंके खेतीके महकमोंके मुखियाओंसे कहूँगा कि वे प्रान्तीय भाषाओंमें अनगिनत पर्चे छपवाकर बाँटें और साधारण आदमियोंको समझायें कि कौन-कौनसी चीज़ें आसानीसे पैदा की जा सकती हैं।

४. सिर्फ़ आम लोग ही अपनी खुराकको न घटावें, बल्कि फ़ौज-वालोंको भी चाहिये कि वे ज्यादा नहीं तो आम लोगोंके बराबर अपनी खुराकमें कमी करें। सेनाके आदमी सैनिक अनुशासनमें होनेके कारण आसानीसे किफ़ायत कर सकते हैं, अिसलिअे मैंने सेनासे ज्यादा कमी करनेकी बात कही है।

५. तिलहनकी और तेल व खलीकी निकासी अगर बन्द न की गअी हो, तो फ़ौरन बन्द कर दी जानी चाहिये। यदि तिलहनमें से मिट्टी और कचरा वगैरा अलग कर दिया जाय, तो खली अिन्सानके लिअे अच्छी खुराक बन सकती है। अुसमें काफ़ी पोषक तत्त्व होता है।

६. जहाँ मुमकिन और ज़रूरी हो, सिंचाअीके लिअे और पीनेके पानीके लिअे सरकारको गहरे कुअें खुदवाने चाहियें।

७. अगर सरकारी नौकरों और आमजनताकी तरफ़से सच्चा सहयोग मिले, तो मुझे अिसमें ज़रा भी शक नहीं कि देश अिस संकटसे पार हो जायगा। जिस तरह घबरा जाने पर हार निश्चित हो जाती है, अुसी तरह जहाँ व्यापक संकट आनेवाला हो, वहाँ फ़ौरन कार्रवाअी न की जाय, तो

धोखा हुअे बिना नहीं रहता । हम अिस मुसीबतके कारणों पर विचार न करें । कारण कुछ भी हों, सचाअी यह है कि अगर सरकार और जनताने संकटका धीरज और हिम्मतसे सामना नहीं किया, तो बरबादी निश्चित है । अिस अेक मोर्चेको छोड़कर और सब मोर्चों पर हम सरकारसे लड़ेंगे और अगर सरकार हृदयहीनतासे काम ले या अुचित लोकमतको ठुकराये, तो अिस मोर्चे पर भी हमको अुससे लड़ना होगा । अिस बारेमें मैं जनताको मेरी अिस रायसे सहमत होनेके लिअे कहूँगा कि हम सरकारकी बातको जैसा वह कहती है, वैसा ही मान लें और समझें कि स्वराज्य कुछ ही महीनोंमें मिल जानेवाला है ।

८. सबसे ज़रूरी चीज़ यह है कि चोर बाज़ारोंका और बेअीमानी व मुनाफ़ाखोरीका तो बिल्कुल खात्मा ही हो जाना चाहिये, और जहाँ तक आजके अिस संकटका सवाल है, सब दलोंके बीच दिली सहयोग होना चाहिये ।

सेवाग्राम, १४–२–'४६

हरिजनसेवक, २४–२–१९४६

६

अनाजका आयात क्यों नहीं ?

स० — अनाज बाहरसे जितना ज़्यादा आये, अच्छा है । क्योंकि आजकल लोगोंको जितना दिया जाता है, अुससे कम देनेमें जोखिम है । लोगोंको पेटभर खानेको नहीं मिलता । अिससे फ़ाक़ाकशी बढ़ सकती है, बीमारी या महामारी फैल सकती है और शायद दंगे भी हो सकते हैं । अिस समय नया अनाज पैदा करना अगर असंभव नहीं, तो निहायत मुश्किल ज़रूर है ।

ज० — मैं जानता हूँ कि अिस तरहके खयाल रखनेवाले बहुतसे लोग देशमें हैं, मगर मुझ पर अिसका असर नहीं हो सकता । फ़ाक़ाकशी या भुखमरी तो अिस वक़्त भी मौजूद है । अैसी हालतमें लोगोंकी खुराकमें कमी करना असह्य हो सकता है । लेकिन अगर हम मान लें

(मैं तो मानता हूँ) कि सरकारके पास अिस समय अनाजके जत्थेका जो हिसाब है वह सच है, तो दूरंदेशी हमसे कहती है और यह हमारा धर्म है कि हम कड़वी घूँट पी जायँ और लोगोंको भी पिलावें और अुनसे कहें कि वे आज ही से अपनी खुराकमें कमी कर लें और अगली फसलके आने तक किसी तरह काम चलावें। सचाअी यह है कि राशनमें मिलनेवाले जिस नाजके लोगों तक पहुँचनेकी बात मानी जाती है, वह भी हुकूमतकी बदअिन्तज़ामीकी वजहसे अुन्हें नहीं मिलता। अगर अब बराबर हिसाबके मुताबिक़ सही तरीक़ेसे और आसानीसे लोगोंको अपने-अपने हिस्सेका अनाज मिलने लगे, तो मैं अुसे देशका सौभाग्य समझूँगा। अिसके खिलाफ़ अगर हम यह मान लें कि सरकारी आँकड़े झूठे हैं और अिसलिअे अपने आन्दोलनको जारी रखें और ज्यादा अनाज देनेकी माँग करते ही रहें और सरकार वैसा करना मंजूर कर ले, तो अिससे पहले कि दूसरी फसलके पकने तक हम टिक सकें, अैसा समय आ जायगा, जब लोगोंको बिलकुल अनाज न मिलेगा और वे बेमौत मरने लगेंगे। अिस विकट परिस्थितिका सामना करनेके लिअे हमें चौकन्ना रहना चाहिये। अैसा करते हुअे कुछ कम खानेकी नौबत आये, तो अुसे सह लेना मैं ठीक समझता हूँ। नया अनाज या दूसरे खाद्यपदार्थ पैदा करना मेरे खयालमें ज़रा भी नामुमकिन नहीं है। हाँ, मुश्किल ज़रूर है। और मुश्किल भी अिसलिअे है कि हममें अिस विषयके शास्त्रीय ज्ञानकी और कार्यकुशलताकी कमी है। अगर हम सब आशावादी बनकर, बिना हिम्मत हारे, अेक साथ, जो भी अनाज पैदा किया जा सके अुसे पैदा करनेमें जुट जायँ, तो अिस वक़्त खुराकमें कमी करनेका जो सिलसिला शुरू हुआ है, अुसकी मुद्दत भी कम की जा सकती है और लोग युक्ताहारी बन सकते हैं।

मैं खुद तो अपनी आशावादिताको छोड़ नहीं सकता। हाँ, यह कबूल किये लेता हूँ कि ताली अेक हाथसे नहीं बजती। अिस काममें सरकार और जनता दोनोंके सहयोगकी ज़रूरत है। दोनोंमें आपसका यह सहयोग न हुआ, तो विदेशोंसे अनाज या खाद्यपदार्थोंके आने पर भी अुनके बेकार खर्च हो जानेका अंदेशा है। असलमें वह जिन्हें मिलना

चाहिये अुन्हें नहीं मिलेगा; और हम जो पहले ही पराधीन हैं और भी ज्यादा पराधीन बन जायँगे। आशा न रखते हुअे भी बाहरसे जो अनाज आ पहुँचेगा अुसे हम फेंक नहीं देंगे, बल्कि अुसे ले लेंगे और अुसके लिअे अहसानमंद रहेंगे। अिस तरह बाहरसे अनाज मँगाना सरकारका परम धर्म है। लेकिन सरकारकी ओर टकटकी लगाकर बैठनेमें या दूसरे देशों पर आधार रखनेमें मैं कोअी श्रेय नहीं देखता। यही नहीं, बल्कि रखी हुअी आशाके सफल न होने पर लोगोंमें जो निराशा पैदा होगी, वह अिस संकटके समयमें अुनके लिअे हानिकारक होगी। लेकिन अगर जनता अिस कठिन समयमें अेकमत हो जाय, दृढ़ बन जाय, केवल अीश्वर पर ही भरोसा रखनेवाली बन जाय, और सरकारका जो भी काम अुसे स्वतंत्र रीतिसे कल्याणकारी मालूम हो, अुसका विरोध न करे, तो जनताके लिअे निराशाका कोअी कारण न रह जाय, वह आगे बढ़े और अिस भट्टीमेंसे अुजली होकर निकले। और, दूसरे देशोंसे, जहाँ-जहाँ अनाज बच सकता है, बचा हुआ अनाज अपने आप यहाँ आ सकता है। अंग्रेजीमें अेक बढ़िया कहावत है कि जो अपनी मदद खुद करते हैं यानी स्वावलम्बी बनते हैं, अुनकी मदद तो स्वयं अीश्वर भी करता है, औरोंका तो पूछना ही क्या? मतलब यह कि बाहरसे आनेवाला अनाज बिना माँगे यहाँ आ सकेगा। यहाँ यह कहनेकी ज़रूरत नहीं कि जब अंग्रेज़ हाकिमोंने हिन्दुस्तानमें जो भी कुछ था, सो सब खाली कर डाला — और अुसीका यह नतीजा आज हमें भोगना पड़ रहा है — तो अब सरकारका और जिनकी अुसने मदद की थी, अुन सबका यह धर्म ही है कि वे अिस वक़्त अपना फ़र्ज़ अदा करें

सेवाग्राम, १६-२-'४६

हरिजनसेवक, २४-२-१९४६

७

नादानीभरी बरबादी

अखिल-भारत-ग्रामोद्योग-संघके श्री झवेरभाओी पटेल, जो अपने विषयके जानकार हैं, लिखते हैं :

"बर्मासे चावलोंका आना बन्द हो जानेके बादसे हिन्दुस्तानमें चावलकी बेहद कमी हो गओी है। चावलकी अिस कमीको पूरा करनेके लिअे चावलोंको अेक हदके बाद पॉलिश करनेकी सरकारने मनाही कर दी है। अगर पॉलिश करनेकी बिल्कुल ही मनाही कर दी गओी होती, तो बर्मासे आनेवाले चावलोंके बन्द हो जानेके कारण पैदा हुओी कमी ज़रूर पूरी हो गओी होती। हिन्दुस्तानमें जितना चावल पैदा होता है, अुसका सिर्फ़ ५ फ़ी सदी बर्मासे आता था, जब कि पॉलिश करनेसे १० फ़ी सदी नुकसान होता है। कुछ तो लोगोंकी आदतको अेकदम बदल डालना मुश्किल होता है और कुछ मौजूदा सरकार लोकमतको तैयार करके अुसे अपने साथ नहीं रख सकती, अिसलिअे वह यह तरीक़ा जारी न कर सकी। लेकिन अिससे भी ज्यादा खराबीकी बात यह हुओी कि लोगोंका समझभरा सहयोग न मिलनेके कारण सरकारका यह अधूरा अुपाय भी बेकार गया। जबसे सरकारने कम पॉलिश किया चावल देना शुरू किया, चावल खानेवालोंने राशनके चावलको पॉलिश करवाना शुरू कर दिया। मैंने हालमें ही गुजरातमें देखा है कि गोला जातिकी औरतें घर-घर जाकर मज़दूरी पर चावल कूटनेका काम करने लगी हैं। अिधर यह अेक आम रिवाज बन गया है। गृहस्थीमें काम आनेवाले लकड़ीके अूखलों और मूसलोंकी बिक्री भी खूब हो रही है। बम्बअी-जैसे बड़े शहरोंमें, जहाँ जगहकी कमीकी वजहसे लकड़ीके अूखल और

मूसल काममें नहीं लिये जा सकते, औरतें लोहेके सँभलने लायक अूखल-मूसल काममें लेती हैं। लकड़ीके अूखल-मूसलसे पॉलिश करनेकी हालतमें चावलकी मिकदार औसतन क़रीब पाँच फ़ी सदी कम हो जाती है और लोहेके अूखल-मूसलसे होनेवाली कमीकी तो कोअी सीमा ही नहीं है; वह कभी-कभी ३० फ़ी सदी तक पहुँच जाती है। अैसे परिवार थोड़े ही होंगे, जो राशनमें मिलनेवाले चावलोंको अुसी रूपमें खाते हों। अिसका नतीजा पहलेके बाकायदा पॉलिश किये हुअे चावलोंसे भी ज्यादा खराब हो रहा है।

"हम अपनी खुराकमें बिना पॉलिशका पूरा चावल काममें लेने लगें, अिसका सबसे कारगर तरीक़ा यह है कि हम अपनी बहनोंको आहारशास्त्र सिखायें।"

यह बात बिलकुल सही है कि यह ज़रूरी सुधार हम अपनी बहनोंको शिक्षा देकर ही जल्दी करवा सकते हैं। हमें अुनको यह शिक्षा देनी होगी कि किस तरह पकाने पर हम अपने भोजनके पोषक तत्त्वोंकी रक्षा कर सकते हैं। यह शिक्षा कैसे दी जाय, यह अेक गम्भीर सवाल है। अखबारों और सभाओंके अलावा स्कूल और कॉलेज अिस शिक्षाके शायद सबसे ज्यादा तैयार साधन हो सकते हैं। अगर लोगोंको अपने-आपको और करोड़ों भूखोंको अिस नाजुक समयमें बचाना है, तो अखबारों और सभाओंके ज़रिये यह तात्कालिक ज़रूरत पूरी की जानी चाहिये।

सेवाग्राम, १७-२-'४६

हरिजनसेवक, २४-२-१९४६

८

भयंकर छाया

मद्रासके वापस लौटने पर गांधीजी कुछ ही समय सेवाग्राममें रह पाये। अिस अरसेमें आनेवाले अकालकी भयंकर छायासे गांधीजीका दिमाग भरा हुआ रहा। जब वे बंगालमें थे, तभी आनेवाले खतरेकी अुन्हें आगाही मिल गअी थी। बिहार और मद्रासकी हालत जानकर तो अुन्हें और भी परेशानी हुअी। जब वे मद्रासके गवर्नरसे मिले, तो अुन्होंने अुनसे भी अिस सवालकी चर्चा की, मगर बातचीतके बाद अुनके दिलका बोझ हलका नहीं हुआ। हालत अैसी है कि अिसमें सभी सम्बन्धित पक्षोंका सहयोग ज़रूरी है।

गांधीजी प्रश्नको टालनेके आदी नहीं। अुसी दिन शामकी प्रार्थनाके बाद अुन्होंने आश्रमवासियोंको समझाया कि खाने-पीनेकी चीज़ोंको बचाकर रखने और किफ़ायतसे खर्च करनेकी और अनाज वग़ैरा अुपजाने लायक़ धरतीके चप्पे-चप्पेमें खेतीके ज़रिये खाद्यकी मात्रा बढ़ानेकी कितनी सख्त ज़रूरत है। डॉ० ज़ाकिर हुसैन और तालीमी संघके कुछ दूसरे सदस्य १६ तारीखकी दोपहरको बातचीत करने आये, तब भी गांधीजीने अुनके साथ अिसी सवाल पर चर्चा की। चूँकि नअी तालीमका अुद्देश्य ही जीवनकी असली हालतोंके साथ जीवित सम्बन्ध क़ायम करना है, अिसलिअे अुनमें होनेवाले हरअेक हेरफेरका अुसे सामना करना चाहिये। "अिसलिअे मौजूदा संकटके समय, जब कि लोगोंके भूखों मरनेका खतरा पैदा हो गया है, आपके यह कहनेसे काम न चलेगा कि हम लोग तो शिक्षा-सम्बन्धी कामोंमें लगे हुअे हैं। नअी तालीमको मौजूदा हालतोंका सामना करना चाहिये। वह हमारी खाद्यसामग्रीको बढ़ानेका साधन बन जाय और लोगोंको बताये कि खाद्यकी कमीके खतरेका कैसे मुक़ाबला किया जा सकता है। अगर नअी तालीमके विद्यार्थी अपनी खाद्य-सम्बन्धी ज़रूरतोंका

अेक हिस्सा भी खुद पैदा करने लगें, तो अुस हद तक वे दूसरोंके लिअे खाद्य सुलभ कर देंगे और अपनी खुदकी मिसालसे वे दूसरोंको अपने पाँवों पर खड़े होनेका जो सबक सिखायेंगे, सो अलग।" किसीने अेतराज अुठाया कि सेवाग्राममें तालीमी संघके पास जो ज़मीन है, वह हलके दर्जेकी है और मुश्किलसे ही खेतीके लायक बन सकती है। गांधीजीने अिस अेतराजको रद्द कर दिया: "आपको मालूम नहीं कि दक्षिण अफ्रीकामें हमको किस किस्मकी ज़मीनसे पाला पड़ा था। हम वहाँ 'कुली' कहे जाते थे और कुलियोंको अच्छी ज़मीन कौन देता? मगर अपनी मेहनतके बल पर हमने अुसी ज़मीनको फलोंके बगीचेमें बदल दिया।

"अगर मैं आपकी जगह होअूँ, तो मैं शुरूमें हलसे काम न लूँ। मैं बच्चोंके हाथोंमें कुदाली पकड़ा दूँगा और अुससे अच्छी तरह काम लेना सिखाअूँगा। यह भी अेक कला है। बैलोंकी ताक़तसे बादमें काम लिया जा सकता है। अिसी तरह मैं यह पसन्द नहीं करूँगा कि खराब या हलकी क़िस्मकी ज़मीनके कारण आप नाअुम्मीद हो जायँ। चिकनी मिट्टी या खादकी हल्की परत डालकर हम कअी तरहकी अुपयोगी साग-सब्ज़ी और गमलोंमें पैदा होनेवाली पत्तियाँ अुगा सकते हैं। थोड़े गहरे गड्ढोंमें पाखाना डालकर हम अुसकी खाद बनानेका काम फ़ौरन शुरू कर सकते हैं। अिस खादके तैयार होनेमें अेक पखवाड़ेसे ज्यादा समय नहीं लगता। नहाने-धोने या रसोअीघरके पानीकी हर बूँदको पिछवाड़ेकी तरकारियोंकी क्यारियोंमें पहुँचाया जा सकता है। पानीकी अेक बूँद भी व्यर्थ नहीं जाने दी जानी चाहिये। हरी पत्तियाँ मिट्टीके गमलोंमें और बेकाम पुराने टीनके डिब्बोंमें अुगाअी जा सकती हैं। छोटे-से-छोटे मौक़ेको भी हाथसे न जाने दिया जाना चाहिये। अगर यह सब देशव्यापी पैमाने पर हो सका, तो अुस हालतमें कुल मिलाकर अुसका नतीजा बहुत बड़ा होगा।"

पूना, २३-२-'४६

हरिजनसेवक, ३-३-१९४६

९

अनाजकी कमी

अनाजकी कमीके बारेमें मुझे यह मानना पड़ता है कि अुसे दूर करनेके लिअे हमारे पास काफ़ी साधन नहीं हैं। यह काम तो सरकार ही कर सकती है। मगर हमको भी हाथ पर हाथ धरकर भाग्यके भरोसे नहीं बैठे रहना चाहिये। मौतके आनेसे पहले ही मर जानेमें मर्दानगी नहीं। धरतीके नीचे पानीका जो अटूट भण्डार भरा है, अुसको काममें लानेके लिअे सरकारके अिंजीनियरोंको ज़रूरी अुपाय करने चाहियें। अिसके लिअे २,००० फीटकी खुदाअी भी करनी पड़े, तो की जानी चाहिये। सभी साधनों और तरकीबोंको जब तक हम आज़मा न लें, तब तक हमको निराश होने या भाग्यको दोष देनेका हक़ नहीं हो सकता।

मैं देखता हूँ कि बम्बअी जैसे बड़े शहरोंमें आज दावतों और दूसरे जल्सोंमें बेहिसाब अन्न बरबाद होता है। आज जैसे संकटके समय तो अन्नके अेक-अेक दाने और घी या तेलकी अेक-अेक बूँदको बचा लेनेका हरअेकका धर्म हो जाता है। जब लाखोंकी तादादमें लोग भूखों मरनेवाले हों, तब शरीरको क़ायम रखनेके लिअे जितना ज़रूरी हो, अुससे ज्यादा मौज-शौक़के लिअे कुछ भी खाना पाप ही समझा जायगा। अगर यह बचा हुआ अन्न ग़रीबोंको, अुन्हें भिखारी बनानेके लिअे नहीं, बल्कि अुनकी मेहनतके बदलेमें दिया जाय, तो अुन्हें अच्छी मदद मिल सकती है।

पूना, २३-२-'४६

हरिजनसेवक, ३-३-१९४६

१०

अेक अुपयोगी पर्चा

अेक मित्रने बम्बअी प्रान्तके खेती-विभाग द्वारा प्रकाशित अेक पर्चा भेजा है। अुसमें बंगलों वग़ैराके अहातोंमें छोटे पैमाने पर साग-भाजी पैदा करनेके लिअे कुछ सूचनायें हैं। यह पर्चा लड़ाअीके दिनों, सन् १९४२, में 'ज्यादा अनाज पैदा करो' आन्दोलनके सिलसिलेमें प्रकाशित हुआ था। अुस वक़्त जो कुछ ज़रूरी था, वह अन्नकी मौजूदा बढ़ती हुअी कमीको देखते हुअे आज अुससे भी कहीं ज्यादा ज़रूरी है। यह दुःखकी बात है कि यह पर्चा अंग्रेज़ीमें छपा है। मगर हो सकता है कि सिर्फ़ अंग्रेज़ीका ही पर्चा मेरे पास भेजा गया हो और प्रान्तीय भाषाओंमें अिसका अनुवाद हुआ हो। सो जो भी हो, यह पर्चा बड़ा मार्गदर्शक और अुपयोगी है। जो पाठक अिसमें रस लेते हैं, जैसा कि हर किसीको लेना चाहिये, अुन्हें मैं यह सुझाअूँगा कि वे अिस पर्चेको मँगायें और अगर अुन्हें अिस कामके लिअे ज़मीन मिल सकती हो, तो अिसमें दिये हुअे सुझावोंसे फ़ायदा अुठानेके खयालसे वे अिसे पढ़ें। मैंने बिना किसी खास सिलसिलेके अिस पर्चेमेंसे नीचे लिखे सुझाव चुन लिये हैं:

(१) अिस कामके लिअे चुनी हुअी ज़मीन मकानों या पेड़ोंकी छायासे ढँकी न रहती हो, पानीका बहाव भी बहुत अच्छा हो।

(२) जिन क्यारियोंमें फूल खूब अच्छी तरहसे अुगाये गये हों, वे आम तौर पर अिस कामके लिअे अच्छी होती हैं; लॉनके यानी हरी दूबवाले मैदानके भी कुछ भाग खोदकर भाजी अुगानेके काममें लाये जा सकते हैं।

(३) स्नानघर या रसोअीघरका गन्दा पानी अिस काममें लिया जा सकता है।

(४) गोबर अित्यादिके द्वारा बनी हुअी देशी खादके अुपयोगकी आवश्यकता पर अिसमें बहुत ज़ोर दिया गया है।

(५) अखीरमें अेक नक़शा दिया है, जिससे यह पता चल सकता है कि किस क़िस्मका कितना बीज ज़रूरी है; कितनी गहराअी पर अुसे बोना चाहिये; क्यारियोंकी लम्बाअी-चौड़ाअी कितनी हो; कतारोंके बीचमें कितना फासला रहे, वग़ैरा।

पूना, १–३–'४६

हरिजनसेवक, १०–३–१९४६

११

कामके सुझाव

अेक सज्जन लिखते हैं :

"आप अिस वक्त पूनामें हैं। अखबारोंसे पता चला है कि आप आग़ाखान साहबके दोस्त हैं। अुनके पास पानी है, पैसे हैं, ज़मीन है। अिसी तरह गवर्नर साहबका गणेशखिंडका मैदान भी बहुत बड़ा है। क्या अिन दोनों जगहोंमें अनाज नहीं पैदा हो सकता? क्या अुसे पैदा करनेकी प्रेरणा आप अुनको नहीं दे सकते?

"आपको अुपवासमें विश्वास है। आपने यह भी लिखा है कि अुपवास सिर्फ़ धर्म लाभके लिअे नहीं, बल्कि आरोग्यके लिअे भी किया जा सकता है। क्या जिनको हमेशा खाना-पीना मिलता है, अुनको आप हफ़्तेमें अेक दिन अथवा अेक या अधिक समयका खाना छोड़नेको नहीं कह सकते? और अिस तरहसे भी अनाज नहीं बचाया जा सकता? कहा जाता है कि अंकुर फूटने तक अनाजको पानीमें भिगोकर कच्चा खाया जाय, तो थोड़े अनाजसे काफ़ी पुष्टि मिलती है। क्या यह ठीक है?"

मेरे खयालमें ये तीनों सूचनायें ठीक हैं और अुन पर आसानीसे अमल हो सकता है। जिनके पास ज़मीन और पानी है, पहली सूचना अुनके लिअे है; दूसरी जो खुशहाल हैं अुनके लिअे; तीसरी सबके लिअे है। अिसका निचोड़ यह है कि जो चीज़ कच्ची खाअी जा सकती है, अुसे कच्ची ही खानेकी कोशिश करनी चाहिये। अैसा ज्ञान-पूर्वक करनेसे बहुत थोड़ेमें हम निर्वाह कर सकते हैं। अितना ही नहीं, बल्कि अुससे लाभ होता है। अगर सब लोग आहारके नियम समझ लें और अुनके अनुसार चलें, तो अनाजकी बहुत बचत हो सकती है, अिसमें सन्देह नहीं।

पूना, १-३-'४६
हरिजनसेवक, १०-३-१९४६

१२

गांधीजीके अखबारी बयान

[अपना ता० २१-२-'४६को वाअिसरॉयके निजी मंत्रीको लिखा नीचेका पत्र और अुसके जवाबमें आया वाअिसरॉयके निजी मंत्रीका ता० २६-२-'४६का पत्र वाअिसरॉय महोदयकी सम्मतिसे गांधीजीने अखबारोंमें छपनेके लिअे भेजा है।]

"अन्न-संकटका सामना करनेके लिअे कुछ मित्रोंने मेरे पास नीचे लिखे कुछ सुझाव और भेजे हैं :

"हिन्दुस्तानकी फ़ौजको रचनात्मक काम करनेका यह अनोखा मौक़ा दिया जाना चाहिये। फौजवालोंको अेक जगहसे दूसरी जगह आसानीसे भेजा जा सकता है। अिसलिअे अुन्हें अुन तमाम जगहोंमें भेजा जाना चाहिये, जहाँ कुअें खुदवानेकी सख्त ज़रूरत हो।

"अतिरिक्त अन्नके सिलसिलेमें मछलियोंका अुपयोग सुझाया गया है। हिन्दुस्तानके समुद्री किनारों पर सब तरफ़ मछलियाँ बहुतायतसे पाअी

जाती हैं । लड़ाअी खतम हो चुकी है, हमारे पास छोटे और मझोले क़दके बेशुमार अैसे जहाज़ हैं, जो पिछले पाँच सालोंसे हमारे किनारों पर निगरानी और चौकीदारीके काममें लाये जाते थे । भारत सरकारका नौसेना-विभाग अिन जहाज़ोंके लिअे नअी भरतीका अिन्तजाम कर सकता है और अिसमें अुसे सरकारके मछली-विभागकी पूरी मदद मिल सकती है । अगर लड़ाअीके ज़मानेमें सब कुछ और हर कोअी चीज़ की जा सकती है, तो शान्तिके समयमें भी वैसा ही अुद्योग क्यों न किया जाय? आज भी मामूली तौर पर आम लोग बहुत बड़ी तादादमें सूखी मछलियाँ खाते हैं—अलबत्ता तभी कि जब वे मिलती हैं या लोग अुन्हें खरीद पाते हैं ।

"जितने भी सार्वजनिक बाग़ या बगीचे हैं, अुन सबमें फ़ौरन ही क़ानूनन् साग-सब्ज़ीकी खेती शुरू करवा देनी चाहिये । अिस कामके लिअे भी फ़ौजियोंके दस्ते जहाँ-तहाँ भेजे जा सकते हैं । जिन लोगोंको अपनी ज़मीन या बगीचेमें खेती करवानेके लिअे ज्यादा मज़दूरोंकी ज़रूरत हो, अुन्हें भी अिस ज़रियेसे मुफ़्त मदद मिलनी चाहिये ।

"अन्नका बँटवारा सहयोगी-समितियोंके या अैसी ही दूसरी संस्थाओंके ज़रिये किया जाना चाहिये ।

"विलायतमें या समुद्र पारके दूसरे देशोंमें दोस्तों या रिश्तेदारोंको खाने-पीनेकी चीज़ोंके जो पार्सल भेजे जाते हैं, वे क़तअी बन्द किये जाने चाहियें; साथ ही मूँगफली, तेल और खली वग़ैराकी निकासी भी बंद होनी चाहिये ।

"फ़ौजके अधिकारमें जितनी अन्न-सामग्री आज मौजूद है, सो सब तुरंत ही आम जनताके लिअे सुलभ कर दी जानी चाहिये और फ़ौजियों व नागरिकोंके बीच कोअी भेदभाव न बरता जाना चाहिये । अिस सिलसिलेमें मैं वाअिसरॉय महोदयका ध्यान ता० ११ फ़रवरी, '४६की 'अमृत बाज़ार पत्रिका' में छपे अे० पी० के नीचे लिखे समाचारकी तरफ़ खींचता हूँ :

ढाका, फरवरी ८

'मालूम हुआ है कि सड़ा हुआ आटा बहुत बड़ी मात्रामें पिछले कुछ दिनोंसे नारायणगंजके पास शीतलाक्षा नदीमें डुबोकर नष्ट किया जा रहा है।'

"निराशाके खिलाफ़ और अधिक अन्न अुगानेके लिअे शुरू किया गया आन्दोलन तब तक बेकार ही होगा, जब तक घूसखोरीको, जो बहुत बड़े पैमाने पर काम कर रही है, बन्द नहीं किया जाता और अीमानदारी और व्यवहारकी सचाअी, क्या सरकारी हल्क़ोंमें और क्या आम जनतामें, पूरी तरह स्थापित नहीं हो जाती।"

* * *

"अन्न-संकटका मुक़ाबला करनेके लिअे भेजे गये सुझावोंवाले ता० २१ फरवरीके आपके पत्रके लिअे धन्यवाद! वाअिसरॉय महोदयको मैंने आपका पत्र दिखाया है, और वे अुसके लिअे आपके आभारी हैं। वाअिसरॉय महोदय आपके अुन प्रस्तावोंकी जाँच करवायेंगे, जिनकी अब तक जाँच नहीं हो पाअी है।

"२. अभी अेक या दो दिन पहले ही वाअिसरॉय महोदयने कमाण्डर-अिन-चीफ़को यह सुझाया था कि भारत सरकारकी नौसैनाके लोग मछली पकड़नेके काममें मदद कर सकते हैं। हालकी घटनाओंके कारण अिसमें कुछ दिक्कतें पेश आ सकती हैं, मगर अिस बीच वाअिसरॉय महोदयने कनाडा और न्यूफाअुण्डलैण्डसे सूखी हुअी मछलियाँ मँगानेकी सम्भावनाके बारेमें पूछताछ शुरू करवा दी है और अिस कामके लिअे अुपयोगी जहाज़ और साधन-सामग्री प्राप्त करनेके बारेमें भी पुछवाया है, ताकि नये ढंग पर मछलियोंके अुद्योगको बढ़ानेका काम शुरू किया जा सके। फ़ौजके लोग तो अिस वक़्त भी 'ज्यादा अनाज पैदा करने' के काममें काफ़ी मदद कर रहे हैं और कुअें खोदने व ज़मीनको समतल बनानेके लिअे ज़रूरी मशीनें वग़ैरा भी फ़ौजकी तरफ़से बाँटी जा रही हैं।

"३. दिल्लीमें 'सेण्ट्रल विस्टा' नामक शाही मैदानका बहुत बड़ा हिस्सा जोता जायगा और बंगलेके बगीचोंका अुपयोग बड़े पैमाने पर साग-तरकारी अुगानेके लिअे किया जायगा। दोस्तों या रिश्तेदारोंको हिन्दुस्तानसे बाहर भेजे जानेवाले खाद्य पदार्थोंके पार्सलोंको बन्द करनेका हुक्म जारी किया जा चुका है और मूँगफली, खली वगैरा चीज़ोंकी निकासीके सवालकी ताकीदके साथ जाँच-पड़ताल शुरू की जा रही है।

"४. यह तो मानी हुअी बात है कि घूसखोरी और बेअीमानी समुचित खाद्य-व्यवस्थाके घोर शत्रु हैं। अिस बुराअीको मिटाना बहुत ही कठिन काम है। कण्ट्रोलकी ब्योरेवार व्यवस्था तो खासकर प्रान्तीय सरकारोंके हाथमें है और संभव है कि नये मंत्रि-मंडल अिस दिशामें कामयाबी हासिल कर सकें।"

पूना, ६-३-'४६

हरिजनसेवक, १७-३-१९४६

१२

जूठन छोड़ना

स० — खाना खाते समय थालीको बिल्कुल ही पोंछकर अुठनेमें हल्कापन माना जाता है और थोड़ी-बहुत जूठन छोड़ जानेमें बड़प्पन माना गया है। अैसा क्यों है? भुखमरीके अिन दिनोंमें यह कैसे बरदाश्त किया जा सकता है?

ज० — अिसके कारणकी खोजके पचड़ेमें पड़ना मेरे खयालसे अेक बे-मानी चीज़ है। अगर कोअी कारण हो भी, तो अुसका पता लगानेमें मैं अपना वक़्त नहीं दे सकता। लेकिन अितना भोजन परोसवा लेना कि जूठन छोड़नी पड़े, मेरे विचारसे जंगलीपन और अविवेककी निशानी है। आजके कठिन समयमें तो मुझे अिसमें निर्दयता दीखती है, क्योंकि आजकल तो किसीको भरपेट खानेका भी अधिकार नहीं। मैं मानता हूँ

कि थालीको साफ़ करके अुठनेमें बहुत विवेक और सभ्यता है। अिससे जिन्हें बरतन साफ़ करने पड़ते हैं, अुनकी भी मेहनत और समय बचता है।

अगर कोअी किसीकी थालीमें ज़रूरतसे ज्यादा परोस दे, तो खाना शुरू करनेसे पहले ज्यादा परोसी चीज़को अेक साफ़ बरतनमें रख देना चाहिये। मेरे विचारमें यह विवेक है। मेरी राय तो यह है कि मेज़बान मेहमानको वही और अुतना ही दे, जितना और जो अुसे रुचे। बहुत सावधानीसे काम लेनेवाले तो अपने मेहमानकी ज़रूरतको पहलेसे ही जान लेते हैं और फिर अुसीके मुताबिक़ सब चीज़ें अुसे परोसते हैं।

पूना, ६-३-'४६

हरिजनसेवक, १७-३-१९४६

१४

सवाल-जवाब

स० — आप तो मछली खानेवालोंको मछली खिलानेकी बात लिखते हैं? क्या खानेवाला हिंसा नहीं करता? और खिलानेवाला अुसमें भागीदार नहीं बनता?

ज० — दोनोंमें हिंसा भरी है। भाजी खानेवाला भी हिंसा करता है। जगत हिंसामय है। देह धारण करनेका मतलब है, हिंसामें शरीक होना। अैसी ही हालतमें अहिंसा धर्मका पालन करना है। वह किस तरह किया जाय, सो मैं कअी बार बता चुका हूँ। मछली खानेवालेको ज़बर-दस्ती मछली खानेसे रोकनेमें मछली खानेसे ज्यादा हिंसा है। मछली मारनेवाले, मछली खानेवाले और मछली खिलानेवाले जानते भी नहीं कि वे हिंसा करते हैं। और अगर जानते भी हैं, तो अुसे लाज़िमी समझकर अुसमें भाग लेते हैं। लेकिन ज़बरदस्ती करनेवाला जानबूझकर हिंसा करता है। बलात्कार अमानुषी कर्म है। जो लोग आपस-आपसमें

लड़ते हैं, जो धन कमाते समय आगा-पीछा नहीं सोचते, जो दूसरोंसे बेगार लेते हैं, जो ढोरों या मवेशियों पर हदसे ज्यादा बोझ लादते हैं और अुन्हें लोहेकी या दूसरी किसी आरसे गोदते हैं, वे जानते हुअे भी अैसी हिंसा करते हैं, जो आसानीसे रोकी जा सकती है। मछली या मांस खानेवालोंको ये चीज़ें खाने देनेमें जो हिंसा है, अुसे मैं हिंसा नहीं मानता। मैं अुसे अपना धर्म समझता हूँ। अहिंसा परमधर्म है ही। हम अुसका पूरा-पूरा पालन न कर सकें, तो भी अुसके स्वरूपको समझकर हिंसासे जितना बच सकें, बचें।

स० — आप लिखते हैं कि चावलको पॉलिश न करना चाहिये। लेकिन यह बुराअी तो बहुत गहरी पैठ गअी है। पॉलिशवाले चावलोंको मल-मलकर धोया जाता है। पकानेपर माँड़का सारा पानी, जिसमें सत्त्व होता है, बहा दिया जाता है; क्योंकि आँखोंको और जीभको खुले चावल खाना अच्छा लगता है। छात्रावासोंमें भी यही होता है। यह बुराअी कैसे मिटाअी जाय?

ज० — मैं अिस बुराअीसे अनजान नहीं। हम गरीब-से-गरीब मुल्कमें रहते हैं, फिर भी हम अपनी बुरी आदतों और नुक़सान पहुँचानेवाले स्वादोंको छोड़नेके लिअे तैयार नहीं। हमें अपनी ही पड़ी है। दूसरे अपने होते हुअे भी पराये-से मालूम होते हैं। वे मरें या जीयें, हमें अुससे क्या? मरेंगे तो अपने पापसे; जीयेंगे तो पुण्यसे! मरना-जीना हमारे हाथमें कहाँ है? हम खायें, पीयें और मौज करें, यही हमारा पुण्य है।

जहाँ धर्मका रूप अितना विकृत हो गया हो, वहाँ अुसका अेक ही अिलाज है। जिसे हम सच्चा धर्म मानते हैं, अुसका पालन करें और आशा रखें कि जो सच है, वह किसी न किसी दिन प्रकट होगा ही। तब तक जिसे हम सच्चा धर्म समझें, अुसका अैलान मौक़ा पाकर करते रहें।

बम्बअी, ११-३-'४६

हरिजनसेवक, २४-३-१९४६

१५

बरबादी

खबरों पर खबरें चली आ रही हैं कि खाने-पीनेके सामानका जो जत्था था, वह आदमियोंके अिस्तेमालके लायक नहीं रहा और फेंका जा रहा है। बिना मक्खनवाले दूधकी गाहकी न होनेकी वजहसे वह फेंका जा रहा है और गाढ़ा किया हुआ दूध अज्ञानकी वजहसे निकम्मा पड़ा है। बन्दरगाहों पर अनाज जमा करनेसे मुसीबत कम नहीं होगी, जब तक जहाँ असकी फ़ौरन ज़रूरत है, वहाँ असे तुरन्त पहुँचाया न जाय। अिससे भी बुरी तो यह तिहेरी बरबादी है, जो बढ़ते हुअे अकालकी अिस हालतमें आज की जा रही है। यह सब बरबादी अिसीलिअे होती है कि हुकूमत और जनताके बीच कोअी सीधा — जीता-जागता — सम्बन्ध नहीं है।

अुरुळी, २४–३–'४६

हरिजनसेवक, ३१–३–१९४६

१६

अन्नकी भीख माँगना

अकालको रोकनेके लिअे फ्रेण्ड्स अेम्बुलन्स युनिटने जो योजना तैयार की थी, अुसका गांधीजीने क़रीब-क़रीब समर्थन तो किया, लेकिन अुन्हें 'बाहरसे अन्नकी भीख माँगने'की बात बिल्कुल पसन्द नहीं आअी। अुन्होंने कहा: "अगर बाहरसे अन्न आता है, तो अुसका स्वागत होगा। लेकिन हमें अुसके भरोसे नहीं बैठना चाहिये। जो हिन्दुस्तान समूचे पूर्वको अन्न देनेवाला है, आज अुसे ही अमेरिका और

दूसरे मुल्कोंसे अनाजकी भीख माँगनी पड़ रही है। यह मुझे पसन्द नहीं। किसी भी तरह, अगर हम अपनी मदद पर भरोसा करते हैं, तो ताक़त भी न मालूम कहाँसे आ ही जाती है। यह ताक़त शायद भगवान देता है और लोग महसूस करते हैं कि अुन्हें मरना नहीं चाहिये। फिर बन्दरगाहों पर अनाजके आ जानेसे भी तो समस्या हल नहीं होगी, जब तक कि अुसे अैसी जगह पहुँचाया न जाय, जहाँ अुसकी सबसे ज्यादा माँग है। सच पूछा जाय तो असल समस्या अनाजको लोगोंमें बाँटनेकी है। जब तक अिसे हल नहीं किया जाता, तब तक अिस बातका खतरा ही है कि अनाज बन्दरगाहोंमें सड़ता रहे और देशके भीतर अनाजकी कमीसे लोग मरते रहें। आज तो सरकारी कर्मचारियोंमें फैली हुअी सड़ाँधको देखते हुअे अिस समस्याके हल होनेकी कोअी अुम्मीद नहीं। अेक सरकारी अफ़सरने अपने अेक नोटमें बताया है कि बन्दरगाहोंमें अनाजसे लदे जहाज़ोंके आने पर अुतारे हुअे अनाजको ज़रूरतकी जगहों तक पहुँचानेमें कम-से-कम दो माह लग जायँगे। अिस बीच लोग क्या करें? अिसीलिअे मैंने यह सुझाव पेश किया है कि ज़मीनके भीतरका पानी काममें लेकर लोग खुद जो कुछ पैदा कर सकें, करें। अगर हिन्दुस्तानके करोड़ों लोग अिस पर अमल करें, तो वे बाहरसे अनाज पहुँचने तक तो अपनेको ज़िन्दा रख ही सकते हैं।"

अुरुळी, २३–३–'४६
हरिजनसेवक, ७-४–१९४६

१७

अेक मंत्रीकी परेशानी

डॉक्टर काटजूने यह पत्र भेजा है :

“ हिन्दुस्तानके कअी हिस्सोंमें रबीकी फ़सल अिस साल और सालोंके मुक़ाबले कम आअी है और अिसलिअे आमतौर पर लोगोंको यह डर है कि अिस बार देशमें अन्नकी बहुत ज्यादा तंगी रहेगी । अन्नके मामलेमें अमीर और ग़रीब सबको अेकसी सहूलियतें देनेके खयालसे संयुक्त प्रान्तके बहुतसे शहरी हलक़ोंमें राशन देना शुरू किया गया है । राशनिंगकी वजहसे सरकार पर यह ज़िम्मेदारी आ जाती है कि वह राशनिंगके हलक़ोंमें रहनेवाले लोगोंके लिअे अन्न मुहैया करे । प्रान्तमें अितनी ज्यादा तंगीका अँदेशा है कि यहाँ राशनकी मात्राको घटाकर कम-से-कम कर दिया गया है, यानी फ़ी आदमी रोज़का छह छटाँक अनाज दिया जाता है । अिसमें दो छटाँक गेहूँ, दो छटाँक चावल और दो छटाँक मिलावटी आटा होता है । लोग आमतौर पर मिलावटी आटेको पसन्द नहीं करते और राशनमें अिससे ज्यादा कमी करना लगभग असंभव है । ज़ाहिर है कि शहरी हलक़ोंको अन्न मुहैया करनेके लिअे देहातसे अुसकी आमद लगातार ज़ारी रहनी चाहिये । हिन्दुस्तानकी सरकारने प्रान्तोंकी सरकारोंको यह सुझाया है कि अन्नकी लगातार आमदका पक्का अिन्तज़ाम करनेके लिअे ज्यादा अन्न पैदा करनेवाले ज़िलोंमें, यानी अुन ज़िलोंमें जहाँ खेतीकी पैदावार देहाती हलक़ोंकी ज़रूरतोंसे ज्यादा होनेकी आशा की जाती है, खेतीकी फ़सल पर लाज़िमी तौरसे लाग बैठाना अिष्ट होगा । लाज़िमी तौर पर अनाज वसूल करनेका यह सवाल लोगोंको बहुत ही परेशान किये

हुअे है । कहा जाता है कि सरकारने कण्ट्रोलकी जो क़ीमतें तय की हैं, वे बहुत कम हैं और बढ़ाअी जानी चाहियें । अिसका जवाब यह है कि क़ीमतोंका ढाँचा तो समूचे हिन्दुस्तानके लिअे बनाया जाता है और अुस पर असर डाले बिना किसी अेक प्रान्तमें क़ीमतें बढ़ाअी नहीं जा सकतीं । अिसके अलावा, संयुक्त प्रान्तमें कण्ट्रोलके दाम बंगाली मनके सवा दस रुपये रखे गये हैं, जो कि असलमें कम नहीं हैं । यह काफ़ी अच्छी रक़म है और अिसमें खेतीके और ज़िन्दगीकी आम ज़रूरतोंके बढ़े हुअे खर्चका मुनासिब खयाल रखा गया है । लड़ाअीसे पहलेके दिनोंमें गेहूँ रुपयेके १३ सेर बिका करते थे; आज कण्ट्रोलकी दर फ़ी रुपया ४ सेरकी है । चूँकि आम तौर पर लोगोंको यह डर है कि बाज़ारमें अनाज माँगके मुक़ाबले बहुत कम आयेगा, अिसलिअे जहाँ स्वार्थी लोग अपनी निजी ज़रूरतोंको पूरा करनेके लिअे अूँचे दामों खाद्यपदार्थ खरीद सकते हैं, वहाँ काले बाज़ार खड़े हुअे बिना न रहेंगे । अगर किसान यह महसूस कर लें कि शहरोंमें रहनेवाले अपने भाअी-बहनों और देहातमें जिनकी अपनी कोअी खेतीबारी नहीं है, अुन लोगोंको अन्न पहुँचानेकी ज्यादा-से-ज्यादा कोशिश करना अुनका अपना सामाजिक और राष्ट्रीय धर्म है, तो किसी पर कोअी ज़बरदस्ती न करनी पड़े । किसान सचमुच हमारे ‘अन्नदाता’ हैं, अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि आप अुनसे यह अपील करें कि वे अिस नाज़ुक मौक़े पर न तो खुद अनाज अिकट्ठा करके रखें और न किसी चोर बाज़ारमें अुसे बेचें; बल्कि जितना दे सकें सरकारी गोदामोंके लिअे दें, ताकि अमीर-गरीब सबको अुचित रूपसे और बराबरीसे अन्न बाँटा जा सके और भुखमरी और मोहताजीको टाला जा सके । आपकी आवाज़ दूर-दूर तक पहुँचती है, अिसलिअे मैं आपसे अपील करता हूँ कि आप अिस कामको हाथमें लें । शहरोंके लिअे अनाजका काफ़ी अिन्तज़ाम

करनेके लिअे कअी योजनायें सोची गअी हैं। लेकिन कोअी भी स्कीम या योजना क्यों न हो, सार सबका यही है कि हर हालतमें किसानसे कहना होगा कि वह अपना अनाज दे। अगर शहरों और गाँवोंमें लोगोंके लिअे अन्न मुहैया न किया गया, तो हर तरहके दंगे और फ़साद हुअे बिना न रहेंगे। संयुक्त प्रान्तमें हम 'अधिक अन्न अुगाने' और 'अधिक साग-सब्ज़ी अुगाने' के आन्दोलनोंको बढ़ावा देनेकी पूरी-पूरी कोशिश कर रहे हैं। आपके दिये हुअे तमाम सुझावों पर अमल किया जा रहा है। सरकारी मकानोंके आसपासकी तमाम सरकारी ज़मीनोंको जोतनेके लिअे हिदायतें जारी की गअी हैं। अैसा अिन्तज़ाम किया गया है कि जिससे निजी मकानोंके मालिक खेती-बारीके विशेषज्ञोंकी सलाहसे फ़ायदा अुठा सकें। अुन्हें बोनेके लिअे बीज और सिंचाअीके लिअे नहरोंका पानी भी मुफ़्त दिया जा रहा है। कुअें खोदनेके काममें भी मदद दी जा रही है। अिन सब बातोंके कहने और करनेके बावजूद भी, जब तक जनता साथ नहीं देती, कुछ किया नहीं जा सकता; और जनताके सहयोगका मतलब है कि 'अन्नदाता' किसान जितना अुनसे बन पड़े अुतना अनाज अिस कामके लिअे दें।"

डॉक्टर काटजूके अिस पत्र पर किसानों और अुनके सलाहकारोंको तथा शहरवालोंको गहराअीसे विचार करना चाहिये। सिरपर मँडरानेवाले संकटका सदुपयोग किया जा सकता है। अुस हालतमें वह संकट न होकर अेक आशीर्वाद ही होगा। वरना वह शाप है, और शाप रहेगा।

डॉक्टर काटजूने अेक ज़िम्मेदार मंत्रीके नाते अूपरका पत्र लिखा है। अिसलिअे लोग अुन्हें बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। वे अुन्हें हटाकर अुनसे ज्यादा योग्य आदमीको अुनकी जगह रख सकते हैं। लेकिन जब तक लोगोंके चुने हुअे मंत्री अुनके सेवकके नाते काम करते हैं, लोगोंको चाहिये कि वे अुनकी हिदायतों पर अमल करें। हर

क़ानून या हिदायतका विरोध सत्याग्रह नहीं होता । हाँ, वह सत्याग्रहके बनिस्वत दुराग्रह आसानीसे बन सकता है ।

नअी दिल्ली, १४-४-'४६

हरिजनसेवक, २१-४-१९४६

१८

खाँड़ और मिठाअी

स० — बम्बअीमें अभी-अभी खाँड़के राशनमें २५ फ़ी सदी कमी हुअी है । तो क्या यह ज़रूरी नहीं है कि आम लोगोंके राशनमें कटौती करनेके बजाय मिठाअीकी दुकानोंके राशनमें कटौती की जाय ?

ज० — आम लोगोंके राशनमें कमी करनेसे पहले हलवाअियोंके हिस्सेमें कमी करना हमेशा सराहनीय है । अैसे कठिन समयमें अगर मिठाअी बिलकुल बन्द हो जाय, तो मैं अुसे कोअी खराबी न समझूँगा । युक्ताहारके लिअे मिठाअी खानेकी बिलकुल ज़रूरत नहीं ।

सफ़ेद रोटी और चोकर

स० — पिछली जनवरी तक डबलरोटीमें १० फ़ी सदी चोकर डालना लाज़िमी था । अुसके बाद वह बन्द कर दिया गया । अुसे दुबारा क्यों न शुरू कर देना चाहिये ?

ज० — मैं जानता हूँ कि सफ़ेद रोटी और चोकरका बहुत दिनोंसे वैर चला आता है । लोग सफ़ेद रंगकी तरफ़ खिंचते हैं । मेरा खयाल है कि हब्शियोंमें अैसा नहीं है । चाहे कुछ भी हो, लेकिन रोटीको सफ़ेद रखनेके लिअे खास तौरसे मेहनत की जाती है । सौभाग्यसे शहर-वाले ही अैसे नखरे कर सकते हैं । मैदेके सफ़ेद दीखनेवाले दो-चार फुल्के खानेके बदले पूरे गेहूँके आटेकी अेक छोटी रोटी खानेमें ज्यादा मज़ा आता है और, जैसा कि डॉक्टर लोग कहते हैं, वह अधिक पुष्टि-

कर होती है। आज तो यह हमारा धर्म भी है। क्योंकि अिससे आटा बचता है, और जितना अनाज बचे, वह मिलेके बराबर है। अेक तरहसे देखें, तो वह मिले हुअे अनाजसे भी ज्यादा क़ीमती है। बन्दरगाहोंमें पड़ी हुअी गेहूँकी बोरियोंके मुक़ाबले गाँवमें पड़ा हुआ गेहूँ आज बहुत ज्यादा कामका है। अिसलिअे आटेमें चोकर मिलाना लाज़िमी कर दिया जाय, तो वह ठीक ही होगा। लड़ाअी चाहे बन्द हो गअी हो, लेकिन आर्थिक दृष्टिसे तो लड़ाअीसे भी ज्यादा खराब हालत आज हो रही है और होती चली जाती है। वह कब सुधरेगी, सो अीश्वर ही जानता है।

नअी दिल्ली, २२-४-'४६

हरिजनसेवक, २८-४-१९४६

१९

शोचनीय

'ग्रामोद्योग पत्रिका' में लिखते हुअे श्री जे० सी० कुमारप्पा कहते हैं कि बाहरसे आनेवाले माल पर भरोसा करना या अुसे प्रोत्साहन देना सिद्धान्तके नाते बिलकुल ग़लत है। यू० पी० और बिहारमें जाड़ोंमें बारिश न होने और पंजाब तथा सरहदी सूबेमें पालेकी वजहसे शक्करकी पैदावारमें कमी हो जानेकी जो अुम्मीद है, अुसे पूरा करनेके लिअे अुनकी राय है कि जंगलोंमें खड़े हुअे ताड़के पेड़ोंसे नीरा निकालकर अुससे गुड़ और शक्कर बनाये जायँ।

जहाँ तक मिट्टीके तेल जैसी खास ज़रूरतोंका सवाल है, वे कहते हैं कि वनस्पति तेल ज्यादा निकालकर अुन्हें पूरा करें। जो चीज़ें हम बाहरसे मँगाते हैं, अुनके बदलेमें हमें अपनी पैदावारमेंसे कुछ चीज़ें बाहर भेजनी होंगी, जो आगे चलकर और ज्यादा परेशानी पैदा कर देंगी।'

'अिम्पीरियल कौंसिल ऑफ़ अेग्रीकल्चरल रिसर्च' के अुपप्रधान सर हर्बर्ट स्टुअर्टके द्वारा बिहारमें चलाअी गअी वरजीनिया सिगरेटकी तम्बाकूमें

है। आज तो ये गुठलियाँ कूड़ा समझकर फेंक दी जाती हैं। लेकिन रासायनिक खोजसे यह मालूम हुआ है कि अिसमें प्रोटीन, कार्बोहाअिड्रेट यानी चीनी और चरबी काफ़ी मात्रामें पाअी जाती हैं (क्रूड प्रोटीन ८·५%, अीथर अेक्स्ट्रैक्ट ८·८५% और घुलजानेवाले कार्बोहाअिड्रेट ७४·४९%)।"

* * *

"अिस छानबीनसे आमकी गुठलीकी गरी अेक अनाजकी गिनतीमें आ गयी है। अिससे पता चला है कि जो गुठलियाँ आज रद्दी समझकर फेंक दी जाती हैं, अुनसे ७ करोड़ पौण्ड पचाया जा सकनेवाला प्रोटीन और लगभग ७८ करोड़ पौण्ड स्टार्च (निशास्ता) मिल सकता है। यह भी अंदाज़ा लगाया गया है कि यह पचाया जा सकनेवाला प्रोटीन ८० पौण्ड जौमेंसे जितना निकलता है, अुतना ही १०० पौण्ड आमकी गुठलीकी गरीमेंसे भी निकलता है और ८६ पौण्ड जौके बराबर स्टार्च (निशास्ता) भी निकलता है।"

मुझे अिस गरीके अुपयोगका बचपनसे ही पता था। मगर आज तक शायद ही किसीने खुराकके रूपमें अिसका अुपयोग करनेके लिअे अिसे सँभालकर रखनेकी बात सोची हो। आजकल आमका मौसिम है। हालाँकि काफ़ी दिन बेकार चले गये हैं, फिर भी क्या ही अच्छा हो अगर हरअेक गुठलीको बचाकर रखा जाय और अुसे अनाजकी जगह सेंक कर खाया जाय, या जिन्हें अुसकी ज़रूरत हो अुन्हें दे दिया जाय! आज तो अनाजका जो भी दाना बचाया जा सके, वह मिला हुआ ही गिना जायगा।

नअी दिल्ली, २१-५-'४६

हरिजनसेवक, २६-५-१९४६

२२

हरी पत्तियाँ

आप खुराक या विटामिनोंके बारेमें लिखी हुअी किसी भी आधुनिक पुस्तकको अुठाकर देखिये, तो आपको पता चलेगा कि अुसमें हर भोजनके साथ थोड़ी मात्रामें बिना पकाअी हुअी हरी पत्तियाँ या भाजियाँ खानेकी ज़ोरदार सिफारिश की गयी है। बेशक, अुन पर जमी हुअी धूलको पूरी तरह साफ़ करनेके लिअे अुन्हें हमेशा ५-६ बार पानीसे अच्छी तरह धोना चाहिये। सिर्फ तोड़नेकी थोड़ी-सी तकलीफ अुठानेसे ही ये पत्तियाँ हर गाँवमें मिल सकती हैं। फिर भी अुन्हें सिर्फ शहरोंकी ही खानेकी चीज़ समझा जाता है। हिन्दुस्तानके बहुतसे हिस्सोंमें गाँववाले दाल और चावल या रोटी और बहुतसी मिर्च पर गुजर करते हैं, जो शरीरको नुकसान करती है। चूँकि गाँवोंका आर्थिक पुनःसंगठन खुराकके सुधारसे शुरू किया गया है, अिसलिअे सादीसे सादी और सस्तीसे सस्ती खुराकका पता लगाना चाहिये, जो गाँववालोंको अुनकी खोअी हुअी तन्दुरुस्ती फिरसे पानेमें मदद कर सके। गाँववालोंके हर भोजनमें अगर हरी पत्तियाँ जुड़ जायँ, तो वे अैसी बहुतसी बीमारियोंसे बच सकेंगे, जिनके वे आज शिकार बने हुअे हैं। गाँववालोंके भोजनमें विटामिनोंकी कमी है; अुनमेंसे बहुतसे विटामिन हरी पत्तियोंसे मिल सकते हैं। अेक प्रसिद्ध अंग्रेज डॉक्टरने मुझे दिल्लीमें कहा था कि हरी पत्ता-भाजियोंका ठीक-ठीक अुपयोग खुराक सम्बन्धी रूढ़ विचारोंमें क्रान्ति पैदा कर देगा और आज दूधसे जो कुछ पोषण मिलता है, अुसका बहुतसा हिस्सा हरी पत्ता-भाजियोंसे मिल सकेगा। बेशक, अिसका मतलब यह है कि हिन्दुस्तानके जंगली घास-चारेमें छिपी हुअी जो बेशुमार हरी पत्तियाँ मिलती हैं, अुनके पोषक तत्त्वोंकी तफसीलवार जाँच की जाय और अुनके बारेमें कड़ी मेहनतसे शोध की जाय।

मैंने सरसों, सूआ, शलजम, गाज़र, मूली और मटरकी हरी पत्तियाँ खाअी थीं। अिसके अलावा, यह कहना शायद ही ज़रूरी हो कि मूली, शलजम और गाजर कच्ची हालतमें भी खाये जा सकते हैं। गाजर, मूली और शलजमको या अुनकी पत्तियोंको पकाना पैसे और 'अच्छे' ज़ायकेको बरबाद करना है। अिन भाजियोंमें जो विटामिन होते हैं, वे पकानेसे पूरे या थोड़े नष्ट हो जाते हैं। मैंने अिनके पकानेको 'अच्छे' ज़ायकेकी बरबादी कहा है, क्योंकि बिना पकाअी हुअी हरी भाजियोंमें अेक खास कुदरती अच्छा ज़ायका होता है, जो पकानेसे खतम हो जाता है।

हरिजन, १५-२-१९३५

२३

सोयाबीन

गरीब मनुष्योंकी दृष्टिसे जो लोग आहार सुधारमें रस लेते हैं, अुन्हें अिस प्रयोगकी परीक्षा करनी चाहिये। यह याद रखना चाहिये कि सोयाबीन अेक अत्यन्त पौष्टिक आहार है। जितने खाद्य पदार्थोंका हमें पता है, अुनमें सोयाबीन सर्वोत्कृष्ट है, क्योंकि अुसमें कार्बोहाअिड्रेटकी मात्रा कम और क्षारों, प्रोटीन तथा चर्बीकी मात्रा अधिक होती है। अुसकी शक्तिका परिमाण प्रति पौण्ड २१०० केलोरी* (Calory) होता है, जब कि गेहूँका १७५० और चनेका १५३० होता है। सोयाबीनमें ४० प्रतिशत प्रोटीन और २०·३ प्रतिशत चर्बी होती है, जब कि चनेमें १९ प्रतिशत प्रोटीन और ४·३ प्रतिशत चर्बी तथा अंडेमें

---

* यह तापकी अिकाअी है, और भिन्न-भिन्न खाद्य पदार्थोंमें भिन्न-भिन्न परिमाणमें पाअी जाती है। सोयाबीनके १ पौण्डसे २१०० केलोरी मिल सकती हैं, अिसका अर्थ यह हुआ कि वह अुतने तापका अुत्पादन कर सकता है।

१४·८ प्रतिशत प्रोटीन और १०·३ प्रतिशत चर्बी होती है। अतः सोयाबीनको प्रोटीन तथा चर्बीदार सामान्य भोजनके अलावा नहीं खाना चाहिये। गेहूँ और घी की मात्रा भी कम कर देनी चाहिये और दालको तो अेकदम निकाल देना चाहिये, क्योंकि सोयाबीन खुद ही अेक अत्यन्त पौष्टिक दाल है।

हरिजनसेवक, १२–१०–१९३५

२४

सोयाबीनकी खेती

लोग पूछताछ कर रहे हैं कि सोयाबीन कहाँ मिलती है, कैसे बोअी जाती है और किस-किस रीतिसे पकाअी जाती है। मैं बड़ोदा राज्यके फुड सर्वे ऑफिससे प्रकाशित अेक गुजराती पत्रिकाके मुख्य-मुख्य अंशोंका स्वतंत्र अनुवाद नीचे देता हूँ। अुसका मूल्य अेक पैसा है :

"सोयाबीनका पौधा अेक फुटसे लेकर सवा फुट तक अूँचा होता है। हरअेक फलीमें औसतन तीन दाने होते हैं। अिसकी बहुतसी किस्में हैं। सोयाबीन सफ़ेद, पीली, कुछ काली-सी और रंग-बिरंगी, आदि अनेक तरहकी होती है। पीलीमें प्रोटीन और चर्बीकी मात्रा सबसे अधिक होती है। अिस किस्मकी सोयाबीन मांस और अंडेसे अधिक पोषक होती है। चीनी लोग सोयाबीनको चावलके साथ खाते हैं। साधारण आटेके साथ अिसका आटा मिलाकर चपातियाँ भी बना सकते हैं। मिश्रण अिस तरह किया जाय कि अेक हिस्सा सोयाबीनका आटा हो और पाँच हिस्से गेहूँका।

"सोयाबीनकी खेतीसे ज़मीन अच्छी अुपजाअू हो जाती है। कारण यह है कि दूसरे पौधोंकी तरह ज़मीनसे नाअिट्रोजन लेनेके

बजाय सोयाबीनका पौधा अुसे हवासे लेता है और अिस तरह ज़मीनको जरखेज़ बनाता है।

"सोयाबीन दर असल सभी किस्मकी ज़मीनोंमें पैदा होती है। सबसे ज्यादा वह अुस ज़मीनमें पनपती है, जो कपास या अनाजकी फसलोंके लिअे मुआफिक पड़ती है। नोनिया ज़मीनमें अगर सोयाबीन बोअी जाय, तो वह ज़मीन सुधर जाती है। अैसी ज़मीनमें खाद अधिक देना चाहिये। बिजबिजाया हुआ गोबर, घास, पत्तियाँ और गोबरके घूरेकी खाद सोयाबीनकी खेतीके लिअे बहुत ही मुफीद है।

"सोयाबीनके लिअे अैसी जगह अनुकूल पड़ती है, जो न बहुत गर्म हो, न बहुत सर्द। जहाँ ४० अिंचसे अधिक वर्षा नहीं होती, वहाँ अिसका पौधा खूब पनपता है। अुसे अैसी ज़मीनमें नहीं बोना चाहिये, जो पानीसे तर रहती हो। यों आम तौर पर सोयाबीनको पहली बारिश पड़नेके बाद बोते हैं, पर वह किसी भी मौसममें बोअी जा सकती है। अगर ज़मीन जल्दी-जल्दी खुश्क हो जाती हो, तो खुश्क मौसममें हफ्तेमें अेक या दो बार अुसे पानीकी ज़रूरत पड़ती है।

"ज़मीन सबसे अच्छी तो गर्मियोंमें तैयार होती है। अुसे खूब अच्छी तरह जोत डाला जाय और अुस पर तेज-धूप पड़ने दी जाय। फिर ढेलोंको तोड़-तोड़कर मिट्टीको खूब महीन कर दिया जाय।

"दो-दो, तीन-तीन फुटके फासलेकी पंक्तियोंमें अिसका बीज बोना चाहिये। पौधे कतारोंमें तीन-तीन, चार-चार अिंचकी दूरी पर होने चाहियें। अिसकी निराअी बार-बार होनी चाहिये।

"अेक अेकड़ ज़मीनमें दस सेरसे लेकर पन्द्रह सेर तक बीज लगता है। बीज दो अिंचसे ज्यादा गहरा नहीं बोना चाहिये। अेक अेकड़के लिअे दस गाड़ी खादकी ज़रूरत पड़ेगी।

"अंकुर निकल आनेके बाद हल्के हलसे अिसकी ठीक तरहसे निराअी होनी चाहिये। ज़मीनकी सारी अूपरी परत तोड़ देनी चाहिये।

"बोनेके चार महीने बाद अिसकी फलियाँ तोड़ने लायक़ हो जाती हैं। पत्तियाँ ज्यों ही पीली-पीली पड़ने और झड़ने लगें, त्यों ही फलियोंको तोड़ लेना चाहिये। छीमियोंके मुँह खुल जाने और अुनमेंसे दाने झड़-झड़कर मिट्टीमें मिल-मिला जाने तक छीमियाँ पौधोंमें नहीं लगी रहने देनी चाहियें।"

हरिजनसेवक, ९-११-१९३५

२८

मूँगफलीकी खली

अध्यापक सहस्रबुद्धेने मूँगफलीकी खली पर अपनी जो प्रशंसापूर्ण संमति प्रगट की है, अुसे अेक मित्रने मेरे पास भेजा है। मूँगफलीकी खलीको अवश्य आजमाना चाहिये।

आहारमें सोयाबीनका अुपयोग करनेके लिअे काफ़ी अुपदेश दिया जा रहा है, पर मूँगफलीकी तरफ़, जिसकी खेती हिन्दुस्तानमें काफ़ी मात्रामें होती है, अुतना ध्यान नहीं दिया जाता, जितना कि देना चाहिये। मूँगफली आहारकी दृष्टिसे बहुत मूल्यवान वस्तु है। मूँगफली स्वयं सहजमें पच जाय अैसी चीज़ नहीं है और अकसर पाचनमें यह गड़बड़ पैदा करती है। अिसका कारण यह है कि अिसमें तेलकी मात्रा बहुत अधिक यानी पचास प्रतिशत होती है। मूँगफलीके दानोंको अच्छी तरह साफ करके अुनमेंसे तेल निकाल लिया जाय, तो जो खली बाकी बचेगी वह मनुष्यके लिअे बहुत पौष्टिक आहारका काम देगी और कोअी नुकसान नहीं पहुँचायेगी। मूँगफलीकी खलीका और सोयाबीनका पृथक्करण अिस प्रकार है :

	मूँगफलीकी खली प्रतिशत	सोयाबीन प्रतिशत
आर्द्रता	८	८
प्रोटीड	४९	४३
कार्बोहाअिड्रेट	२४	१९.५
चर्बी	१०	२०
रेशा	५	५
खनिज द्रव्य	५	४.५

मूँगफलीकी खली सोयाबीनकी तुलनामें बहुत अच्छी अुतरती है। प्रोटीड और खनिज द्रव्य, जो अन्नके आवश्यक तत्त्व हैं, सोयाबीनकी अपेक्षा मूँगफलीकी खलीमें अधिक होते हैं। 'अेमिनो-अेसिड' के जो आवश्यक तत्त्व हैं, वे भी सोयाबीनके प्रोटीडसे मूँगफलीके प्रोटीडमें अधिक होते हैं:

जरूरी अेमिनो-अेसिड	मूँगफली प्रोटीड प्रतिशत	सोयाबीन प्रोटीड प्रतिशत
टिरोडाअिन	५.५	१.८६
अेग्रिनाअिन	१३.५	५.१२
हिस्टीडाअिन	१.८८	१.३९
लिसाअिन	५.५०	२.७१
अिस्टाअिन	०.८५	—

मूँगफलीकी खली खानेसे अगर पित्त बढ़ता हो, तो थोड़ासा गुड़ या जरासा 'सोडा-बाअी-कार्ब' साथ लेनेसे पित्त बन्द हो जायगा।

मूँगफलीकी खलीका स्वाद बहुत अच्छा होता है और खलीको गरम करके अच्छी तरह बन्द किये हुअे बरतनमें रख दें, तो वह काफ़ी मुद्दत तक वैसी ही रखी रह सकती है।

मूँगफलीकी खलीकी मिठाअी और खानेकी दूसरी कअी सामान्य चीज़ें बन सकती हैं। अिसलिअे मूँगफलीकी खलीकी अुपयोगिता विषयक ज्ञानका प्रचार करनेका प्रयत्न देशमें होना चाहिये। यह गुणमें सोयाबीनकी तरह, बल्कि अुससे भी बढ़कर है।

हरिजनसेवक, १–२–१९३६

२६

रंगमें भंग

गांधीजीको सर पर खड़े कालकी बहुत फ़िक्र लग रही है। अुन्होंने मसूरीके शौक़ीन लोगोंसे कहा कि आपकी मेजबानियों पर मौतकी छाया मँडरा रही है। आप अुसका खयाल करें। सच्ची बात तो यह है कि काल देशमें पहलेसे ही है, करोड़ोंको पूरा खानेको नहीं मिलता। अमीर लोग शायद पैसा दे सकें, लेकिन पैसेसे किसीका पेट थोड़े ही भरता है। जितना अनाज चाहिये, अुतना देशमें नहीं है। जो है वह भी आसानीसे कमीवाले हिस्सोंमें नहीं भेजा जा सकता। गवर्नमेण्टका अिन्तज़ाम कितना निकम्मा है! फिर कअी अैसी जगहें हैं, जहाँ खुराकके ढेर पड़े हैं, पर लोग भूखों मर रहे हैं। क्योंकि हमारे अपने लोग ही बेअीमान और लालची हो गये हैं। जो लोग अमीर हैं और किसी-न-किसी तरह अपनी ज़रूरतें पूरी कर लेते हैं, वे जितना अनाज बचा सकें, बचायें। अगर लोग सहयोग करें और काला बाज़ार, रिश्वतखोरी और बेअीमानी खतम हो जाय, तो शायद अिस मुश्किलको पार करनेके लिअे देशमें काफ़ी अनाज निकल आये। कुछ लोग हैं, जो अिस बातको नहीं मानेंगे। वे कहेंगे कि अगर बाहरसे अनाज न आया, तो हम भूख और मौतसे नहीं बच सकेंगे। मेरी राय अिससे अलग है। पहले तो मालको हिन्दुस्तान पहुँचनेमें कुछ देर लगेगी और फिर बन्दरगाहसे ज़रूरतकी जगह तक पहुँचानेमें लगभग ६ हफ्ते लग जायँगे। अिसका सच्चा अिलाज सिर्फ़ अेक ही है कि लोगोंका आपसमें सहयोग हो और बेअीमानी खतम हो जाय। मसूरीके अमीर लोगोंको चाहिये कि जितना अनाज वे भूखोंके लिअे बचा सकें, बचायें। अगर

सब सिर्फ़ अुतना ही खायें, जितना स्वास्थ्यके लिअे ज़रूरी है, तो देश अिन सब मुश्किलोंको पार कर सकेगा।

मसूरी, १–६–'४६

हरिजनसेवक, ९–६–१९४६

२७

कुछ और सुझाव

यह अेक अच्छी निशानी है कि अनाजकी कमी पर बहुतसे लोग सोच-विचार कर रहे हैं। हर तरफ़से अिस कमीको पूरा करनेके लिअे सुझाव आते रहते हैं। अेक भाअीने, जो अपने विषयको अच्छी तरह जानते हैं, नीचे लिखे सुझाव भेजे हैं :

"(१) जब अनाज बहुत कम मिलने लगे, तो मांस खानेवालोंको दूसरोंके बराबर अनाजका राशन देनेकी क्या ज़रूरत? जितनी खुराक वे मांससे हासिल कर सकें, अनाजकी अुनकी रसद अुतनी कम कर दी जाय, तो काफ़ी अनाज बच सकता है।

"(२) अनाजकी रसद कम कर दी गअी है। मेरा खयाल है कि अिससे बहुतसे मेहनत करनेवालोंका पेट नहीं भरता। बहुतसे तो अिस कमीको अिस तरह पूरा करते हैं कि गेहूँमें मूँग, चना और जौ मिलाकर अिनका आटा बना लेते हैं। लेकिन अिन तीनों चीज़ोंकी क़ीमत गेहूँसे ज्यादा है। अिसलिअे बहुतसे अुन्हें खरीद नहीं सकते। अिससे यह नतीजा निकलता है कि मांस खानेवालोंके लिअे जितना अनाज कम किया जाय, अुतनी ही पौष्टिक मांसकी खुराक अुन्हें कम किये अनाजकी क़ीमतमें मिलनी चाहिये। मैंने अिस तजवीज़का खर्च निकाला है। अगले कुछ महीनोंमें १५ करोड़ रुपयेसे ज्यादा खर्च नहीं आयेगा। लेकिन

आदमियोंको बचानेके लिअे तो कोअी भी क़ीमत ज्यादा नहीं हो सकती। कहा जाता है कि हिन्दुस्तानमें अनाजकी कमीकी वजहसे शायद १ से १॥ करोड़ तक आदमी मर जायँगे।

"(३) मुझे जीव-हत्या बहुत बुरी लगती है। लेकिन अगर आदमी या जानवरमेंसे सिर्फ़ अेकको ही बचाया जा सके, तो मेरे खयालमें आदमीको बचाना चाहिये। हिरन, खरगोश, सूअर और कबूतर फ़सलोंको काफ़ी नुकसान पहुँचाते हैं। मैं मांस नहीं खाता। लेकिन मांस खानेवाले कहते हैं कि ये खुराककी तरह खाये जा सकते हैं। अगर अिनके शिकारका ठीक बंदोबस्त किया जाय, तो कुछ हिस्सोंको, खासकर बड़े शहरोंको, मांस लगातार मिल सकता है। यह बंदोबस्त कठिन तो है, पर असंभव नहीं। अगर ये जानवर अितने बड़े पैमाने पर मारे जायें, तो लगे हाथों यह भी फ़ायदा होगा कि जो फ़सलें ये जानवर बरबाद करते हैं, वे बच जायँगी।

"(४) अैसे बहुत कम लोग हैं जो अिस बातको पसन्द करें कि खुराक बचाअी जाय और रसद बाँटनेके चालू तरीकेके मुताबिक़ कालवाले हिस्सोंमें भेजी जाय। काला बाज़ार और बेअीमानी अितनी चलती है कि लोगोंको अैसा लगता है कि जो कुछ वे बचायेंगे, सो काले बाज़ारमें पहुँच जायगा। अगर बचाया हुआ अनाज अिकट्ठा किया जाय और विश्वास दिलाया जाय कि वह कालवाले हिस्सोंमें ज़रूर पहुँच जायेगा, तो लोगोंके दिलों पर अिसका बहुत अच्छा असर होगा। अिसके लिअे बन्दोबस्त तो करना पड़ेगा, पर मुझे अैसा लगता है कि अिससे काफ़ी अनाज अिकट्ठा हो जायगा।"

पहला सुझाव अैसा है कि सरकार अुस पर चले या न चले, अीमानदार मांस खानेवाले तो अुस पर चल सकते हैं। अगर वे आज अनाजका अपना पूरा हिस्सा ले रहे हैं, तो अुसमेंसे कुछ आसानीके साथ

ज्यादा ज़रूरतमन्द लोगोंको दे सकते हैं। अैसे मौक़ों पर आपसके सहयोगसे ज़रूरतवालोंको जल्दी-से-जल्दी मदद पहुँच सकती है।

दूसरा सुझाव पहलेसे निकलता है।

तीसरे सुझावके बारेमें अलग-अलग राय होगी। हिन्दुस्तान अेक अैसा देश है जहाँ बहुतसे लोग हर तरहके प्राणीको पवित्र मानते हैं, और जो अैसा नहीं भी मानते, अुनकी भी यह आदत बन गअी है कि वे जीव-हत्या करना पसन्द नहीं करते। अैसे देशमें शायद मांस खानेवालोंके लिअे भी अिस सुझाव पर चलना मुश्किल होगा। सब जानते हैं कि मैं हर तरहके जीवको पवित्र मानता हूँ। फिर भी मैं बड़ी आसानीसे अिस बातकी सिफ़ारिश कर सकता हूँ कि जो लोग मांस खाते हैं, वे लेखककी सुझाअी हुअी बात पर चलें। 'हरिजनबन्धु' में मैं अेक अैसी दलील पर चर्चा करनेकी आशा रखता हूँ, जो खतरनाक जानवरोंको भी मारनेके खिलाफ़ है। लेकिन अिसका खुराककी बातके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं।

चौथा सुझाव अच्छा है। लेकिन अुससे कोअी खास नतीजा निकलनेवाला नहीं, क्योंकि सरकारमें हर जगह बेअीमानी, नालायकी और ग़ैरज़िम्मेदारी फैली हुअी है। यह कठिनाअी तब तक दूर नहीं हो सकती, जब तक हमारी अपनी सरकार न हो। अुसे जनताको हर बातका जवाब देना पड़ेगा और लोग अुस पर भरोसा कर सकेंगे। बहुत दिनोंसे अैसी सरकारका अिन्तज़ार है। क्या वह कभी आयेगी भी?

मसूरी, २९-५-'४६

हरिजनसेवक, ९-६-१९४६

२८

मंत्रियोंका राशन

स० — जब खुराक-विभाग गवर्नरोंके सलाहकारोंके हाथमें था, तब अुन पर क़ाबू रखनेका कोअी पुरअसर ज़रिया नहीं था। मगर अब तो प्रान्तोंमें लोगोंकी सरकारें क़ायम हो गअी हैं। अिसलिअे हालत बदल गअी है। कांग्रेसी मन्त्रियोंका यह फ़र्ज़ है कि वे अपने हिस्सेकी खुराक वहींसे खरीदें, जहाँसे आम लोग खरीदते हैं। अेक दाना भी वे किसी और जगहसे न लें। अिसका असर तुरंत होगा और वह दूर तक पहुँचेगा। आज कपड़े और अनाजकी सरकारी दुकानें चोरी और बेअीमानीके खुले अड्डे बन गअी हैं। अगर कांग्रेसी मन्त्री अिन्हीं दुकानोंसे अपने हिस्सेका कपड़ा और अनाज खरीदें, तो अुनका नैतिक बल अितना बढ़ जायगा कि वे अिन बुराअियोंका कामयाबीके साथ सामना कर सकेंगे।

ज० — यह सवाल अिस तरहके कअी पत्रोंका निचोड़ है। मैं सवालमें दी गअी सलाहसे पूरी तरह सहमत हूँ। मैं मानता हूँ कि मंत्री और दूसरे सरकारी नौकर अैसा ही करते होंगे। सरकारी दुकानोंके सिवा तो खुराक खरीदनेका रास्ता काला बाज़ार ही है। हाकिम कितना ही क्यों न कहें कि काले बाज़ारमें मत जाओ, मगर अुसका अुतना असर नहीं होगा जितना अुनके अैसा कर दिखानेका हो सकता है। अगर वे आम लोगोंके साथ खुराक खरीदें, तो दुकानदार समझ जायँगे कि सड़ा हुआ अनाज नहीं बेचा जा सकता। सुनता हूँ कि अिंग्लैण्डमें तो यह आम रिवाज है कि मंत्री और बड़े-बड़े अधिकारी लोग वहींसे सामान खरीदते हैं, जहाँसे आम लोग। होना भी अैसा ही चाहिये।

पंचगनी, २८–७–'४६

हरिजनसेवक, ४–८–१९४६

२९
खुराककी कमी क्यों?

स० — आजकल हिन्दुस्तान अपनी आबादीके लिअे काफ़ी खुराक पैदा नहीं कर सकता। बाहरसे खुराक खरीदनेके लिअे हिन्दुस्तानको दूसरा माल बेचना होगा, ताकि अुसकी क़ीमत चुका सके। अिसलिअे हिन्दुस्तानको यह माल अैसी क़ीमत पर तैयार करना होगा, जो दूसरे देशोंकी क़ीमतोंके मुक़ाबलेमें ठहर सके। मेरी रायमें आजकलकी मशीनोंकि बग़ैर यह नहीं हो सकता। और यह तभी हो सकता है, जब कि शारीरिक मेहनतकी जगह मशीन ले ले।

ज० — पहले वाक्यमें जो बात कही गअी है, वह बिलकुल ग़लत है। बहुतसे लोगोंने अिससे अुलटा कहा है, फिर भी मैं तो मानता हूँ कि हिन्दुस्तान अिस समय काफ़ी अनाज पैदा कर सकता है। मैं यह बता चुका हूँ कि कौनसी शर्त पर यह हो सकता है: केन्द्रमें हमारी सरकार हो, अुसके हाथमें सारी बागडोर हो, अपना कारोबार वह अच्छी तरह जानती हो और अुसमें अितनी योग्यता हो कि वह तमाम नफ़ाखोरी, काला बाजार और सबसे बुरी मन और शरीरकी सुस्तीकी सख्तीसे रोकथाम कर सके।

अगर सवालके पहले हिस्सेका मेरा जवाब ठीक है, तो अुसका दूसरा हिस्सा अपने आप खतम हो जाता है। लेकिन अिन्सानकी मेहनत, जिसकी हिन्दुस्तानमें कमी नहीं, के खिलाफ़ आजकलकी मशीनोंकी सिफ़ारिशको हमेशाके वास्ते रद्द कर देनेके लिअे मैं यह कहूँगा कि अगर करोड़ों लोग, जो मेहनत कर सकते हैं, अेक होकर हिम्मतसे काम करें, तो वे किसी भी राष्ट्रका, चाहे अुसके पास आजकलकी कितनी ही मशीनें हों, अपनी दृष्टिसे अच्छी तरह मुक़ाबला कर सकते हैं। सवाल करनेवालेको

यह नहीं भूलना चाहिये कि आज तक मशीनोंके साथ-साथ अैसे राष्ट्रोंकी लूट-मार भी जारी रही है, जिनके पास मशीनें नहीं हैं और जिनका नाम कमज़ोर राष्ट्र रख दिया गया है।

मैंने 'नाम रख दिया गया है' का अिसलिअे अिस्तेमाल किया है कि ज्यों ही अिन राष्ट्रोंने यह पहचान लिया कि अिस समय भी वे अुन राष्ट्रोंसे ज्यादा ताकतवर हैं, जिनके पास नयेसे नये हथियार और मशीनें हैं, त्यों ही वे अिस बातसे अिनकार कर देंगे कि वे कमज़ोर हैं। तब किसीकी यह हिम्मत भी नहीं होगी कि अुन्हें कमज़ोर कह सके।

सेवाग्राम, ८-८-'४६
हरिजनसेवक, १८-८-१९४६

३०

कत्लेआम

अेक दोस्त लिखते हैं:

"मैसूर और रायलासीमामें अनाजकी तंगी दिन-दिन डरावना रूप लेती जा रही है। जब तक बाहरसे काफ़ी मात्रामें अनाज नहीं आता, यहाँके कोऑपरेटिव स्टोर्स किसानोंको रेशन पूरा नहीं कर सकते — यह रेशन भी पेटभर नहीं मिलता। क्योंकि किसानोंको आज सिर्फ़ आठ औंस चावल दिये जाते हैं, जब कि काम करने लायक़ बने रहनेके लिअे अुन्हें चौबीस औंस चावल ज़रूरी होते हैं। मुझे डर है कि अगर आजकी हालत नहीं सुधरी, तो नवम्बर और दिसम्बरमें भारी संख्यामें लोग भूखसे मरने लगेंगे।"

अगर लिखनेवाले भाअीकी आधी बात भी सच हो, तो हिन्दुस्तान जैसे लम्बे-चौड़े देशमें अन्नके अकालका सामना न कर पाना हमारे लिअे शर्मकी बात है। यहाँ लाखों अेकड़ ज़मीन बेकार पड़ी हुअी है, या हम

अुससे पूरा फ़ायदा नहीं अुठाते; और पानी समुद्रमें तेज़ीसे बह जाता है, क्योंकि आदमीमें अितनी समझ नहीं कि वह अुसको बाँध बाँधकर अिकट्ठा कर रखे। लिखनेवाले भाअी कहते हैं कि अगर बाहरसे अनाज 'काफ़ी मात्रामें' नहीं मिलेगा — जिसके साफ़ मानी ये हुअे कि अगर काफी अनाज हिन्दुस्तानमें बाहरसे नहीं आया — तो 'नवम्बर-दिसम्बर तक लोग बड़ी संख्यामें निश्चित रूपसे मरने लगेंगे।' मैं अिससे सम्बन्ध रखनेवाले हरअेक आदमीसे कहता हूँ कि अगर अैसा हुआ, तो देशकी सरकार क़त्लेआमकी गुनहगार ठहरेगी।

हिन्दुस्तानके बाहरसे अनाज पानेकी आशा रखना भुखमरीको न्योतना है। क्या यह कभी साफ़ तौरसे बताया गया है कि अब और नवम्बरके बीचके दिनोंमें हिन्दुस्तान काफ़ी अनाज या खानेकी चीजें पैदा नहीं कर सकता? अगर सारी दुनिया हिन्दुस्तानके खिलाफ़ नाकाबन्दीका अैलान कर दे, तो भी क्या अुसके-जैसे अितने बड़े मुल्कके लाखों-करोड़ों लोगोंको भूखों मरना ही होगा?

सेवाग्राम, १६–८–'४६

हरिजनसेवक, २५–८–१९४६

३१

खुराककी तंगी

अमलदारोंकी तरफ़से दी जानेवाली खुराककी तंगीकी खबरें लोगोंको घबराहटमें डालनेवाली हैं। अिस घबराहट और डरका नतीजा सचमुचके अकालसे ज्यादा भयानक होता है। जब मुझे अखबारसे त्रावणकोरमें खुराककी तंगीके बारेमें अेक पैरा पढ़कर सुनाया गया, तो मेरी अैसी ही हालत हुअी। अखबारमें लिखा था कि त्रावणकोरके निडर दीवान कहते हैं कि त्रावणकोरमें सिर्फ़ १५ दिनके लिअे खुराक बाकी है। मैं त्रावणकोरको अितनी अच्छी तरहसे जानता हूँ कि अिस खबरसे मैंने त्रावणकोरके लिअे

ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तानके लिअे तरह-तरहकी कठिनाअियोंकी तसवीरें अपने सामने खड़ी कर लीं। त्रावणकोरकी ज़मीन खूब अुपजाअू है। वहाँ खाने लायक़ कन्द-मूल पैदा होते हैं, नारियल होते हैं, मछलियाँ होती हैं। वहाँ तो बाहरसे कुछ न जाय, तो भी लोगोंको अेक दिनके लिअे भी भूखे रहनेकी ज़रूरत नहीं। त्रावणकोरमें मेरे विश्वासने मुझे हिम्मत बँधाये रखी, और मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुअी कि त्रावणकोरमें तंगी खुराककी नहीं थी, गेहूँ और चावलकी ही थी। त्रावणकोरमें गेहूँ पैदा नहीं होता, चावल ही अुगता है। जहाँ तक अनाजका सम्बन्ध है, त्रावणकोरी भाअी चावल ही खाते हैं। बहुत तंगीमें आने पर ही मुश्किलसे वे गेहूँ खानेको तैयार होते हैं। कितना अच्छा हो, अगर अिस कठिनाअीके परिणामस्वरूप हम अपनी प्रान्तीयता छोड़ सकें और अैसी आदतें बना लें कि जिस किसी प्रान्तमें जायँ, वहीं हमें घर-सा लगे। लेकिन अिस समय तो हिन्दुस्तानके सब ज़िम्मेदार आदमी अगर अपने-अपने प्रान्तोंको, जिलोंको और रियासतोंको साफ़-साफ़ कह दें कि खुराकके लिअे वे दूसरे देशोंकी तरफ़ न देखें, जितना हो सके खुद अुगावें और अपनी ही अुपज पर गुजारा करना सीखें, तो मेरा काम हो जाय। मेरे पास बहुतसे विश्वासपात्र लोगोंके पत्र आ रहे हैं। अगर वे असली हालतके सूचक हों, जैसा कि अुन्हें होना चाहिये, तो हमें भूखों मरनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। शाकाहारियोंके लिअे जीवन देनेवाली सब्जियाँ और थोड़ासा दूध और मांसाहारियोंके लिअे मछली, गोश्त वगैरा बस होंगे।

हिन्दुस्तानियोंको समझना चाहिये कि अभी तक बाहरसे तो नामकी ही खुराक हिन्दुस्तानमें आयी है। कअी दूसरे देश मदद करना चाहते हैं, पर बहुत करके वे खुद कठिनाअीमें हैं या अुनके पास अितनी माँगें हैं कि वे अुन्हें पूरा नहीं कर सकते। अुन सबके लिअे जहाजोंकी दिक़्क़त तो है ही। और जब अनाज हिन्दुस्तानमें पहुँचेगा, तब अुसे देशमें अेक जगहसे दूसरी जगह ले जानेकी दिक़्क़त खड़ी होगी। जगह-

जगह खुराक पहुँचाना और बाँटना, बड़े मुश्किल सवाल हैं। अिसलिअे व्यवहार-बुद्धि यही है कि हम कमर कस लें और अेक आवाज़से अपना अिरादा जाहिर कर दें कि हम अपनी खुराक खुद पैदा करेंगे और ज़रूरत पड़ी तो अुस कोशिशमें बहादुरीसे मर मिटेंगे।

यही अेक सही रास्ता है, दूसरा नहीं।

नअी दिल्ली, २१-९-'४६

हरिजनसेवक, २९-९-१९४६

३२

अनुचित बरबादी

अेक सज्जनने गेहूँ वगैराकी बरबादीके बारेमें अेक लम्बा पत्र लिखा है, जिसका सार नीचे दिया जाता है:

"अिस अव्यवस्थासे जो बरबादी होती है, अुसके पाँच खास कारण हैं —

१. गेहूँ वगैरा सँभाल कर रखनेके लिअे कोअी खास गोदाम नहीं हैं। अिस कारण चूहे, कीड़े वगैरा अुन्हें काफ़ी नुक़सान पहुँचाते हैं।

२. मण्डियोंमें, रेलके प्लैटफ़ार्म पर और फुटकर बिक्रीकी दुकानोंके सामने बरसते पानीमें भी गेहूँ खुला पड़ा रहता है।

३. यों भी मण्डियों और दुकानोंमें गेहूँके ढेर-के-ढेर खुले पड़े रहते हैं और हज़ारों चिड़ियाँ, गिलहरियाँ वगैरा अुन्हें खाती रहती हैं।

४. गेहूँ टाटके पुराने थैलोंमें अिधर-अुधर भेजा जाता है। अिसके कारण मनों गेहूँ गिर जाता है और रेलोंमें अुसकी चोरी भी आसानीसे होती है।

५. गेहूँ गाँवसे साफ़ होकर नहीं आता। अिससे किसानों और खरीदनेवालोंको नुक़सान होता है, और ज्यादा वजन होनेसे रेल वगैराका किराया भी फ़जूल देना पड़ता है।”

लेखक कहते हैं कि अकेले अच्छे गोदाम न होनेकी वजहसे सालमें ३५ लाख टन गेहूँ बरबाद होते हैं, और बाकी चार कारणोंसे १५ लाख टन। अिस तरह कुल सालाना नुक़सान ५० लाख टनका होता है। जो गेहूँ गोदाममें सँभालकर नहीं रखा जाता, अुसे चूहे वगैरासे नुक़सान पहुँचनेके अलावा, खुला पड़ा रहनेसे अुसके गुणमें भी कमी आ जाती है। गेहूँके व्यापारी लापरवाह हैं; और अिसमें सरकारकी लापरवाही न हो, तो भी अुसकी नालायकी और ढिलाअी तो है ही।

लेखककी राय है कि व्यापारियोंके लिअे क़ानूनसे यह लाज़िमी कर देना चाहिये कि वे अच्छे गोदाम बनायें। अुनके पास अैसा प्रबन्ध न हो, तो अुन्हें लाअिसेन्स देना बन्द किया जाय।

अगर मौजूदा मण्डियोंमें या जहाँ-जहाँ भी निकम्मे गोदाम हैं, अुनकी ठीक मरम्मत हो जाय, तो ५० फी सदी अनाजकी बरबादी तो फ़ौरन बन्द हो सकती है। अिससे वहाँ पानी और चूहे वगैरासे गेहूँ बचा रहेगा। नये गोदाम बनानेमें सरकारको सबसे पहले अुदाहरण पेश करना चाहिये, ताकि लोग अुनके फ़ायदोंको देखकर अुनकी ज़रूरत समझ लें।

लाहौर और लायलपुरके बीच हालमें गेहूँके हज़ारों थैले लेखकने अपनी आँखोंसे पानीमें भीगते देखे हैं। जिन अफ़सरोंके जिम्मे अुनकी देखभालका काम था, अुनमेंसे अेक भी वहाँ नहीं आया और गेहूँको बचानेकी ज़रा भी कोशिश नहीं की। अिस कारण अेक ही दिनमें ४०,००० मन गेहूँ खराब हो गया। अैसा ही हिन्दुस्तानमें दूसरी जगहों पर भी होता होगा।

पुराने थैलोंके बजाय नये दोहरे थैलोंका अुपयोग लाज़िमी किया जाना चाहिये।

जहाँ गेहूँ पैदा होता है, वहीं वह साफ़ भी किया जाय, तो अुसमेंसे जो छोटे दाने और छिलके निकलते हैं, वे पशुओं और मुर्गियोंको खिलाये जा सकते हैं। अिस तरह बोझा कम होनेसे रेलका किराया भी कम हो जायगा। किसानसे जो खोटके पैसे ले लिये जाते हैं, वे भी बच जायँगे।

सरकार आज जितना अनाज बाहरसे मँगाती है या जितने अनाजके आनेकी आशा रखती है, अुतना ही यहाँ बरबाद हो जाता है।

अिसके अलावा, लेखक कुछ और भी सूचनायें देते हैं, जो पहले भी 'हरिजन' में दी गअी हैं। जैसे, धनिक घरोंमें खुराककी बरबादीको रोकना; भाजी वगैरा ज्यादा अुगाना; जहाँ भी खेतीके लायक़ जमीन हो, वहाँ कुअें वगैरा बनाकर फ़ौरन खेती करना; खाद बनानेकी जो चीज़ें बरबाद होती हैं, अुन्हें खादके लिअे अिस्तेमाल करना; शहरोंमें गोबर जलानेके काममें न लेना, वगैरा।

नअी दिल्ली, १९–९–'४६ **अमृतकुँवर**

[जो सूचनायें अिस लेखमें दी गअी हैं, वे अैसी हैं कि अुन पर फ़ौरन ही अमल करना चाहिये। जो अनाज बचा, सो मिलनेके बराबर है। **— मो० क० गांधी**]

हरिजनसेवक, २९–९–१९४६

३३
अनाजका भाव

स० — अन्तरिम सरकारकी नीति अनाजकी क़ीमत कम करनेकी है। क्या अनाजकी पैदावार पर अिसका बुरा असर नहीं पड़ेगा?

ज० — मैं तो अनाजकी क़ीमत और भी कम कर देना चाहता हूँ। मैं खुद किसान हूँ। शायद आप नहीं जानते, मगर मैं जानता हूँ कि किसानोंको जितनी क़ीमत दी जाती है, वह अुनके घर नहीं पहुँचती। किसानोंको जो धक्का पहुँचा है और अनाजकी क़ीमत बढ़नेसे जो सवाल पैदा हो गया है, अुसको यदि अन्तरिम सरकार हल नहीं कर सकती, तो अुसे खतम हो जाना चाहिये। अन्तरिम सरकार किसानोंका गला घोंटकर आम लोगोंको सस्ता अनाज कभी नहीं दे सकती। माना कि अनाजकी क़ीमत ज्यादा है, मगर बीचके खानेवालों यानी व्यापारियों और दलालों वगैराकी वजहसे पूरी क़ीमत किसान तक नहीं पहुँचती। अगर अैसा न हो, तो अनाज पैदा करनेवालेका पेट भर जाय। मैंने तो खादीमें भी कताअीकी दर आठ आने तक ले जानेकी सूचना की थी और चार आने तक कताअीका दाम पहुँचा भी। कअी लोगोंने विरोध किया था कि कताअीका दाम बढ़नेसे खादी महँगी हो जायगी और अुसके ग्राहक नहीं मिलेंगे। पर मैंने अुसकी कोअी परवाह नहीं की। अिससे अनाज पैदा करनेवालोंको मेरे रुखका पता चल सकता है। मैं तो बीचके अिस व्यापारी और दलाल वर्गको बिलकुल निकाल दूँ। यही वर्ग है, जो किसानको चूसता है। वर्ना कोअी कारण नहीं कि किसान भूखों मरे। साथ ही, यह बात भी है कि जो किसान नफ़ाखोरी या कालाबाज़ार करता है, वह किसान नहीं रहता, बल्कि ज़मींदार-जैसा बन जाता है।

नअी दिल्ली, ३०-९-'४६

हरिजनसेवक, १३-१०-१९४६

३४

अनाजके खतरेको खुद टालो

पिछली २४ जनवरीको हशनाबादके लोगोंको राहत पहुँचानेवाली कांग्रेसकी कार्य-समितिके प्रतिनिधि मुरायममें गांधीजीसे मिले। अुन्होंने गांधीजीको यह बताया कि साम्प्रदायिक दंगोंके हमलेसे अपने हिस्सेको बचानेके लिअे हशनाबादके हिन्दुओं और मुसलमानोंने मिलकर लगभग १२०० आदमियोंका अेक मज़बूत स्वयंसेवक-दल किस तरह खड़ा किया है।

गांधीजीने कहा — "कुछ दिन पहले मैंने हशनाबादके बारेमें यह सुना था कि वह दंगेके दिनोंमें हिन्दू-मुस्लिम अेकताका अेक चमकदार नमूना रहा है।"

अिसके बाद मिलने आनेवालोंने अिस हिस्सेमें शुरू हुअे अन्न-संकटके बारेमें गांधीजीसे बात की और अुनसे पूछा — "बंगाल सरकारका ध्यान अिस ओर खींचनेके लिअे क्या आप अपने भाषणोंमें अिस संकटका कोअी ज़िक्र न करेंगे?"

गांधीजीने जवाब दिया — "हालाँकि मैं यहाँकी हालतको जानता हूँ, फिर भी मैं आनेवाले अन्न-संकटके बारेमें कुछ कह नहीं रहा हूँ। मैं अिस सवालको अपने ढंगसे हल करनेके बारेमें सोच रहा हूँ। मैं नहीं समझ पाता कि लोग मददके लिअे सरकार पर या दूसरी संस्थाओं पर क्यों भरोसा रखते हैं? आजकल हम सुनते हैं कि लोग विदेशोंसे अनाज मँगवानेकी कोशिश कर रहे हैं। सच बात तो यह है कि अगर लोग खुद अिस मामलेमें कुछ-न-कुछ करने लगें, तो सरकारको भी अिस बारेमें ज़रूरी कार्रवाअी करनी पड़े। अिसीको मैं सच्ची लोकशाही कहूँगा, क्योंकि अुसका अमल बिलकुल नीचेसे शुरू होता है और वहींसे

वह बनती आती है। बंगालकी ज़मीन बहुत अुपजाअू है। अुसमें आप खाने लायक़ कन्द-मूल पैदा कर सकते हैं। लेकिन लोगोंको अपने स्वाद और पुरानी आदतें बदलनेके लिअे राजी करना कठिन है। अिन नारियलके पेड़ोंको देखिये। खोपरा बड़ा अच्छा पौष्टिक भोजन है। मैं अुसकी आदत डालनेकी कोशिश करता हूँ। हाँ, मैं अुसका तेल ज़रूर निकाल डालता हूँ। बचे हुअे हिस्सेमें काफी प्रोटीन होता है। फिर बंगालकी भूमिमें पैदा होनेवाली आलूकी जातकी गाँठें लीजिये। वे पौष्टिक भोजनकी तरह खाअी जा सकती हैं। आपके यहाँ मछली भी बहुतायतसे मिलती है। मछली, खोपरा और ये गाँठें आसानीसे चावलकी जगह ले सकती हैं।"

प्रसंगवश गांधीजीने लोगोंके आलसीपनका ज़िक्र करते हुअे कहा — "आप अिस 'ह्येसिन्थ' की ही — जिसे यहाँ आप 'कचूरी पाना' कहते हैं — मिसाल लीजिये। अिसकी बेल पानीमें फैलकर जालकी तरह अुसपर छा जाती है। अगर सब लोग सरकारकी मददकी राह देखे बिना खुद ही स्वयंसेवक बनकर अेक हफ़्ता भी अिस काममें जुट जायँ, तो सात ही दिनोंमें वे अिन बेलोंकी बलासे छुटकारा पा जायँ और अूपरसे हज़ारों रुपयोंकी बचत भी कर सकें।"

हरिजनसेवक, ९-२-१९४७

३५

अनाजकी समस्या

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा :

" अनाजकी मौजूदा गंभीर परिस्थितिमें, डॉ० राजेन्द्रप्रसादको अपनी सलाहका लाभ देनेके लिअे अुनके आमंत्रण पर खुराकके विशेषज्ञ अिकट्ठा हुअे हैं । अिस महत्वकी बातमें कोअी भूल होनेसे लाखों आदमी भुखमरीसे मर सकते हैं । कुदरती या अिन्सानके पैदा किये हुअे अकालमें हिन्दुस्तानके करोड़ों नहीं, तो लाखों आदमी भूखसे मरे हैं । अिसलिअे यह हालत हिन्दुस्तानके लिअे नयी नहीं है । मेरी रायमें अेक व्यवस्थित समाजमें अनाज और पानीकी कमीके सवालको कामयाबीसे हल करनेके लिअे पहलसे ही सोचे हुअे अुपाय हमेशा तैयार रहने चाहियें । अेक व्यवस्थित समाज कैसा हो और अुसे अिस सवालको कैसे सुलझाना चाहिये, अिन बातोंपर विचार करनेका यह समय नहीं है । अिस समय तो हमें सिर्फ़ यही विचार करना है कि अनाजकी मौजूदा भयंकर तंगीको हम किस तरह कामयाबीके साथ दूर कर सकते हैं ।

स्वावलम्बन

" मेरा खयाल है कि हम लोग यह काम कर सकते हैं । पहला सबक जो हमें सीखना है, वह है स्वावलम्बन और अपने आप पर भरोसा रखनेका । अगर हम यह सबक़ पूरी तरह सीख लें, तो विदेशोंपर निर्भर रहने और अिस तरह अपना दिवालियापन जाहिर करनेसे हम बच सकते हैं । यह बात घमण्डसे नहीं, बल्कि सच्चाअियोंको ध्यानमें रखकर कही गयी है । हमारा देश छोटासा नहीं है, जो अपने अनाजके लिअे बाहरी मददपर निर्भर रहे । यह तो अेक छोटा-मोटा महाद्वीप है, जिसकी आबादी

चालीस करोड़के लगभग है। हमारे देशमें बड़ी-बड़ी नदियाँ, कभी क़िस्मकी अुपजाअू ज़मीन और कभी न चुकनेवाला पशुधन है। हमारे पशु अगर हमारी ज़रूरतसे बहुत कम दूध देते हैं, तो अिसमें पूरी तरह हमारा ही दोष है। हमारे पशु अिस योग्य हैं कि वे कभी भी हमें अपनी ज़रूरतके जितना दूध दे सकते हैं। पिछली कुछ सदियोंमें अगर हमारे देशकी अुपेक्षा न की गयी होती, तो आज अुसका अनाज सिर्फ़ अुसीको काफ़ी नहीं होता, बल्कि पिछले महायुद्धकी वजहसे अनाजकी तंगी भुगतती हुअी दुनियाको भी अुसकी ज़रूरतका बहुत कुछ अनाज हिन्दुस्तानसे मिल जाता। आज दुनियाके जिन देशोंमें अनाजकी तंगी है, अुनमें हिन्दुस्तान भी शामिल है। आज तो यह मुसीबत घटनेके बजाय बढ़ती हुअी जान पड़ती है। मेरा यह सुझाव नहीं है कि जो दूसरे देश राजी-खुशीसे हमें अपना अनाज देना चाहते हैं, अुनका अहसान न मानते हुअे हम अुसे लौटा दें। मैं सिर्फ़ अितना ही कहना चाहता हूँ कि हम भीख न माँगते फिरें। अुससे हम नीचे गिरते हैं। अिसमें, देशके भीतर अेक जगहसे दूसरी जगह अनाज भेजनेकी कठिनाअियाँ और शामिल कर दीजिये। हमारे यहाँ अनाज और दूसरी खाने-पीनेकी चीज़ोंको अेक जगहसे दूसरी जगह शीघ्रतासे भेजनेकी सहूलियतें नहीं हैं। अिसके साथ ही यह असंभव नहीं है कि अनाजकी फेर-बदलीके समयमें अुसमें अितनी मिलावट कर दी जाय कि वह खाने लायक ही न रहे। हम अिस बातसे आँखें नहीं मूँद सकते कि हमें अिन्सानके भले-बुरे सब तरहके स्वभावसे निपटना है। दुनियाके किसी हिस्सेमें अैसा अिन्सान नहीं मिलेगा, जिसमें कुछ-न-कुछ कमज़ोरी न हो।

विदेशी मददका मतलब

"दूसरे, हम यह भी देखें कि हमें दूसरे देशोंसे कितनी मदद मिल सकती है। मुझे मालूम हुआ है कि हमारी आजकी ज़रूरतोंके तीन फ़ी सदीसे ज़्यादा मदद हम नहीं पा सकते। अगर यह बात सही है, और मैंने कअी विशेषज्ञोंसे अिसकी जाँच कराअी है और अुन्होंने अिसे

सही माना है, तो मैं पूरी तरह मानता हूँ कि बाहरी मदद पर भरोसा करना बेकार है। यह ज़रूरी है कि हमारे देशमें खेतीके लायक़ जो ज़मीन है, अुसके अेक-अेक अिंच हिस्सेमें हम ज्यादा पैसे दिलानेवाली फसलोंकि बजाय रोज़मर्रा काममें आनेवाला अनाज पैदा करें। अगर हम बाहरी मददपर ज़रा भी निर्भर रहे, तो हो सकता है कि अपने देशके भीतर ही अपनी ज़रूरतका अनाज पैदा करनेकी जो ज़बरदस्त कोशिश हमें करनी चाहिये, अुससे हम बहक जायँ। जो पड़ती ज़मीन खेतीके काममें लाअी जा सकती है, अुसे हम ज़रूर अिस काममें लें।

केन्द्रीकरण या विकेन्द्रीकरण?

"मुझे भय है कि खाने-पीनेकी चीज़ोंको अेक जगह जमा करके, वहाँसे सारे देशमें अुन्हें पहुँचानेका तरीक़ा नुकसानदेह है। विकेन्द्रीकरणके ज़रिये हम आसानीसे काले बाज़ारका खात्मा कर सकते हैं और चीज़ोंको यहाँसे वहाँ लाने-ले जानेमें लगनेवाले समय और पैसेकी बचत कर सकते हैं। हिन्दुस्तानके अनाज पैदा करनेवाले देहाती लोग अपनी फसलको चूहों वग़ैरासे बचानेकी तरक़ीबें जानते हैं। अनाजको अेक स्टेशनसे दूसरे स्टेशन तक लाने-ले जानेमें चूहों वग़ैराको अुसे खानेका काफ़ी मौक़ा मिलता है। अिससे देशका करोड़ों रुपयोंका नुक़सान होता है और जब हम अेक-अेक छटाक अनाजके लिअे तरसते हैं, तब देशका हज़ारों मन अनाज अिस तरह बरबाद हो जाता है। अगर हरअेक हिन्दुस्तानी, जहाँ संभव हो वहाँ अनाज पैदा करनेकी ज़रूरतको महसूस करे, तो शायद हम भूल जायँ कि देशमें कभी अनाजकी तंगी थी। ज्यादा अनाज पैदा करनेका विषय अैसा है, जिसमें सबके लिअे आकर्षण है। अिस विषय पर मैं पूरे विस्तारके साथ तो नहीं बोल सका, मगर मुझे अुम्मीद है कि मेरे अितना कहनेसे आप लोगोंके मनमें अिसके बारेमें रुचि पैदा हुअी होगी और समझदार लोगोंका ध्यान अिस बातकी तरफ़ मुड़ा होगा कि हरअेक व्यक्ति अिस तारीफ़के लायक़ काममें मदद कर सकता है।

कमीका किस तरह सामना किया जाय ?

“अब मैं आपको यह बता दूँ कि बाहरसे हमको मिलनेवाले तीन फ़ी सदी अनाजको लेनेसे अिनकार करनेके बाद हम किस तरह अिस कमीको पूरा कर सकते हैं। हिन्दू लोग महीनेमें दो बार अेकादशीका व्रत रखते हैं। अिस दिन वे आधा या पूरा अुपवास करते हैं। मुसलमान और दूसरे फिरक़ोंके लोगोंको भी अुपवासकी मनाही नहीं है— खास करके जब करोड़ों भूखों मरते लोगोंके लिअे अेक-आध दिनका अुपवास करना पड़े। अगर सारा देश अिस तरहके अुपवासके महत्त्वको समझ ले, तो हमारे विदेशी अनाज लेनेसे अिनकार करनेके कारण जो कमी होगी, अुससे भी ज्यादा कमीको वह पूरी कर सकता है।

“मेरी अपनी रायमें तो अगर अनाजके रेशनिंगका कोअी अुपयोग है भी, तो वह बहुत कम है। अगर अनाज पैदा करनेवालोंको अुनकी मर्ज़ीपर छोड़ दिया जाय, तो वे अपना अनाज बाज़ारमें लायेंगे और हरअेकको अच्छा और खाने लायक़ अनाज मिलेगा, जो आज आसानीसे नहीं मिलता।

प्रेसिडेण्ट ट्रुमेनकी सलाह

“अनाजकी तंगीके बारेमें अपनी बात खतम करनेसे पहले मैं आप लोगोंका ध्यान प्रेसिडेण्ट ट्रुमेनकी अमेरिकन जनताको दी गयी अुस सलाहकी तरफ़ दिलाअूँगा, जिसमें अुन्होंने कहा है कि अमेरिकन लोगोंको कम रोटी खाकर युरोपके भूखों मरते लोगोंके लिअे अनाज बचाना चाहिये। अुन्होंने आगे कहा है कि अगर अमेरिकाके लोग खुद होकर अिस तरहका अुपवास करेंगे, तो अुनकी तन्दुरुस्तीमें कोअी कमी नहीं आयेगी। प्रेसिडेण्ट ट्रुमेनको अुनके अिस परोपकारी रुखपर मैं बधाअी देता हूँ। मैं अिस सुझावको माननेके लिअे तैयार नहीं हूँ कि अिस परोपकारके पीछे अमेरिकाका आर्थिक लाभ अुठानेका गन्दा अिरादा छिपा हुआ है। किसी अिन्सानका न्याय अुसके कामों परसे होना चाहिये, अुनके पीछे रहनेवाले अिरादेसे नहीं। अेक भगवानके सिवा और कोअी

नहीं जानता कि अिन्सानके दिलमें क्या है। अगर अमेरिका भूखे युरोपको अनाज देनेके लिअे अुपवास करेगा या कम खायगा, तो क्या हम अपने खुदके लिअे यह काम नहीं कर सकेंगे? अगर बहुतसे लोगोंका भूखसे मरना निश्चित है, तो हमें स्वावलम्बनके तरीकेसे अुनको बचानेकी पूरी-पूरी कोशिश करनेका यश तो कमसे कम ले ही लेना चाहिये। अिससे अेक राष्ट्र अूँचा अुठता है।

"हम अुम्मीद करें कि डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा बुलाअी गअी कमेटी तब तक अपना काम करती रहेगी, जब तक वह देशकी मौजूदा अनाजकी भयंकर तंगीको दूर करनेका कोअी व्यावहारिक तरीका नहीं ढूँढ़ निकालेगी।"

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ६–१०–'४७

हरिजनसेवक, १९–१०–१९४७

* * *

अनाजका कण्ट्रोल

कल अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें गांधीजीने अपने जो विचार ज़ाहिर किये थे, अुनका ज़िक्र करते हुअे अुन्होंने कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि अगर मेरे सुझाव पर अमल किया जायगा, तो २४ घण्टेके अन्दर अनाजकी तंगी काफ़ी हद तक दूर हो जायगी। विशेषज्ञ मेरे अिस सुझावसे सहमत हैं या नहीं, यह अलग बात है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ७–१०–'४७

हरिजनसेवक, १९–१०–१९४७

३६

खुराककी तंगी

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा : खुराकके सम्बन्धमें मैं कहूँगा कि आजका कण्ट्रोल और रेशनिंगका तरीका अस्वाभाविक और व्यापारके असूलोंके खिलाफ़ है। हमारे पास अपजाअू ज़मीनकी कमी नहीं है, सिंचाअीके लिअे काफ़ी पानी है और काम करनेके लिअे काफ़ी आदमी हैं। अैसी हालतमें खुराककी तंगी क्यों होनी चाहिये? जनताको अपने आपपर निर्भर रहनेका पाठ पढ़ाना चाहिये। अेक बार जब लोग यह समझ लेंगे कि अुन्हें अपने ही पाँवों पर खड़े रहना है, तो सारे वातावरणमें अेक बिजली-सी दौड़ जायगी। यह मशहूर बात है कि असल बीमारीसे जितने लोग नहीं मरते, अुससे कहीं ज्यादा अुसके डरसे मर जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप अकालके संकटका सारा डर छोड़ दें। लेकिन शर्त यही है कि आप अपनी ज़रूरतें खुद पूरी करनेका स्वाभाविक कदम अुठायें। मेरा पक्का विश्वास है कि खुराक परसे कण्ट्रोल अुठा लेनेसे देशमें अकाल नहीं पड़ेगा और लोग भुखमरीके शिकार नहीं होंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १०-१०-'४७

हरिजनसेवक, १९-१०-१९४७

३७

कण्ट्रोल हटा दिया जाय

डॉ० राजेन्द्रप्रसादने जो कमेटी क़ायम की थी, अुसने अपना सलाह-मशविरा खतम कर दिया है। अुसे सिर्फ़ अन्नकी समस्यापर ही विचार करना था। लेकिन मैंने कुछ समय पहले यह कहा था कि अनाज और कपड़ा दोनों परसे जल्दी-से-जल्दी कण्ट्रोल हटा दिया जाय। लड़ाअी खतम हो चुकी। फिर भी कीमतें अूपर जा रही हैं। देशमें अनाज और कपड़ा दोनों हैं। फिर भी वे लोगों तक नहीं पहुँचते। यह बड़े दुःखकी बात है। आज सरकार बाहरसे अनाज मँगाकर लोगोंको खिलानेकी कोशिश कर रही है। यह कुदरती तरीका नहीं है। अिसके बजाय, लोगोंको अपने ही साधनोंके भरोसे छोड़ दिया जाय। सिविल सर्विसके कर्मचारी आफिसोंमें बैठकर काम करनेके आदी हैं। वे दिखावटी कार्रवाअियों और फाअिलोंमें ही अुलझे रहते हैं। अुनका काम अिससे आगे नहीं बढ़ता। वे कभी किसानोंके संपर्कमें नहीं आये। वे किसानोंके बारेमें कुछ नहीं जानते। मैं चाहता हूँ कि वे नम्र बनकर राष्ट्रमें जो परिवर्तन हुआ है, अुसे पहचानें। कण्ट्रोलोंकी वजहसे अुनके अिस तरहके कामोंमें कोअी रुकावट नहीं होनी चाहिये। अुन्हें अपनी सूझ-बूझपर निर्भर रहने दिया जाय। लोकशाहीका यह नतीजा नहीं होना चाहिये कि वे अपने आपको लाचार महसूस करें। मान लीजिये कि अिस बारेमें बड़े-से-बड़े डर सच साबित हों और कण्ट्रोल हटानेसे हालत ज्यादा बिगड़ जाय, तो वे फिर कण्ट्रोल लगा सकते हैं। मेरा अपना तो यह विश्वास है कि कण्ट्रोल अुठा देनेसे हालत सुधरेगी। लोग खुद अिन सवालोंको हल करनेकी कोशिश करेंगे और अुन्हें आपसमें लड़नेका समय नहीं मिलेगा।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १७-१०-'४७

हरिजनसेवक, २६-१०-१९४७

३८

अनाजका कण्ट्रोल हटा दीजिये

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा : डॉ० राजेन्द्रप्रसादने प्रान्तोंके प्रधान मंत्रियों या अुनके प्रतिनिधियों और दूसरे जानकार लोगोंकी मीटिंग अिसलिअे बुलाअी है कि वे लोग अुन्हें अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें मदद और सलाह दे सकें। मुझे लगता है कि आज शामको मैं अिसी बड़े महत्वके विषयपर बोलूँ। अिन दिनों मैंने जो कुछ सुना है, अुससे मैं अपनी शुरूसे ही बनी हुअी अिस रायसे तिल भर भी नहीं हटा हूँ कि कण्ट्रोल पूरी तरह जल्दीसे जल्दी हटा दिये जायँ। अगर वे रखे भी जायँ, तो ६ माहसे ज्यादा तो हरगिज़ न रखे जायँ। अेक दिन भी अैसा नहीं जाता, जब मेरे पास अिस बारेमें पत्र और तार न आते हों। अुनमेंसे कुछ तो बहुत महत्वके लोगोंके होते हैं। सभीमें अिस बातपर ज़ोर दिया जाता है कि अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटा दिया जाय। मैं दूसरे यानी कपड़ेके कण्ट्रोलको फिलहाल छोड़ देता हूँ।

कण्ट्रोल बुराअी पैदा करता है

कण्ट्रोलसे धोखेबाजी बढ़ती है, सत्यका गला घोंटा जाता है, काला बाज़ार खूब बढ़ता है और चीज़ोंकी बनावटी कमी बनी रहती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि कण्ट्रोल लोगोंको बुजदिल बनाता है, अुनके काम करनेके अुत्साहको खतम कर देता है। अिससे लोग अपनी ज़रूरतें खुद पूरी करनेकी सीखको भूल जाते हैं, जिसे वे अेक पीढ़ीसे सीखते आ रहे हैं। कण्ट्रोल अुन्हें हमेशा दूसरोंका मुँह ताकना सिखाता है। अिस दुःखभरी बातसे बढ़कर अगर कोअी दूसरी बात हो सकती है, तो वह है बड़े पैमानेपर चलनेवाली आजकी भाअी-भाअीकी हत्या और लाखोंकी आबादीकी पागलपन भरी अदला-बदली। अिस अदला-बदलीसे लोग बिला

ज़रूरत मरते हैं, अुन्हें भूखों मरना पड़ता है, रहनेको ठीक घर नहीं मिलते और खासकर आनेवाले तेज जाड़ेसे बचनेके लिअे पहनने-ओढ़नेको ठीक कपड़े मयस्सर नहीं होते। यह दूसरी दुःखभरी बात सचमुच ज्यादा बड़ी दिखाअी देती है। लेकिन हम पहली यानी कण्ट्रोलकी बातको अिसीलिअे नहीं भुला सकते कि वह अितनी बड़ी-चढ़ी नहीं दिखाअी देती।

पिछली लड़ाअीसे हमें जो बुरी विरासतें मिलीं, खुराकका कण्ट्रोल अुन्हींमेंसे अेक है। अुस समय कण्ट्रोल शायद ज़रूरी था, क्योंकि बहुत बड़ी मात्रामें अनाज और दूसरी खानेकी चीज़ें हिन्दुस्तानसे बाहर भेजी जाती थीं। अिस अस्वाभाविक निर्यातका लाजिमी नतीजा यही होना था कि देशमें अनाजकी तंगी पैदा हो। अिसलिअे बहुतसी बुराअियोंके रहते हुअे भी रेशनिंग जारी करना पड़ा। लेकिन अब हम चाहें, तो अनाजका निर्यात बन्द कर सकते हैं। अगर हम अनाजके मामलेमें हिन्दुस्तानके लिअे बाहरी मददकी अुम्मीद न करें, तो हम दुनियाके भूखों मरनेवाले देशोंकी मदद कर सकेंगे।

मैंने अपने दो पीढ़ियोंके लम्बे जीवनमें बहुतसे कुदरती अकाल देखे हैं, लेकिन मुझे याद नहीं आता कि कभी रेशनिंगका खयाल भी किया गया हो।

भगवानकी दया है कि अिस साल बारिश अच्छी हुअी है। अिसलिअे देशमें खुराककी सच्ची कमी नहीं है। हिन्दुस्तानके गाँवोंमें काफी अनाज, दालें और तिलहन हैं। कीमतोंपर जो बनावटी कंट्रोल रखा जाता है, अुसे अनाज पैदा करनेवाले किसान नहीं समझते — वे समझ नहीं सकते। अिसलिअे वे अपना अनाज, जिसकी कीमत अुन्हें खुले बाजारमें ज्यादा मिल सकती है, कंट्रोलकी अितनी कम कीमतों पर खुशीसे बेचना पसन्द नहीं करते। अिस सचाअीको आज सब कोअी जानते हैं। अनाजकी तंगी साबित करनेके लिअे न तो लम्बे-चौड़े आँकड़े अिकट्ठे करनेकी ज़रूरत है और न बड़े-बड़े लेख और रिपोर्ट

निकालना ज़रूरी है। हम आशा रखें कि कोअी देशकी ज़रूरतसे ज्यादा बढ़ी हुअी आबादीका भूत दिखाकर हमें डरायेगा नहीं ।

अनुभवी लोगोंकी सलाह

हमारे मंत्री जनताके हैं और जनतामें से हैं । अुन्हें अिस बातका घमण्ड नहीं करना चाहिये कि अुनका ज्ञान अुन अनुभवी लोगोंसे ज्यादा है, जो मंत्रियोंकी कुर्सियों पर तो नहीं बैठे हैं, लेकिन जिनका यह पक्का विश्वास है कि कंट्रोल जितनी जल्दी हटे अुतना ही देशका फायदा होगा । अेक वैद्यने लिखा है कि अनाजके कंट्रोलने अुन लोगोंके लिअे, जो रेशनके खाने पर निर्भर करते हैं, खाने लायक अनाज और दाल पाना असंभव बना दिया है। अिसलिअे सड़ा-गला अनाज खानेवाले लोग गैर-ज़रूरी तौर पर बीमारियोंके शिकार बनते हैं ।

लोकशाही और विश्वास

आज जिन गोदामोंमें कंट्रोलका सड़ा-गला अनाज बेचा जाता है, अुन्हींमें सरकार आसानीसे अच्छा अनाज बेच सकती है, जो वह खुले बाजारमें खरीदेगी । अैसा करनेसे कीमतें अपने आप ठीक हो जायँगी और जो अनाज, दालें या तिलहन लोगोंके घरोंमें छिपे पड़े हैं, वे सब बाहर निकल आयेंगे। क्या सरकार अनाज बेचने और पैदा करनेवालोंका विश्वास नहीं करेगी ? अगर लोगोंको कानून-कायदेकी रस्सीसे बाँधकर अीमानदार रहना सिखाया जायगा, तो लोकशाही टूट पड़ेगी । लोकशाही विश्वास पर ही कायम रह सकती है । अगर लोग आलसके कारण या अेक-दूसरेको धोखा देनेके कारण मरते हैं, तो अुनकी मौतका स्वागत किया जाय । फिर बचे हुअे लोग आलस, सुस्ती और निर्दय स्वार्थके पापको नहीं दोहरायेंगे ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ३-११-'४७

हरिजनसेवक, १६-११-१९४७

३९

कंट्रोल हटा दिये जायँ

गांधीजीने प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें कहा: खुराक-मंत्रीने गैर-सरकारी लोगोंकी जो कमेटी बनाअी थी, अुसने अपनी रिपोर्ट अुनके सामने पेश कर दी है। अुस कमेटीकी सिफारिशों पर कोअी फैसला करनेमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादको मदद देनेके लिअे प्रान्तोंके जो मंत्री या अुनके प्रतिनिधि दिल्ली आये थे, अुनसे मैं मिला था। जब मैंने अिस मीटिंगके बारेमें सुना, तो मैंने डॉ० राजेन्द्रप्रसादसे कहा कि वे मुझे अुन लोगोंके सामने अपनी बात रखनेका मौका दें, ताकि मैं अुनके शकोंको दूर कर सकूँ। क्योंकि, मुझे अिसका पूरा विश्वास है कि अनाजका कंट्रोल हटानेकी मेरी राय बिलकुल ठीक है। डॉ० राजेन्द्रप्रसादने तुरंत मेरा प्रस्ताव मान लिया और मुझे मंत्रियों या अुनके प्रतिनिधियोंके सामने अपने विचार रखनेका मौका मिला। मुझे अपने पुराने दोस्तोंसे मिलकर बड़ी खुशी हुअी। मैं यह कहता रहा हूँ कि जहाँ तक साम्प्रदायिक झगड़ोंके बारेमें मेरी रायका सम्बन्ध है, आज अुसे कोअी नहीं मानता। लेकिन यह कह सकनेमें मुझे खुशी होती है कि खुराकके सवाल पर मेरी रायके बारेमें अैसी बात नहीं है। जब बंगालके गवर्नर मि० केसीसे मैं कअी बार मिला, तभीसे मेरी यह राय रही है कि हिन्दुस्तानमें अनाज या कपड़े पर कण्ट्रोल रखनेकी बिलकुल ज़रूरत नहीं है। अुस समय मुझे यह मालूम नहीं था कि मुझे लोगोंका समर्थन प्राप्त है या नहीं। लेकिन हालकी चर्चाओंमें यह जानकर अचरज हुआ कि मुझे जनताके जाने और अनजाने मेम्बरोंका बहुत बड़ा समर्थन प्राप्त है। अनाजकी समस्याके बारेमें मेरे पास जो बेशुमार पत्र आते हैं, अुनमें मुझे अेक भी पत्र अैसा याद नहीं आता, जिसके लेखकने मेरी रायसे अलग राय बताअी हो। मैं श्री घनश्यामदास

बिड़ला और लाला श्रीराम जैसे बड़े-बड़े लोगोंकी राय नहीं जानता, न मैं यही जानता हूँ कि अिस बारेमें मुझे समाजवादी पार्टीका समर्थन मिलेगा या नहीं। हाँ, जब डॉ० राममनोहर लोहिया मुझसे मिले, तो अुन्होंने अनाजका कंट्रोल हटा देनेकी मेरी रायका पूरा-पूरा समर्थन किया। मुझे यह कहनेमें कोअी हिचकिचाहट नहीं होती कि आज देशको अनाजकी जिस तंगीका सामना करना पड़ रहा है, अुसमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादका मार्गदर्शन अुनकी कमेटीके अेक या ज्यादा मेम्बर करें, न कि अुनका स्थायी स्टाफ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ६-११-'४७

हरिजनसेवक, १६-११-१९४७

४०

कंट्रोल हटानेकी तारीफ़में

[अनाजके कंट्रोलको हटानेके बारेमें अेक भाअीने बड़ा लम्बा लेख मेरे पास भेजा था। अुसमेंसे कुछ हिस्से नीचे दिये जाते हैं।

— मो० क० गांधी]

"रेशनको 1½ पौंडसे घटाकर ¾ पौंड कर देनेसे सरकारने और बड़ा कुचक्र पैदा कर दिया है। रेशन जितना ज्यादा घटाया जाता है, अुतना ही ज्यादा किसान छिपे तौर पर अनाज जमा करता है। वह जानता है कि रेशन जितना कम होगा, अुतनी ही काले बाजारकी माँग बढ़ेगी और अुतनी ही ज्यादा अुसकी आमदनी भी बढ़ेगी। वह छिपाकर अनाज अिकट्ठा करेगा और सरकारको अनाजकी पैदावारके सच्चे आँकड़े नहीं मिलेंगे। कम पैदावारके आँकड़े सरकारी विभागमें बेचैनी पैदा करेंगे तथा सरकार और ज्यादा रेशन घटानेकी बात सोचेगी। अिस तरह सरकार अपने

मापको चिन्तामें डालती है और सारे देशको भी चिन्तामें डुबोती है। अिस तरह यह कुचक्र चलता ही रहता है!

*　　　*　　　*

"अगर हम अिस बातपर सोचें कि हम कितना अनाज बाहरसे मँगाते हैं और कितना अनाज गोदामोंमें सड़ता है और फेंक दिया जाता है, तो हमें मालूम होगा कि बाहरसे मँगाये जानेवाले अनाजसे ज्यादा अनाज हम बरबाद कर देते हैं। अिस-लिअे हमें विदेशोंसे अनाज नहीं मँगाना चाहिये। हमें बरबादी कम करनी चाहिये — रोकनी चाहिये।

"अगर मामूली वक्तकी तरह अनाज खुले बाजारमें आज़ादीसे बेचा जाय, तो क्या कोअी गृहिणी अनाजका अेक दाना भी बिगड़ने और बरबाद होने देगी? वह अुसकी देखभाल करेगी, अुसे साफ करेगी, सावधानीसे अुसे जमा करेगी, समय-समयपर अुसे देखती रहेगी और अैसा प्रबन्ध करेगी कि बिगड़कर अनाजका अेक भी दाना फेंकनेकी नौबत न आने पाये। अगर हम अिस चीज़की तुलना सरकारकी नीतिसे और अुसके अनाज अिकट्ठा करनेके प्रबन्धसे करें, तो हमें यह समझमें नहीं आता कि हमारे बड़े-बड़े नेता, जो आज हमपर राज कर रहे हैं और जनतामेंसे चुने गये हैं, सारे देशमें बरते जानेवाले अनाजकी देखभालके तरीकेको क्यों नहीं जानते और वे अुस सादे और व्यावहारिक तरीकेको काममें लेनेके बजाय आजका बरबादीवाला तरीका क्यों काममें लेते हैं? अंग्रेजोंने खास कारणोंसे हमारे लिअे जो जाल तैयार किया था, अुसमें हमारे नेता क्यों फँसे रहते हैं? वे यह सब बातें साफ़-साफ़ क्यों नहीं समझते? सरकारी अफ़सर अनाजकी पैदावारके जो आँकड़े अुनके सामने रख देते हैं, जो कभी-कभी न तो पूरे होते हैं और न सही, अुनके अनुसार वे क्यों काम करते हैं?

*　　　*　　　*

"छः बरस पहले हमारे यहाँ अनाजकी जो सालाना पैदावार होती थी, अुससे आजकी पैदावार कम नहीं है। तबसे अब तक आबादीमें जो बढ़ती हुअी है, वह भी ज्यादा नहीं है। रेशनिंगवाले हिस्सेमें जो आबादीकी झूठी बढ़ती दिखाअी पड़ती है, वह कुछ हद तक जाली रेशनकार्डोंकी वजहसे है। लड़ाअीके दिनोंमें बहुतसा अनाज फ़ौजको दिया जाता था, जिसमेंसे कुछ अनाज तो बरबाद हो ही जाता था। मध्यपूर्वको भी हिन्दुस्तानसे अनाज भेजा गया था। आज ये हालतें हमारे यहाँ नहीं हैं। तब जनताको सवा पौंड रोज़ानाके हिसाबसे रेशन दिया जाता था। अिस तरह जान पड़ता है कि अुस समय हमारे यहाँ आजकी अपेक्षा ज्यादा अनाज स्टॉकमें था। छः साल पहले लोग अपने-अपने घरोंमें अपनी हैसियतके मुताबिक़ अपनी ज़रूरतकी चीज़ोंका १५ दिनसे लगाकर दो साल तकका स्टॉक जमा करके रखते थे। हर गाँवमें पुराने रिवाजके अनुसार बखारोंमें अनाज जमा करके रखा जाता था। हर व्यापारी, चाहे वह देहातका हो चाहे शहरका, अपने पास अनाजका बड़ा स्टॉक रखता था। जहाँ कहीं भी हम गये, हमने अनाजसे खचाखच भरे गोदाम देखे। ढेरों अनाज था। वह सब कहाँ गया? सारे देशसे वह गायब क्यों हो गया? सभी जगह लोग अकालकी चर्चा क्यों करते हैं? आज न जनताके पास, न व्यापारीके पास और न सरकारके पास कोअी स्टॉक है। अगर पैदावार कम है, तो स्वभावतः अनाज बाहर नहीं भेजा जा सकता। तब वह देशमें ही कहीं न कहीं रखा हुआ होना चाहिये। अुसे बाहर कैसे लाया जा सकता है? लोगोंमें कांग्रेसकी आलोचना करनेकी वृत्ति पैदा हो गयी है। अुनके अैसा करनेका कोअी सही कारण ज़रूर होना चाहिये। अुनके बदले हुअे रुखकी अुपेक्षा नहीं करना चाहिये। कांग्रेस, जिसके हाथमें आज हुकूमत है, मौजूदा कार्य-प्रणालीके दोषोंके कारण जनताको वह सब देनेमें

असमर्थ है, जो दरअसल देशमें आज मिल सकता है। जनता नाराज़ है और अपना स्वार्थ साधनेवाली पार्टियाँ अिस हालतसे फायदा अुठाकर कांग्रेसको बदनाम कर रही हैं। सिर्फ कांग्रेस ही अैसी संस्था है, जो देशमें शान्ति बनाये रख सकती है। अगर वह अेकबार भी जनता परसे अपना क़ाबू खो बैठे, तो आनेवाले तूफानको टालना अुसके लिअे असम्भव नहीं, तो बहुत मुश्किल ज़रूर हो जायगा। अगर मौजूदा हालतमें सुधार नहीं हुआ और अिसी तरह अुसे दिनोंदिन बिगड़ने दिया गया, तो संभव है कांग्रेसका जनतापर क़ाबू न रह जाय।"

हरिजनसेवक, २३–११–१९४७

४१
कण्ट्रोलका सवाल

प्रार्थना सभामें भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा : मैं आपको थोड़ी देर और रोकूँगा, ताकि कण्ट्रोलके सवालपर आपसे कुछ कहूँ। अिस सवालपर आजकल खूब चर्चा हो रही है। क्या अुन पंडितोंके शोरमें, जो कण्ट्रोलके बारेमें सब कुछ जाननेका दावा करते हैं, जनताकी आवाज़ डूब जायगी? हमारे मंत्री, जो कि जनतामें से चुने गये हैं और जनताके हैं, अच्छी तरह जानते हैं कि अिन दफ़्तरी निष्णातोंने सविनय अवज्ञा आन्दोलनके दिनोंमें अुन्हें कितना बड़ा नुक़सान पहुँचाया है। कितना अच्छा हो, अगर वे आज अिन पंडितोंकी बात सुननेके बजाय जनताकी आवाज़को सुनें। अुन दिनों अिन पंडितोंने पूरी कड़ाअीसे हुकूमत की थी। क्या आज भी अुन्हें अैसा ही करना चाहिये? क्या लोगोंको गलतियाँ करने और अुनसे सबक़ सीखनेका कोअी मौक़ा नहीं दिया जायगा? क्या मंत्री यह नहीं जानते कि अुन नमूनोंमें से, जो मैं नीचे दे रहा हूँ, अगर किसी अेक अुदाहरणमें भी कण्ट्रोल हटानेसे जनताको नुक़सान पहुँचे, तो वे अितनी ताक़त रखते हैं कि अुसपर फिरसे कण्ट्रोल लगा दें?

कण्ट्रोलोंकी जो सूची मेरे सामने है, अुससे मेरे जैसा सादा आदमी तो हैरान हो जाता है। अुनमेंसे कुछमें अच्छाअी हो सकती है। मैं तो सिर्फ अितना ही कहता हूँ कि अगर कण्ट्रोलोंकी साअिन्स नामकी कोअी चीज़ है, तो अुसे ठंडे दिलसे जाँचना होगा। अुसके बाद लोगोंको अिस बातकी शिक्षा देनी होगी कि सब चीज़ोंपर कण्ट्रोलका क्या अर्थ है और खास-खास चीज़ोंपर कण्ट्रोलका क्या अर्थ है। जो सूची मुझे मिली है, अुसके गुणोंकी जाँच किये बगैर, अुसमेंसे कुछ नमूने निकालकर नीचे देता हूँ: अेक्सचेंज पर, व्यापारमें रुपया लगानेपर, केपिटल अिन्स्योरेंस-पर, बैंकोंकी शाखाअें खोलनेपर, अिन्स्योरेंसमें पैसा लगानेपर, मुल्कके बाहर जाने और अन्दर आनेवाली हर तरहकी चीज़ोंपर, अनाजपर, चीनीपर, गुड़, गन्ना और शर्बतपर, वनस्पतिपर, कपड़ेपर (जिसमें गरम कपड़ा भी शामिल है), पावर अल्कोहोल पर, पेट्रोल और मिट्टीके तेलपर, कागज़पर, सीमेंटपर, फौलादपर, मोडलपर, मेंगनीज़पर, कोयलेपर, चीजोंके अिधर अुधर लेजाने पर, मशीनरी लगाने और फेक्टरी खोलने पर, कुछ प्रान्तोंमें मोटरें बेचनेपर और चायकी खेतीपर।

गांधीजीने कहा: जब तक देशमें अनाजकी तंगीकी भावना बनी रहेगी, तब तक हिन्दुस्तानके हर अमीर और गरीब नागरिकसे यह अपेक्षा रखी जायगी कि वह ज़रूरतसे ज्यादा अनाज काममें न ले। जब कण्ट्रोल हटा दिया जायगा, तब स्वभावसे यह आशा की जायगी कि अनाज पैदा करनेवाले अपनी मरजीसे अनाज जमा करना छोड़ देंगे और जनताको अुचित दामों पर अपने पासका अनाज और दालें देंगे। अनाज बेचने-वालोंसे यह अपेक्षा रखी जायगी कि वे अेकसा और अुचित मुनाफा लेकर सस्ते-से-सस्ते दामोंमें अनाज बेचनेका ज्यादा ध्यान रखेंगे और सरकारसे यह आशा रखी जायगी कि वह अनाजके कण्ट्रोलको धीरे-धीरे ढीला करेगी और अन्तमें जल्दी-से-जल्दी अुसे हटा देगी।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १७ व १८–११–'४७

हरिजनसेवक, ३०–११–१९४७

४२

सरकारकी दुविधा

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणके अन्तमें गांधीजीने कहा : अब मैं कण्ट्रोलोंके हटानेके बारेमें, खासकर अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटानेके बारेमें चर्चा करूँगा। सरकार कण्ट्रोल हटानेमें हिचकिचाती है, क्योंकि अुसका खयाल है कि देशमें अनाज और कपड़ेकी सच्ची तंगी है। अिसलिअे अगर कण्ट्रोल हटा दिया गया, तो अिन चीज़ोंके दाम बहुत बढ़ जायँगे। अिससे गरीबोंको बड़ा नुक़सान होगा। गरीब जनताके बारेमें सरकारका यह खयाल है कि वह कण्ट्रोलोंके ज़रिये ही भुखमरीसे बच सकती है और तन ढँकनेको कपड़ा पा सकती है। सरकारको व्यापारियों, अनाज पैदा करनेवालों और दलालोंपर शक है। अुसे डर है कि ये लोग कण्ट्रोलोंके हटनेका बाजकी तरह रास्ता देख रहे हैं, ताकि गरीबोंको अपना शिकार बनाकर बेअीमानीसे कमाये हुअे पैसेसे अपनी जेबें भर सकें। सरकारके सामने दो बुराअियोंमेंसे किसी अेकको चुननेका सवाल है। अुसका खयाल है कि मौजूदा कण्ट्रोलोंको हटानेके बदले अुन्हें बनाये रखना कम बुरा है।

व्यापारियोंसे अपील

अिसलिअे मैं व्यापारियों, दलालों और अनाज पैदा करनेवालोंसे अपील करता हूँ कि वे अपने प्रति किये जानेवाले अिस शकको मिटा दें और सरकारको यह विश्वास दिला दें कि अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटनेसे कीमतें अूँची नहीं चढ़ेंगी। कण्ट्रोल हटानेसे काला बाज़ार और बेअीमानी जड़से भले ही न अुखाड़ी जा सके, लेकिन अिससे गरीबोंको आजसे ज्यादा सुख और आराम मिलेगा।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २२-११-'४७

हरिजनसेवक, ३०-११-१९४७

४२

कण्ट्रोल

कण्ट्रोलकी बात करते हुअे गांधीजीने प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें कहा : चीनीपर से कण्ट्रोल अुठ गया है। मुझे आशा है कि कपड़े और खुराकपर से भी अुठ जायेगा। तब हमारा धर्म क्या होगा? चीनीके बड़े बड़े कारखाने हैं। चीनीपर से कण्ट्रोल अुठनेका यह अर्थ नहीं होना चाहिये कि अिन कारखानोंके मालिक जितने पैसे लोगोंसे छीन सकते हैं, छीन लें। हिन्दुस्तानके अधिकतर लोग गुड़ खाते हैं। गुड़ देहातोंमें बनता है। वह खानेमें स्वादिष्ट होता है; मगर चायमें लोग गुड़ नहीं डालते। अगर चीनीके दाम खूब बढ़ जायँ, तो आम लोग चीनी नहीं खा सकेंगे। चीनीके कारखाने चंद लखपतियोंके हाथमें हैं। अुन्हें निश्चय करना चाहिये कि आज़ाद हिन्दुस्तानमें तो वे शुद्ध कौड़ी ही कमायेंगे। व्यापारमें जितनी सड़ाँध है, अुसे दूर करेंगे। मान लीजिये कि चीनीका दाम अेकदम बढ़ जाता है, तो अुसका अर्थ यह होगा कि कल तक जो व्यापारी १०% नफ़ा लेता था, वह आज ५०% लेने लगा है। मेरी समझमें तो ५% से ज्यादा नफ़ा लेना ही नहीं चाहिये। कण्ट्रोल अुठनेसे चीनीके दाम बढ़नेका डर सिद्ध न हो, तो दूसरे अंकुश अपने आप निकल जायेंगे। गन्ना किसान बोता है। अुसे तो पूरा दाम मिलना ही चाहिये। लेकिन अिस कारणसे चीनीके दाम बहुत ज्यादा नहीं बढ़ सकते। व्यापारी अपना हिसाब साफ़ रखे। वह साफ बता दे कि अितना नफ़ा किसानकी जेबमें गया। अुसकी जेबमें ५% से अधिक नहीं गया। चीनीके कारखानोंके मालिकोंके बाद छोटे व्यापारी रहते हैं। वे अगर बेहद दाम बढ़ा दें, तो भी जनता मर जाती है। तो अुन्हें भी अीमानदारीसे व्यापार करना है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २९-११-'४७

हरिजनसेवक, ७-१२-१९४७

४४

कण्ट्रोल

गांधीजीने कहा: आजकल बात चल रही है कि कपड़ेका और खुराकका अंकुश छूट जानेवाला है। सब कहते हैं, अच्छा है, जल्दी छूटे। मगर छूटनेपर हमारा फ़र्ज़ क्या होगा? व्यापारियोंका फ़र्ज़ क्या होगा? अंकुश छूटनेपर सब कुछ अुनके हाथोंमें रहेगा। तो क्या वे लोगोंको लूटना शुरू कर देंगे? अगर अंकुश छूटता है, तो अुसमें मेरा भी हाथ है। मैंने अितना प्रचार किया है। मगर मैं यह भी कहूँगा कि सरकारको जो चीज़ नहीं जँचती, अुसे वह कर नहीं सकती। मैं नहीं चाहता कि वह अैसा करे। मैं तो तर्क कर लेता हूँ कि आज अगर १० मन अन्न है, तो अंकुश अुठनेपर २० मन हो जायगा। जिसे लोग दबाकर बैठ गये हैं, वह सब बाहर आ जायगा। आज किसानोंको पूरे दाम नहीं मिलते हैं, अिसलिअे वे अन्न नहीं निकालते। सरकार जबरदस्तीसे निकाल सकती है; निकाल रही है। व्यापारी लोग पुरानी हुकूमतमें मनमाने दाम लेते थे। लोगोंको लूटते थे। अब अुन्हें अेक कौड़ी भी अिस तरह लेना पाप समझना चाहिये। मुझे आशा है कि किसान अन्न बाहर निकालेंगे और व्यापारी शुद्ध कौड़ी कमायेंगे। तब सबको खाना-कपड़ा मिल जायगा। अगर कुछ कमी रहेगी, तो लोग अपने आप कम हिस्सा लेंगे। मैं यह नहीं चाहता कि अंकुश अुठनेसे लोग भूखों मरने लगें। अगर लोग अपना फ़र्ज़ नहीं समझते, खुद अपनेपर अंकुश नहीं लगाते, तो हमारी सरकारको हट जाना होगा। व्यापारी अगर अपना ही पेट भरें, दूसरोंको मरने दें, तो हमारी सरकार रहकर क्या करे? क्या वह नफाखोरोंको गोलीसे अुड़ा दे? अैसी ताक़त हमारे पास है नहीं। हमारी ३०–४० सालकी तालीम अिससे अुलटी रही है। गोली चलाकर राज्य

चल नहीं सकता। वह राज्य खोनेका रास्ता है। आशा तो यह है कि अंकुश अुठानेपर लोग साफ दिलसे सरकारकी सेवा करेंगे। सरकार सब कुछ खुद ही करना चाहे, तो वह कर नहीं सकती। वह पंचायत-राज्य नहीं होगा, रामराज्य नहीं होगा। लोग खुद अपनेपर अंकुश रखें, ताकि सरकार और सिविल सर्विसवाले कहें कि अंकुश अुठाया, तो अच्छा ही हुआ। आज तो सिविल सर्विसवाले कहते हैं कि गांधी क्या समझे! अंकुश अुठनेसे कीमतें अितनी बढ़ जायँगी कि लोगोंको भूखे और नंगे रहना होगा। मैं अैसा बेवकूफ़ नहीं। मैं सिविल सर्विसमें नहीं गया, हुकूमत मैंने नहीं चलाअी, मगर लाखों-करोड़ों लोगोंको पहचानता हूँ। अुसपरसे मैं कह सकता हूँ कि क्या होना चाहिये। कण्ट्रोल अुठनेसे अगर कालाबाजार बन्द हो गया, तो सबका डर निकल जायगा।

कपड़ेका कण्ट्रोल निकालना और भी आसान है। अपने लिअे पूरी खुराक पैदा कर सकनेके बारेमें शक है। मगर किसीने यह नहीं कहा कि हम अपने लिअे पूरे कपड़े नहीं बना सकते। हमारे पास हमारी ज़रूरतसे ज्यादा कपास होती है, मगर मिल तो आप सबके घरमें पड़ी है। अीश्वरने आपको दो हाथ दिये हैं। चरखा चलाअिये। लोग कातें और कपड़ा पहनें। कपासको बाहर बेचना सरकार रोक सकती है। मिलोंका कब्जा भी ले सकती है। मगर मिलोंका कपड़ा जिस हद तक कम पड़ता है, अुतना तो हम कात लें और बुन लें। जुलाहे तो बहुत पड़े हैं, मगर अुन्हें मिलका सूत बुननेका शौक हो गया है। आज लाचारीकी हालतमें तो हम हाथका सूत बुनें। फिर भले सब मिलें जल जायँ, तो भी यहाँ कपड़ेकी कमी नहीं होनी चाहिये। कपड़ेपर अंकुश रखना अज्ञानकी सीमा है। मैं तो अनाजके अंकुशको भी मूर्खता मानता हूँ। जैसे ही अंकुश अुठेगा, किसान कहेंगे कि हम तो लोगोंके लिअे बोते हैं। कोअी कारण नहीं कि जहाँ आज आधा सेर अनाज अुगता है, वहाँ कल पूरा अेक सेर न अुग सके। मगर अुपज बढ़ानेके तरीके हमें किसानोंको सिखाने हैं। अुसके साधन अुन्हें देने हैं। अगर सरकारकी

आज तक अुन्होंने गरीबोंको चूसा है और अुनमें आपस आपसमें भी स्पर्धा चलती आयी है। यह सब दूर करना होगा, खास करके खुराक और कपड़ेके बारेमें। अिन चीज़ोंमें नफ़ा कमाना किसीका हेतु नहीं होना चाहिये। अंकुश अुठनेसे अगर लोग नफ़ा कमानेमें सफल हो सके, तो अंकुश अुठानेका हेतु निष्फल जायेगा। हम आशा रखें कि पूँजीपति अिस मौकेपर पूरा सहकार देंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ८–१२–'४७

हरिजनसेवक, २१–१२–१९४७

४६
देहातोंमें संग्रहकी ज़रूरत

श्री वैकुण्ठभाअी लिखते हैं:

"आजकलकी व्यापार-पद्धतिका परिणाम यह होता है कि देहातोंका अनाज परदेश चला जाता है। देशके बहुतसे हिस्सेमें गाँवोंमें स्थानिक संग्रह नहीं रहता। परिणाममें मज़दूर-वर्गको कष्ट अुठाना पड़ता है और चौमासेमें अनाजका भाव खूब बढ़ जाता है। अैसी हालतमें यह अच्छा होगा कि गरीब प्रजाको बचानेके लिअे देहातमें ही पंचायतके कब्जेमें किसी अच्छे गोदाममें काफी मात्रामें अन्न अिकट्ठा किया जाय और वहींसे जहाँ भेजना हो, भेजा जाय। अिस दृष्टिसे चार साल पहले श्री अच्युतराव पटवर्धनने और मैंने अेक योजना तैयार की थी। श्री कुमारप्पाने जो योजना बनायी है, अुसमें भी अुन्होंने अिस तरहकी व्यवस्थाकी ज़रूरत स्वीकार की है।

"आजके नये संजोगोंमें आपको ठीक लगे, तो आप प्रान्तीय सरकारोंको और देहाती प्रजाको अिस बारेमें कुछ सूचना कर सकते हैं।"

मुझे तो अिस सूचनामें बहुत सचाअी मालूम होती है। हमारे देशकी अर्थव्यवस्थाके लिअे अैसे संग्रहकी ज़रूरत है। जबसे नकद रकमके

रूपमें लगान देनेकी प्रथा जारी हुअी, तबसे देहातोंमें अन्नका संग्रह कम हो गया है। यहाँ में नकद लगानके गुण-दोषोंमें अुतरना नहीं चाहता। मगर अितना में मानता हूँ कि अगर देहातोंमें अन्न-संग्रह करनेकी प्रथा चालू होती, तो आजकी विपदासे शायद हम बच जाते। जब अंकुश अुठ रहे हैं, तब अगर वैकुण्ठभाअीकी सूचनाके अनुसार देहातमें अन्नका संग्रह हो और व्यापारी और देहाती अीमानदार बन जावें, तो किसीको कष्ट नहीं होगा। अगर किसानको और व्यापारीको अुचित नफा मिले, तो मजदूर-वर्ग और शहरके दूसरे लोगोंको महँगाअीका सामना करना ही न पड़े। मतलब तो यह है कि अगर सबके अनुकूल जीवन बन जाय, तो फिर सस्ते और महँगे भावका सवाल नहीं रहेगा।

नअी दिल्ली, २२-१२-'४७

हरिजनसेवक, २८-१२-१९४७

४७

अंकुश हटानेका नतीजा

आज शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा: कहा जाता है कि खाने-पहननेकी चीज़ोंपर जो अंकुश है, वह जा रहा है। अुसका परिणाम मेरे सामने ब्रजकिशनजीने रख दिया है। मैंने सोचा कि आपके सामने भी वह रख दूँ। पहले गुड़ रुपयेका अेक सेर मिलता था, अब आठ आने सेर मिलने लगा है। यह बड़ी बात है। कोअी कारण नहीं है कि अिससे भी कम दाम नहीं होने चाहियें। जब मैं लड़का था, तब तो अेक आनेका सेर भर गुड़ मिलता था। अिसी तरह जो शक्कर पहले ३४ रुपये मन थी, वह अब २८ रुपये मन हो गयी है। मूँग, अुड़द और अरहरकी दाल अेक रुपयेकी १४ छटाँक मिलती थी, वह अब रुपयेकी डेढ़ सेर हो गयी है। अिसी तरह चना

२४ रुपये मन था और अब १८ रुपये मन हो गया है। गेहूँ काले बाज़ारमें ३४ रुपये मन था, वह अब २४ रुपये मन हो गया है। यह सब मुझे अच्छा लगता है। मुझे लोग कहते थे कि 'आप अर्थशास्त्र नहीं जानते; भावकी चढ़-अुतर नहीं समझते। आप तो महात्मा ठहरे। आप कहते हैं कि अंकुश अुठा दो। मगर अुसका नतीजा भोगना पड़ेगा ग़रीबोंको। ग़रीबोंको मरना पड़ेगा।' मगर आज तो अैसा लगता है कि ग़रीबोंको मरना नहीं तरना है। बाजरे और मक्कीपरसे भी अंकुश अुठाना चाहिये। बहुतसे लोग वही खाते हैं। डॉ० राजेन्द्रप्रसादने कहा है कि धीरे धीरे सब अंकुश अुठ जायँगे। अूपरके आँकड़ोंपरसे लगता है कि वे अुठने ही चाहियें। दियासलाअीके आज बड़े अूँचे दाम हैं। कंट्रोल अुठनेपर वे ज़रूर गिरेंगे। आज तो दियासलाअीका बकस अेक आनेका अेक आता है। पहले अेक आनेके १२ मिलते थे। दाम अगर बढ़ने हैं, तो वे महनत करनेवालोंके घर जायँ। मगर अिस कारणसे दाम बहुत नहीं बढ़ते। बहुत दाम बढ़नेका कारण होता है, तिजारत करनेका पाजीपन। हमने बहुत आपत्तियाँ सहन कीं। अब आज़ादी आ गयी। अब तो हम कहीं न कहीं शुद्ध काम करें! शुद्ध कौड़ी कमावें! दाम बढ़नेका डर अिसलिअे रहता है कि हम पाजी हैं, दगाबाज़ हैं, व्यापारी लोग शुद्ध कौड़ी कमाना नहीं जानते। यह सब कहते मुझे शर्म आती है। अैसी हालतमें पंचायत-राज कैसे कायम हो सकता है? हम सबको सिविल सर्विसके सिपाही बनना है। हम लोगोंके लिअे ही जिन्दा रहें, तो हमारे लोगोंमें जो अेक तरहका पाजीपन और दगाबाज़ी आ गयी है, वह निकल जायेगी। हम सीधे हो जायेंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १६–१२–'४७

हरिजनसेवक, २८–१२–१९४७

४८

कीमतें और अंकुशका हटना

आजकी प्रार्थनाके बादके भाषणमें गांधीजीने कहा: अेक भाअीका तार है कि आपने तो कहा था कि चीनीका भाव गिर गया है, मगर यहाँ तो बढ़ा है। अुसका जवाब यह है कि किसी जगहपर खास कारणसे भले बढ़ा हो, मगर दूसरी जगहोंपर कम हुआ है। दिल्लीमें शक्करका भाव कम हुआ है। शक्कर तो चीनीसे अच्छी है।

पेट्रोलपर अंकुश

अेक जगहसे दूसरी जगह माल ले जानेमें कठिनाअी होती है। डॉ० मथाअी कहते हैं कि अुनके पास माल ढोनेके डिब्बों और कोयलेकी कमी है। ये दिक़्क़तें दूर करनेकी कोशिश हो रही है। आश्चर्यकी बात है कि जब रेल नहीं थी, तब भी हमारा काम चलता था। मगर अब रेल है, मोटर है, हवाअी जहाज़ हैं, तो भी हमारे हाथ-पाँव फूल जाते हैं। रेलके अलावा लोगोंको और सामानको अिधर-अुधर ले जानेका ज़रिया मोटर है। मगर मोटर तो पेट्रोलसे ही चल सकती है और पेट्रोलपर अंकुश है। पेट्रोलका अंकुश अुठा दिया जाय, तो लारियोंवाले लारियाँ चला सकते हैं। नमकका कण्ट्रोल छूटा, मगर नमकका भाव बढ़ा। आज नमक मिलना मुश्किल हो गया है। अैसा ही पेट्रोलके बारेमें हो सकता है। मगर मुझे तो अुसमें हर्ज़ नहीं है। पेट्रोल अैसी चीज़ नहीं जिसकी सबको ज़रूरत हो। यदि लारियाँ चलने लगें, तो नमककी कमी पूरी हो सकती है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १९-१२-'४७

हरिजनसेवक, २८-१२-१९४७

४९

दिल्लीके व्यापारियोंको गांधीजीका सन्देश

जनमतकी ताकत

हार्डिन्ज लायब्रेरीमें आज तीसरे पहर व्यापारियोंकी अेक सभामें भाषण देते हुअे गांधीजीने कहा — "मैं समझता हूँ कि जो अंकुश अनाजपर लगाया जाता है, वह बुरा है। हिन्दुस्तानका हित अुसमें नहीं हो सकता। कपड़ेका अंकुश भी हटना चाहिये। आज जब हमें आजादी मिल गयी है, तो अुसमें हमपर कण्ट्रोल क्यों? जवाहरलालजी, सरदार पटेल वगैरा जनताके सेवक हैं। जनताकी अिच्छाके विरुद्ध वे कुछ नहीं कर सकते। अगर हम अुन्हें कहें कि आप अपने पदों परसे हट जाअिये, तो वे वहाँ रह नहीं सकते। वे रहना भी नहीं चाहते। वे लोग हमेशा कहते हैं कि हम तो लोगोंका ही काम करना चाहते हैं। हम लोगोंके सेवक हैं। बात सच भी है। ३२ बरससे हम अंग्रेजोंसे लड़ते आये हैं और हमने यह बता दिया है कि सच्ची लोकसत्ता कैसे चलती है। लेकिन हमारी सत्ता अंग्रेजों जैसी नहीं है। वे अिंग्लैण्डसे फ़ौज वगैरा ला सकते थे। हमारे पास वह सब नहीं है। लेकिन हमारे मन्त्रियोंके पास अिससे भी बड़ी ताक़त है। जवाहरलालजी, सरदार पटेल वगैराके पीछे फ़ौज और पुलिससे बढ़कर लोकमतकी ताकत है।

कण्ट्रोल लगानेका कारण

कण्ट्रोलकी ज़रूरत क्यों पड़ी? व्यापारियोंकी बेअीमानी और नफ़ाखोरीके डरसे ही कण्ट्रोल लगानेकी ज़रूरत पड़ी। अेक मज़दूरको अपनी मेहनतके लिअे जो पैसा मिलना चाहिये, अुससे ज्यादा अेक व्यापारीको अुसकी मेहनतके लिअे क्यों मिलना चाहिये? अुसे अधिक नहीं लेना चाहिये। अगर व्यापारी लोग अितना समझ लें, तो आज

हिन्दुस्तानमें हमें खाने-पहननेकी चीज़ोंकी जो मुसीबतें सहनी पड़ती हैं, वे न सहनी पड़ें। अगर हम आप अिस अंकुशको बरदाश्त नहीं करना चाहते, तो अुसे हटना ही होगा। अगर आप सच्चे हैं, मैं सच्चा हूँ, तो अंकुश रह नहीं सकेगा। हम सच्चे न रहें, तब तो अंकुश अुठनेसे हिन्दुस्तान मर जायेगा। व्यापारी मण्डलको और मिल-मालिकोंको आपसमें मिलना चाहिये, अुनके प्रति जो शक किया जाता है अुसे दूर करना चाहिये और अेक-दूसरेकी शक्ति बढ़ानी चाहिये। गीताजीका श्लोक है: "देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।" देव आसमानमें नहीं पड़े हैं। हमारी लड़कियाँ जैसे देवियाँ मानी जाती हैं, वैसे ही हम भी देव हैं। लेकिन कोअी अपनेको देव कहते नहीं, वह अच्छा भी है। वह मनुष्यकी नम्रता है। तो हम देवों जैसे शुद्ध बनें, शुद्ध रहें और सुखी रहें, तब हमारी गरीबी, भुखमरी, नंगापन वगैरा सब चला जायगा।

नअी दिल्ली, २८-१२-'४७

हरिजनसेवक, ४-१-१९४८

५०

कंट्रोलका हटना

गांधीजीने अपने प्रार्थनाके बादके भाषणमें कहा: मेरे पास अिस मतलबके काफी तार और पत्र आते हैं कि अंकुश हटनेका चमत्कारिक असर हुआ है। कपड़ेका कंट्रोल नहीं हटा, फिर भी दुशाल वगैरा बहुत सस्ते दामोंमें बिकते हैं। काले बाज़ारवाले लोगोंने समझ लिया है कि कंट्रोल अुठा नहीं, तो भी गांधी लोगोंकी आवाज सुनाता है और कंट्रोल अुठानेकी बात करता है; अिसलिअे कंट्रोल अुठेगा ही और पीछे काले बाज़ारकी चीज़ें वहीं पड़ी रहेंगी। अिसलिअे वे सस्ते दामोंमें बेचने लगे हैं। सुनता हूँ कि चीनीके ढेर-के-ढेर पड़े हैं। अेक रुपयेकी सेर भर चीनी

मिलती है। सौदा होता है और रुपयेके १५ आने और १४ आने कर दिये जाते हैं। हर जगहसे मुझे तार मिल रहे हैं कि अंकुश अुठनेसे हमें आराम है। सच्ची दुआ तो करोड़ोंकी ही मिलनी चाहिये। क्योंकि मैं तो करोड़ोंकी आवाज़ अुठाता हूँ; अिसलिअे वह चलती भी है। आज मैं कहता हूँ कि मुसलमानोंको मत मारो। अुन्हें अपना दुश्मन मत मानो, पर मेरी चलती नहीं। अिसलिअे मैं समझता हूँ कि वह करोड़ोंकी आवाज़ नहीं। मगर आप मेरी नहीं सुनते, तो बड़ी गलती करते हैं। आप जरा सोचें कि गांधीने अितनी बातें सही कहीं, तो क्या आज अिसमें भूल कर रहा है? नहीं, गांधी भूल नहीं करता। तुलसीदासने कहा है, दया धर्मका मूल है। वही मैं आपसे कहता हूँ। तुलसीदास पागल नहीं थे। अुनका नाम सारे हिन्दुस्तानमें चलता है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २८-१२-'४७

हरिजनसेवक, ४-१-१९४८

५१

लोकशाही कैसे काम करती है

[अेक माने हुअे मित्रने गांधीजीको बिना सोचे-समझे चीज़ोंपरसे कण्ट्रोल हटानेके बारेमें चेतावनी दी थी। गांधीजीने अुन्हें जो जवाब लिखा था, अुसमेंसे नीचेका हिस्सा लिया गया है।]

"आप अभी भी अिस तरह लिखते हैं मानों आप गुलाम हों, हालाँकि हमारी गुलामी अब खतम हो गयी है। अगर आपके कहनेके मुताबिक अंकुश हटनेका बुरा नतीजा हुआ है, तो आपको अुसके खिलाफ़ आवाज़ अुठानी चाहिये, चाहे अैसा करनेवाले आप अकेले ही क्यों न हों और आपकी आवाज़ कमज़ोर ही क्यों न हो। सच पूछा जाय तो

आपके बहुतसे साथी हैं और आपकी आवाज़ भी किसी तरह कमज़ोर नहीं है, बशर्ते कि सत्ताके नशेने अुसे कमज़ोर न बना दिया हो। अंकुश हटनेसे अूँचे चढ़नेवाले दामोंका भूत मुझे तो व्यक्तिगत रूपसे नहीं डराता। अगर हमारे बीच बहुतसे धोखेबाज लोग हैं और हम अुनका मुक़ाबला करना नहीं जानते, तो हम अुनके द्वारा खा लिये जाने लायक हैं। वे हमें ज़रूर खा जायँगे। तब हम मुसीबतोंका बहादुरीसे सामना करना जानेंगे। सच्ची लोकशाही लोग किताबोंसे या नामसे सरकार कहे जानेवाले लेकिन असलमें अपने सच्चे सेवकोंसे, नहीं सीखते। कठिन अनुभव ही लोकशाहीका सबसे अच्छा शिक्षक होता है। यह खत मैं अिस चेतावनीके लिअे नहीं लिख रहा हूँ कि आप मुझे तसवीरका अपना पहलू लिखकर न बतावें। लेकिन अिसका मकसद आपको यह बताना है कि मेरी अकेली आवाज़ सुनाअी दे, तो भी मैं अंकुश हटानेकी बातपर क्यों ज़ोर देता रहूँगा।

"लोकशाहीके शुरूआतके दिन बेसुरे रागोंकी तरह होते हैं, जो कानोंको बुरे मालूम होते हैं और सिरदर्द पैदा करते हैं। अगर लोकशाहीको अिन खा जानेवाले बेसुरे रागोंके बावजूद जिन्दा रहना है, तो बाहरसे बेसुरे मालूम होनेवाले कोलाहलके अिस ज़रूरी अनुभवमेंसे हमें सुन्दर सुर और सुमेल पैदा करना ही होगा।"

नअी दिल्ली, ११-१-'४८

हरिजनसेवक, १८-१-१९४८

अंकुश हटनेका नतीजा

मेरे पास बहुतसे पत्र और तार आ रहे हैं, जिनमें लोग अंकुश अुठनेपर मुझे बधाअी देते हैं और जिन चीज़ोंपर अभी अंकुश है अुसे भी हटानेको कहते हैं। अंग्रेजीमें लिखा हुआ अेक पत्र मैं यहाँ देता हूँ। पत्र लिखनेवाले भाअी अेक खासे अच्छे व्यापारी हैं। अुन्होंने मेरे कहनेसे अपने विचार लिखे हैं:

"आपके कहे मुताबिक मैं चीनी, गुड़, शक्कर और दूसरी खानेकी चीज़ोंका आजका भाव और अंकुश अुठनेसे पहलेका भाव नीचे देता हूँ:

	आजकलका भाव	नवम्बरमें अंकुश अुठनेसे पहलेका भाव
चीनी	३७॥ रु. मन	८० से ८५ रु. मन
गुड़	१३ से १५ रु. मन	३० से ३२ रु. मन
शक्कर	१४ से १८ रु. मन	३७ से ४५ रु. मन
चीनीके क्यूब	॥≈ आनेका अेक पैकेट	१॥ से १॥। रु. का अेक पैकेट
चीनी देशी	३० से ३५ रु. मन	७५ से ८० रु. मन

"आप देखते हैं कि चीनी आदिका भाव ५०फ़ी सैकड़ा गिर गया है।

अनाज

गेहूँ	१८ से २० रु. मन	४० से ५० रु. मन
चावल बासमती	२५ रु. मन	४० से ४५ रु. मन
मकअी	१५ से १७ रु. मन	३० से ३२ रु. मन
चना	१६ से १८ रु. मन	३८ से ४० रु. मन
मूँग	२३ रु. मन	३५ से ३८ रु. मन
अुड़द	२३ रु. मन	३४ से ३७ रु. मन
अरहर	१८ से १९ रु. मन	३० से ३२ रु. मन

दालें

चनेकी दाल	२० रु.	मन	३० से ३२ रु.	मन
मूँगकी दाल	२६ रु.	मन	३९ रु.	मन
अुड़दकी दाल	२६ रु.	मन	३७ रु.	मन
अरहरकी दाल	२२ रु.	मन	३२ रु.	मन

तेल

सरसोंका तेल	६५ रु.	मन	७५ रु.	मन"

मुझे लगता है कि अिन आँकड़ोंके खिलाफ कुछ नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि यह बात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा हो। अगर अैसा है तो ज्यादा जानकार लोग दूसरे आँकड़े बताकर मेरा अज्ञान दूर करनेकी कृपा करें। मैंने अूपर लिखी बातें मान ली हैं, क्योंकि जानकार लोगोंका मत भी अिसी तरफ़ है।

जब जनता किसी बातको मानती है और कोअी चीज़ चाहती है, तब लोकराजमें झिझकको कोअी स्थान नहीं रहता। जनताके प्रतिनिधियोंको जनताकी माँग ठीक रूपमें रखनी चाहिये, ताकि वह पूरी हो सके। जनताका मानसिक सहकार तो बड़ी-बड़ी लड़ाअियाँ जीतनेमें बहुत मदद दे चुका है।

पत्र लिखनेवाले भाअीने जो हक़ीकत बयान की है, वह सच्ची हो, तो चौंकानेवाली चीज़ है। अंकुश अमीरोंके लिअे आशीर्वाद रूप है और गरीबके लिअे लानत, हालाँकि अंकुश रखा जाता है गरीबोंकी खातिर। अगर अिजारेका रिवाज अिसी तरह काम करता है, तो अुसे अेक पलका भी विचार किये बिना निकाल देना चाहिये।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ५-१-'४८

हरिजनसेवक, १८-१-१९४८

ब. खेती

५३

मिश्र खाद

मिश्र खादका प्रचार करनेके लिअे मीराबहनकी प्रेरणा और अुत्साहसे दिल्लीमें अिस महीनेमें अेक सभा बुलवाअी गयी थी। अुसमें डॉ० राजेन्द्रप्रसाद सभापति थे। अिस कामके विशारद सरदार दातारसिंह, डॉ० आचार्य वगैरा भी अिकट्ठे हुअे थे। अुन्होंने तीन दिनके विचार-विनिमयके बाद कुछ महत्त्वके प्रस्ताव पास किये हैं। अुनमें यह बताया गया है कि शहरोंमें और ७ लाख गाँवोंमें अिस बारेमें क्या करना चाहिये। शहरोंमें और देहातोंमें मनुष्यके और दूसरे जानवरोंके मलको कूड़े-कचरे, चीथड़े व कारखानोंमेंसे निकले हुअे मैलके साथ मिलानेका सुझाव रखा गया है। अिस विभागके लिअे अेक छोटी सी अुप-समिति बनाअी गयी है। जिसके मेम्बर ये हैं: श्री० मीराबहन, श्री शिवकुमार शर्मा, डॉ० बी० अेम० लाल और डॉ० के० जी० जोशी।

अगर यह ठहराव सिर्फ़ अखबारोंमें छपकर ही न रह जाय और करोड़ों अुसपर अमल करें, तो हिन्दुस्तानकी शकल बदल जाय। हमारे अज्ञानके कारण जो करोड़ों रुपयोंकी खाद बरबाद हो रही है, वह बच जाय, जमीन अुपजाअू बने और जितनी फसल आज पैदा होती है, अुससे कअी गुनी ज्यादा फसल पैदा होने लगे। परिणाम यह होगा कि भुखमरी बिलकुल दूर हो जायगी। करोड़ोंका पेट भरनेके लिअे अन्न मिलेगा और अुसके बाद बाहर भी भेजा जा सकेगा।

आज तो जैसी अिन्सानकी और जानवरोंकी कंगाल हालत है, वैसी ही फसलकी है। अिसमें दोष ज़मीनका नहीं, मनुष्यका है। आलस और अज्ञान नामके दो कीड़े हमको खा जाते हैं। मीराबहनने जो काम अुठाया है, वह बहुत बड़ा है। अुसमें सैकड़ों मीराबहनें खप सकती हैं। लोगोंमें अिस कामके लिअे अुत्साह होना चाहिये। खेती-विभागके लोग जाग्रत होने चाहियें। करोड़ोंके करनेका काम थोड़ेसे सेवक-सेविकाओंसे नहीं हो सकेगा। अिसमें तो सेवक-सेविकाओंकी भारी फ़ौज चाहिये।

क्या हिन्दुस्तानका अैसा अच्छा भाग्य है? यहाँ हिन्दुस्तानका मतलब दोनों हिस्सोंसे है। अगर दक्षिणका हिस्सा यह काम शुरू कर दे, तो अुत्तरके हिस्सेने भी अुसे शुरू किया ही समझिये।

नअी दिल्ली, २१-१२-'४७

हरिजनसेवक, २८-१२-१९४७

* * *

हमारे यहाँ पूरी खुराक पैदा नहीं होती, क्योंकि हमारी ज़मीनको पूरी खाद नहीं मिलती। हम खाद बाहरसे लाते हैं। अुससे रुपया बरबाद होता है। ज़मीन भी बिगड़ती है। लोग जानवरोंके मलको कचरेके साथ मिलाकर जब खाद बनाते हैं, तब पता नहीं चलता कि वह खाद है। अुसे हाथमें ले लो, तो बदबू नहीं आती। हम कचरेमेंसे करोड़ों रुपये बना सकते हैं और अेक मनकी जगह दो मन, चार मन धान पैदा कर सकते हैं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १९-१२-'४७

हरिजनसेवक, २८-१२-१९४७

५४

खादके खड्डे

गाँवोंमें खादके खड्डे खोदनेकी ज़रूरतके बारेमें बताये गये श्री ब्रेनके सुझावोंके साथ आम तौरसे सहमत होते हुअे मगर साथ ही अुनकी अिस रायसे असहमत होते हुअे कि खादके खड्डे ६ फुट चौड़े और ६ फुट गहरे होने चाहिये, गांधीजीने लिखा : श्री ब्रेनने जैसे खड्डोंके लिअे लिखा है, वैसोंकी ही आम तौर पर सिफारिश की जाती है, यह मैं जानता हूँ। मगर मेरी रायमें श्री पूरेने जो अेक फुटके छिछले खड्डोंकी सिफारिश की है, वह अधिक वैज्ञानिक अेवं लाभप्रद है। अुसमें खुदाअीकी मज़दूरी कम होती है और खाद निकालनेकी मज़दूरी या तो बिलकुल ही नहीं होती या बहुत थोड़ी होती है। फिर अुस मैलेका खाद भी लगभग अेक सप्ताहमें ही बन जाता है। क्योंकि जमीनकी सतहसे ६ से ९ अिंच तककी गहराअीमें रहनेवाले जंतुओं, हवा और सूर्यकी किरणोंका अुसपर असर होता है, जिससे खड्डेमें दबाये जानेवाले मैलेकी बनिस्बत कहीं अच्छा खाद तैयार हो जाता है।

लेकिन मैला ठिकाने लगानेके तरीके कितने ही तरहके क्यों न हों, याद रखनेकी मुख्य बात तो यह है कि सब मैलेको खड्डेमें गाड़ा जरूर जाय। अिससे दुहरा लाभ होता है — अेक तो ग्राम वासियोंकी तन्दुरुस्ती ठीक रहती है, दूसरे खड्डोंमें दबकर बनी हुअी खाद खेतोंमें डालनेसे फसलकी वृद्धि होकर अुनकी आर्थिक स्थिति सुधरती है। यह याद रखना चाहिये कि मैलेके अलावा, जानवरोंके शरीरके अवयव आदि चीज़ें अलग गाड़ी जानी चाहियें।

हरिजनसेवक, ८-३-१९३५

५८

हम सब भंगी बनें

फाअुलर नामके अेक लेखकने 'संपत्ति तथा दुर्व्यय' (Wealth and Waste) नामकी अेक अंग्रेजी पुस्तकमें लिखा है कि मनुष्यका मैला अच्छी तरह ठिकाने लगाया जाय, तो प्रति मनुष्यके मैलेसे हर साल २ रु० की आमदनी हो सकती है। अनेक जगहोंमें तो आज सोने जैसा खाद यों ही पड़ा पड़ा नष्ट हो जाता है और अुल्टे अुससे बीमारियाँ फैलती हैं। अुक्त लेखकने प्रोफेसर ब्रुल्टीनीकी 'कूड़े कचरेका अुपयोग' (The Use of Waste Materials) नामक पुस्तकसे जो अुद्धरण दिया है, अुसमें कहा है कि 'दिल्लीमें रहनेवाले २,८२,००० मनुष्योंके मैलेमेंसे जो नाअिट्रोजन पैदा होता है, अुससे कमसे कम दस हजार और अधिकसे अधिक ९५ हजार अेकड़ जमीनको पर्याप्त खाद मिल सकती है।' मगर चूँकि हमने अपने भंगियोंके साथ अच्छी तरह बरताव करना नहीं सीखा है, अिससे प्राचीन कीर्तिवाली दिल्ली नगरीमें भी आज अैसें अैसे नरक कुंड देखनेमें आते हैं कि हमें अपना सिर शर्मसे नीचे कर लेना पड़ता है। अगर हम सब भंगी बन जायँ, तो यह हमें मालूम हो जायगा कि हमें खुद अपने प्रति कैसा बरताव करना चाहिये, और यह भी ज्ञान हो जायगा कि आज जो चीज जहरका काम कर रही है, अुसे हम पेड़ पौधोंके लिअे किस प्रकार अुत्तम खादमें परिणित कर सकते हैं। अगर हम मनुष्यके मलका सदुपयोग करें, तो डाक्टर फाअुलरके हिसाबके अनुसार भारतकी तीस करोड़की आबादीसे सालमें ६० करोड़ रुपयेका लाभ हो सकता है।

हरिजनसेवक, २२-३-१९३५

५६
मिश्र खाद

[अिन्दौरमें 'अिन्स्टिट्यूट ऑफ प्लान्ट अिण्डस्ट्री' नामकी अेक वैज्ञानिक संस्था है। जिनकी सेवा करनेके लिअे वह कायम की गयी है, अुनके लिअे वह समय-समय पर परचे छापा किया करती है। अिनमेंसे पहला परचा खेतकी बेकार समझी जानेवाली चीज़ोंसे कंपोस्ट (मिश्र खाद) बनानेके तरीकों और अुसके फ़ायदोंका बयान करता है। गोबर और मैला अुठाने, साफ करने या फेंकनेका काम करनेवाले हरिजनों और ग्रामसेवकोंके लिअे वह बहुत अुपयोगी है, अिसलिअे मैं कम्पोस्ट बनानेकी प्रक्रियाके वर्णनके साथ अुसके फुटनोटोंको भी जोड़कर लगभग पूरे परचेकी नक़ल नीचे देता हूँ। —मो० क० गांधी]

बहुत लम्बे समयसे यह बात समझ ली गअी है कि हिन्दुस्तानकी मिट्टियोंमें अुचित और व्यवस्थित ढंगसे प्राणिज तत्त्वोंकी कमी पूरी करना या अुन्हें फिरसे पैदा करना खेतीकी पैदावारको बढ़ानेकी किसी भी सफल योजनाका अेक ज़रूरी हिस्सा है। यह भी अुतनी ही अच्छी तरह समझ लिया गया है कि खलिहानोंमें तैयार की जानेवाली खादके मौजूदा साधन खादकी ज़रूरी मात्रा पूरी नहीं कर सकते। अिसके अलावा, यह बात तो है ही कि अिस खादके तैयार होनेमें नाअिट्रोजनका बड़ा हिस्सा बरबाद हो जाता है और अिस खादके ज्यादासे ज्यादा गुणकारी बननेमें बहुत लम्बा समय लग जाता है। हरी खाद शायद अिसकी जगह ले सकती है, लेकिन मौसमी हवा (monsoon) की अनिश्चितताके कारण हिन्दुस्तानके ज्यादातर हिस्सोंमें अुसका मिलना अनिश्चित ही रहता है। हरी खादका मिट्टीमें गलना या सड़ना भी कुछ समयके लिअे पौधोंके भोजनकी कमी पूरी करनेकी कुदरती प्रक्रियामें रुकावट डालता है, जो अुष्णकटिबन्धके प्रदेशोंमें

ज़मीनके अुपजाअूपनको कायम रखनेमें बड़े महत्त्वका काम करती है। साफ है कि ज़मीनको ह्यूमस तैयार करनेके बोझसे मुक्त करके अुसे जैव तत्त्वोंकी कमी पूरी करने और फसलको बढ़ानेके काममें ही लगे रहने देना सबसे अच्छा रास्ता है। अिसका सबसे आसान तरीका यह है कि खेतका काम चालू रखते हुअे खेतोंकी अैसी सारी बेकार चीज़ोंका, जिनकी अींधन या ढोरोंके चारेके रूपमें ज़रूरत नहीं होती, फायदा अुठाकर अुप-पैदावारके रूपमें ह्यूमस तैयार किया जाय।

यहाँ अिस बातपर ज़ोर देना ज़रूरी है कि खलिहान या बाड़ोंकी खादकी जगह लेनेवाली कोअी भी चीज़ बनावटमें ह्यूमसके साथ ज्यादासे ज्यादा समानता रखनेवाली होनी चाहिये। यही अिन्दौर पद्धतिका ध्येय है, जिसे वह सिद्ध करती है। अिस तरह अिन्दौर पद्धतिका अुद्देश्य अुन तरीकोंके अुद्देश्यसे बिलकुल अलग है, जो बहुत ज्यादा नाअिट्रोजन वाली सक्रिय खाद तैयार करते हैं, जिसकी खास अुपयोगिता बनावटी खादों जैसी ही होती है।

अिन्दौरके 'अिन्स्टिटयूट ऑफ प्लान्ट अिण्डस्ट्री' में होनेवाले कामने, जो श्री अेलबर्ट हॉवर्डके अिस दिशामें किये गये बीस बरसके परिश्रमका नतीजा है, अब निश्चित रूपसे यह सिद्ध कर दिया है कि अिन अुसूलोंको बड़ी आसानीसे अमलमें लाया जा सकता है। कम्पोस्टकी अिन्दौर पद्धति व्यावहारिक टेकनीक (तरीका) बताती है और विकासके नये रास्ते खोलती है। खेतों और शहरोंमें कचरा, मैला, वगैरा चीज़ोंके रूपमें जो अपार कुदरती साधन मौजूद हैं, अुनकी मिश्र खाद बनाकर खेतोंमें अुपयोग किया जा सकता और फ़ायदा अुठाया जा सकता है। खलीके निकास व गोबरके अींधनके रूपमें होनेवाले अुपयोगपर हमला किये बिना अिससे बहुतसी खाद मिल सकती है, साथ ही बनावटी खादोंके अिस्तेमालमें किफायत भी की जा सकती है, जो जैव तत्त्वोंकी मददसे ही अच्छेसे अच्छा नतीजा ला सकते हैं।

'युटिलाअिज़ेशन ऑफ अेग्रिकल्चरल वेस्ट' (हॉवर्ड अेण्ड वाड, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, १९३१) नामकी किताबमें अिस पद्धतिसे

सम्बन्ध रखनेवाली समस्याओं और अुसूलोंकी चर्चा की गयी है और अिन्दौर पद्धतिपर विस्तारसे प्रकाश डाला गया है। अिस लेखमें सिर्फ़ हिन्दुस्तानी किसानोंकी हालतोंपर लागू होनेवाले तरीकेकी कामचलाअू रूपरेखा ही थोड़ेमें दी गयी है।

हिन्दुस्तानकी सिंचाअीकी फसलोंके लिअे खलिहानकी खाद बहुत कीमती मानी गयी है। लेकिन बिना सिंचाअीवाली फसलोंके खेतोंमें भी समय समयपर थोड़ी खाद देते रहना अुतना ही ज़रूरी है। कम्पोस्ट बनानेकी अिन्दौर पद्धति जल्दी ही बड़ी मात्रामें ज्यादा अच्छी खाद तैयार करती है। अिसके अलावा, यह खाद देते ही तुरन्त फसलको सक्रिय रूपसे फ़ायदा पहुँचाती है, जब कि खलिहानकी खाद हमेशा अैसा नहीं करती। अगर सही ढंगसे तैयार की जाय, तो अिन्दौर पद्धतिकी मिश्र खाद तीन महीने बाद काममें ली जा सकती है और तब वह गहरे भूरे या कॉफीके रंगका बिखरा (amorphous) पदार्थ बन जाती है, जिसमें २०% के करीब कुछ अंशोंमें गला हुआ छोटी डलियोंवाला हिस्सा होता है, जिसका अंगुलियोंसे दबाकर तुरन्त भूसा किया जा सकता है। बाकीका हिस्सा गीला होनेके कारण (और अिसलिअे अुसके बिखरे कण फूले हुअे होते हैं) अुम्दा होता है और वह अेक अिंचमें छः छेदवाली छलनीसे छन जाता है। अिस खादमें नाअिट्रोजनकी मात्रा, अिस्तेमाल किये हुअे कचरे वगैराके गुणके मुताबिक, ·८ से लेकर १·० फी सदी या अिससे ज्यादा होती है। १०० या १२५ गाड़ी खेतमें मिलनेवाले सब तरहके कचरे और गोठानमें मिलनेवाली पेशाब जज़्ब की हुअी आधी मिट्टीके साथ अेक चौथाअी भाग ताज़ा गोबर मिलानेसे दो बैलोंके पीछे हर साल करीब ५० गाड़ी मिश्र खाद तैयार हो सकती है। आधी बची हुअी पेशाबवाली मिट्टी भी बड़ी अच्छी खाद होती है और वह सीधे खेतोंमें डाली जा सकती है। अगर अिससे ज्यादा कचरा मिल सके, तो सारे गोबर और पेशाबवाली मिट्टीसे करीब १५० गाड़ी मिश्र खाद बनाअी जा सकती है। अिन्दौरमें अेक गाड़ी मिश्र खाद बनानेका खर्च साढ़े ८

आने आता है। यहाँ ८ घंटे काम करनेके लिअे हर मर्दको ७ आने रोज और हर औरतको ५ आने रोज मज़दूरी दी जाती है।

१. अिन्दौर पद्धतिकी रूपरेखा

दूसरी तरहसे बेकार जानेवाली खेतकी चीज़ों, कचरे वगैराके साथ ताजा गोबर, लकड़ीकी राख और पेशाबवाली मिट्टीके मिश्रणको खड्डोंमें जल्दी सड़ाना ही अिस तरीकेका खास काम है। खड्डोंकी गहराअी २ फुटसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये। वे १४ फुट चौड़े होने चाहियें। अुनकी मामूली लम्बाअी ३० फुट होनी चाहिये। खड्डोंका यह नाप बड़े पैमाने और छोटे पैमाने दोनों तरहके कामके लिअे ठीक रहेगा। अुदाहरणके लिअे, खड्डेका ३ फुट लम्बा हिस्सा दो जोड़ी बैलोंके नीचे बिछाये हुअे बिछौनेसे ६ दिनमें भर सकता है। अिसके बाद ३ फुटका पासका हिस्सा भरा जाय। आगे चलकर हरअेक हिस्सेको स्वतंत्र अिकाअी समझा जाय। खड्डेमें डाली हुअी चीज़ों पर पानीका अेकसा छिड़काव किया जाता है, जिसमें थोड़ा गोबर, लकड़ीकी राख, पेशाबवाली मिट्टी और सक्रिय खड्डेमेंसे निकाली हुअी कुकुरमुत्ता (fungus) वाली खाद मिली रहती है। सक्रिय रूपसे सड़नेवाला कम्पोस्ट जल्दी ही कुकुरमुत्ता अुगनेसे सफ़ेद हो जाता है। बादमें यह नये खड्डोंके कचरे, गोबर वगैराको जोरोंसे सड़ानेके काममें लिया जाता है। पहले पहल जब कुकुरमत्तावाली खाद नहीं मिलती, तो ढोरोंके बिछौनेके साथ थोड़ी हरी पत्तियाँ बिछाकर कुकुरमुत्ता अुगानेमें मदद ली जाती है। खड्डेकी चीज़ोंको गलानेका काम शुरू करनेवाले पदार्थ (starter) में पूरी सक्रियता ३-४ बार अैसी क्रिया हो चुकने के बाद आती है। खड्डेकी सतह पर पानी छिड़कने और भीतरकी चीज़ोंको पलटते रहनेसे नमी और हवाको नियमित रखकर अिसकी सक्रियता कायम रखी जाती है। अिसमें दूसरी बार स्टार्टरकी थोड़ी मात्रा जोड़ी जाती है, जो अिस वक्त ३० दिनसे ज्यादा पुराने खड्डेसे लिया जाता है। सारा ढेर जल्दी ही बहुत गरम हो जाता है और लम्बे समय तक वैसा बना

रहता है। व्यवस्थित ढंगसे सब काम किया जाय, तो बड़ा अच्छा मिश्रण तैयार होता है और अुसे काफी हवा भी मिलती रहती है। पानीका साधारण छिड़काव अेकदम चीज़ोंको गलाना शुरू कर देता है, जो आखिर तक लगातार चालू रहता है। और अन्तमें बिलकुल अेकसी अुम्दा खाद बन जाती है।

२. खड्डे बनाना

गोठानके पास और संभव हो तो पानीके किसी साधनके पास अच्छी तरह सूखा हुआ ज़मीनका हिस्सा चुन लीजिये। ३० फुट × १४ फुट × २ फुटका खड्डा बनानेके लिअे अेक फुट मिट्टी खोदकर किनारोंपर फैला दीजिये; अैसे खड्डे दो दो की जोड़में खोदे जायँ। अुनकी लम्बाअी पूर्वसे पश्चिमकी ओर रहे। अेक जोड़के दो खड्डोंके बीच ६ फुटकी दूरी रहे और अैसी हर जोड़ी अेक दूसरेसे १२ फुट दूर रहे। तैयार कम्पोस्टके ढेर और बारिशमें लगाये जानेवाले ढेर अिन चौड़ी जगहों पर किये जाते हैं, जो हरअेक ढेरसे सीधे गाड़ीमें खाद भर कर ले जानेके लिअे भी अुपयोगी होती हैं।

३. मिट्टी और पेशाब

ढोरोंकी पेशाबमें कीमती खादके तत्त्व होते हैं और खलिहानकी खाद बनानेके मामूली तरीकेमें वह ज्यादातर बरबाद ही होती है। गोठानमें पक्का फर्श बनाना खर्चीला होता है और बैलोंके लिअे अच्छा नहीं होता। ढोरोंके अुठने-बैठने और सोनेके लिअे खुली मिट्टीका मुलायम, गरम और सूखा बिछौना सस्तेमें बनाया जा सकता है। मिट्टीकी ६ अिंचकी परत गन्दगी फैलाये बिना ढोरोंकी सारी पेशाब जज़्ब करनेके लिअे काफी होगी, बशर्ते कि ज्यादा गीले हिस्से रोज साफ कर दिये जायँ, अुनमें थोड़ी नयी मिट्टी डाल दी जाय और मिट्टीपर थोड़ा न खाया हुआ घास बिछा दिया जाय। हर चार महीनेमें यह पेशाबवाली मिट्टी हटा दी जाय और अुसकी जगह नयी मिट्टी डाली जाय। अुसका ज्यादा अच्छा हिस्सा कम्पोस्ट बनानेके लिअे रख छोड़ा जाय और ज्यादा बड़े

ढेले सीधे खेतोंमें डाल दिये जायँ। यह बड़ी जल्दी काम करनेवाली खाद होती है, जो खास तौरपर सिंचाअीकी फसलको अूपरसे दी जाती है।

हरिजन, १७-८-१९३५

५७

मिश्र खाद

(चालू)

४. गोबर और राख

रोज मिल सकनेवाले गोबरका सिर्फ़ अेक चौथाअी हिस्सा ही ज़रूरी है; यह पानीमें मिलाकर प्रवाही रूपमें छिड़का जाता है। ज़रूरत हो तो बचे हुअे गोबरको अींधनकी तरह काममें लिया जा सकता है। रसोअीघर और दूसरी जगहोंसे लकड़ीकी राख सावधानीसे अिकट्ठी करनी चाहिये और किसी ढँकी हुअी जगहपर अुसका संग्रह रखा जाय।

५. खेतका कचरा

हर तरहके पौधोंके कचरेसे, जिसकी खेतमें दूसरी तरहसे ज़रूरत न हो, कम्पोस्ट बनाया जा सकता है। अिस कचरेमें ये सब चीज़ें आ सकती हैं: घासपात, कपास, मटर और तिलके डंठल, टेसूके पत्ते, अलसी, सरसों, काले और हरे चनोंके डंठल, गन्नेका कूचा और छिल्का, जुआर और गन्नेकी जड़ें, पेड़ोंके गिरे हुअे पत्ते और घास-चारे, कड़बी वग़ैराके न खाये हुअे हिस्से। कड़ी चीज़ोंको कुचलना होगा। सिंधमें कच्ची और मुलायम सड़कों पर भी यह काम कामयाबीके साथ किया गया है। वहाँ गाड़ीके रास्तेपर अैसी चीज़ें फैला दी जाती हैं और कुचले हुअे हिस्सोंको समय समय पर अुठाकर अुनकी जगह दूसरी कड़ी चीज़ें फैला दी जाती हैं। ठूँठ और जड़ों जैसे बहुत कड़े हिस्सोंको (कुचलनेके अलावा) कमसे कम

दो दिन तक पानीमें भिगोने या दो तीन माह तक गीली मिट्टी या कीचड़के नीचे गाड़नेकी ज़रूरत रहेगी। अिसके बाद ही वे अच्छी तरह काममें लिये जा सकते हैं। कीचड़के नीचे गाड़नेका काम बारिशमें आसानीसे किया जा सकता है। हरी चीज़ें कुछ हद तक सुखा ली जायँ और फिर अुनकी गंजी लगायी जाय। थोड़ी-थोड़ी अलग अलग चीज़ोंकी अेक साथ गंजी लगायी जाय और बड़ी मात्राकी हरअेक चीज़के लिअे अलग गंजी बनायी जाय। अिन चीज़ोंको कम्पोस्टके खड्डेमें ले जाते समय अिस बातका ध्यान रखना चाहिये कि सब तरहकी चीज़ोंका मिश्रण किया जाय; खड्डेमें डालनेके लिअे अुठाअी जानेवाली सारी चीज़ोंकी कुल मात्राके अेक तिहाअीसे ज्यादा कोअी चीज़ खड्डेमें नहीं डालना चाहिये। पानीमें भिगोअी या मुलायम बनायी हुअी सख्त जड़ें, डंठल वगैरा अेक बारमें बहुत थोड़ी मात्राओंमें ही काममें लिये जाने चाहियें। अगर मामूली तौर पर मिल सकनेवाली अलग अलग चीज़ोंको अैसी मात्राओंमें अिकट्ठा और अिस्तेमाल किया जाय कि सालभर तक वे मिलती रहें, तो यह सब अपने आप हो जाता है। सन या अिसी तरहकी दूसरी खरीफ़ फसलके अुपयोगसे कम्पोस्टको और ज्यादा गुणकारी बनाया जा सकता है। अिसे हरी ही काटना चाहिये और सूखने पर ढेर लगाना चाहिये। अिससे रबी फसल बोनेके समय ज़मीन साफ़ मिलेगी और सन बोनेसे अिस फसलको फ़ायदा पहुँचेगा।

६. पानी

अगर कम्पोस्ट तैयार करनेकी ज़मीनके पास अेक छोटा खड्डा या हौज़ बनाकर अुसमें नहाने-धोनेका गन्दा पानी अिकट्ठा किया जाय और रोज़ काममें लिया जाय, तो मेहनत बचेगी और फ़ायदा भी होगा। लम्बे समय तक अेक जगह पड़ा रहनेवाला कोअी भी पानी नुकसानदेह होगा। अिससे ज्यादा पानीकी ज़रूरत हो, तो दूसरी तरहसे अुसका प्रबन्ध करना चाहिये। मौसमके मुताबिक अेक गाड़ी कम्पोस्ट तैयार करनेके लिअे चार गैलनके ५० से ६० तक पानीसे भरे पीपोंकी ज़रूरत होती है।

७. तफसील

खड्डोंका भरना: ४ फुट लम्बा और ३ फुट चौड़ा अेक पाल या टाटके टुकड़ेका स्ट्रेचर (जिसके लम्बे किनारे ७॥ फुट लम्बे दो बाँसोंमें फँसे हों) लीजिये। गोठानके फर्शपर, जहाँ ढोर अुठते-बैठते और सोते हैं, रोज अेक बैलके लिअे अेक पाल और अेक भैंसके लिअे डेढ़ पालके हिसाबसे खेतका कचरा फैला दीजिये। अिस कचरे पर ढोरोंका पेशाब गिरता और जज्ब होता है; साथ ही ढोर अुसे कुचल कर मिला देते हैं। बारिशमें यह बिछौना दो सूखे कचरेकी परतोंके बीचमें हरे लेकिन कुछ सूखे हुअे कचरेकी परत डालकर बनाया जाता है। घोल बनानेके बाद जो ताजा गोबर बचे, अुसके या तो कंडे बनाये जा सकते हैं या छोटी नारंगीके बराबर हिस्से करके अुसे ढोरोंके बिछौने पर फैलाया जा सकता है। घोल बनानेके बाद पेशाबवाली मिट्टीका और कुकुरमुत्तावाली खादका बचा हुआ हिस्सा दूसरे दिन सुबह ढोरोंके बिछौने पर छिड़क दिया जाता है, जब वह सीधे खड्डोंमें डालने और पतली परतोंमें फैलानेके लिअे फावड़ों और पालोंके जरिये सारे फर्शपर से अुठाया जाता है। बादमें अैसी हर परतको थोड़ी-थोड़ी लकड़ीकी राख, ताजा गोबर, पेशाबकी मिट्टी और कुकुरमुत्तावाली खादके घोलसे अेकसा गीला किया जाता है। ढोरोंका सारा बिछौना अुठा लेनेके बाद फर्श पर बिखरा हुआ बारीक कचरा भी झाड़ लिया जाता है, जो खड्डेकी अूपरी सतह पर बिछाया जाता है। सबसे अूपरकी परतको पानी छिड़ककर गीला किया जाता है और शामको व दूसरे दिन सुबह और ज्यादा पानी छिड़ककर अुसे पूरी तरह भिगो दिया जाता है। मिलनेवाले कचरेकी मात्राके मुताबिक अेक खड्डा या अुसका हिस्सा छः दिनमें सिरे तक भर ही दिया जाना चाहिये। अिसके बाद दूसरा खड्डा या अेक खड्डेका दूसरा हिस्सा अिसी तरह भरना शुरू किया जाय। खड्डेको भरते समय कचरेको पाँवसे दबाना **नुकसानदेह** होता है, क्योंकि अिससे हवा अन्दर नहीं जाने पाती।

बारिशमें खड्डे पानीसे भर जाते हैं। जब बारिश शुरू हो, तो खड्डोंका कचरा निकाल कर ज़मीन पर अिकट्ठा कर देना चाहिये जिससे अुसे अुलट-पुलट करनेका लाभ मिल जाय। बारिशके दिनोंमें ८ फुट × ८ फुट × २ फुटके ढेर जमीन पर बनाकर नया कम्पोस्ट बनाना चाहिये। ये ढेर खड्डोंके बीचकी चौड़ी जगहों पर बिलकुल पास पास किये जाने चाहियें, ताकि वे ठंढी हवासे बच सकें।

८ कम्पोस्टको पलटना और अुसपर पानी छिड़कना

सड़ते हुअे कम्पोस्टकी अूपरी सतहको हर हफ्ते पानीका छिड़काव करके नमी कायम रखी जाती है। खड्डेके भीतर बीच-बीचमें नमी और हवा पहुँचाते रहना ज़रूरी है, अिसलिअे खादको तीन बार पलटना चाहिये। हर पलटेके साथ पानीका छिड़काव करना चाहिये, जिससे नमीकी कमी पूरी की जा सके। गीले मौसममें पानीके छिड़कावकी मात्रा कम कर देनी चाहिये या पानी बिलकुल न छिड़कना चाहिये। लेकिन जब पहली बार खड्डा भरा जाय या ढेर लगाया जाय, तब तो हर मौसममें पानी छिड़कना ही चाहिये।

९. पहला पलटा — करीब १५ दिन बाद

सारे खड्डेसे अूपरकी न सड़ी हुअी परत निकाल डालिये और अुसे नया खड्डा भरनेके काममें लीजिये। फिर खुली हुअी सतह पर ३० दिन पुराना कम्पोस्ट फैलाअिये और सिरे पर अितना पानी छिड़किये कि लगभग ६ अिंच नीचे तक वह अच्छी तरह गीला हो जाय। पहले पलटेके समय खड्डेको लम्बाअीके हिसाबसे दो हिस्सोंमें बाँट दिया जाता है और हवाके रुखकी तरफके आधे हिस्सेको जैसेका तैसा रहने दिया जाता है। अुसे नहीं छेड़ा जाता। दूसरा आधा हिस्सा अुसपर डाल दिया जाता है (अिसके लिअे लकड़ीका घास अुठानेका औज़ार अच्छा काम देता है)। कचरेकी अेक परतके बाद दूसरी परत नहीं अुठानी चाहिये, बल्कि औज़ारको अिस तरह काममें लेना चाहिये कि जहाँ तक संभव हो, खड्डेके

सिरेसे पेंदे तकका कचरा साथमें निकल सके। पल्टे हुअे कचरेकी हर परतको, जो करीब छः अिंच मोटी होगी, पानी छिड़ककर अच्छी तरह भिगोना चाहिये। बारिशमें सारा ढेर पल्टा जा सकता है, ताकि अुसकी अूँचाअी ज्यादा न बढ़ जाय।

१०. दूसरा पल्टा—करीब अेक माह बाद

खड्डेके आधे हिस्सेका कचरा अुसकी खाली बाजूमें औज़ारसे पल्ट दिया जाता है और अुस पर काफ़ी पानी छिड़का जाता है। अिसमें भी सिरेसे पेंदे तककी खादको मिलानेका ध्यान रखना चाहिये।

११. तीसरा पल्टा—दो माह बाद

अिसी तरह कम्पोस्ट फावड़ेसे खड्डोंके पासकी चौड़ी जगहों पर फैला दिया जाता है और अुसपर पानी छिड़का जाता है। दो खड्डोंकी खाद बीचकी खुली जगह पर १० फुट चौड़ा और ३½ फुट अूँचा ढेर बनाकर अच्छी तरह फैलायी जा सकती है। ढेरकी लम्बाअी कितनी भी रखी जा सकती है और अिस तरह बहुतसे ढेर साथ साथ लगाये जा सकते हैं। अगर सुभीता हो, तो खादको पानी छिड़क कर खड्डोंसे गाड़ीमें भरकर सीधे खेतोंमें ले जाया जा सकता है। जिस ज़मीनमें खादका अुपयोग करना हो, वहीं अुसका ढेर लगाना चाहिये। अिससे बुवाअीके मौसममें कीमती समय बच सकेगा। सब ढेर अूँचे और चपटे सिरवाले होने चाहियें, ताकि वे बहुत ज्यादा सूख न जायँ और अुनमें खाद बननेकी प्रक्रिया बन्द न हो जाय।

अच्छा कम्पोस्ट किसी भी समय बदबू नहीं करता और सारा अेकसे रंगका होता है। अगर वह बदबू करे या अुस पर मक्खियाँ बैठें, तो समझना चाहिये कि अुसे ज्यादा हवाकी ज़रूरत है। अिसलिअे खड्डेकी खादको पल्टना चाहिये और अुसमें थोड़ी राख और गोबर मिलाना चाहिये।

हर मामलेमें कचरे, गोबर वग़ैराकी कितनी मात्रा चाहिये, अिसका हिसाब नीचेके आँकड़ोंके आधार पर आसानीसे लगाया जा सकता है:

१२. चालीस ढोरोंके लिअे ज़रूरी मात्रा

छः दिन तक रोज खड्डे भरना : गोठानके फर्शपर ढोरोंकि विछौनेके लिअे विछाये हुअे कचरेकी और अुसे अुठानेके बाद झाड़ूसे अिकट्ठे किये हुअे बारीक कचरेकी अेक दिनमें खड्डेमें डाली जानेवाली मात्रा — ४० से ५० पालभर कर कचरा, जिस पर ४ तगारी (१८ अिन्च व्यासवाली और ६ अिन्च गहरी) कुकुरमुत्तावाली खाद, १५ तगारी पेशाबवाली मिट्टी और अींधनके रूपमें अुपयोग न किया जानेवाला फ़ाजिल गोबर फैलाया जाय।

घोल : गोठानके अेक दिनके कचरे वगैराके लिअे २० पीपे (चार गैलनके) पानी, ५ तगारी गोबर, १ तगारी राख, १ तगारी पेशाबवाली मिट्टी और २ तगारी कुकुरमुत्तावाली खाद।

पानी : गोठानके अेक दिनके कचरे वगैराके लिअे खड्डा भरते ही ६ पीपे पानी, १० पीपे पानी शामको और ६ पीपे दूसरे दिन सुबह।

अूपरी सतहका छिड़काव : हर बार २५ पीपे पानी।

पलटेके वक्त पानी : पहले पलटेके समय मौसमके मुताबिक ६० से १०० पीपे; दूसरे पलटेके समय ४० से ६० पीपे; तीसरे पलटेके समय ४० से ८० पीपे।

कुकुरमुत्तावाली खाद : पहले पलटेके वक्त १२ तगारी।

पत्रक

अेक तगारीमें भरी हुअी चीज़ोंकी मात्रा (दो पसरोंमें) और वज़न (पौंडमें)।

चीज़	मात्रा (पसरोंमें)	वज़न (पौंडमें)
ताजा गोबर	६ से ७	४०
पेशाबवाली मिट्टी	२० से २१	२२
लकड़ीकी राख	१५	२०
कुकुरमुत्तावाली खाद	५	२०
पहले पलटेके लिअे खाद	६	२०

कामका समयपत्रक

दिन	घटनायें
१	भरना शुरू होता है
६	भरना खतम होता है
१०	कुकुरमुत्ता जमता है
१२	पानीका पहला छिड़काव
१५ } १६ }	पहला पल्टा और अेक माह पुराना कम्पोस्ट मिलाना
२४	पानीका दूसरा छिड़काव
३०–३२	दूसरा पल्टा
३८	पानीका तीसरा छिड़काव
४५	„ चौथा „
६०	तीसरा पल्टा
६७	पानीका पाँचवाँ छिड़काव
७५	„ छठा „
९०	काममें लेनेके लिअे कम्पोस्ट तैयार

अगर परिस्थितियाँ पूरी तरह अिन्दौर पद्धतिसे कम्पोस्ट बनानेमें बाधक हों, तो नीचे लिखे ढंगसे कुछ अंशमें अुसके फायदे अुठाये जा सकते हैं :

कअी तरहका मिला हुआ कचरा ढोरोंके बिछौनेके लिअे अुपयोग किया जाय और दूसरे दिन सुबह हटानेके पहले अुसपर अूपर बताये मुताबिक जरूरी मात्रामें गोबर, पेशाबवाली मिट्टी और राख डाली जाय। यह सब कचरा बादमें अुस खेतकी मेंढ़पर ले जाया जाता है, जिसमें अुसका अुपयोग करना होता है या दूसरी किसी सूखी जगह पर ले जाया जाता है और ८ अिंच चौड़े और ३ अिंच अूँचे ढेरोंमें जमा किया जाता है। ढेरोंकी लम्बाअी सुविधाके अनुसार कितनी भी रखी जा सकती है। बारिश शुरू होनेके करीब महीने भर बाद ही अुनपर कुकुरमुत्ता जम

जायगा। अिसके बाद कोअी अैसा दिन चुनकर, जब आकाशमें बादल घिरे हों या थोड़ी बारिश हो रही हो, अुसे पूरी तरह पलट दिया जाता है। अेक महीने बाद अेक या दो बार फिर अुसे पलट देनेसे मौसम खतम होते होते वह सड़ जायगा, बशर्ते कि समय समय पर अच्छी बारिश होती रहे।

अलबत्ता, खाद तैयार होनेके पहले अेक बरस तक ठहरना ज़रूरी होगा। अगर बारिश बहुत कम हो, तो शायद ज्यादा भी ठहरना पड़े।

अिस तरह बनी हुअी खाद अिन्दौर पद्धतिसे तैयार की हुअी खादसे तो घटिया होती है, लेकिन खलिहानोंमें तैयार की जानेवाली मामूली खादसे हर हालतमें ज्यादा अच्छी होती है। क्योंकि अिस तरीकेसे भी कड़ी और सख्त चीज़ें आसानीसे सड़ाअी जा सकती हैं और गाँवकी मौजूदा पद्धतिसे तैयार होनेवाली खादसे कहीं ज्यादा मात्रामें खाद बनती है।

हरिजन, २४-८-१९३५

खुराककी कमी और खेती

भाग दूसरा

अ. खुराक़की कमी

५८

भावनियंत्रण

पुलिसवाले अकसर किसी छोटे व्यापारीकी दुकानपर छापा मारकर अुसे हाकिमोंके सामने खड़ा कर देते हैं। कहा जाता है कि यह सब अुन्हें, यानी व्यापारियोंको, 'सबक सिखाने' की गरजसे किया जाता है। लेकिन अिस तरह 'सबक सिखाने' का हमारा अब तकका जो अनुभव है, वह बहुत कड़ुआ है। हिन्दुस्तानी व्यापारी मंडलकी समितिने हिन्दुस्तान सरकारके नाम अेक महत्त्वका पत्र भेजा है। अुसमें यह बताया है कि भावनियंत्रणके कारण कैसा अनर्थ हो रहा है। अिस नियंत्रणका हेतु तो यह बताया जाता है कि आम रिआयाको अुसकी ज़रूरतकी चीज़ें अुचित भावसे मिलें और व्यापारी लोग बेहद मुनाफा लेनेसे बाज आयें। जैसा कि अिस समितिने अपने पत्रमें कहा है, "अब तक सरकारने अिस दिशामें जो कार्रवाअी की है, अुससे अधिकतर तो अुसके असल अुद्देशकी सिद्धिमें रुकावट ही पैदा हुअी है। यह देखा गया है कि जब किसी चीज़के भावपर सरकारी नियंत्रण शुरू होता है, तो तुरन्त ही बाजारमें अुस चीज़की तंगी मालूम होने लगती है या अुसका वहाँ आना ही बन्द हो जाता है, बशर्ते कि सरकार अिस तंगी या गड़बड़ीको रोकनेकी दिशामें कोअी अुचित कार्रवाअी न करे। मसलन्, कुछ ही समय पहले हिन्दुस्तानकी सरकारने गेहूँकी बिक्रीका निर्ख तय किया था। नतीजा यह हुआ कि कलकत्तेके बाजारमें थोकबन्द गेहूँका जाना कम हो गया और आज हालत अितनी गंभीर हो अुठी है कि अगर गेहूँका संग्रह बनाये रखनेकी दिशामें समय रहते अुचित कार्रवाअी न की गयी, तो कुछ समय बाद वहाँ गेहूँ मिलना भी मुश्किल हो जायगा। अिसी तरह पिछले साल विलायतमें भी जब टमाटर और 'गूजबेरी' के निर्ख बाँधे गये, तो अुसके

बाद फौरन ही ये फल बाजारसे गायब हो गये।" अैसी ही खबरें देशके दूसरे हिस्सोंसे भी आयी हैं। कहा जाता है कि अेक जगह तो रुपयेके अेक सेर गेहूँ मिलना भी असम्भव हो गया था।

पुलिसवाले ज्यादातर तो जो सामने पड़ जाता है, अुसीको बिना सोचे-विचारे पकड़ लेते हैं; अतअेव अच्छा ही हुआ कि समितिने अपने पत्रमें अिसका भी जिक्र कर दिया। समितिने लिखा है:

"आज होता क्या है? जब पुलिसको पता चलता है कि बाजारमें कोअी चीज़ बिक नहीं रही है, तो वह अुसके कारणकी छानबीन नहीं करती, बल्कि बिना सोचे-समझे जो मनमें आता है कर डालती है और जो अिनेगिने लोग, यहाँ वहाँ, अुसकी चपेटमें आ जाते हैं, अुन्हें हदसे ज्यादा दाम लेने या मालका संग्रह करके भी अुसे न बेचनेके लिअे गिरफ्तार कर लेती है। अिसका यह मतलब नहीं कि समिति अुन लोगोंका समर्थन करती है, जो मालको कोठारमें भरे रहते हैं और अुसे बेचनेसे जी चुराते हैं। समिति मानती है कि अिसकी रोक होनी चाहिये; फिर भी वह यह कहना चाहती है कि अिस तरहकी छुटपुट और मनमानी कार्रवाअीसे तो व्यापारमें अव्यवस्था ही फैलती है और बहुतेरे छोटे व्यापारी बार बार अिस तरह ज़लील होनेके बजाय अपना व्यापार बन्द करके घर बैठ जाना बेहतर समझते हैं।"

अिसके बाद समितिने अपने पत्रमें यह बताया है कि विभिन्न प्रान्तीय सरकारें जब अपने अपने ढंगसे कोअी कार्रवाअी करती हैं, तो अुसका नतीजा क्या होता है:

"अुदाहरणके लिअे, पिछले सितम्बरमें युक्त-प्रान्तकी सरकारने दूसरे बाजारोंमें प्रचलित भावका विचार किये बिना ही हापुड़के बाजारमें गेहूँकी निर्खबन्दी कर दी। दूसरे प्रान्तोंमे और हिन्दुस्तानके दूसरे बाजारोंमें, खासकर पंजाबमें, अुस समय गेहूँका जो भाव था, अुससे यह भाव कम रहा। नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंके जिन व्यापारियोंने — मसलन्, कलकत्तावालोंने — हापुड़वालोंके साथ अेक खास निर्खपर

गेहूँका सौदा कर रखा था, अुन्हें हापुड़से गेहूँ नहीं मिले, बल्कि बहुतेरा गेहूँ पंजाब चला गया, क्योंकि वहाँ भाव ज्यादा था।"

अिसी सवालके सिलसिलेमें और भी कअी बातें हैं, जिनका जिक्र करना यहाँ ज़रूरी नहीं है। अूपर कही गयी तमाम विचित्रताओं और मुसीबतोंसे बचनेके लिअे और भावनियंत्रण संबन्धी सरकारी कार्रवाअीको सफल बनानेके लिअे समितिकी रायमें नीचे लिखी बातें ज़रूरी हैं:

"१. सरकार निर्खकी जो ज्यादासे ज्यादा हद कायम करे, अुसका व्यापारी द्वारा लाये जानेवाले नये मालकी लागत दरके साथ कोअी मुनासिब संबन्ध होना चाहिये; और

२. ठहराये हुअे भावसे खुद सरकारको भी वे चीज़ें बेचनेकी तैयारी रखनी चाहिये — अुत्पादनका कुल खर्च, माल लाने ले जानेका खर्च, कच्चा माल पानेकी सहूलियत, मज़दूरी और वाजिब मुनाफा, वगैरा तमाम चीजोंको ध्यानमें रखकर ही निर्खबन्दी होनी चाहिये।"

ये सब सूचनायें बिलकुल अुचित और व्यावहारिक हैं; सरकारको अिनपर अमल करनेमें कोअी मुश्किल न होनी चाहिये। अिसके बारेमें भी समितिने अपने कुछ सुझाव पेश किये हैं। वह कहती है:

"निर्खकी अूँचीसे अूँची हद ठहरा देनेके बाद सरकारको देशके अलग अलग केन्द्रोंमें अनाजके कुछ बड़े कोठार खोलने चाहियें और तय शुदा निर्खसे ग्राहकोंके हाथ, जितना वे चाहें, फुटकर या थोकबन्द माल बेचनेको तैयार रहना चाहिये। जब सरकार अेक खास भावसे बेचनेको तैयार हो जायगी, तो व्यापारी भाव न बढ़ा सकेंगे। चाँदीके मामलेमें तो अैसा हो भी चुका है।"

भावनियंत्रण सम्बन्धी प्रश्नोंका विचार करनेके लिअे अिसी फ़रवरीके पहले हफ्तेमें जो परिषद शुरू होनेवाली है, अुसमें अिन सुझावोंपर विचार होना चाहिये, विभिन्न चीज़ोंके व्यापारियोंके प्रतिनिधियोंके साथ चर्चा की जानी चाहिये और जिस हालतके जल्दी ही बेकाबू होनेका डर है, अुसे फौरन ही काबूमें लाना चाहिये।

सेवाग्राम, १-२-'४२ **महादेव देसाअी**

हरिजनसेवक, ८-२-१९४२

नियंत्रण : सरकारी या सार्वजनिक?

अेक बहुत ही अनुभवी मित्रने नीचेका लेख भेजा है :

यह सच है कि आज देशमें अनाजकी जो तंगी है, वह कुछ हद तक ब्रह्मदेशसे चावल और आस्ट्रेलियासे गेहूँकी आमदके बन्द हो जाने और हिन्दुस्तानसे विदेशोंमें गेहूँकी निकासी होनेके कारण अुत्पन्न हुअी है; लेकिन साथ ही हमारे देशमें राजके अधिकारियोंने अपनी अक्षमताके कारण सारी परिस्थितिको कुछ अैसा जटिल बना दिया है कि जिससे स्थिति और भी ज्यादा खराब हो गयी है। यदि सरकारी नियंत्रणके मौजूदा दोषोंको दूर करनेके लिअे अुचित अुपाय न किये गये, तो सारे देशमें खाद्य पदार्थोंकी जो तंगी बढ़ती चली जा रही है, अुसके कारण डर है कि कहीं परिस्थिति बहुत ही गंभीर और बहुत व्यापक न बन जाय।

यह तो ज़ाहिर है कि साधारण अवस्थामें हिन्दुस्तान अपनी प्रजाकी आहार संबन्धी कुल आवश्यकताओंके बारेमें स्वयंपूर्ण है। पिछले तीन सालोंमें हरसाल औसतन करीब १४ लाख टन चावल ब्रह्मदेशसे आता था और आस्ट्रेलियासे कुछ गेहूँ आता था; अब चूँकि अिनका आयात करीब करीब बन्द हो चुका है, अिसलिअे देशके आन्तरिक अुपयोगके लिअे आवश्यक अनाजके गल्लेमें काफ़ी कमी हुअे बिना नहीं रह सकती। लेकिन याद रहे कि ब्रह्मदेशसे जो १४ लाख टन चावल आता था, अुसके मुकाबले हिन्दुस्तानमें चावलकी कुल पैदावार १९३८–३९ में २ करोड़ ४० लाख टनकी और १९३९–४० में २ करोड़ ५० लाख टनकी हुअी थी। अिसमें दूसरे अनाजोंकी पैदावार, जो २ करोड़ ३० लाख टन है, और जोड़ी जा सकती है। अिसलिअे आयातके बन्द होनेसे अनाजके कुल गल्लेमें ३ फी सदी ही कमी पड़ती है। आयातकी बन्दीके

सिवा, हिन्दुस्तान सरकारने जिस गलत तरीकेसे काम किया है, वह भी पिछले कुछ महीनोंमें खाद्य पदार्थों संबन्धी स्थितिको अधिक गंभीर बनानेमें कारणीभूत हुआ है।

खाद्य पदार्थोंके भावका नियंत्रण करनेकी सरकारी कोशिश बिलकुल ही बेकार साबित हुअी है। सब किसीका यह अनुभव है कि अिससे खरीदारोंको लाभ होनेकी बात तो दूर रही, अुलटे जब कुछ वक्त पहले गेहूँकी ज्यादासे ज्यादा दर फी मन ४ रु० ६ आना ठहरायी गयी, तो अुसके कारण अनेक मंडियोंमें गेहूँके दर्शन दुर्लभ हो गये। क्योंकि अिस नियंत्रणकी वजहसे लोगोंमें घबराहट फैल गयी और अुनमें निजी अुपयोगके लिअे गेहूँका संग्रह करके रखनेकी लालसा पैदा हो गयी। नतीजा यह हुआ है कि आज बाजारमें मुँह माँगे दाम देने पर भी गेहूँ नहीं मिल रहे हैं। भाव-नियंत्रणके लिअे सरकारने जिस तरीकेसे काम लिया, अुसकी सारी बुनियाद ही गलत थी और अुसका अमल भी योग्यतापूर्वक नहीं हुआ। अनाजके बँटवारेकी व्यवस्थाके लिअे सरकारके पास कोअी प्रबन्ध नहीं था, और जो थोड़ा खानगी प्रबन्ध था, वह सरकारी कार्रवाअीके कारण बेकार हो गया। यदि सरकार गेहूँके भावको नियंत्रित करना चाहती थी, तो अुसका अुचित तरीका तो यह था, कि वह गेहूँके गल्लेको खरीदती और लागत दर पर अुसका वितरण करनेके लिअे अेक कार्यक्षम तंत्र खड़ा करती। अिसके लिअे अेक विशाल और कार्यक्षम संस्थाकी आवश्यकता थी। लेकिन वैसी कोअी चीज़ खड़ी नहीं की गयी। सरकारने अेक दिन जागकर गेहूँके ज्यादासे ज्यादा भावकी हद बाँध दी और फिर वह गेहूँके गल्लेकी तलाशमें लग गयी। वितरणकी व्यवस्थाका और नअी पूर्तिके खर्चका पर्याप्त विचार किये बिना ही सरकारने भावोंपर अंकुश रखनेका यह अनघड़ प्रयत्न किया। अिसके सिवा कअी जगह व्यापारियोंको सताया गया। संयुक्त प्रान्त जैसे प्रान्तमें हिसाब रखनेकी पद्धतिपर अंकुश लगाया गया और अेक जगहसे दूसरी जगह — अेक जिलेसे दूसरे जिलेमें भी — अनाज लाने ले जानेकी मनाही की गयी। अिसके कारण व्यापारके

सामान्य प्रवाहमें बहुत ही रुकावट पैदा हुअी। फलतः लोगोंमें घबराहट फैली और अुसके कारण वे निजी अुपयोगके लिअे अनाज संग्रह करके रखने लगे।

अतअेव सरकारके लिअे बेहतर तरीका तो यही है कि वह अनाजके भाव, वितरण और आयात-निर्यात परका नियंत्रण अुठा ले। सम्भव है कि नियंत्रणके अुठते ही गेहूँ जैसे कुछ अनाजके भावोंमें अेकदम बहुत तेजी आ जाय। लेकिन जब तक अधिकसे अधिक खरीदारोंको सरकार द्वारा निश्चित दर पर पर्याप्त अनाज नहीं मिलता, तब तक मौजूदा नीतिके कारण तो खरीदारोंके लिअे अनाजकी बनावटी क़िल्लत ही पैदा होगी। सरकार द्वारा की गयी निर्खबन्दीका अेक अजीब नतीजा यह हुआ है कि कअी जगह मंडियों और बाजारोंसे गेहूँका सारा गल्ला ही गायब हो गया है और निर्खबन्दीवाली चीज़ें ग्राहकोंको मुँह माँगे दाम देने पर भी नहीं मिल रही हैं। अिसलिअे मजबूरन यही मानना पड़ता है कि अनघड़ और अधूरे नियंत्रणकी अपेक्षा तो नियंत्रणके अभावसे ग्राहकोंका अधिक हित हो सकेगा।

नियंत्रण न होनेपर जनताकी जिम्मेदारी खास तौरपर बढ़ जाती है। लोगोंको भयभीत न होना चाहिये और अपनी मामूली ज़रूरतोंसे बेहद ज्यादा अनाज संग्रह करके न रखना चाहिये।

व्यापारियों और दुकानदारोंको बेहद मुनाफा कमानेकी जरा भी कोशिश न करनी चाहिये और अिस गंभीर व कठिन समयमें देशके प्रति अपने कर्त्तव्यको समझना चाहि । यदि वे गल्ला अिकट्ठा करके रखेंगे, तो आम जनताको बड़ी परेशानी अुठानी पड़ेगी और अुनका अपना स्वार्थ भी बहुत संकटमें पड़ जायगा।

जो चीज सरकार नहीं कर सकी, वही व्यापारी वर्ग कर सकता है।

हरिजनसेवक, १२-४-१९४२

६०

भावनियंत्रणमें गोलमाल

भावनियंत्रणमें गोलमालके बारेमें १२ अप्रैलके अंकमें अेक 'अनुभवी मित्र' का जो लेख आया है, वह स्वागत योग्य है। वर्तमान भावनियंत्रणको हटानेका यही अेक कारण काफ़ी है कि अिससे किसीको भी कोअी फ़ायदा नहीं हुआ, और ग्राहकोंको तो बिलकुल नहीं। सारे प्रश्नपर नये सिरेसे विचार होना चाहिये। वह न केवल अुत्पादकों और बेचनेवालोंकी दृष्टिसे, बल्कि ग्राहकोंकी दृष्टिसे भी विचारा जाना चाहिये। भावनियंत्रणकी नीतिका अेक बहुत गंभीर नतीजा यह आया कि बाज़ारसे खाद्यपदार्थ गायब हो गये; साथ ही जहाँ खाद्यपदार्थ मिलते थे, वहाँ गरीब आदमियोंको सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। सरकारने अच्छी तरह विचार किये बिना व व्यापारियोंसे सलाह-मशविरा किये बिना ही नियंत्रित भावोंका अेलान तो कर दिया, पर अुस भावसे चीज़ोंकी पूर्ति करनेमें असफल रही। यदि कण्ट्रोल लागू करना था, तो वह 'दैनिक अिस्तेमालकी सभी वस्तुओं' पर लागू करना था। वह केवल खाद्य पदार्थोंके भावोंपर ही लगाया गया, पर कपड़ा, मिट्टीका तेल, माचिस, कागज़, लोहा और दूसरी चीज़ों पर — जिनके भाव १०० से ३०० प्रतिशत तक बढ़ गये हैं — नहीं लगाया गया। अिससे गरीब किसानको, जिसे अनाजकी क़ीमतें बढ़नेसे भी कोअी खास लाभ नहीं हुआ, अधिकसे अधिक सहना पड़ा। अुसके दृष्टिकोणसे अनाजके भावोंका नियंत्रण अेक भयंकर नुकसान है, क्योंकि जिस वस्तुसे अुसे रातदिन काम पड़ता है, या जिसे वह बेचता है अुसका भाव तो बँध गया, पर अुसके हमेशाके अिस्तेमालकी दूसरी सब चीज़ोंके लिअे अुसे बहुत भारी क़ीमत चुकानी पड़ती है।

दूसरी चीज़ोंकी तरह अिसमें भी खास कठिनाअी तो गैर-जिम्मेदार सरकार ही है। 'रॉयल अिकनॉमिक सोसाअिटी' के 'दि अिकनॉमिक

जर्नल' में गत महायुद्धमें जर्मनीके भावनियंत्रणपर छपा हुआ अेक लेख सारे प्रश्नपर अच्छी रोशनी डालता है और रास्ता भी बताता है। पर सरकार अुसका लाभ अुठाना चाहे तब न! अिसका लेखक ल्यिन ज़िटलीन कहता है कि जर्मनीके अिस अनुभवसे "स्वदेशकी आर्थिक स्थितिको मज़बूत बनानेके ब्रिटिश प्रयत्नोंको सफल बनाने और साथ ही समान बलिदानके सन्तुलनको कायम रखनेकी दिशामें" पदार्थपाठ मिल सकता है।

अुसने जो सबसे पहली चीज़ बतलायी, वह यह है कि 'नया माल खरीदनेकी क़ीमत' किस प्रकार तय की जाय। अिसके दो अर्थ हैं: (१) अुत्पादकके लिअे अिसका अर्थ है अुत्पादनका खर्च; (२) बेचनेवालों (थोक व खुदरे) के लिअे अिसका अर्थ है अपने संग्रहमेंसे बेची हुअी अुसी जाति व प्रमाणकी चीज़ोंको वापस खरीदनेकी क़ीमत। लेकिन ये क़ीमतें "किसी खास समयमें — कहिये तीन माहमें — नये व पुराने मालकी कीमतोंका औसत निकालनेकी संयोगोंके अनुसार बदलनेवाली पद्धति (elastic system of averaging costs)"से तय की जायँ।

दूसरी मुख्य बात भावनियंत्रणमें आनेवाली चीज़ोंकी संख्याके बारेमें बतलायी गयी है। "असरकारक भावनियंत्रणके लिअे यह ज़रूरी है कि जहाँ तक संभव हो कमसे कम चीज़ें अुसके नियमोंसे मुक्त रहें।" अिससे हमारे देशके गरीब किसानोंको होनेवाले कष्ट कम हो जायँगे।

पर सबसे अधिक महत्त्वकी और हमारे देशके लिअे खास प्राथमिक महत्त्वकी बात विभिन्न व्यापारिक संघोंकी सेवा प्राप्त करनेकी है। ब्रिटेन और जर्मनी जैसे स्वतंत्र देशोंमें यही स्वाभाविक रास्ता था। यहाँ विदेशी नौकरशाहीको यह रास्ता नहीं सूझेगा और यदि सूझा भी तो अुसे अप्रिय लगेगा। पर मुद्देकी बात यह है कि यदि व्यापारिक संघोंकी सेवाका अुपयोग न किया जाय, तो सारा भावनियंत्रण ही अेक भयंकर गोलमाल हो जाता है। लेखक यह बताते हुअे लिखता है: अिसने "दूसरे देशोंके अैसे ही संगठनोंके मुकाबले जर्मनीके आर्थिक जीवनमें ज्यादा महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। वहाँ अेक प्रकारका 'बन्द

दुकान' का तरीका अपनाया गया था और अुन संगठनोंको यह तय करनेका हक मिल गया था कि किसे सदस्य बनाया जाय और किसे नहीं। . . . संगठनोंके अधिकारी 'राज्यके डिप्टी कमिश्नर' नियुक्त किये जा कर सरकारके ट्रस्टी बने। लड़ाअी शुरू होनेके तुरन्त बाद ही स्थापित किया हुआ 'युद्ध दफ्तर' का अेक खास विभाग अिस संगठनका केन्द्र था, जिसने कच्चे मालके सारे स्टॉकको अपने कब्जेमें करके न केवल युद्धकी आवश्यकताओं, बल्कि तमाम नागरिक माँगों पर भी नियत्रण कर दिया। अपनी बहुविध और दूरगामी आर्थिक प्रवृत्तियोंका विकेन्द्रीकरण करनेके लिअे अिस विभागने विविध अुद्योगों और व्यापारों सम्बन्धी खास खास कामोंको करनेके लिअे कअी अलग अलग समितियाँ बना डालीं और ये समितियाँ व्यापारिक संघोंकी अर्ध-सरकारी प्रवृत्तियोंका मार्गदर्शन और देखरेख करती थीं।"

लेखक आगे कहता है:

"व्यापारिक संघोंसे सम्बन्ध रखनेवाली सरकारी नीति अुनकी जर्मनीके आर्थिक जीवनमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करनेकी अिच्छासे मेल खाती थी। अिसलिअे सरकारने अुत्पादकों, थोक व खुदरा व्यापारियों, निकास करनेवाले व्यापारियों और कारीगरोंके केन्द्रीय संघोंकी रचनाको प्रोत्साहन दिया। अिन केन्द्रीय संघोंमें अलग अलग धन्धोंके सभी संगठन, संस्थाअें व मंडल आदि समा गये थे और वे सरकारके बहुत बड़े मददगार साबित हुअे, क्योंकि तब सरकारको व्यक्तियों या असंतुष्ट समूहोंकी सतत व कठिन शिकायतोंको सुनने व निपटानेका असंभव जैसा काम नहीं करना पड़ा। फिर ये केन्द्रीय संघ बहुत जल्दी समर्थ व जिम्मेदार संस्थाअें बन गये, जो सरकारको युद्ध सम्बन्धी अुत्पादन व वितरणके तमाम मामलोंमें सलाह देने लगे।"

व्यापारिक संघोंको अपना काम खुद चलानेकी सत्ता रखनेवाली संस्थाओंमें बदल कर अुनकी सेवायें लेनेकी पद्धति "अच्छे कामकी दृष्टिसे

अैसी समितियाँ कायम करनेके बनिस्बत ज्यादा पसन्द करने लायक है, जिनके सदस्य बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति तो अवश्य होते हैं, लेकिन अपने व्यापारोंके चुने हुअे प्रतिनिधि नहीं होते।" यदि स्वतंत्र देशोंके लिअे यह बात सही है, तो हिन्दुस्तान जैसे गुलाम देशके लिअे, जहाँ न तो सरकारका लोगोंसे कोअी वास्ता है न अुनके प्रति कोअी जिम्मेदारी, यह और भी सेही है।

आखिरी बात आर्थिक शक्तिके दुरुपयोगके विरुद्ध कानून बनानेके बारेमें है। युद्धके बाद जर्मनीमें अिमर्जेन्सी डिक्री (आकस्मिक व आवश्यक कानून) द्वारा "अेक खास सुप्रीमकोर्टकी रचना की गअी थी। अुसे सामाजिक हितके घातक करारोंको रद्द ठहराने, संस्थाओंके सदस्योंको अुनके बंधनसे मुक्त करने, संगठनोंको तोड़ने, अुत्पादन, वितरण और भावों सम्बन्धी नीतिपर असर डालनेकी कोशिश करनेवाले व्यक्तियों या संगठनोंपर जुर्माना करने, आदिका हक दिया गया था।"

अिस दिशामें जब तक कदम न अुठाये जायँ, तब तक विचार-रहित, निकम्मी, बेअसर और नुकसानदेह भावनियंत्रणकी नीतिका त्याग किया जाना चाहिये।

अिस बीच क्या किया जाय, अुस सम्बन्धमें व्यापारी-मित्रके दिये गये सुझावोंसे अधिक अच्छे सुझाव शायद नहीं मिल सकते।

महादेव देसाअी

हरिजन, २६-४-१९४२

६१

खुराककी मापबन्दी

हिन्दुस्तानमें खुराककी माप-बन्दीके बारेमें भूल की जा रही है। खुराक अिकट्ठी करने, ले जाने, रखने और बाँटनेका खर्च खुराककी क़ीमतमें डाला जाता है। अिससे खुराक पैदा करनेवालेको जो दाम मिलता है और खानेवालेको जो देना पड़ता है, अुसमें ३० से ५० फ़ीसदी तकका फ़र्क़ रहता है। अिसका नतीजा यह होता है:

१. अनाज पैदा करनेवाला अनाज देना नहीं चाहता; क्योंकि अुसे डर रहता है कि अगर बादमें खरीदना पड़ा, तो अुसे ज्यादा दाम देने पड़ेंगे।

२. खुराक पैदा करनेवालों पर बुरा असर होता है। सरकारी नियंत्रण और दखलगिरीके डरसे वे अपनी फ़सल बढ़ानेमें हिचकिचाते हैं।

३. नफ़ेकी अितनी गुंजाअिश होनेके कारण काले बाज़ारको प्रोत्साहन मिलता है।

अिसलिअे सूचना यह है कि खुराक अिकट्ठी करने वग़ैराका खर्च सरकारी खज़ानेसे दिया जाय और खरीदनेवालोंको खुराक अुसी भावमें बेची जाय, जिससे पैदा करनेवालोंके पाससे खरीदी गयी थी।

अिसके अलावा, अेकसे तीन साल तकके लिअे खुराकका भाव क़ानूनसे निश्चित कर दिया जाय, ताकि पैदा करनेवाले और खरीदनेवाले दोनोंको पता रहे कि अुन्हें क्या मिलेगा और क्या देना होगा।

अिस छोटेसे फेरफारका यानी खुराककी माप-बन्दीका अूपरी खर्च सरकारी खज़ानेसे देनेका असर यह होगा:

१. काला बाज़ार अपने आप बन्द हो जायगा ।

२. ज्यादा खुराक पैदा करनेकी वृत्तिको प्रोत्साहन मिलेगा।

३. पैदा करनेवाले अपना माल देनेको तैयार होंगे, क्योंकि अुन्हें पता रहेगा कि जब कभी अुन्हें ज़रूरत पड़ेगी, अुन्हीं दामों अुनको खुराक मिल सकेगी ।

४. खरीदनेवालेको भविष्यके अपने रहन-सहनका दाम मालूम रहेगा, जिससे अुसको संतोष रहेगा ।

५. ज़िन्दगीके लिअे ज़रूरी चीज़ोंकी अेकसी और कम क़ीमत रखनेका रिवाज पैदा होगा ।

अिस तरह खुराककी माप-बन्दी पर जो खर्च होगा, अुसके लिअे अुन चीज़ोंपर, जिनकी मापबन्दी नहीं है, खास करके अैशआरामकी चीज़ों पर, बढ़ते पैमानेका सेल्स टैक्स लगाकर पैसा पैदा किया जा सकता है। अिस तरह खुराक जैसी ज़रूरी चीज़ोंकी क़ीमत चुकानेमें गैरज़रूरी और अैशआरामकी चीज़ें खरीदनेवाले मदद करेंगे।

थोड़ेमें, अिस सूचनाको यों रखा जाय कि ज़िन्दगी और तन्दुरस्तीके लिअे गैरज़रूरी चीज़ें खरीदनेवालोंको ज़रूरी चीज़ें ले जाने, रखने, और बोनेका खर्च अुठानेमें मदद देनी होगी, ताकि ज़रूरी चीज़ें अिस्तेमाल करनेवालों तक वे कम-से-कम क़ीमतमें पहुँच सकें ।

मॉरिस फ्रिडमैन

हरिजनसेवक, २९-२-१९४६

६२

कण्ट्रोल

माननीय श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यने 'टाटा अिस्टिट्यूट ऑफ सोशल सायन्स' के कन्वोकेशनमें बोलते हुअे कहा — "अब ज़िन्दगी अितनी आगे बढ़ गयी है और अितनी पेचीदा बन गयी है कि मुझे यह पूरा विश्वास हो गया है कि दुनियामें चीज़ोंके लगभग सारे कण्ट्रोल जारी रहेंगे।" अुन्होंने यह भी कहा कि "कण्ट्रोल चन्द रोज़की नहीं, बल्कि हमेशाकी चीज़ बन जायँगे।" अेक मामूली आदमीको यह बात बिलकुल अुलटी मालूम होती है।

हालाँकि लड़ाअीको बन्द हुअे क़रीब दो साल हो चुके, फिर भी देशमें बुनियादी ज़रूरतें पूरी करनेवाली चीज़ोंके मामलेमें लड़ाअीके समयकी हालतें आज भी मौजूद हैं। अिसमें कोअी शक नहीं कि चीज़ोंकी कमीकी वजहसे लोगोंको कुछ हद तक सामाजिक न्यायका विश्वास दिलानेके लिअे किसी-न-किसी तरहके क़ानून-क़ायदे बनाना ज़रूरी हो गया है। खुराकका रेशनिंग आज भी हमारा पीछा नहीं छोड़ता। कालेबाज़ारका सब तरफ़ बोलबाला है। नफ़ाखोरी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती दिखाअी दे रही है, और सरकार कण्ट्रोलके काममें मशगूल है! दूरसे देखनेवालेको लगता है कि सरकारी व्यवस्थामें कहीं न कहीं गड़बड़ी ज़रूर है। लेकिन बहुतसे लोग यह नहीं कह सकते कि वह गड़बड़ी क्या और कहाँ है।

चीज़ोंकी क़ीमत अुनकी माँग और पूर्ति (सप्लाअी) के नियमपर ही निर्भर करती है। अगर किसी चीजकी माँग ज्यादा हो और वह पूरी न की जाय, तो अुसकी क़ीमत बढ़ जाती है। लेकिन जो चीज़ बाज़ारमें माँगसे ज्यादा मात्रामें होती है, अुसकी क़ीमत घट जाती है।

अिसलिअे चीज़ों और अुनकी क़ीमतोंके कण्ट्रोलका ध्येय होना चाहिये, चीज़ोंकी माँग और पूर्ति दोनोंपर नियंत्रण रखना। रेशनिंग चीज़ोंकी माँगपर पाबन्दी लगानेकी कोशिश तो करता है, लेकिन अुनकी पूर्ति (सप्लाअी) की कोअी व्यवस्था नहीं करता। चीजोंकी क़ीमतको कण्ट्रोल करनेके लिअे सरकारने जो मौजूदा तरीका अख्तियार किया है, वह मिनटके काँटेको हाथसे लगातार घुमाकर घड़ीको चालू रखने जैसा ही है। हम तो यह चाहते हैं कि समाजके आर्थिक व्यवहारकी घड़ीके कल-पुर्ज़ोंको ठीक करके अुसे अपने आप चलने दिया जाय। क़ानून-क़ायदे बनाकर चीज़ोंकी क़ीमतपर जो बनावटी नियंत्रण रखा गया है, वही बहुत हद तक कालेबाज़ारके लिअे ज़िम्मेदार है। दरअसल देखा जाय तो क़ीमतोंकी हद अपने-आप बँध जानी चाहिये; अुसके लिअे सरकारी हुक्मकी ज़रूरत नहीं। अभी तक सरकार राजा कैन्यूटकी तरह हुक्म देकर कालेबाज़ार और नफाखोरीकी बाढ़को रोकनेकी कोशिश करती रही है। लेकिन जो तरीका अख्तियार किया गया, वह बिलकुल बेकार साबित हुआ है। हकीकत यह है कि बहुतसे व्यापारी खुद यह चाहते हैं कि कण्ट्रोल हमेशा बने रहें; क्योंकि अिससे अुन्हें कालाबाजार करनेका मौक़ा मिलता है। अूँची जगहोंपर काम करनेवाले रिश्वतखोर सरकारी अफ़सर भी यही चाहते हैं कि कण्ट्रोल सदा बने रहें। लेकिन अब वह समय आ गया है कि प्रान्तोंमें राज करनेवाले लोक-प्रिय मंत्रिमण्डल अिन सब बातोंमें सुधार करें और कालाबाज़ार और नफ़ाखोरीको हमेशाके लिअे खतम कर दें।

अगर हम कालेबाज़ारसे बचना चाहते हैं और चीज़ोंकी माँग और पूर्तिको स्वाभाविक तौरपर काबूमें रखना चाहते हैं, तो माँगको रेशनिंग खुद काबूमें रख लेगा। लेकिन चीज़ोंकी पूर्ति (सप्लाअी) को स्वाभाविक रूपसे काबूमें करनेके लिअे सिर्फ बनावटी तौरपर चीज़ोंकी क़ीमतें तय कर देनेसे काम नहीं चलेगा; अिसके लिअे सप्लाअीको ही कण्ट्रोलमें लेना होगा। लेकिन सरकारको अेक काम करना होगा। जिन चीज़ोंपर वह

कण्ट्रोल लगाना चाहती है, अुन्हें अच्छी तादादमें सरकारी गोदामोंमें अिकट्ठा करे और जब बेपारी बाज़ारमें अुन्हें नियत क़ीमतसे ज्यादा दामोंमें बेचनेकी कोशिश करें, तभी अेक निश्चित क़ीमतमें अुन्हें बेचे। बेशक, सरकार व्यापारीके नाते बाज़ारमें तभी आयेगी, जब व्यापारी खुद अपनी करतूतोंसे अुसे अैसे सख्त क़दम अुठानेके लिअे मजबूर कर देंगे। सरकार गोदाममें अनाज जमा करके यह देखती रहेगी कि व्यापारी अनुचित ढंगसे चीज़ोंकी क़ीमतें न बढ़ा दें। ज्योंही बाज़ारमें क़ीमतें बढ़ने लगें, त्योंही सरकारी गोदाम खोल दिये जायँ और क़ीमतें घटानेके लिअे सस्ते दामोंमें अनाज बेचना शुरू कर दिया जाय। बाज़ारपर कारगर तरीक़ेसे असर डालनेके लिअे ज़रूरी संग्रहका १० से १५ फ़ीसदी भी सरकार अिकट्ठा कर ले तो काफ़ी होगा।

यह कोअी नअी बात नहीं है। 'बिहार केन्द्रीय राहत कमेटी' के काममें खानगी अेजेन्सियाँ क़ायम करके, बग़ैर किसी कानून या दूसरी सरकारी सत्ताकी मददके, कामयाबीके साथ अिसका प्रयोग किया गया है। हम सिर्फ़ अपनी अपीलसे ही लोगोंको राज़ी करते थे। अिसके अलावा, आर्थिक मामलोंमें सेण्ट्रल बैंक भी ब्याजकी दरोंपर, जो पैसेका बाज़ार-भाव ही कहा जायगा, क़ाबू रखनेके लिअे यही तरीक़ा काममें लेते हैं। लेकिन किसी अनजाने कारणसे सरकारने अच्छी तरह परखे हुअे अिस रास्तेको छोड़कर मनमाने ढंगपर चीज़ोंकी क़ीमतें बाँधनेके लिअे राजा कैन्यूटका रास्ता पकड़ा और व्यापारियोंको माल छिपानेका मौक़ा दिया। आज भी मौक़ा हाथसे गया नहीं है। जनताकी सरकारोंको चाहिये कि वे अपनी यह नीति बदल दें और जैसे-जैसे बाज़ारमें मामूली हालतें पैदा होती जायँ, वैसे-वैसे चीज़ोंपरसे धीरे-धीरे कण्ट्रोल हटा लें। हमें विश्वास है कि हमारी सरकारें मौजूदा कण्ट्रोलके तरीक़ोंसे जनताको जो तकलीफ़ होती है, अुसे मिटानेके लिअे जल्दी ही क़दम अुठायेंगी।

जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक, ११-५-१९४७

६३

खतरेकी घण्टी

जो खबरें आ रही हैं, अुनमें सचाअीका थोड़ा भी अंश हो, तो अुससे काफ़ी चिन्ताजनक हालतका पता चलता है। अभी अुस दिन मारवाड़ी-व्यापारी-संघके श्री अेम० अेल० खेमकाने अिलाहाबादमें पत्र-सम्पादक सम्मेलनके सामने कहा : "अेक ओर तो भारत-सरकारके खाद्य-विभागके सेक्रेटरीका यह कहना है कि अगस्त १९४३ से अनाजकी निकासी बिलकुल बन्द है और दूसरी ओर कलकत्तेके चुंगीघरने जो निर्यात-सूची छापी है, अुससे पता चलता है कि सिर्फ़ गत अगस्त और सितम्बरके महीनोंमें ही अकेली अेक ग़ैर-हिन्दुस्तानी फ़र्मने कलकत्तेके बन्दरगाहसे विदेशोंको २२,५०४ टनसे कम चावल नहीं भेजा है, जिसकी क़ीमत ९४ लाख रुपयेसे ज्यादा होती है।" श्री खेमकाने यह भी कहा कि "कलकत्तेकी ही निर्यात-सूचीकी बारीकीसे छानबीन करनेसे बंगालसे चावलकी और भी निकासीका पता चलेगा।" अेक भारतीय जहाज़ी कम्पनीके मैनेजरकी ओरसे अेक सज्जन बम्बअीसे लिखते हैं :

> "हमारी लाअिन १९१७ में क़ायम हुअी। तबसे हमारे माल ले जानेवाले जहाज़ हिन्दुस्तानके विभिन्न बन्दरगाहोंके अलावा हाँगकाँग और दूसरे चीनी बन्दरगाहोंके बीच भी चलते रहे हैं। जापानकी लड़ाअीमें हमारे दो जहाज़ डूब गये। हमारा अेक नया जहाज़ पिछले महीने ही आया है। पिछले सप्ताह ता० १४-२-'४६ को विदेशकी अपनी पहली यात्रामें ही वह मूँगकी दालके २,९५१ बोरे ले गया।"

अपनी पूरक सूचनामें वे लिखते हैं :

> "पिछले महीने भी 'बेगम' और 'जलज्योति' जहाज़ दालोंके और मूँगके ३५,००० बोरे कोलम्बो ले गये; लाँग दालके

२६,०५३ बोरे, अरहरकी दालके ३,०११ बोरे और मूँगके १,६१२ बोरे 'बेगम' जहाज़से निर्यात हुअे। मुझे और मालूम हुआ है कि अधिकारियोंकी जानकारीमें अितनी ही मात्रा हर महीने बाहर भेजी जाती है।"

अुत्तरी बंगाल-चावल-मिल-अेसोसियेशन, दिनाजपुरके सभापतिने जो रिपोर्ट भेजी है, वह भी अुतनी ही चिन्ताजनक है। अुसका सार यह है:

"सन् १९४५ में बंगाल सरकारने चावलकी दर अचानक ११ रु० ८ आनासे घटाकर ९ रु० ८ आना कर दी और जब चावलकी मिलवालोंने अिस अचानक और भारी कमीका विरोध किया, तो चावलकी मिलोंके अधिकारमें चावलका जो भी संग्रह था, जिसमें अुबले, अधअुबले, नम और कच्चा धान सभी शामिल थे, वह भारत-रक्षा-नियमोंकी मातहत सरकारने अपने अधिकारमें ले लिया, ताकि मिलोंवाले बादमें बढ़ायी गयी १० रु० ८ आना मनकी दरका फ़ायदा न अुठा सकें।

"सन् १९४४ में बंगाल सरकारने १३ रु० ८ आनासे लगाकर ११ रु० ८ आना तक फ़ी मनके हिसाबसे दिनाजपुर जिलेसे ५० लाख मन चावल हासिल किया और अुसी चावलको अभाववाले हिस्सोंमें और राशनके हिस्सोंमें १६ रु० फ़ी मनके हिसाबसे बेचा। अेक जिलेके चावलसे ही अिस तरह सरकारने १ करोड़ रुपयेसे ज्यादा नक़द मुनाफ़ा कमाया। राशनके हिस्सोंमें चावलकी दर घटनेके साथ चावलकी मिलोंके चावल पर सरकार २ रु० फ़ी मनके हिसाबसे भारी बट्टा लेने लगी। सरकारने सन् १९४५ में दिनाजपुर जिलेसे ही ९ रु० ८ आनासे १० रु० फ़ी मनके भावपर ६० लाख मन चावल खरीदा और अुसे १४ रु०से १५ रु० फ़ी मनके हिसाबसे बेचा। यह ध्यान रहे कि जिस चावल पर सरकार २ रु० फ़ी मन बट्टा काटती थी, अुसको भी वह १४ रु०से १५ रु० फ़ी मनकी दर पर बेचती थी। अिस तरह सरकारने १ करोड़ ५० लाख रुपयेसे कम मुनाफ़ा

नहीं कमाया। चावल पर बट्टा अनेक अस्पष्ट आधारों पर काटा जा रहा है। जैसे, चावल कम साफ़ हुआ है, ठीक ढंगका नहीं है, कम पॉलिश हुआ है, ज्यादा पक गया है, कम पका है, वगैरा। अिस प्रकारके नये नये आधार हर हफ़्ते अुत्साही और तरक्कीकी अिच्छा रखनेवाले अूँचे अफ़सर अीजाद करते रहते हैं। अुन्हें सरकारको मुनाफ़ाखोरीमें मदद देनेके लिअे जल्दी-जल्दी तरक्कियाँ मिल जाती हैं। पहलेसे ही बोझसे लदी जनताकी किसीको परवाह नहीं। सरकार मध्यम दर्जेका चावल बट्टा काटकर मोटे चावलसे भी कम भावपर खरीदती है; मगर अुसी चावलको राशनके हिस्सेमें मध्यम दर्जेके चावलके तौरपर भेजती है।

" सन् १९४५ में चावलकी मिलोंको टूटे चावलों (खुडी) को चावलसे अलग करनेके लिअे मजबूर किया गया, जो कि सन् १९४४ तक चावलके ही हिस्से समझे जाते थे। . . . खुडी चावलोंका भारी जत्था अिकट्ठा हो गया है और बार-बार याद दिलाने और अर्जियाँ देनेके बावजूद भी अुनको ठिकाने लगानेका कोअी प्रबन्ध नहीं किया गया है। . . .

" अैसी अनेक मिसालें हैं कि सरकारने चावलकी मिलोंके चावलको खराब बताकर नहीं खरीदा और न ही अुसकी निकासीकी अिजाजत दी। नतीजा यह हुआ कि वह चावल बेकार गया या ढोरोंके खानेके काम आया।

" अगर मिलवालोंको प्रान्तके भीतर ही अिस चावलकी निकासी करने दी जाती, तो सरकारी गोदामोंसे जो निहायत बदनाम व खराब चावल दिया जाता था, अुससे यह कहीं ज्यादा अच्छा साबित होता। अिस तरह सरकार बहुतसे लोगोंको कम-से-कम खुराक भी नहीं मिलने दे रही है, जिसकी तंगीके अिन दिनोंमें अुन्हें सख्त ज़रूरत है।

"चावलकी मिलोंको सौ फ़ीसदी पॉलिश किया हुआ चावल देनेको मजबूर किया गया और अगर चावलके किसी दानेपर थोड़ी भी ललाओी पायी गयी, तो अुसे कम पॉलिश किया हुआ बता दिया गया और अुसपर भारी बट्टा लगाया गया। मामूली तौरसे ज्यादा पॉलिश करनेपर अेक मन पीछे अेक सेरकी बरबादी होती है और चावल टूट भी जाता है। अिसके अलावा, चावलके विटामिन तत्त्व कम होते हैं सो अलग। अिस तरह सरकार लाखों मन अैसा चावल बरबाद कर रही है, जो आसानीसे बचाया जा सकता है।"

अगर यह सच हो, तो चावलकी मिलोंसे सौ फ़ीसदी पॉलिश किये चावलकी माँगको और टूटे चावलोंको अलग करनेमें होनेवाली बरबादीको भारी अपराध ही कहना पड़ेगा। अगर सन् १९४३ की दुर्घटना फिर बड़े पैमानेपर न होने देना हो, तो अिस सबकी तुरन्त बारीक जाँच होनी चाहिये और अुचित कार्रवाअी की जानी चाहिये।

पूना, २३-२-'४६ प्यारेलाल

हरिजनसेवक, ३-३-१९४६

६४

क्या मौका हाथसे चला गया?

ब्रिटिश जनताकी खास खुराक मांस है। लड़ाअीने अिंग्लैण्डके सारे रीत-रिवाज और परम्परायें खतम कर दीं। अुनका कभी न बदलनेवाला रिवाज खानेका था। फिर भी, परिस्थितियोंके दबावने अंग्रेजोंको अपने खानेकी चीज़ोंमें बहुत बड़ा फेरफार करनेके लिअे मजबूर कर दिया है। जहाँ भोजनका आधार मांस हो, वहाँ अनाज और दालें स्वभावसे सिर्फ़ दूसरी जगह ही ले सकती हैं। फिर भी, अिंग्लैण्डका खुराक-महकमा राष्ट्रकी ज़रूरतोंकी तरफ़ पूरी पूरी सावधानी रखता है। आज वहाँ

गेहूँकी सफ़ेद रोटी नहीं मिलती, जो किसी समय फैशनकी चीज़ समझी जाती थी। जब राष्ट्र खुराककी तंगी महसूस कर रहा है, तब अुन्होंने खुराकके पोषक तत्त्वोंको बरबाद करनेकी अपनी गलतीको समझ लिया है। आज वहाँ चोकरवाले आटेकी भूरी रोटी ही सब जगह दिखायी देती है।

हमारे देशमें अिससे बिलकुल अुलटी बात देखनेमें आती है। हमारे भोजनका आधार अनाज और दालें हैं। अिसीलिअे भोजनमें अुनकी खास जगह होती है। हमारे देशकी आम जनता चावल, गेहूँ और दूसरे अनाजपर निर्भर करती है। लेकिन हमारा खुराक-महकमा अितना कमज़ोर है कि रेशनकी सरकारी दुकानोंपर भी लोगोंके लिअे पॉलिश किया हुआ चावल ही मिलता है। क्या हमने चावलकी मिलों-पर रोक लगाने और अिस तरह आम जनताके भोजनके पोषक तत्त्वोंको बढ़ानेका सुनहला मौका नहीं खो दिया है? क्या आज भी अैसा करनेका मौका हाथसे चला गया है?

जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक, २३-११-१९४७

६५

निराशाजनक चित्र

अेक पत्र-लेखक, जो अपने विषयके जानकार हैं, गांधीजीके नाम लिखे अेक पत्रमें बताते हैं कि अेक ओर जब कि सरकार अकालकी पहली अवाअीकी घोषणा करके अखबारी बयान निकाल रही थी, अुसी वक्त दूसरी ओर बंगालके बन्दरगाहोंसे चावल बाहर भेजा जा रहा था। जब यह खबर अखबारोंमें छपी कि जनवरी १९४६ में कलकत्ता बन्दरसे चावल बाहर भेजा जा रहा था, तो अुससे बड़ी सनसनी फैली। अलग अलग क्षेत्रोंसे सरकारपर जो दबाव डाला गया, अुसका नतीजा यह हुआ कि केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंने अिस बातका विश्वास

दिलाते हुअे बयान निकाले कि आगे बंगालसे कभी चावल बाहर नहीं भेजा जायगा। अितने पर भी चटगाँवके बन्दरगाहसे चावलका बाहर भेजा जाना चालू रहा। 'बंगाल मैन्युफैक्चरर्स अेण्ड ट्रेडर्स फेडरेशन' (बंगालके अुत्पादकों और व्यापारियोंके संघ) ने २६ मअीको कलकत्ताके श्रद्धानन्द पार्कमें हुअी अेक आम सभामें यह बात ज़ाहिर की थी। अिसके जवाबमें २८ मअीको बंगाल सरकार अिस मतलबका अेक अखबारी बयान निकाल कर ही रह गयी कि "टिपरा स्टेट अेजेन्सी चटगाँवसे चावल बाहर भेज रही है और बंगाल सरकार अिसके लिअे जवाबदार नहीं है!"

सरकारके निकम्मे और कठोर अिन्तज़ामकी अेक और मिसाल देते हुअे पत्र लिखनेवाले भाअी बताते हैं कि "पिछले बारह महीनोंमें लगभग तीस लाख मन गेहूँ सरकारी गोदामोंमें सड़ गये हैं।" आज यह बात सब कोअी जानते हैं। वे भाअी यह सुझाते हैं कि अनाजके वितरण और रक्षणका काम व्यापारियोंको सौंप देना चाहिये, जो जनताके प्रतिनिधियोंकी बनी कमेटियोंके मातहत अुनकी कड़ी निगरानीमें नामके कमीशन पर यह काम करें।

आगे वे भाअी लिखते हैं कि सरकार मामूली किस्म और अच्छी किस्मके चावलोंपर प्रति मन क्रमशः ४) और १०) के हिसाबसे नफ़ा कमाती है, जब कि चावलके थोक और खुदरा व्यापारी पहले मन पीछे सिर्फ़ २ से ४ आने नफ़ा कमाते थे। अिस सबके अलावा, वे भाअी लिखते हैं कि सरकार सनकी खेती और कारखानोंके लिअे धानके खेतोंपर अधिकार कर रही है। "पिछले अरसेमें सरकारने धानके खेतोंके अेक बहुत बड़े हिस्सेपर फ़ौजी छावनियों, हवाअी अड्डों और कारखानोंके लिअे अधिकार कर लिया है। अिन खेतोंको तुरन्त ही जुताअीके लिअे छोड़ देना चाहिये। १९४५ में करीब ९ लाख बीघा ज़मीन, जो १९४४ में जोती गयी थी, बिन जोती रह गयी। अिसके अलावा चालीस लाख बीघा ज़मीन अैसी है, जो अब तक कभी जोती ही नहीं गयी

है। अिसे अगर जोता जाय तो बहुत बड़ी मात्रामें अनाज पैदा किया जा सकता है।"

अिस दरमियान गाँवोंमें मौतकी छाया पड़नी शुरू हो गयी है और कलकत्तेमें तो भुखमरीके कारण लोगोंके मरनेकी खबरें भी आने लगी हैं। पत्र लिखनेवाले भाअी बताते हैं कि "ढाकामें चावल ५०) मन और मैमनसिंगमें ४५) मन बिक रहा है। दूसरे जिलोंमें चावल ४०) से ३०) मन तक बिकता है। बचतवाले जिलोंमें भी चावल २०) मन बिक रहा है। अिससे पहले चावलका मामूली भाव ४) मन था।" सरकारके निकम्मेपन और अिन्सानकी कठिनाअियोंके प्रति कठोर लापरवाहीकी अिससे बुरी मिसाल मिलना मुश्किल है। अिससे सारे प्रान्तमें गुस्सा पैदा हुअे बिना नहीं रहेगा। हम अुम्मीद करें कि अिस बातसे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकारी तुरंत ही अिन शिकायतोंपर ध्यान देंगे और अुन्हें दूर करनेके लिअे जल्दीसे जल्दी ठोस कदम अुठायेंगे।

पूना जाते हुअे रेलमें, २९-६-४६ प्यारेलाल

हरिजनसेवक, ७-७-१९४६

६६

कुछ सुझाव

जबसे गांधीजीने देशके सामने खड़े हुअे अकालके संकटको टालनेके अुपाय और साधन मालूम करनेकी ओर अपना और जनताका ध्यान खींचा है, अुनके पास चारों ओरसे सुझावपर सुझाव चले आ रहे हैं। अिनमेंसे कअी सुझावोंकी चर्चा गांधीजी अपने अखबारी बयानों और 'हरिजन' के लेखोंमें कर चुके हैं। कुछ और सुझाव नीचे दिये जाते हैं। जो काम सरकारी अधिकारियोंके करनेका है, वह अुन्हें करना चाहिये और जहाँ आम जनताके सक्रिय सहयोगकी ज़रूरत है, वहाँ अुसे आगे आना चाहिये।

१. लाखों अेकड़ अुपजाअू काली मिट्टीवाली ज़मीन वर्जीनिया तम्बाकू अुगानेके काममें ली जा रही है। अैसी ज़मीन ८ लाख अेकड़ गन्तूरमें, ६ लाख कृष्णा और गोदावरी ज़िलोंमें, १० लाख सरकार ज़िलेमें और २० लाख दूसरे हिस्सोंमें है। चूँकि तम्बाकू और अुसका अिस्तेमाल मनुष्यके लिअे नुक़सानदेह माना गया है, अिस ज़मीनके मालिकोंके लिअे अुसकी खेती बन्द कर देने या कम कर देनेका यह सुनहरा मौक़ा है। अुसके बदले वे अिस अुपजाअू ज़मीनमें अनाज, तरकारियाँ और मवेशियोंका चारा वग़ैरा अुगावें।

२. छिलकोंवाला और सूखा नारियल, जिसे आम तौरपर खोपरा कहा जाता है, बड़े पैमानेपर औद्योगिक कामोंके लिअे अिस्तेमाल किया जाता है। अुससे खोपरेका तेल और दूसरे खुशबूदार तेल, साबुन वग़ैरा चीज़ें बनाअी जाती हैं। खोपरेको बिना किसी मुश्किलके लम्बे अरसे तक रखा और पूरक व पोषक खुराकके तौरपर काममें लाया जा सकता है। अुसमें काफ़ी मात्रामें अच्छे प्रकारकी वनस्पती चर्बी और खनिज तथा विटामिन होते हैं। यह खास तौरपर कोचीन और त्रावणकोरमें होता है। वहाँ खोपरेके अुद्योगको चलानेमें बड़े बड़े लोगोंका हाथ है।

३. पूनाके अेक दोस्तने मुझे जुवारके दो नमूने भेजे हैं। अेक नमूना अुस जुवारका है, जिसे पिछले मौसममें गाँववालोंने अपने खेतोंमें पैदा किया था और जिसे सरकारी अधिकारियोंने लाज़िमी तौरपर नाज अिकट्ठा करनेकी योजनाके मुताबिक़ गाँववालोंसे प्राप्त कर लिया था। अिस जुवारके पैदा करनेवालोंको ६ रुपया फ़ी बंगाली मनके हिसाबसे दाम चुकाये गये। दूसरा नमूना अुस जुवारका है, जो अुन्हीं गाँववालोंको, जिनसे पहले नमूनेकी जुवार लाज़िमी तौरपर ले ली गयी थी, भूखों मरनेसे बचनेके लिअे १० रुपया फ़ी मनके हिसाबसे लेनी पड़ रही है। अगर यह सच हो, तो यह अधिकारियोंकी नालायक़ी, दूरन्देशीकी कमी और ग़रीबोंकी ज़रूरतों और भलाअीकी ओर पूरी

लापरवाहीकी जीती-जागती मिसाल है। किसी भी हिस्सेसे अनाजका अेक दाना भी बाहर भेजनेके पहले स्थानीय ज़रूरतोंका ठीक-ठीक हिसाब लगा देना चाहिये।

४. बिहारसे अेक दोस्त महुओंके बारेमें ध्यान खींचते हुअे लिखते हैं कि यह अेक खानेकी चीज़ है, मगर देशी शराब बनानेके काममें अिसका अिस्तेमाल किया जाता है। अगर अिससे शराब बनाना बहुत ही कम कर दिया जाय, तो महुआ न केवल गाँववालोंकी खुराकमें शामिल किया जा सकता है, बल्कि 'अिससे मज़दूरोंकी आमदनीमें लाज़िमी तौरपर बचत होने लगेगी। कअी अुदाहरणोंमें तो अुनकी कुल आमदनीका २५ फ़ीसदी अिसपर खर्च हो जाता है। अिस तरह वे आजसे ज्यादा दूध, तरकारी, अण्डे वगैरा खरीद सकेंगे।' मवेशियोंको जो अनाज खिलाया जाता है, अुसकी जगह महुआ भी खिलाया जा सकता है।

५. अनाजोंसे जो शराब या नशीले पेय तैयार किये जाते हैं, अुनका बनाया जाना फ़ौरन बन्द कर दिया जाना चाहिये।

६. कलप तैयार करनेवाले कारखानोंको कुछ समयके लिअे चावल और मक्का देना रोक दिया जाय, या कम कर दिया जाय।

७. अेक पंजाबी दोस्तकी राय है कि गेहूँ पैदा करनेवाले ज़िलोंमें सैकड़ों मन गेहूँकी कच्ची फ़सल रोज़ मवेशियोंको हरे चारेके रूपमें खिलाअी जाती है। यह बिना पका दो सौ तीन सौ मन गेहूँ यदि पक जाने दिया जाय, तो वह पाँचसे साढ़े सात हज़ार मन अनाजके बराबर हो सकता है। अिन मित्रका सुझाव है कि आदमियोंकी तरह मवेशियोंके लिअे भी अनाजकी मात्रा तय कर दी जाय और अुसके बदले शत्ताला, सरसों, हरी सब्ज़ी और हरा चारा अुन्हें ज्यादा मात्रामें दिया जाय।

८. होटलों और अुपहारघरोंमें केक, बिस्कुट, पेस्ट्री, बढ़िया रोटी (फ़ैन्सी ब्रेड), मिठाअी वगैरा बनती हैं। अिस बारेमें जाँच-पड़ताल होनी चाहिये और अुसमें कमी की जानी चाहिये।

९. शादी-ग़मीके मौक़ोंपर होनेवाली दावतें और पार्टियाँ बन्द कर दी जायँ।

१०. चावलके सवाल पर श्री प्यारेलालजीने लिखा ही है, मगर अिस बारेमें कुछ और लिखा जा सकता है। दिनाजपुरसे अेक संवाददाता लिखते हैं कि ३०,००० मन खुडी (टूटा) चावल वहाँकी मिलोंमें पड़ा है और बरबाद हो रहा है। वह चाहे बाज़ारमें न बेचा जाय, लेकिन अगर अुसे छुट्टा कर दिया जाय, तो अुससे हज़ारों भूखोंका पेट भर सकता है। लेखकका सुझाव है कि अिस बातकी जाँच की जाय कि बंगाल कितना चावल पैदा करता है, कितना सरकार मिलोंसे खरीदती है और अुसको किस काममें लेती है, सारे प्रान्तमें कितना खुडी चावल पड़ा है और क्या सरकार अिस चावलको खास तौर पर कायम की गयी अन्न बाँटनेवाली कमेटीके सिपुर्द करने देगी।

११. प्रो० रंगाका खयाल है कि शहरी लोगोंको अन्नका राशन देनेकी तो पूरी कोशिश की गयी है, मगर देहातमें रहनेवालोंके लिअे अुसी तरह खुराक देनेकी ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है। अुनके नीचे लिखे सुझाव हैं :

(क) अनाज पैदा करनेवाले किसानोंको काफ़ी मेहनताना दिया जाय, ताकि वे व्यापारी फ़सलें अुगाना बन्द कर दें। किसानोंको कपड़ा, घासलेट, अींधन और दूसरे तेल काफ़ी मात्रामें नहीं मिलते। दलालोंको अलग रखकर अगर अन्नकी पैदावारकी अुन्हें अच्छी क़ीमत दी जाय, तो अुनका संकट कम हो सकता है। अुनके काममें आनेवाली चीज़ें अुन्हें राशनिंग पद्धतिसे दी जायँ और खेतीकी पैदावारके बदलेमें अिन चीज़ोंके मिलनेका व्यवस्थित और अुचित तरीक़ा खोजा जाय और अुसपर अमल किया जाय।

(ख) ज़रूरतके मुताबिक़ किसानोंको खेतीके औज़ार अुचित भाव पर दिये जायँ।

(ग) फ़ी आदमी अधिक-से-अधिक पैदावार और कम-से-कम खपतके बारेमें गृहस्थों, किसानों और देहातियोंके बीच अच्छी होड़ाहोड़ी हो। जो लोग ज्यादा पैदा करें, अुन्हें ज़्यादा पैसा दिया जाय और अुन्हें अुनके काममें आनेवाली चीज़ें ज़्यादा मात्रामें मिलें।

(घ) जो ज़मीन खेतीके लायक़ हो, लेकिन किसीके अधिकारमें न हो, वह सबकी सब अुन किसानोंको, जिनके पास ज़मीन नहीं है, या अुनकी सहयोगी समितियोंको सिर्फ अनाज पैदा करनेकी शर्त पर बाँट दी जाय।

(ङ) अनाज पैदा करनेवालोंको सिर्फ अपनी ज़रूरतके लायक़ अनाज अपने पास रखनेके लिअे समझाया जाय; बाक़ीको वे गाँव-पंचायतोंके सिपुर्द कर दें, जो अिस बातका फ़ैसला करें कि अनाज न पैदा करनेवालों और बिना ज़मीनवाले मज़दूरोंको कितने अनाजकी ज़रूरत होगी। गाँवकी पंचायतें अनाजको बुद्धिमानीके साथ अिकट्ठा करके रखेंगी और अुसे बाँटेंगी।

(च) बाक़ी बचा हुआ अनाज ज़िलेके अधिकारियोंके कब्जेमें रहे, जिसे वे दूसरी जगह भेज सकते हैं। अनाजके मौजूदा जत्थे मुनासिब तौर पर बाँटनेके अहम कामको पूरा करनेके लिअे अेक अफ़सर नियुक्त किया जाय। वह अन्न अिकट्ठा करने, अुसे बाँटने और अुसका राशनिंग करनेका काम करे।

(छ) देहातियोंको शादी और दूसरे रीत-रिवाज मुल्तवी कर देने या कम-से-कम अैसे मौक़ों पर अन्नकी बरबादीको कम करनेके लिअे समझाया जाय। अैसे मौक़ों पर कम-से-कम लोगोंको अिकट्ठा किया जाय।

(ज) कारीगरों और दूसरोंके लिअे अगर सस्ते भावों पर सामुदायिक भोजनालय खोले जायँ, तो अन्नकी बरबादी कम होगी।

(झ) हर पचास गाँवोंके पीछे या हर तहसीलमें अनाज-भण्डार क़ायम करने होंगे, ताकि किन्हीं गाँवोंमें या आसपासके हिस्सोंमें अगर अचानक अनाजकी कमी पड़ जाय, तो वहाँ काफ़ी मात्रामें अनाज पहुँचाया जा सके।

(ञ) हर तहसील और गाँव-पंचायतको लोहा मुहय्या किया जाय और गाड़ियोंके लिअे लोहेकी पत्तियाँ पहले दी जायँ, ताकि अनाजको अिधर-अुधर ले जानेके लिअे अनाज बाँटने और अिकट्ठा करनेवाले अधिकारियोंको बैलगाड़ियाँ मिल सकें।

(ट) जब कभी ज़रूरत पड़े, फ़ौजी मोटर लारियाँ हासिल की जायँ, और बहुत ज़रूरी हो तो रेल्वे अधिकारियोंको चाहिये कि वे खास रेलगाड़ियाँ दौड़ानेकी तैयारी रखें।

(ठ) गाँववालोंको शहरियोंके बनिस्बत ज्यादा अनाज मिलना चाहिये।

(ड) पानीको बरबाद न होने दिया जाय और जहाँ ज़रूरत हो वहाँ कुअें खुदवाये जायँ। मौजूदा तालाबों और कुओंकी मरम्मत सरकारको करानी चाहिये।

(ढ) जंगलकी और दूसरी हरी पत्तियोंकी खाद अिकट्ठी करके रखी जाय और जहाँ ज़रूरत हो वहाँ भेजी जाय। अिसको भेजनेका किराया घटाया जाय। किसानोंको खाद देना अेक ज़रूरी काम है। खाद बाँटनेका काम गाँवकी पंचायतों या किसानोंकी संस्थाओंको सौंप दिया जाना चाहिये।

(ण) कन्द-मूल जैसी धरतीके भीतर पैदा होनेवाली फ़सलें, जो सालमें तीन-चार बार अुगाअी जा सकती हैं, अुगानेके लिअे बढ़ावा दिया जाय।

(त) धान (चावल) हाथसे फटका जाय। अिस तरह अुसकी मात्रा कम-से-कम १० फ़ी सदी बढ़ायी जा सकती है।

(थ) अगर प्रान्त और ज़िलेके अधिकारी अनाज और दालें

वैज्ञानिक तरीक़ेसे अुगाने देनेका काम अपने हाथमें लें, तो अनाजसे होनेवाले पोषणकी मात्रा १५ से २५ फ़ी सदी तक बढ़ायी जा सकती है।

१२. पशु-पालनको बढ़ावा दिया जाय। गन्तूरसे अेक दोस्त लिखते हैं कि, अुनका ज़िला अच्छे दूध देनेवाले जानवरोंके लिअे मशहूर है। अुनके ज़िलेमें ओंगोल क़िस्मकी गाय होती है। मगर अुनके ज़िलेसे अच्छी नसलको फ़ौजकी और मांसकी ज़रूरतें पूरी करनेके लिअे बाहर भेजा जा रहा है।

१३. मौजूदा संकटके समय सेनाको, खासकर अुन लोगोंको जिन्हें सेनासे अलग किया जा रहा है, कअी तरहके कामोंमें लगानेके सुझाव भी आये हैं। अेक संवाददाताका कहना है कि बम्बअी प्रान्तमें कल्याणसे करजतके बीच चावल पैदा करने लायक़ अेक चौड़ी और अुपजाअू पट्टी है। हज़ारों अेकड़ अच्छी ज़मीन, जिसके आसपास समुद्रमें जाकर गिरने-वाला काफ़ी पानी है, नवम्बरसे जून तक बेकार पड़ी रहती है। पानीको आसानीसे नहरोंमें ले जाया जा सकता है, या थोड़ी दूर पर खेतोंमें कुअें खोदे जा सकते हैं। ज़ाहिर है कि धान पैदा करनेवाले अितने ग़रीब हैं कि वे यह काम नहीं कर सकते; लेकिन अगर धानको नुक़सान पहुँचाये बिना दूसरी फ़सलें अुगायी जा सकें, तो सरकार अिस काममें अिंजीनियरोंकी कअी टुकड़ियाँ और दूसरे सैनिकोंको क्यों न लगा दे? यह बात अिस लम्बे-चौड़े देशके और भी बहुतसे दूसरे हिस्सों पर लागू होती है।

१४. आखिरमें, अनाजको जमा करके रखने और चोर बाज़ार चलानेकी हमेशाकी और आम शिकायत है। चोर बाज़ारको खतम करनेका सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि अमीर लोग अुसमें जायें ही नहीं। क्या वे अैसा करेंगे? आज जिस हवामें हम साँस लेते हैं, अुसके ज़र्रे-ज़र्रेमें हिंसा भरी हुअी है। किन्तु हत्या करना, लूटना, आग लगाना और सम्पत्तिका नाश करना ही हिंसा नहीं है; लालच, स्वार्थ, शोषण, रिश्वतखोरी और बेअीमानी हिंसाके बारीक और अिसलिअे ज्यादा ताक़तवर

रूप हैं। भीड़का गुस्सा कम हो जाता है या ज्यादा बड़ी हिंसासे अुसे वशमें किया जा सकता है, किन्तु सूक्ष्म हिंसा गहरे रोगकी तरह जड़ जमा लेती है और समाजके प्राणोंको कुतरती रहती है। जाग्रत लोकमत और नैतिक मूल्योंको ठीक-ठीक समझनेसे ही अुसे मिटाया जा सकता है।

पूना, २-३-'४६ अमृतकुँवर

हरिजनसेवक, १०-३-१९४६

६७

अन्नकी तंगी : कुछ और सुझाव

१. दक्षिण भारतसे अेक मित्र लिखते हैं कि मद्रास सरकारकी नीतिसे न तो माल पैदा करनेवालोंको फ़ायदा पहुँचता है न खरीदारोंको, क्योंकि दोनोंको नुक़सानमें रखकर दलाल बेहिसाब मुनाफ़ा कमाते हैं। मसलन्, ज़िलेका कलेक्टर थोक मालके व्यापारियोंकी नियुक्ति करता है और ये व्यापारी अपने अेजण्ट मुक़र्रर करते हैं। अेक अेजण्ट क गाँवसे रु० ५-९-१० (मद्रासके ३२ मापके) फ़ी मनके हिसाबसे धान खरीदता है। अिस धानको वह चार मील दूर थोकबन्द मालके व्यापारीके गोदामपर ले जाता है। फिर यही धान जिस गाँवमें पैदा हुआ था, वहाँ वापस भेजा जाता है और तीन आना पाँच पाअी फ़ी मद्रासी मापकी दरसे बेचा जाता है। अिस तरह लागत क़ीमत और बिक्रीकी क़ीमतमें फ़ी मन रु० १-३-६ का फ़र्क़ रहता है, यानी लागतसे २१·७ फ़ीसदी ज्यादा। मालकी ढुलाअीका खर्च कम करनेके बाद यह सारी रक़म दलालके जेबमें जाती है। अिस फ़र्क़के कारण ही लोग अनाजका संग्रह करते हैं और अिससे चोर बाज़ारोंके निर्माणमें मदद मिलती है। किसान अपने मालको फुटकर बिक्रीकी क़ीमतसे कम क़ीमतमें आसानीसे बेच सकता है और फिर भी वह, दलाल अुसे जो कुछ देता है, अुससे

ज्यादा ही पा सकता है। ग्राहक भी राशनकी दुकानके मुक़ाबले किसानसे सीधा सस्ते दामों माल खरीद सकता है।

अिसमें कोअी शक नहीं कि जब खरीदा हुआ धान चावलके रूपमें बेचा जाता है, तो दलालको और भी ज्यादा मुनाफ़ा होता है। हर हालतमें, कोअी वजह नहीं दीखती कि लोगोंको धान ही क्यों न दिया जाय, जिसे वे अपने हाथों कूटकर चावल बना सकें। अिससे अुनको जो शारीरिक और आर्थिक लाभ होगा, अुसके अलावा अुन्हें अपने ढोरोंके लिअे भूसी भी मिल सकेगी। अतअेव ये मित्र नीचे लिखे अुपाय सुझाते हैं:

अ. गाँवोंके गोदामोंमें धान अिकट्ठा करके रखा जाय। गाँवकी अपनी ज़रूरतोंके लिअे काफ़ी धान जमा कर लेनेके बाद बचे हुअे धानको, जहाँ अुसकी ज़रूरत हो, सीधा भेजा जा सकता है।

आ. राशन धानके रूपमें बाँटा जाय।

अि. धानका वितरण लागत क़ीमतपर किया जाय और अुसे प्राप्त करने व बाँटनेका खर्च सरकार अपनी तरफ़से दे।

अी. खेतोंमें मज़दूरी करनेवाले या दूसरी कड़ी मेहनत करनेवाले मज़दूरोंको आजसे दुगना राशन दिया जाय।

२. बंगालके अेक मित्र सुझाते हैं कि जूटकी फ़सल अितनी कम कर दी जाय कि अुससे सिर्फ़ स्थानीय ज़रूरत ही पूरी हो सके। जूटकी खेतीमें अुपजाअू ज़मीनका बहुत बड़ा हिस्सा लगा हुआ है। अब अुसका अुपयोग अन्न-सामग्री पैदा करनेमें किया जाना चाहिये।

३. अेक तीसरे मित्र लिखते हैं कि कुछ देशी रियासतोंमें बहुत ज्यादा अनाज अिकट्ठा करके रखा गया है। अुनसे कहा जाय कि वे अपनी स्थानीय ज़रूरतें पूरी करनेके बाद अिस मामलेमें ब्रिटिश भारतसे सहयोग करें और अपना बचा हुआ अनाज अुन जगहोंमें भेजें, जहाँ अुसकी ज़रूरत है। जहाँ कहीं भी अनाज अिकट्ठा करके रखा गया हो,

वहाँ वह सड़कर नष्ट न हो जाय, या मुनाफ़ाखोरीका ज़रिया न बने, अिसकी कड़ी निगरानी रखी जानी चाहिये ।

४. खेतीके औज़ारोंके मामलेमें गरीब किसानोंको हर तरहकी मदद दी जानी चाहिये। सरकारका यह फ़र्ज़ है कि वह अिन औज़ारोंमें सुधार करे और किसानोंको सस्ते दामों दे ।

५. अेक पंजाबी मित्र लिखते हैं कि कण्ट्रोलसे गरीबोंको मदद मिलनेके बजाय क़ीमतोंके बढ़ने और काले बाज़ारोंके पैदा होनेमें मदद मिल रही है । वे लिखते हैं कि पंजाबके बाज़ारोंमें आज चना १८ रुपया फ़ी मनके हिसाबसे बिक रहा है और अुसका यह सौदा भी साफ़-पाक तरीक़ेसे नहीं हो रहा। अगर कण्ट्रोल अुठा लिया जाय, तो दर कम हो जाय । पंजाबमें ढेरों गेहूँ काला पड़ रहा है और आटेमें मिलावटके होते हुअे भी वह १३ या १४ रु० फ़ी मनके हिसाबसे मुश्किलसे मिलता है ।

६. कअी सज्जनोंने लिखा है कि आमोंकी अगली फ़सलसे पूरा फ़ायदा अुठाया जाना चाहिये, क्योंकि अिस बार आम खूब बौराये हैं और अच्छी फ़सल आनेकी आशा है। मनुष्यके लिअे आममें काफ़ी पोषक तत्त्व रहते हैं ।

७. मूँगफली, सरसों और दूसरे तिलहनकी खलीको आसानीसे मनुष्यकी अुच्च पोषक खुराकमें बदला जा सकता है। अिसे रोटी बनानेके काममें भी ला सकते हैं और अगर यह गेहूँके आटेमें बराबरीसे मिला दी जाय, तो अुसकी चपातियाँ भी बन सकती हैं। अगर घासलेट बाहरसे ज्यादा मँगाया जाय, तो गरीबोंके लिअे तिलहन ज्यादा मात्रामें खानेके काम आ सकता है ।

८. चूँकि अन्नका सवाल राजनीति और दलबन्दीसे परेका सवाल है, अिसलिअे केन्द्रमें लोगोंके माने हुअे प्रतिनिधियोंकी अेक खास अन्न-समिति होनी चाहिये। मुमकिन है कि अिसकी वजहसे घूसखोरी वग़ैरा बुराअियोंसे छुटकारा पानेमें बड़ी मदद मिले ।

९. खुशहाल लोगोंमें ज्यादातर लोग अैसे हैं, जो बहुत ज्यादा खाते हैं। अुन्हें अिस बातकी तालीम देकर यह समझाना चाहिये कि तन्दुरुस्ती और ताक़तका दार-मदार ज्यादा खानेपर नहीं है। बल्कि असलमें बात बिलकुल अुलटी है।

१०. सोयाबीनके अिस्तेमाल पर भी अिस बिना पर ज़ोर दिया गया है कि अुसमें प्रोटीन, चर्बी और कार्बोहाअिड्रेट पाये जाते हैं। अेक हिस्सा सोयाबीन और तीन हिस्से गेहूँ मिलकर पूरी पोषक खुराक बन जाती है। अगर अिसे रोज़के राशनमें बढ़ाया जा सके, तो गेहूँकी मात्रा घटाकर नौ औंस की जा सकती है। लेखकका आग्रह है कि बाहरसे सोयाबीन मँगायी जाय और यहाँ भी अुसकी खेतीके लिअे बढ़ावा दिया जाय।

११. अकालकी हालत जीवनके सभी क्षेत्रोंमें देहातियोंको सहयोगका मूल्य सिखानेके लिअे अेक सुनहला मौक़ा देती है। लेकिन यह काम अुन्हीं लोगों द्वारा किया जाना चाहिये, जो सचमुच गाँववालोंसे प्रेम करते हैं और अुनमें घुलमिलकर, अुनके बनकर, यह देखते हैं कि हर काम ओमानदारीके साथ किया जा रहा है।

१२. अेक जानकार मित्र लिखते हैं:

"अन्न-संकटके सिलसिलेमें मैं कुछ नौजवान फ़ौजी अफ़सरोंसे बातचीत करता रहा हूँ। वे अपने बस भर सब-कुछ करनेको तैयार और अुत्सुक हैं। ज़रूरत अिस बातकी है कि अुन्हें काश्तकारीकी कुछ बातें थोड़े समयमें सिखा दी जायँ और अिस बातकी ठीक-ठीक हिदायत दे दी जाय कि अुन्हें क्या क्या करना है। फ़ौजी अिंजीनियरोंकी अिन टुकड़ियोंके साथ कुछ कृषि-विशारदोंकी नियुक्ति करना ज़रूरी होगा। अुनके पास ट्रैक्टरों, जीपों और बुल-डोज़रोंके रूपमें काफ़ी साधन-सामग्री मौजूद है, लेकिन अुनसे यह आशा नहीं की जानी चाहिये कि वे हल भी तैयार करें। अुनको हल वगैरा चीज़ें दी जानी चाहियें। फ़ौजके लिअे यह ज़रूरी है कि अुसे

विशेषज्ञोंका मार्गदर्शन मिले। लेकिन दुर्भाग्यसे केन्द्रके सूत्रधार बहुत ही कमज़ोर हैं और दूरन्देशी तो अुन्हें छू भी नहीं गयी है। खुशीकी बात है कि वाअिसरॉयने खुद अिस मामलेको अपने हाथमें ले लिया है मगर केन्द्रकी जिस कार्यकारिणीके ज़रिये अिस महान् समस्याका हल होनेवाला है, वह अभी तक संगठित नहीं की गयी है। गणितकी भाषामें सारी समस्याको अिस तरह पेश किया जा सकता है:

"सालमें हमारे यहाँ कुल ६ करोड़ टन अनाज पैदा होता है, और अुसमेंसे १ करोड़ ८० लाख टन बाज़ारमें बिकनेको आता है। सरकारने ६० लाख टन अनाजकी कमीका अन्दाज़ किया है। साल भरमें जितना अनाज बाज़ारमें आता है, अुसका यह अेक तिहाअी हिस्सा होता है। सिर्फ़ ढुलाअीके खयालसे भी यह बहुत बड़ा जत्था है। अगर यह देखा जाय कि जिन खास हिस्सोंमें फ़ौरन ही मदद पहुँचनी चाहिये, अुनमें बम्बअी प्रान्तका दक्षिणी भाग और मैसूर-त्रावणकोर सहित समूचे मद्रासका प्रदेश शामिल है, तो समस्या बहुत ही विकट बन जाती है। मुमकिन है कि विदेशोंसे तीस या चालीस लाख टन अनाज देशमें आये; लेकिन पश्चिमी और दक्षिण-पूर्वी किनारों परके अपने बन्दरगाहोंपर आनेवाले अिस अनाजके अेक चौथाअी भागकी भी अुचित व्यवस्था करना हमारे लिअे बिलकुल असंभव हो जायगा। क्योंकि न तो कहीं कोठारों या गोदामोंका अिन्तजाम किया गया है और न बन्दरगाहों या रेलोंपर अितनी सहूलियत है कि आनेवाले मालको जहाँका तहाँ पहुँचाया जा सके। अिस बातका बड़ा खतरा है कि अेक तरफ तो लोग भूखों मरते रहें और दूसरी तरफ़ बन्दरगाहमें अनाज सड़ता रहे या जहाजोंमें लदा पड़ा रहे, और सो भी सिर्फ़ अिसलिअे कि अिस सारे सवालपर ब्यौरेवार सोचा ही नहीं गया है। अेक पूरी लदी हुअी मालगाड़ीमें पचास डब्बे होते हैं और अेक बारमें अेक गाड़ी १,००० टनसे ज़्यादा बोझ नहीं ले जाती। अैसी

अेक मालगाड़ीको भरनेके लिअे ३ से ५ दिनका समय लगता है, **बशर्ते कि अुसके लिअे ज़रूरी साअिडिंग और मज़दूर सुलभ हों** । मालगाड़ी खाली करने और अुसके अेक जगहसे दूसरी जगह जाने-आनेमें जो वक़्त लगेगा, अुसे भी अिसमें शामिल किया जाय, तो सहज ही आपको समयकी तंगीका अन्दाज़ हो जायगा । अगर बाहरसे हमें ३० लाख टन अनाज मिले तो अुसकी ढुलाअीके लिअे ३,००० स्पेशल मालगाड़ियोंकी ज़रूरत रहेगी; अिनमेंसे कम-से-कम आधीकी ज़रूरत तो शुरूके १५० दिनोंमें पड़ेगी, यानी रोज़की १० गाड़ियाँ लगेंगी — अच्छीसे अच्छी परिस्थितिमें भी यह अेक बिलकुल असंभव चीज़ है । समझमें नहीं आता कि पश्चिमी तटके बन्दरगाहोंकी अपनी मर्यादाओंके रहते और दक्षिण भारतमें चलनेवाली रेलवे लाअिनोंके साधनोंको देखते हुअे यह सारा काम कैसे हो सकेगा ? रेलों और सड़कोंकी राह मालकी ढुलाअीके जितने भी साधन आज रेलवालों, आम लोगों और फ़ौजवालोंके पास मौजूद हैं, अुनसे कहीं ज्यादाकी हमें जरूरत पड़ेगी । दुर्भाग्यसे अिस चीज़को अिन हकीकतोंके साथ सरकारवालोंने न तो यहाँ सोचा है, न केन्द्र में ही । कभी कभी तो मुझे डर लगता है कि सरकारको अुस आनेवाले खतरेकी अहमियतका खयाल कराना बिलकुल असंभव है, जो मुल्कके सामने न सिर्फ़ अिस साल मुँह बाये खड़ा है, बल्कि आनेवाले सालमें भी जिसका खतरा बना रहनेवाला है; क्योंकि हमारी मौजूदा बस्तीके लिअे हमको तुरंत ७० लाख टन ज्यादा अनाज अुगानेकी जरूरत है और सन् १९५३ में हमें ४५ करोड़की अपनी आबादीके लिअे १ करोड़ ४० लाख टन ज्यादा अनाजकी ज़रूरत होगी । अिसलिअे हम विदेशवालोंकी अुदारताकी अुम्मीदपर जी नहीं सकते । भविष्यमें अुनकी ओर से बराबर मदद मिलती रहे, तो भी हम अुस मददकी आशापर निभ नहीं सकते ।

“जैसा कि गांधीजीने कहा है, असका अेक ही रामबाण अिलाज है; और वह है स्वावलम्बन। अिस स्वावलम्बन या स्वयं सहायताका मतलब यह है कि अपनी पैदावारको बढ़ानेके लिअे हम ठोस अुपायोंसे काम लें, यातायातके साधनोंकी गतिमें वृद्धि करें और मालगोदामोंका पूरा व पक्का अिन्तजाम करें। गोदामोंमें गलत तरीक़ेसे माल भरने और कीड़े वग़ैरा लगनेसे जो भयंकर नुक़सान होता है, वह कोशिश करनेसे बहुत कुछ कम किया जा सकता है — किया जाना चाहिये। मगर अिसमें दिक़्क़त यह है कि सारे सरकारी अधिकारी अेक लीकपर चलनेवाले बन गये हैं। यही वजह है कि खुद वाअिसरॉय भी कोशिश करके अुन्हें जगानेमें कामयाब नहीं हो सकते। अिसके लिअे ज़रूरत अिस बातकी है कि सार्वजनिक संस्थाओं और सरकारी कल-पुर्जोंके बीच ज्यादा-से-ज्यादा सहयोग बढ़ाकर पूरे संगठनकी अेक विस्तृत योजना तैयार कराअी जाय। अिसलिअे मैं ज़रूर यह अुम्मीद करता हूँ कि केन्द्रमें जल्दी ही कुछ फेरफार होंगे और कम-से-कम खाद्य विभागमें तो ज़रूर ही होंगे, वरना अिसमें शक नहीं कि हमारे सामने बहुत ही विकट समय आनेवाला है। अगर सारी योजनाको अमलमें लानेके लिअे ज़िम्मेदार कर्मचारी समय रहते न जागे (और, अुनके जागनेके कोअी लक्षण नज़र नहीं आ रहे हैं), तो बाहरसे आनेवाली मदद हमारी पूरी-पूरी नालायक़ीका भण्डाफोड़ कर सकती है।”

पूना, १०-३-’४६ अमृतकुँवर

हरिजनसेवक, १७-३-१९४६

मूँगफलीका अुपयोग

डॉक्टर अे० टी० डब्ल्यू० सीमियन्सके मूँगफलीपर लिखे लम्बे लेखका सार नीचे दिया जाता है :

डॉ० सीमियन्सकी राय है कि हम लोग कम शक्तिवाले अिसलिअे होते हैं कि हमारी खुराकमें प्रोटीन, विटामिन और खारवाली चीज़ोंकी कमी रहती है। बंगालके कालके दिनोंमें यह साबित किया जा चुका है कि भुखमरीके शिकार बने लोगोंका जीवन स्टार्च या निशास्ताकी जगह प्रोटीन देनेसे ज़्यादा टिकता था। अुनका कहना है कि ज्यादा अनाजके बजाय ज़्यादा प्रोटीनवाले पदार्थ लोगोंको दिये जायँ, तो देशके पोषक तत्त्वोंकी दृष्टिसे अुनकी क़ीमत कअी गुनी बढ़ जाय। मूँगफलीके आटेमें ५० फ़ीसदीसे भी ज़्यादा प्रोटीन होता है। किसी भी साग-सब्ज़ीके बनिस्बत मूँगफलीमें प्रोटीनकी मात्रा ज्यादा होती है। साथ ही, वह आसानीसे पचाया भी जा सकता है। अेक अेकड़ ज़मीनमें पैदा किये गये गेहूँ, बाजरी या चावलोंकी बनिस्बत अुतनी ही ज़मीनमें पैदा की गयी मूँगफलीमें कअी गुना ज्यादा प्रोटीन होता है। फिर भी हम अुसका पूरा-पूरा फ़ायदा नहीं अुठाते। मूँगफलीकी कुल फ़सलका ४५ फ़ीसदी हिस्सा तेल निकालनेके काममें लिया जाता है। "बाक़ी बची ५५ फ़ीसदी मूँगफलीका क्या होता है? अगर हम अुसके दाने खा सकते हैं, तो दानोंमें से तेल निकालनेके बाद बच रही खली क्यों नहीं खा सकते? अर्थशास्त्री अिसका जवाब यह देते हैं कि मूँगफलीकी खलीका अुपयोग ढोरोंको खिलानेमें और गन्ने व चावलके खेतोंको खाद देनेमें किया जाता है।" अिसपर डॉक्टर सीमियन्स यह दलील पेश करते हैं कि हमारे खेतोंको ज्यादा अुपजाअू बनानेके लिअे गोबर, मैला या पाखाना और

दोंकी इगार-जैसी न खाअी जाने लायक़ चीजें हमारे पास मौजूद तिस पर भी अगर हम खानेके काममें आने लायक़ प्रोटीनको अिस तरह बरबाद करते हैं, तो बहुत बड़ा गुनाह करते हैं। "गन्नेके में मूँगफलीकी खलीकी खाद देनेसे ज़मीनमें डाला गया समूचा प्रोटीन ही बरबाद होता है। क्योंकि गन्नेमें प्रोटीन बिल्कुल नहीं रहता। के अलावा, खलीमें रहनेवाला दस फ़ीसदी तेल, विटामिन और वग़ैरा बरबाद होते हैं, सो अलग। हम दुधार ढोरोंको खली खिलाते अिससे अुनका दूध बढ़ता है और दूध सबसे बढ़िया खुराक है। न गायको मूँगफलीका दस पौण्ड प्रोटीन खिलानेपर हमें अुसके े आधा रतल प्रोटीन भी शायद ही मिलेगा। अिसके बदले, ढोरोंको ोले या आदमीसे न खाअी जा सकनेवाली दूसरी चीज़ें खिलाकर भी नतीजा निकाला जा सकता हो, तो फिर मूँगफलीके प्रोटीनको अिस क्यों बिगाड़ा जाय?"

डॉ० सीमियन्स प्रो० बी० जी० अेस० आचार्यके अेक प्रयोगका ला देते हैं। अुन्होंने चूहोंपर नपी-तुली खुराकका प्रयोग करके यह ा दिया है कि मूँगफलीके प्रोटीनमें जीवनको टिकाये रखनेके काफ़ी मौजूद हैं। वे कहते हैं कि प्रयोगोंसे यह भी साबित हो चुका है मूँगफलीका प्रोटीन अच्छी तरह पचाया भी जा सकता है। "वह ोरके 'माअिक्रोबियल प्रोटीन'के-से गुणोंवाला और दूध, अण्डे और के प्रोटीनसे क़रीब-क़रीब मिलता-जुलता होता है।"

"मूँगफलीकी साफ़ खलीमें ५० फ़ीसदीसे भी ज़्यादा अूँची का प्रोटीन होता है और मांसके प्रोटीनसे अुसमें तेरह फ़ीसदी दा प्रोटीन पाया जाता है। अिस तरह खेतोंमें डाली गयी मूँगफलीकी टन खलीमें ही हम प्रोटीनकी शकलमें पचास भेड़ों, पचास हज़ार अण्डों पन्द्रह हज़ार सेर दूधके बराबर पोषक तत्त्व बरबाद कर डालते हैं।"

प्रोटीनके अलावा मूँगफलीमें स्टार्च, चरबी और खनिज द्रव्य भी हैं। अगर अुसमें थोड़ा स्टार्च या निशास्ता और विटामिन 'सी'

और जोड़ दिया जाय, तो वह खुद पूरी खुराकका काम देती है। 'बी कॉम्प्लेक्स' नामके सबसे ज़्यादा कामके विटामिनकी हिन्दुस्तानमें बड़ी कमी है। लोगोंकी तन्दुरुस्ती और अुनकी अुमर पर अुसका बहुत असर पड़ता है। मूँगफलीमें विटामिन 'बी कॉम्प्लेक्स', खासकर विटामिन 'बी१', निकोटिनिक अेसिड और रिबोफ्लेविन नामकी चीज़ें काफ़ी मात्रामें पायी जाती हैं। ये सब चीज़ें ज़िन्दगीके लिअे बड़े कामकी हैं। कोल्हापुर रियासतके अेक दूरके गाँवमें काम करनेवाले मि० किन्केड नामके पादरीका कहना है कि मूँगफलीकी साफ़ खली खानेसे अुनके स्कूलके बच्चे तगड़े और तन्दुरुस्त बने हैं। गाँवके लोग भी अपना वहम छोड़कर अब मूँगफलीसे फ़ायदा अुठाने लगे हैं। वे अपनी खुराकमें $\frac{1}{2}$ से $\frac{1}{5}$ तक भाग मूँगफलीका भी शामिल करते हैं। खासकर मधुमेहके बीमारोंके लिअे तो मूँगफली अेक देन बन गयी है, क्योंकि अुससे अुनकी रोटीके आटेका राशन बढ़ जाता है। जिस आटेमें मूँगफलीका आटा मिलाया जाता है, अुसकी 'भाकरी' या खस्ता रोटी बच्चे बहुत पसन्द करते हैं। थोड़ा नमक मिलाकर बनायी गयी अैसी 'भाकरी' को बड़ी अुमरवाले भी पसन्द करते हैं। मिठाअी वग़ैरा बनानेमें भी मूँगफलीका आटा काममें लाया जा सकता है।

बिकनेवाली मूँगफलीके दाम सरकारने फी टन रु० ७५ ठहराये हैं। मूँगफली थोड़ी महँगी होती है। मगर डॉ० सीमियन्सकी राय है कि बिकाअू मूँगफलीसे खानेकी मूँगफलीके दाम ज़्यादा होनेपर भी वह सामान्य अनाजोंके मुक़ाबले सस्ती ही पड़ेगी।

मूँगफलीकी खेती करनेवालोंकी निगाहसे सोचें, तो अुसकी खलीका खुराकके तौरपर अुपयोग होनेपर भी तेल या मूँगफलीके बाज़ारमें किसी तरहकी अुथल-पुथल नहीं मचेगी।

"हिन्दुस्तानमें हर साल १५ लाख टन मूँगफली पैदा होती है। अितनी मूँगफलीमें से ७ लाख टन अच्छी-से-अच्छी खुराक मिल सकती है।" प्रोटीनके हिसाबसे अिसकी क़ीमत ३५ अरब अण्डे या १० अरब सेर

दूध या ३॥ करोड़ भेड़ोंके बराबर होती है। अिसके अलावा, हर साल स्टार्च, चरबी, खनिज द्रव्यों और विटामिनकी शकलमें जो कामकी चीजें बरबाद होती हैं, सो अलग। यह सब मूँगफली-जैसी बेशक़ीमती चीज़का ग़लत अिस्तेमाल करनेसे ही होता है।

नअी दिल्ली, २४-६-'४६ अमृतकुँवर

हरिजनसेवक, २५-८-१९४६

६९

अुपयोगी सूचना

डॉ० अेम० अे० चद्रे लिखते हैं:

"अनाजको पहले पीसकर फिर आटेसे रोटी या पूरी बनानेकी चालू पद्धति नुकसानकारक है। अुसमें नीचेके दोष हैं:

"बिजलीकी चक्कीमें अनाज तेजीसे पीसा जाता है। अिससे अुसमें रहे हुअे प्रोटीन, स्टार्च, रेशे (सेल्युलोज) और खनिज क्षार बदल जाते हैं और आटेके गरम होनेसे अुसमें की चर्बीका तत्त्व अुड़ जाता है। आटेको गूँधकर काममें लेने लायक बनानेमें अुसमें आटेके वजनका आधा पानी ही समा सकता है, जिसका नतीजा यह होता है कि अुसमेंका स्टार्च फूलता नहीं। चूँकि अुसमें पानी कम आता है, भोजन कम पौष्टिक बनता है। पूर्वमें गूँधे हुअे आटेसे रोटी या पूरी बेली जाती है, जो आसानीसे पकाअी या सेकी जा सकती है, पर अुसके बदले वह घी या तेलमें तली जाती है। अैसा करनेसे अुसके दोनों तरफ अेक पतली पपड़ी अुठ आती है। पश्चिममें रोटीको पोची व छेदवाली बनानेके लिअे आटेमें खमीर डाला जाता है। पर यह भी पूरी पौष्टिक नहीं होती, न अुतनी स्वास्थ्यप्रद ही होती है, जितनी कि वह कही जाती है। क्योंकि खमीरके अुठनेसे अुसके विटामिन तथा दूसरे भोजनके तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। अतः अिस पुराने रिवाजसे

बनाया हुआ भोजन न तो ज़ायकेदार होता है, न स्वास्थ्यप्रद; न यह पौष्टिक होता है, न आसानीसे पचने लायक । जो थोड़ा बहुत पचता है, अुसके लिअेभी पित्त रस, जठर और 'पेन्क्रियाज़'में से निकलनेवाले पाचक रसोंकी बहुत ज्यादा प्रमाणमें ज़रूरत पड़ती है । आम लोग अिस बातको जानते हैं, अिसका सबूत यह है कि यह भोजन बीमार आदमीको नहीं दिया जाता । बिस्कुट भी अिससे बेहतर नहीं कहे जा सकते । आसानीसे पचने लायक न होनेसे ये कब्ज़ पैदा करते हैं, जो सभी रोगोंकी जड़ है । अिसके अलावा, आटा गूँधनेसे पहले छाना जाता है और चोकर अुससे अलग कर दिया जाता है, यह भी अेक नुकसान है । आटेमें छोटे छोटे जन्तु आसानीसे व शीघ्र ही अुत्पन्न हो जाते हैं, अिससे वह ज्यादा समयके लिअे नहीं रखा जा सकता और अुसके लाने ले जानेमें और अिस्तेमालमें वह काफी घट जाता है, जिससे अुसका अुपयोग बहुत महँगा पड़ता है ।

"सभी अनाजोंकी — खासकर गेहूँ, बाजरा व जवारकी — पोषण शक्ति बढ़ाने और अुसमेंसे खूब आरोग्यदायक आहार बनानेके लिअे लम्बे समयसे प्रयोग करके तय की हुअी प्रणालीसे अूपरकी सभी कमियाँ दूर की जा सकती हैं ।

"नये तरीकेके अनुसार गेहूँकी अमुक मात्राके साथ अुसका साढ़े-तीन गुना पानी मिलाया जाय, अर्थात् अेक कटोरी भरकर गेहूँ और साढ़े-तीन कटोरी भर कर पानी लिया जाय, या वजनसे १ रतल गेहूँके साथ ४ रतल पानी मिलाया जाय । अुसे हल्की आँचपर धीरे धीरे अुबाला जाय । अुबालनेसे पहले अिच्छा हो तो चम्मच भर शक्कर या गुड़ मिलाया जा सकता है । यदि सादा बरतन हो, तो अुसपर ढक्कन रखा जाय । अुबालनेसे पहले यदि गेहूँको १२ से १८ घंटे तक पानीमें भिगोकर रखा जाय, तो लकड़ी कम जलेगी । यदि प्रेशर कुकर (दबाकर ढका जा सके अैसा पकानेका खास बरतन) काममें लिया जाय, तो गेहूँ और पानीका प्रमाण तोलसे १:१$\frac{3}{4}$ हो; यानी अेक सेर गेहूँमें पौने दो सेर पानी मिलायें । गेहूँकी जातिके अनुसार भी पानीका प्रमाण कम-ज्यादा हो सकता

है । अिस प्रकार पकाने या अुबालनेमें करीब दो रतल पानी भाप बनकर अुड़ जाता है और स्टार्च, चोकर और दूसरे तत्त्व पानी पीकर फूल जाते हैं तथा गेहूँ सत्त्ववाले बनते हैं । अिस प्रकार थोड़ा पानी बचे तब तक अुबालनेका काम चालू रखना चाहिये । ठंढे होनेके पहले गेहूँ बचे हुअे पानीको भी सोख लेंगे । अितना गरम भी न करें कि सारा पानी अुड़ जाय, क्योंकि अुससे गेहूँको पूरा पानी नहीं मिलेगा । न बरतनके बचे हुअे पानीको फेंका ही जाय; क्योंकि फेंकनेका अर्थ है गेहूँके अुन तत्त्वोंका नष्ट होना जो पानीमें घुल जाते हैं । जब गेहूँ पूरी तरह पक जायँ, (जो दानोंके फूलनेसे या दबाकर अुनकी नरमी देखनेसे मालूम हो जायगा), तो स्वादिष्ट बनानेके लिअे अुनमें थोड़ा नमक भी डाला जा सकता है ।

"अिस प्रकार पकाये हुअे गेहूँ चबाकर खाये जा सकते हैं या वे खरलसे, पत्थर पर या लकड़ीके दो टुकड़ोंके बीच पीसकर गूँधे हुअे आटे जैसे बनाये जा सकते हैं । प्रेशर कुकरमें पके हुअे गेहूँ तो अपने आप अिस तरह तैयार हो जाते हैं । अिस प्रकारके आटेसे पूरी, रोटी या बिस्कुट बनाये जा सकते हैं और साधारण तरीकेसे खानेके लिअे अुसे आगपर सेका या घी-तेलमें तला जा सकता है ।

"बम्बअी जैसे शहरोंमें, जहाँ कभी कभी गेहूँ न मिलकर केवल आटा ही मिलता है, पहले साधारण रीतिसे आटेको गूँध लिया जाय । फिर अुसे कपड़ेमें बाँधकर अुबलते हुअे पानीके बरतनके अूपर लटका देना चाहिये, जहाँ वह भापसे पूरा पक जाने तक रखा रहे । तब अुससे चालू तरीकेसे रोटी आदि बनाअी जाय ।

"अिस नये भोजनका फायदा यह है कि अुससे ५५ प्रतिशत गेहूँकी बचत होती है । ४० प्रतिशत तो पौने दो गुना पानी सोखनेसे, १० प्रतिशत चोकरके बचे रहनेसे और ५ प्रतिशत दूसरे तरीकेसे होनेवाली बरबादीके न होनेसे । अिसका अर्थ यह हुआ कि अेक माहका अनाज दो महीने चलेगा । वास्तवमें, अिस प्रकार पकानेसे गेहूँका प्रमाण बढ़कर ढाअी गुना हो जाता है, अर्थात् अेक माप गेहूँ बढ़कर ढाअी माप हो

जाते हैं। अिसका मतलब यह हुआ कि जितने आटेकी पुराने तरीकेसे ४ रोटियाँ बनती थीं, अुतने ही आटेकी अिस नये तरीकेसे अुतनी ही मोटी और बड़ी १० रोटियाँ बन जाती हैं।

"अिसके अलावा भोजन ज्यादा ज़ायकेदार, स्वास्थ्यप्रद, पोषक और आसानीसे पचने लायक होता है, क्योंकि अुसके जाने हुअे और न जाने हुअे सभी तत्त्व अुसके अन्दर रह जाते हैं और सबमें बराबर बँट जाते हैं। अिसके अलावा, अिसके खानेवालेका वजन दिखने लायक प्रमाणमें बढ़ जायगा। साथ ही, आसानीसे पचने लायक होनेके कारण यह भोजन बीमार आदमीको भी खिलाया जा सकता है। और भी, अिस तरीकेको काममें लेनेसे गेहूँ, बाजरी, जुवार आदि अनाजोंको अधिक लम्बे समय तक सड़े बिना संग्रहित करके रखा जा सकेगा और आटेको लाने ले जानेसे होनेवाला नुकसान बन्द हो जायगा। साथ ही आटेकी चक्कियोंकी आवश्यकता न रहेगी।

"सबसे बड़ी बात तो यह है कि अिस तरीकेसे सबको खुराक मिल सकेगी। अिस पौष्टिक खुराकसे भारतको प्रतिवर्ष करीब ८० से १२० लाख टन गेहूँकी बचत होगी, जिसकी कीमत रु० ३६० प्रति टनके भावसे ३०० से ४५० करोड़ रुपये होगी और अुतनी ही बाजरी तथा जुवार भी बचेगी। अिस तरह वर्तमान अनाजकी तंगी मिट जायगी और हमारे भूखे मरते लोगोंका भविष्य अुज्ज्वल हो जायगा।"

हरिजन, १४-७-१९४६

७०

अेक अुपवास कितना बचा सकता है

अिण्डोनेशियाने हमें ५०,००० टन चावल देनेका वचन दिया है। ५०,००० टन = ११ करोड़ २० लाख रतल (पौंड)। अितना अनाज बड़ी अुमरके ११ करोड़ २० लाख मनुष्योंको, प्रति मनुष्य अेक रतलके हिसाबसे, अेक दिनके लिअे काफी होता है।

अिसलिअे, यदि बड़ी अुमरके ११ करोड़ २० लाख मनुष्य अेक दिनका अुपवास करें, तो अिण्डोनेशियासे आनेवाला ५०,००० टन चावल बच जाय।

सूचना: बूढ़े, कमजोर और शारीरिक श्रम करनेवाले मजदूरोंको छोड़कर बाकी सब बड़ी अुमरके मनुष्योंको हर शनिवार शामका भोजन छोड़ देना चाहिये।

यहाँ हिन्दुस्तानमें बड़ी अुमरके २४ करोड़ मनुष्य हैं, जिनमेंसे ८ करोड़ शारीरिक श्रम करनेवाले हैं।

अिसलिअे शनिवारकी शामका अेक समयका भोजन छोड़ देनेसे अेक बड़ी अुमरके मनुष्यका औसतन आधा रतल अनाज बचे, तो शारीरिक श्रम करनेवालोंको छोड़कर बाकीके सब बड़ी अुमरके १६ करोड़ मनुष्योंका अिस वर्षके बाकी रहे हुअे २६ शनिवारोंका कुल २०८ करोड़ रतल अनाज बच जाये। २०८ करोड़ रतल = ९.२ लाख टन अनाज।

अिससे अनाजकी जो कमी मानी गअी है, वह दूर होगी। सब दलोंको, सब प्रान्तकी सरकारोंको और व्यक्तियोंको तथा समाचारपत्रोंको हर शनिवार अेक समयका खाना छोड़नेकी बातका समर्थन करना चाहिये। देशके कुछ भागोंमें जो भुखमरी आ रही है, अुसे दूर करनेमें हिन्दुस्तानकी जनता अितना हिस्सा ले तो भुखमरी टल जाय। अर्थात् अिस भुखमरीमें हिस्सा लेनेका अर्थ दरअसल खुराक बाँटकर खाना होगा।

और दूध, अण्डों व मांसमें पाये जानेवाले प्रोटीन और मूँगफलीके प्रोटीनमें बहुत थोड़ा फर्क होता है।

बहुतसे प्रयोगोंके बाद हम अिस नतीजेपर पहुँचे हैं कि १ से २ छटाँक तक मूँगफलीकी खली बड़ी आसानीसे पचाअी जा सकती है और अनाजके आटेके साथ मिलानेसे वह खानेको और भी ज़ायकेदार बना देती है। खलीके टुकड़े पानीमें भिगो दिये जाते हैं और लगभग २ घण्टोंमें अुनका अेकसा चूरा बन जाता है। अिस चूरेको आटेके साथ मिलाकर चपातियाँ बनाअी जा सकती हैं। अेक हिस्सा खलीके साथ ५ हिस्सा आटा मिलाना काफ़ी होगा। अगर दाल या तरकारीके साथ अिस चूरेको पकाया जाय, तो यह अुसके स्वादको बढ़ा देता है। आधा हिस्सा अनाज और आधा हिस्सा खलीसे या अनाजके बिना भी सिर्फ़ खलीके चूरेसे तैयार किया हुआ दलिया या लपसी बड़ी ज़ायकेदार बनती है।

मूँगफलीकी खलीके अैसे अुपयोगसे ज़रूरतका थोड़ा अनाज बच सकता है; साथ ही खली तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाली अुम्दा खुराक भी होगी।

शकरकन्द : अिनमें काफ़ी स्टार्च (निशास्ता) होता है और ये अनाजके बदले अच्छी तरह काममें लाये जा सकते हैं। अुन्हें भापपर पकाया जाय तो सारे पानीको भाप बनकर अुड़ जाने दिया जाय, वर्ना बहुतसे नमकीन पदार्थ पानीके साथ घुल जायँगे और अुन्हें पानीके साथ फेंक देना पड़ेगा।

शकरकन्द शाक-भाजी, दूध, या दहीके साथ मिलाकर या दूसरे किसी रूपमें खाये जा सकते हैं। अगर किसी वक़्तकी खुराकमें अनाजकी जगह कन्दोंका ही अुपयोग किया जाय, तो अनाजकी मामूली मात्रासे वे थोड़ी ज्यादा मात्रामें खाये जायँ।

हरिजनसेवक, ६-४-१९४७

देवेन्द्रकुमार गुप्त
(अ० भा० ग्रा० संघ)

७२

दूधकी मिठाअियाँ

अेक भाअी लिखते हैं:

"आप जानते हैं कि हिन्दुस्तानमें दूधकी कितनी तंगी है। यहाँ जमशेदपुरमें लगभग २॥ लाखकी आबादी है। अगर हर आदमीको २॥ छटाँक दूध भी दिया जाय, तो रोज़ १००० मन दूधकी खपत होगी। अुसके खिलाफ़ टिस्को डेरी रोज़ सिर्फ़ ३० मन दूध पैदा करती है, और हम लोग दूसरा ३ मन। ग्वाले घर-घर जाकर कितना पानी मिला दूध बेचते होंगे, यह हम नहीं जानते। लेकिन अितना हम ज़रूर जानते हैं कि जब छोटे बच्चों, गर्भवाली औरतों और बीमारोंको दूध पीनेको नहीं मिलता, तब हलवाअी लोग रोजाना लगभग ५० मन दूधकी मिठाअियाँ तैयार करते हैं। क्या रसगुल्लों, पेड़ों और अैसी ही दूसरी मिठाअियोंको पहला स्थान देकर खुराकके रूपमें दूधके अिस्तेमालको बन्द कर देना ठीक होगा?"

गांधीजीने कअी बार चिल्ला-चिल्लाकर अिस सवालपर अपनी राय जाहिर की है। आजके नाज़ुक समयमें अन्नका अेक दाना भी बरबाद करना गुनाह है। मिठाअियाँ खाना तो बरबादीसे भी बदतर है। वे खानेवालोंको नुक़सान पहुँचाती हैं और दूसरोंको दूधकी ज़रूरी खुराकसे वंचित रखती हैं। यह देखना जनताका काम है कि मिठाअी खाना तुरन्त बन्द कर दिया जाय। जब तक बीमारों और बच्चोंके लिअे काफ़ी दूध नहीं मिलता, तब तक दूधसे बनी हुअी सारी मिठाअियोंपर रोक लगा दी जानी चाहिये। सारे समझदार लोगोंको, अपनी ज़िम्मेदारी समझकर दूधकी मिठाअियोंको न छूनेकी और दूसरोंको भी अिसके लिअे राज़ी करनेकी प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये। जनताकी राय सबसे कारगर

क़ानून है। अगर जनता अिस नाज़ुक हालतको और बच्चों व बीमारोंको ज़रूरी खुराकसे वंचित रखनेवाली मिठाअी खानेकी बुराअीको समझ ले, तो वह अपनी गलतीको सुधार लेगी। जनताकी जाग्रत रायके बिना बनावटी कण्ट्रोलसे कोअी फायदा नहीं हो सकता।

रावलपिण्डी, ३१-७-'४७ — सुशीला नय्यर

हरिजनसेवक, १७-८-१९४७

७३

आये हुअे पत्रोंसे

सोयाबीनके बारेमें 'हरिजनसेवक' के कॉलमोंमें चर्चा की जा चुकी है। बरेलीसे अेक दोस्त लिखते हैं:

"अिस जिलेके मेरे खेतोंमें मैंने सोयाबीन पैदा की है। खरीफ़ फ़सलके नाते वह खूब पकी है और कुछ दोस्तोंने, जिन्होंने अुससे बनी कअी चीज़ोंको चखा है, अुसे बहुत पसन्द किया है। लड़ाअीके दिनोंमें दूधकी कमी होनेसे मेरे अेक दोस्तने सोयाबीनके बने दूधसे ही काम चलाया है।

"अगली बारिशमें वह अैसे तमाम खेतोंमें पैदा की जा सकती है, जहाँ बरसातका पानी ज्यादा समय तक नहीं ठहरता। खासकर बँगलोंसे जुड़ी हुअी खाली ज़मीनोंमें बोनेके लिअे सोयाबीनकी फ़सल बड़े कामकी साबित होगी। पंजाब और पश्चिमी यू० पी० के लोगोंकी तन्दुरुस्ती ज्यादा चावल खानेसे बिगड़ जाती है। बाजरा और मक्का बहुत लोगोंको माफ़िक नहीं आते। गेहूँ मुश्किलसे मिलते हैं। अिसलिअे अगर आम तौरपर नहीं, तो

कम-से-कम कुछ लोगोंके लिअे तो सोयाबीन गेहूँ, चावल वगैराकी जगह ले सकती है और फ़ायदेमन्द साबित हो सकती है।"

* * *

'अेग्री-हॉर्टीकल्चरल सोसायटी' की सालाना जनरल मीटिंगकी सभानेत्रीकी हैसियतसे श्रीमती लीलावती मुंशीने आम जनता और बम्बअी म्युनिसिपल कार्पोरेशनके सामने कुछ कामके सुझाव पेश किये हैं:

(अ) पहाड़ीकी चोटीपर बने हुअे हैंगिङ्ग गार्डनको छोड़ कर, बॉम्बे गैरेजसे लेकर केम्प्स कॉर्नर तककी मलाबार हिल्की सारी ढालू ज़मीनको शाक-भाजीके बगीचेमें बदल दिया जाय। अितनी ज़मीन अेक हजार आदमियोंको बड़ी आसानीसे शाक-भाजी दे सकती है।

(आ) आजकलके नये तरीक़ोंको अमलमें लाकर सारे मकानोंकी छतोंपर छोटे पैमानेपर टमाटर और दूसरी हरी भाजियाँ पैदा की जायँ।

(अि) शहरके सारे कूड़े-करकटकी रासायनिक रीतिसे खाद तैयार की जाय।

(अी) बच्चोंमें, स्कूल और घर दोनों जगह, फलके पौधे, तरकारियाँ और अनेक तरहके अनाज पैदा करनेकी रुचि अुत्पन्न की जाय। अिससे बच्चोंका फालतू समय तन्दुरस्ती बढ़ानेवाले कामोंमें खर्च होगा और समाजसेवाकी भावनायें भी अुनमें बचपनसे ही पैदा हो जायँगी।

अुनका यह कहना ठीक है कि अगर तरकारियोंका बगीचा ठीक ढंगसे सजाया जाय, तो वह सुन्दर भी दिखाअी देगा। ज़रूरत पड़नेपर सोसायटी अिस बारेमें जानकारोंकी सलाह देनेके लिअे भी तैयार है।

* * *

अेक पत्र-लेखकने गांधीजीके अिस सुझावका स्वागत किया है कि अनाजकी कमीके अिन दिनोंमें कच्ची तरकारियाँ खाअी जायँ और

कभी-कभी पूरा या आधा अुपवास भी किया जाय। सादा भोजन और यौगिक आसन कअी लोगोंकी अनचाही चर्बीको घटाकर अुनकी पाचन शक्तिको सुधार देते हैं। अधिकतर मालदार लोगोंकी बीमारियाँ ग़लत खान-पान या ज्यादा खानेसे पैदा होती हैं। अिस कठिन वक़्तमें अगर खान-पानके मामलेमें थोड़े सोच-विचारके साथ संयमसे काम लिया जाय, तो ये दोनों कठिनाअियाँ दूर की जा सकती हैं।

* * *

बकरीका दूध कम-से-कम खर्चमें मिल सकता है। कअी बड़े परिवारोंमें रोज़ काफ़ी खुराक तरकारियोंके छिलकों और डण्ठलों वग़ैराके रूपमें फेंक दी जाती है, जिससे अेक बकरीका पेट आसानीसे भर सकता है।

हिन्दुस्तान जैसे देशमें, जहाँ चरागाहोंकी बड़ी कमी है और बहुत थोड़े किसान दुधार मवेशी पाल सकते हैं, दुधार बकरी ही ग़रीबकी गायकी जगह ले सकती है।

कुछ लोग बकरीका दूध अिसलिअे नापसन्द करते हैं कि अुसमें बदबू आती है। लेकिन अुसकी यह बुराअी सफ़ाअीसे दूध निकालने और अुबालनेसे दूर की जा सकती है।

अुरुळी, २८-३-'४६ **अमृतकुँवर**

हरिजनसेवक, १४-४-१९४६

७४

अन्नकी कमी और वैज्ञानिक खोज

अन्नकी कमीके सम्बन्धमें वाअिसरॉयके प्राअिवेट सेक्रेटरी जिस दिन सेवाग्राममें गांधीजीसे मिले, तभीसे गांधीजी आनेवाले खतरेका सामना करनेके तरीके खोजनेमें लगे हुअे हैं। अुन्होंने 'ज्यादा अनाज पैदा करो' और 'जितना हो सके अुतना अन्न बचाओ' के आन्दोलनोंपर सबसे ज्यादा ज़ोर दिया है। हमारे आश्रममें फूलोंके तमाम पौधे खोद डाले गये हैं और अुनकी जगह तरकारियाँ अुगाअी गअी हैं। वहाँ यह नियम बनाया गया है कि ज़रूरतसे ज्यादा अेक कौर भी किसीको नहीं खाना चाहिये और अन्नका अेक दाना भी बरबाद नहीं करना चाहिये। अिसके अलावा वे यह भी सोचते रहे हैं कि अन्नकी कमी और किन चीज़ोंसे पूरी की जा सकती है। अेक रोज अुन्होंने मुझसे पूछा कि क्या दाने पड़नेके पहले गेहूँकी मुलायम बालियोंमें किसी तरहके पोषक तत्त्व मौजूद रहते हैं? अिससे अुनका मतलब अगली फ़सल पकने तककी मुसीबतोंको टालनेका था। जहाँ तक मैं जानती हूँ, दाना पड़नेके पहले गेहूँके बालों या मुलायम कोपलोंमें किसी तरहका पोषक तत्त्व नहीं रहता। देशकी खोजशालाओंका यह फ़र्ज़ है कि वे अिस बातकी खोज करें और अकालके खतरेसे बचनेमें मदद पहुँचायें। कुछ डॉक्टरी पत्रोंमें अैसी रिपोर्टें छपी हैं कि वैज्ञानिकोंने घासको वह शकल देनेमें सफलता पा ली है, जिसे अिन्सान खा सके और पचा सके। अिस सिलसिलेमें कून्नूरकी पोषक खुराकके बारेमें खोज करनेवाली प्रयोगशाला बहुत बड़ा काम कर सकती है। अिस बातकी पूरी-पूरी अुम्मीद है कि अुस संस्थाके अधिकारी कुछ समयके लिअे अपनी सैद्धान्तिक खोजोंको बन्द कर देंगे और अन्नकी कमीको दूर करनेके साधनों और तरीक़ोंकी खोजमें ही अपनी ताक़त लगा देंगे। मसलन्, अनाजकी जगह लेनेवाली चीज़ोंकी खोज करना, आलू-शलजम और गाजर-मूली जैसी गठीली और जड़ोंवाली फसलोंकी

अुपयोगिताका पता लगाना। यह मानी हुअी बात है कि ये फ़सलें थोड़े समयमें बहुत ज्यादा मात्रामें पकती हैं, और अन्न-संकटको मिटानेमें पूरी मदद कर सकती हैं। देशके मौजूदा अन्नकी ठीक-ठीक सार-सँभाल करनेके सुझाव देकर भी संस्थाके अधिकारी बड़ा काम कर सकते हैं। अेक दोस्त, जिन्हें खेती और किसानोंका अच्छा अनुभव है, अुस दिन कह रहे थे कि किसानों द्वारा अिकट्ठे किये हुअे गेहूँकी ठीक-ठीक देखभाल न हो सकनेके कारण अुसका लगभग १/५ वाँ भाग बरबाद हो जाता है। अिसका अिलाज फ़ौरन ही किया जाना चाहिये। मेडिकल विभागके खोज करनेवालोंका काम है कि वे अिसके लिअे कारगर और सादे तरीक़े सुझायें। वे सादे, पौष्टिक और मित भोजनकी मात्रा सुझा सकते हैं, नपी-तुली खुराककी बातें सुझा सकते हैं और साथ ही अन्नके मामलेमें जितनी हो सके अुतनी कोरकसरके रास्ते भी सुझा सकते हैं। कुन्नूरकी 'न्यूट्रीशन रिसर्च लेबोरेटरी' ने देशके पढ़े-लिखोंको खुराकके बारेमें जाग्रत करके देशकी अुपयोगी सेवा की है। अब आम जनताकी मदद करना अुनका काम है। तभी हर साल रिसर्च या खोज पर जो भारी खर्च होता है, वह अुचित माना जा सकेगा। रिसर्चके कामोंमें खर्च होनेवाला पैसा ग़रीबोंकी जेबोंसे आता है, अिसलिअे रिसर्चका काम करनेवालोंको चाहिये कि वे लोगोंको अुस भुखमरीसे हरगिज़ न मरने दें, जो टाली जा सकती है।

सुशीला नय्यर

[अन्नसंकट पर मैं जितना ही सोचता हूँ, अुतना ही मेरा यह विश्वास मज़बूत होता जाता है कि लोग अन्नकी कमीसे भूखों नहीं मर रहे हैं, बल्कि अिसलिअे भूखों मर रहे हैं कि अिस चीज़के जानकारोंमें आपसी सहयोग नहीं है, और केन्द्रमें अैसी राष्ट्रीय सरकार नहीं है, जो संकटका मुक़ाबला करनेपर तुली हो और लोगोंमें अपने लिअे विश्वास पैदा कर सके।

नअी दिल्ली, २०-४-'४६ **— मो० क० गांधी**]

हरिजनसेवक, १२-५-१९४६

७५

दुष्काल संबंधी बातें

अनाजका दुरुपयोग

अमेरिकासे अन्न आनेकी संभावना दूर हटती जाती है और अिससे हमारी रेशनिंग पद्धतिके जूनके तीसरे हफ्तेमें टूट जानेका डर पैदा हो गया है। अतः मनुष्योंको भूखसे तड़पकर मरनेसे बचानेके कामके सिवाय अन्नका कोअी भी दूसरा अुपयोग न हो, या अेक दाना भी व्यर्थ नष्ट न किया जाय, अिसके लिअे बहुत सख्त कदम अुठाये जाने चाहियें। कुछ समय पहले 'हरिजन' के कालमोंमें अुद्योगोंके लिअे स्टार्च और डेक्सट्राअिन (अेक तरहका गोंद जो कपड़ोंपर कलप करनेके काम आता है) बनानेमें जो अत्यधिक मात्रामें अनाजका अिस्तेमाल होता है, अुसकी टीका की गअी थी। अेक मित्रने अभी अेक तफसीलवार नोट भेजा है, जिसमें बताया है कि न केवल करीब १ लाख ६१ हजार टनसे ज्यादा अनाज अिस काममें लिया जाता है, बल्कि काफी मात्रामें अनाज व्यर्थ नष्ट भी होता है। यह बिगाड़ और अनाजका अुपयोग बहुत घटाया अथवा अेकदम रोका जा सकता है। वे भाअी लिखते हैं:

"जहाँ तक मुझे मालूम हुआ है, अिस समय सारे ब्रिटिश भारत व रियासतोंमें बड़े पैमानेपर स्टार्च, डेक्सट्राअिन और मैदा बनानेके लिअे स्टार्चके १३ कारखाने हैं। स्टार्च और डेक्सट्राअिन बनानेके लिअे अुपयोगमें आनेवाले कच्चे मालमें गेहूँ, जौ, मक्का, चावल, टेपिओका, आलू और बार्ली वगैरा खानेकी चीज़ें शामिल हैं।

"अिन स्टार्च और डेक्सट्राअिनका अुपयोग अुद्योगोंमें तरह तरहसे होता है। मैं यहाँ पर केवल अुन तीन बातोंका अुल्लेख करूँगा, जिनमें अिनका अुपयोग बहुत बड़े पैमानेपर होता है:

"१. वस्त्र अुद्योगमें 'साअिज़' या 'साअिज़िंगमें काम आनेवाली' वस्तुके रूपमें, अर्थात् कपड़ेपर माँड चढ़ानेमें : ताना तैयार करते समय या बुनते समय अुसकी मजबूती बढ़ानेके लिअे सूत और कपड़ेको या दोमें से किसी अेकको, सामान्यतः माँड़ लगायी जाती है। जितनी तफसील मुझे मिली है, अुसके आधार पर स्टार्च या डेक्सट्राअिनसे बने हुअे और कपड़े पर माँड़ चढ़ानेके लिअे मिलोंमें और हाथ करघा चलानेवाली मंडलियों तथा कारखानोंमें अुपयोगमें लिये जानेवाले अैसे पदार्थोंकी खपतका सालाना अन्दाज सारे हिन्दुस्तानमें लगभग १,३२,००० टन कूता गया है। माँड़ कितनी चढ़ाअी जाय या काममें ली जाय, अिसका आधार अुपयोग किये जानेवाले सूतके नम्बर पर, तैयार होनेवाले कपड़े वगैराकी जात पर, अुस मालके बाजारमें मिलनेवाले भाव पर और खास तौर पर कारखानेवालोंकी धुन या मौज पर रहता है। हल्के और सस्ते सूती कपड़े पर ज्यादा भाव लेनेके लालचसे खूब माँड़ चढ़ायी जाती है, और अिसका बोझ अेकन्दर सस्ता कपड़ा खरीदनेवाले गरीब वर्ग पर पड़ता है। ६० प्रतिशतके हिसाबसे माँड़ चढ़ानेके लिअे लगनेवाले १,३२,००० टन पदार्थ पानेके लिअे हर साल ७०,२०० टन स्टार्च और डेक्सट्राअिनकी ज़रूरत होती है, जिनकी बनावटमें अिससे दुगुना कच्चा माल लगता है। दूसरे शब्दोंमें कहें, तो कपड़ेपर माँड़ चढ़ानेके लिअे ज़रूरी पदार्थ बनानेमें अुपरोक्त खाद्य पदार्थोंका सालाना १,४०,४०० टन जत्था काममें लिया जाता है।

"२. गोंद या चिपकानेके काममें अिस्तेमाल की जानेवाली गोंद जैसी चीज़ोंकी बनावटमें : दो चीज़ोंको अेक-दूसरीके साथ जोड़ने या चिपकाने और अिसी तरहके अलग-अलग कामोंके लिअे काममें लिये जानेवाले गोंद और गोंद जैसी दूसरी चीज़ोंकी बनावटमें गेहूँ और चावलका आटा तथा टेपिओका का पाअुडर कितना

अिस्तेमाल किया जाता है, अिसके आँकड़े नहीं मिलते। फिर भी अुसका सालाना अन्दाज़ लगभग १५०० टन आता है। और अुतना आटा और पाअुडर पानेके लिअे २००० टन कच्चा माल (खाद्य पदार्थ या अनाज) चाहिये।

"३. कपड़े रंगनेके रंगोंमें मिलावट करनेमें: सब कोअी जानते हैं कि 'डाअिज़' या 'कलर्स' यानी रंगके पदार्थोंके व्यापारमें अुनकी ताकत घटानेके लिअे डेक्सट्राअिनका अुपयोग किया जाता है। मुझे जहाँ तक जानकारी मिली है, हिन्दुस्तानके अलग-अलग प्रान्तोंमें अिस कामके लिअे ५,५०० टन डेक्सट्राअिन अिस्तेमाल किया जाता है। अिसमें बम्बअी प्रान्त सबसे आगे बढ़ जाता है, जहाँ २५०० टन डेक्सट्राअिन काममें लिया जाता है। मुझे अैसा शक है कि दरअसल अिसकी जितनी मात्रा काममें ली जाती है, अुसके मुकाबले ये आँकड़े कम हैं, क्योंकि मुझे अुसके अिस्तेमालके पूरे-पूरे आँकड़े नहीं मिल सके। अिस बारेमें ज़रूरी तफसील सरकारी तंत्र द्वारा ही अिकट्ठी की जा सकती है।

"अिम्पीरियल केमिकल अिण्डस्ट्रीज़, साअिबा (अिण्डिया लिमिटेड), शॉ वॉलेस और गीगी जैसी रंगका व्यापार करनेवाली मुख्य कंपनियाँ और बहुतसी हिन्दुस्तानी कंपनियाँ भी आम तौर पर बाजारमें बिकनेवाले रंगोंमें मिलावट करके अुनकी ताकत कम कर देती हैं। अिस कामके लिअे बारीक और अूँची जातका डेक्सट्राअिन या स्टार्च अिस्तेमाल किया जाता है। कच्चे मालमेंसे सिर्फ ३० प्रतिशत ही डेक्सट्राअिन तैयार हो सकता है। यानी ५,५०० टन डेक्सट्राअिन बनानेमें १९,००० टन अनाज कच्चे मालके तौर पर खर्च हो जाता है।

"अिस तरह अिन तीन कामोंमें कुल १,६१,४०० टन अनाज खर्च हो जाता है।

"स्टार्च और डेक्स्ट्राअिन अिस्तेमाल करनेवाले ग्राहकोंके पाससे मैंने ये आँकड़े अिकट्ठे किये हैं। अिसलिअे मेरा अन्दाज़ कारखानोंकी पैदावारके आधार पर नहीं, बल्कि अिन चीज़ोंकी असल खपतके आधार पर है। अिसमें बिगाड़के लिअे, कारखानेवालोंकी माल भर रखने और संग्रह करनेकी वृत्तिके लिअे २० प्रतिशत और जोड़ लिया जाय। अर्थात्, अिन सब चीज़ोंकी बनावटमें सचमुच काममें लिये जानेवाले अनाजकी मात्रा लगभग २ लाख टन सालाना समझनी चाहिये।"

अिसके बाद पत्र लिखनेवाले भाअी कारखानोंमें चलनेवाली अव्यवस्था और रिश्वतखोरीकी बुराअीके कारण होनेवाले बिगाड़का वर्णन करते हैं।

"सिर्फ रिश्वतखोरीकी बुराअीके कारण कपड़े और सूतकी मिलोंमें और रंगके कारखानोंमें साअिज़िंगके लिअे अिस्तेमाल किये जानेवाले पदार्थोंका भारी बिगाड़ होता है। साअिज़िंग मास्टरको या रंगकी मिलावट करनेवाले कारीगरको या कारखानेके मैनेजरको आम तौर पर बख्शीश, रिश्वत या कमीशन दिया जाता है और अुसका आधार अुसके द्वारा दिये जानेवाले आर्डर पर रहता है। कभी-कभी अेक आदमीके बदले तीन-चार आदमियोंको चढ़ता-अुतरता कमीशन देना पड़ता है और अिससे अुसकी रकम बहुत बढ़ जाती है। कुछ मामलोंमें साअिज़िंग मास्टर या मैनेजर ज्यादा कमीशन खानेका लोभ करता है। अिसलिअे वह यह कहकर किसी मालके बहुत बड़े जत्थेका आर्डर दिया करता है कि वह माल बड़े महत्त्वका है। अिस जातका माल बहुत खपता है, अैसा बतानेके लिअे अुसके बड़े-बड़े जत्थे व्यर्थमें बिगाड़ दिये जाते हैं।

"कितने ही मामलोंमें अैसा होता है कि जिस कपड़ेकी कीमत ६ से ८ आना होती है, अुसे बहुत ज्यादा और मोटी माँड़ चढ़ाकर गरीब और अज्ञान लोगोंके मत्थे १० से १४ आनेके भावसे मढ़ दिया जाता है। कपड़ेके निष्णातोंको नियुक्त करके अिसे

रोका या सुधारा जा सकता है, जो यह तय करें कि किसी खास नम्बरके सूतके खास तरहके कपड़ेपर ज्यादा-से-ज्यादा और कम-से-कम कितनी माँड़ चढ़ाअी जा सकती है। मुझे लगता है कि राष्ट्रीय सरकारको अिस सवाल पर विचार करना पड़ेगा।

"अिसी तरह २ और ३ नम्बरके मुद्दोंमें बताअी गअी बुराअियों पर नियंत्रण रखनेका तरीका यह है: या तो अिन कामोंमें आनेवाले अूपर बताये हुअे पदार्थोंके बदले दूसरे कोअी पदार्थ बताये जायँ, या कम-से-कम बाहरसे रंग मँगानेवालों, रंगमें मिलावट करनेवालों और बाजारमें बेचनेके लिअे रंगकी पुड़ियाँ बनानेवालों पर यह पाबन्दी लगा दी जाय कि वे रंगकी ताक़त कम करनेमें अिन चीज़ों (डेक्सट्राअिन वग़ैरा) का बिलकुल अुपयोग न करें। यहाँ भी अेक तरफसे रिश्वतखोरी चलती है और दूसरी तरफसे ग्राहकोंको धोखा दिया जाता है। जिन रंगोंका भाव ३ से ६ रुपये होता है, अुनकी ताक़त डेक्सट्राअिन मिलानेसे ५० प्रतिशत घटाकर अुन्हें अुसी भावमें या अुससे अूँचे भावमें बेचा जाता है और अिस तरह १०० प्रतिशतसे ज्यादा नफा लिया जाता है।"

अनाज और कंदमूलके अितनी भारी मात्रामें होनेवाले अुपयोगको या तो अेकदम बंद किया जा सकता है या अुसमें बहुत बड़ी कमी की जा सकती है। अैसा करके ये चीज़ें मनुष्योंके अुपयोगके लिअे बचाअी जा सकती हैं। पत्र लिखनेवाले भाअी बताते हैं कि अैसे कदम अुठानेसे कपड़े व सूतका धन्धा या रंगका व्यापार न तो किसी तरह रुकेगा और न अुस पर कोअी बुरा असर होगा। क्योंकि अनाज और कंदमूलमें से मिलनेवाले स्टार्च और डेक्सट्राअिनके बदलेमें कॉफीके बीजोंमें से मिलनेवाला डेक्सट्राअिन और अिमलीके बीजों व आमकी गुठलीकी गरीसे मिलनेवाले स्टार्च और कअी जंगली पेड़ोंके फलोंको काममें लिया जा सकता है। ये अनाज और कंदमूलसे पैदा होनेवाले स्टार्च या डेक्सट्राअिन जैसा ही काम देते हैं। आज हजारों टन अिमलीके बीज परदेश भेजे जाते हैं।

नुकसानदेह खेती

गुजरातसे अेक भाअीने खाद्य पदार्थोंकी खेतीको नुकसान पहुँचाकर तमाखूकी खेतीका जो विस्तार होता जा रहा है, अुसके बारेमें अिससे भी अधिक चौंकानेवाली हकीकतें भेजी हैं। अुनके पत्रका सार नीचे दिया है:

"अेक तरफ तो आप लोगोंसे कहते हैं कि ज्यादा शाक-भाजी और अनाज पैदा करनेके लिअे बगीचोंके फूलके झाड़ निकाल डालो और खेतीके लिअे नये कुअें खुदाओ और पुरानोंकी मरम्मत कराओ, तब दूसरी तरफ़ खुराकके तौर पर किसी काममें न आनेवाली और तन्दुरुस्तीको नुकसान पहुँचानेवाली तमाखूकी खेतीमें लाखों अेकड़ ज़मीन रोक ली जाती है। अिस तरह जिन बोअरिंगके कुओं, अिन्जनों और क्रूड ऑअिलका अुपयोग अकालसे बचनेके लिअे ज्यादा अनाज पैदा करनेमें किया जा सकता है, अुनकी मददसे कालेबाजारमें बेचनेके लिअे तमाखू पैदा की जाती है।

"ब्रिटिश सरकारने १९४२ में तमाखू पर १८ आने सेर या ४५ रुपये (बंगाली) मनका कर लगा दिया और बादमें अुससे ज्यादासे ज्यादा पैसा कमानेकी नीयतसे अुसकी खेतीको प्रोत्साहन देना शुरू किया।

"रियासतोंमें तमाखूपर कर नहीं रखा गया था। वहाँके अधिकारियोंने मुफ़्त ज़मीन और तमाखूके बीज देनेका कहा और तमाखूकी खेतीके जानकार किसानोंको वेतन देकर बाहरसे बुलाया और अुनके द्वारा अपने-अपने राज्यमें तमाखूकी खेती शुरू कराअी। अिस तरह तमाखूकी खेती करनेवाले लगभग ३ हजार किसान परिवार गुजरातसे रजवाड़ोंकी हदमें चले गये। वे गुजरातकी हद पर स्थित भावनगर, जूनागढ़, मोरवी, जामनगर वगैरा राज्योंमें जाकर बस गये और तमाखूकी खेती करने लगे। अिसके अलावा, अुदयपुर, जोधपुर, खेतड़ी, नीमच, पीपलोद, रतलाम, ग्वालियर, भोपाल, देवास, अिन्दौर, अुज्जैन और मारवाड़के सिरोही वगैरा राज्योंमें भी तमाखूकी

खेती फैल गअी है। सिन्धके हैदराबाद, सक्कर और खेरज जिलोंमें ९० हजार बीघा ज़मीनमें तमाखूकी खेती की जाती है। निज़ाम हैदराबाद तथा पालनपुरमें तमाखू पर कर लगाया गया है और सरकारी आय बढ़ानेके लिअे अुसकी खेतीको प्रोत्साहन दिया जाता है। मध्यप्रान्तके अमरावती, यवतमाल और खामगाँव जिलोंमें चरोतर (गुजरात) के पाटीदारोंको बुलाकर तमाखूकी खेतीके लिअे बसाया गया है। बड़ौदा राज्यके महेसाणा जिलेमें तमाखूकी पैदावार अेक हजारसे बढ़कर ७ लाख थैले तक पहुँच गअी है।”

वे भाअी यह सुझाते हुअे अपना पत्र पूरा करते हैं कि जब तक अकालकी हालत मौजूद रहे, तब तक कानून बनाकर सारी तमाखूकी खेतीपर रोक लगा दी जाय और खुराककी चीज़ोंके लिअे निश्चित की हुअी फ़ाजिल जमीनमें पहले तिलहन और कपासकी खेतीको जगह दी जाय। अिससे दुधार जानवरोंको खली और बिनौले दिये जा सकेंगे और अनाज बचेगा।

गन्टूरसे आअी हुअी शिकायत

गन्टूरसे श्री सीताराम शास्त्री लिखते हैं :

“पिछले महीनेमें गन्टूरके डेप्युटी डाअिरेक्टर ऑफ अेग्रिकल्चरसे गन्टूर जिलेमें होनेवाली तमाखूकी खेतीके बारेमें मेरी चर्चा हुअी। तमाखूकी खेतीको रोकनेसे बची हुअी ज़मीनको अनाजकी खेतीके अुपयोगमें लेनेके बारेमें सरकारकी तरफसे सुझाव माँगे गये थे। अिस जिलेकी ७० हजार अेकड़ ज़मीनमें अमेरिकाकी वर्जिनिया तमाखू और अुतनी ही दूसरी जमीनमें देशी तमाखूकी खेती होती है। अिस तरह तमाखूकी खेतीमें कुल १,४०,००० अेकड़ ज़मीन रुकी हुअी है। अैसा हिसाब लगाया गया था कि दोनों तरहकी तमाखूकी खेतीसे अेक अेकड़ पीछे करीब १५० रुपयेकी और अनाजकी खेतीसे लगभग ८० रुपयेकी आय होती है। अिस तरह साफ़

दिखाअी देता है कि नक़द पैसा लेनेके हेतुसे तमाखू पैदा करने वालेको अेकड़ पीछे ७० रुपयेका फायदा होता है। अिसलिअे बादमें यह तजवीज़ पेश की गअी कि चालू सालकी फसलमें सरकारी पत्रकमें जिसके नाम तमाखूकी खेतीमें जितने अेकड़ बताये गये हों, अुसे अेक अेकड़के पीछे ७० रुपयेके हिसाबसे सरकारी मदद दी जाय।

"तमाखूके धन्धेमें बड़े निहित स्वार्थ हैं। तमाखूकी खेती पूरी-पूरी रोक देनेसे अिन स्वार्थोंको जो नुक़सान पहुँच सकता है, अुसे यथासंभव कम करनेके हेतुसे अुस वक्त यह भी सुझाया गया था कि तमाखूकी खेतीवाली ज़मीनमें से आधे भागमें अिस साल अनाज बोया जाय और बाक़ीके आधे भागमें आते साल अनाज बोया जाय।

"बापटलामें भाषण करते हुअे डाअिरेक्टर ऑफ अेग्रिकल्चरने अैसी सूचना की थी कि सरकार तमाखूकी खेती पर रोक लगानेका विचार कर रही है।

"अूपर जो १,४०,००० अेकड़ ज़मीनमें तमाखूकी खेती होनेका ज़िक्र किया गया है, अुसमें अुस ज़मीनका समावेश नहीं है, जिसमें वर्जिनिया तमाखूके रोपे अुगाये जाते हैं। जिलेमें लगभग अेक हजार अेकड़ ज़मीनमें ये रोपे अुगाये जाते हैं। यह ज़मीन भी अनाजकी खेतीके लिअे मिल जायगी।

"तमाखूसे होनेवाले नुकसानकी विस्तृत चर्चा करनेकी यहाँ ज़रूरत नहीं। अितना तो सब समझ सकते हैं कि अुसमेंसे मनुष्य, जानवर या पक्षीको कोअी खाने-पीनेकी चीज़ नहीं मिलती।

"तमाखूकी खेतीका सवाल सारे हिन्दुस्तानका सवाल है। अुसे हल करनेके लिअे सारे प्रान्तों और देशी राज्योंको मिलकर कदम अुठाने होंगे। अिस बारेमें कांग्रेस वर्किंग कमेटी भी विचार करे और सारे देशकी रहनुमाअी करे तो अच्छा हो।"

आज जब भीषण अकालका खतरा देशके सिर पर लटक रहा है, तब अिस बारेमें क्या शक हो सकता है कि ज़मीनके कसको चूस डालने वाली और नकद पैसे देनेवाली अिस फसलपर कानूनसे रोक लगा दी जानी चाहिये? लेकिन तमाखूकी खेती करनेवालेको मुआवजा देनेकी बात बिलकुल नादानीकी और वाहियात है। यह पैसेको परमेश्वर मानकर पूजनेवाली पूँजीवादी समाज-व्यवस्थामें ही संभव हो सकती है। चारों तरफ फैली हुअी अकाल और भुखमरीकी हालतमें भी अपनेको होनेवाले नुकसानका मुआवजा पानेका निहित स्वार्थोंका दावा कैसा अमानुषिक है! माल पैदा करनेकी दूसरी प्रवृत्तियोंकी तरह खेती भी सबसे पहले आदमीकी ज़रूरत पूरी करनेके लिअे ही हो सकती है। 'पैसेकी फसलों' द्वारा हमारी अर्थ-व्यवस्था पर जो आक्रमण शुरू हुआ है, अुसमें देशके लिअे बड़ा भय छिपा हुआ है। सुव्यवस्थित समाजमें जो जोते, वही ज़मीनका मालिक होगा; और अुसमें खेती पैसे जोड़नेके लिअे नहीं, बल्कि लोगोंकी ज़रूरतें पूरी करनेके लिअे ही की जायगी। आज खेतीको अपनी गुलामीमें जकड़ रखनेवाली और अनेक मुँहसे किसानोंका खून चूसनेवाली निहित स्वार्थरूपी जोंकके पंजेसे छुड़ाना ही होगा।

दो कीमती सूचनायें

ज्यादा अनाज पैदा करनेके बारेमें दो कीमती सूचनायें की गअी हैं और सरकारको अुन पर तुरन्त विचार करना चाहिये। क्वेटासे अेक अिंजीनियर लिखते हैं:

> "नहरोंके दोनों ओर पानीकी सतहसे ६ अिंच अूँची और ६ से २० फुट तक चौड़ी ज़मीनकी पट्टी रखी जाती है। अुसे 'बर्म' कहते हैं। हिन्दुस्तानमें ही मनुष्योंकी कोशिशसे खुराकके राशनमें तुरन्त जो कुछ बढ़ती हो सकती है, अुसे करनेके लिअे जहाँ संभव हो, वहाँ शाक-भाजी अुगानेकी सचमुच सरकारकी अिच्छा हो, तो मेरी आपको यह सूचना है कि आप वाअिसरॉयसे बिनती कीजिये

कि वे हर प्रान्तीय सरकारको यह हुक्म दें कि वह अपने प्रदेशके 'बर्म' के हर टुकड़ेमें शाक-भाजी अुगानेका अपने पी० डब्ल्यु० डी० विभागको आदेश दे दे।

"अगर अिस तरह नहरकी दोनों तरफकी ज़मीनकी पट्टियोंका अुपयोग किया जाय, तो पानी घुमाने या लानेके लिअे नअी नालियाँ वगैरा खोदनेके खर्चके बिना ही हजारों अेकड़ नअी और अुपजाअू ज़मीन मिल जायगी। अिस 'बर्म'की ज़मीनमें शाक-भाजीके लिअे ज़रूरी नमी हमेशा क़ायम रहती है और व्यवहारमें यह तरीक़ा बड़ा कामयाब साबित हुआ है। कमसे कम सिन्धमें हरअेक समतल जगह पर (पानीके बहावको काबूमें रखने और ठीकसे घुमानेके लिअे पी० डब्ल्यु० डी० विभागका जहाँ-जहाँ बन्दोबस्त रहता है वहाँ) अिस विभागके लोग अपने अुपयोगके लिअे ज़रूरी शाक-भाजी पैदा कर लेते हैं।

"आसपासके किसानोंको अिस 'बर्म' तक पहुँचनेका सुभीता दे दिया जाय, तो वे खुशीसे अपना फालतू समय शाक-भाजी बोनेमें और अुसे सँभालनेमें देंगे। और अिस तरह वे अपना समय अुपयोगी काममें खर्च कर सकेंगे। सिर्फ अितना ही ज़रूरी है कि पी० डब्ल्यु० डी० विभाग जिन लोगोंको 'पराये' समझता है, अुनके अपनी हदमें आनेका वह कोअी खयाल न करे। लेकिन अिस संकटके समय देशको तुरन्त जो लाभ होगा, अुसका खयाल करके अिस बारेमें अुसे कोअी अेतराज नहीं अुठाना चाहिये।

"अिसके अलावा, अिस शाक-भाजीको बेचनेके लिअे पासके बाजारोंमें या रेलवे स्टेशन पर ले जानेके लिअे ज़रूरी वाहनका अिन्तजाम भी प्रान्तीय सरकारोंको ही करना होगा। लड़ाअीके दरमियान फौजी छावनियोंमें जिस तरह शाक-भाजी पहुँचाअी जाती थी, ठीक अुसी तरह यह भी किया जा सकता है। अमेरिकाकी तरफसे 'लीज़ लेण्ड योजना' द्वारा ठेकेदारोंको जो लारियाँ मिली हैं,

अुन्हें भाड़ेकी दरें ठहराकर काममें लिया जा सकता है। (अिन ठेकेदारोंको लारियाँ देते समय यह शर्त रखी गअी है कि जब सरकार माँगे, तब भाड़े पर लारियाँ देनी होंगी)। हरअेक नहर, अुसकी शाखायें और अुनमेंसे पानी ले जानेके लिअे बनाअी हुअी नालियोंके साथ-साथ कामकाजके लिअे जो सड़कें बनाअी गअी हैं, अुनका अिस्तेमाल ये लारियाँ कर सकती हैं। नये रास्ते बनानेका खर्च भी नहीं अुठाना पड़ेगा। केवल अिन रास्तोंको अच्छी हालतमें बनाये रखनेका काम रहता है। लेकिन जिन-जिन किसानोंके हिस्सेमें से रास्ता जाता होगा, अुन्हें यह काम सौंपा जाय, तो वे अपने-अपने हिस्सेका रास्ता आसानीसे अच्छी हालतमें रखेंगे।

"शाक-भाजी जितनी आसानी और तेजीसे अुगती है, अुतनी खुराककी दूसरी कोअी चीज़ नहीं अुगती। अगर सरकार व्यवस्था हाथमें ले ले, तो सिर्फ धूपमें ही सुखाकर बहुतसी शाक-भाजी काफी समय तक रखी जा सकती है।"

फौजकी मदद

दूसरी सूचना ब्रिटिश फौजके अेक भाअीकी तरफसे आअी है। वे अेक पत्रमें गांधीजीको लिखते हैं:

"यह देखकर मुझे चिन्ता और दुःख होता है कि हिन्दुस्तानके लोगोंको अेक और अकालका सामना करना होगा। अिस बारेमें अखबारोंमें जो समाचार, लेख वगैरा निकलते रहे हैं, अुन्हें मैं पढ़ता रहा हूँ और २१ फरवरीको आपने वाअिसरॉयके प्राअिवेट सेक्रेटरीको जो पत्र लिखा था, वह भी मैंने पढ़ा है।

"आपके सुझावके मुताबिक अिस काममें फ़ौजका अुपयोग ज़रूर किया जाना चाहिये। मुझे लगता है कि हिन्दुस्तानी और ब्रिटिश फ़ौज तथा हवाअी सेना दोनोंको अपनी-अपनी छावनियोंमें

और दूसरी सब स्थायी छावनियोंमें अनाज पैदा करना शुरू कर देना चाहिये। अैसी सब जगहोंमें अिस कामके लिअे अलग ज़मीन रखी जा सकती है, मज़दूर भी रहते हैं और पानी भी काफ़ी मात्रामें रहता है। लड़ाअीके दरमियान ब्रिटेनमें फ़ौजसे यही काम लिया गया था और हिन्दुस्तानकी आजकी हालतमें यहाँ भी अैसा ही करना ज़रूरी हो गया है।

"आपने यह सुझाया था कि खुराकका बँटवारा सहकारी संस्थाओं या अैसी ही दूसरी संस्थाओंके ज़रिये किया जाना चाहिये। यह भी मुझे बहुत अच्छा लगा। मुल्की जीवनमें ब्रिटेनकी सहकारी प्रवृत्तिके साथ मेरा सम्बन्ध है, और हिन्दुस्तानमें आनेके बादसे यहाँ भी मैं अिस प्रवृत्तिसे सम्बन्ध रखनेवाली स्थितिका निरीक्षण करता रहा हूँ। बेशक, अिंग्लैण्ड और हिन्दुस्तानकी हालतमें बड़े भेद हैं। अुनमेंसे सबसे बड़ा और महत्वका भेद तो आप भी तुरन्त समझ सकते हैं। अिंग्लैण्डमें बहुतसी सहकारी समितियाँ लोगोंकी हैं, जब कि हिन्दुस्तानकी बहुतसी समितियाँ सरकारके आसरे पर टिकी हुअी हैं। फिर भी, हिन्दुस्तानकी सहकारी समितियोंके सम्पर्कमें आकर मैंने देखा है कि लड़ाअीके दरमियान जो बहुतसी खुदरा बिक्रीकी सहकारी समितियाँ या स्टोर खोले गये हैं, अुन्होंने अुचित भावमें लोगोंको ज़रूरी आटा, शक्कर, खली वगैरा माल देनेका या पहुँचानेका अच्छा काम किया है। आपने अपने सुझावमें अुनके अिस कामका जिक्र किया है, यह देखकर मुझे खुशी हुअी।"

दिल्ली, ११-५-'४६ — प्यारेलाल

हरिजन, २-६-१९४६

७६

आँखें खोलनेवाले आँकड़े

आज जब कि देशमें अनाजकी कमी महसूस हो रही है, '१९४६ का अन्नसंकट' नामके परचेमें से ली हुअी नीचेकी बातें और आँकड़े दिलचस्प मालूम होंगे :

हिन्दुस्तानमें अनाजकी पैदावार

(१९४५–४६)

चावल	२ करोड़ ५८ लाख टन
गेहूँ	८३ ,, ,,
चना	३० ,, ,,
जुआर-बाजरा	७५ ,, ,,
मकअी	२२ ,, ,,
जौ	१७ ,, ,,

अूपरकी मिक़दार हिन्दुस्तानकी कुल आबादीके लिअे नाकाफ़ी है और कूती गअी कमी साठ लाख टन बताअी गअी है।

मामूली समयमें पंजाब, सी० पी० और बरार, सिन्ध, अुड़ीसा और आसामके प्रान्त अनाज बाहर नहीं भेजते हैं। सीमाप्रान्त, बिहार, यू० पी०, मद्रास, बम्बअी, बंगाल, त्रावनकोर और कोचीनकी रियासतें–ये सब अपनी ज़रूरतका पूरा अनाज पैदा नहीं कर पाते और सभीको गेहूँ, चावल, जुआर-बाजरा या सारे अनाज बाहरसे मँगाने पड़ते हैं।

हिन्दुस्तान हर साल जितना अनाज और दूसरी खानेकी चीज़ें पैदा करता है और जितनेकी दरअसल अुसे ज़रूरत है, अुन दोनोंके आँकड़े नीचे दिये जाते हैं :

खानेकी चीज़ें	पैदावार (टनोंमें)	ज़रूरतके (टन)	कमी (टनोंमें)
अनाज	५ करोड़	६ करोड़	१ करोड़
दाल	७० लाख	१ करोड़ २० लाख	५० लाख
तरकारी और फल	अनकूते	कम-से-कम दुगुने	—
मछली	६ लाख	९० लाख	८४ लाख
दूध	२ करोड़ २० लाख	३ करोड़ ५० लाख	१ करोड़ ३० लाख
अण्डे (तादाद)	२६६ करोड़	१४६०० करोड़	१४३३४ करोड़

अच्छी तन्दुरुस्ती बनाये रखनेके लिअे जितने नपे-तुले आहारकी ज़रूरत है, अुसके आँकड़े नीचे दिये जाते हैं:

अनाज	१४ औंस
दाल	३ „
हरी पत्तेवाली तरकारी	३ „
(जड़ोंवाली) तरकारी	३ „
दूसरे साग-सब्ज़ी	३ „
फल	३ „
दूध	१० „
शकर	२ „
वनस्पति, घी वग़ैरा	२ „
मछली और गोश्त	३ „
अण्डा	सिर्फ़ १

अिस आहारसे लगभग २६०० केलोरी पैदा होते हैं।

अेक बालिग हिन्दुस्तानी मर्दके लिअे	२६००	केलोरीकी	ज़रूरत है
अेक बालिग औरतके लिअे	२१००	„	„
१२ – १३ सालके बच्चेके लिअे	२१००	„	„
१० – ११ „ „	१८००	„	„
८ – ९ „ „	१६००	„	„

६–७ सालके बच्चेके लिअे	१३०० केलोरीकी ज़रूरत है
४–५ „ „	१००० „ „
गर्भवती स्त्रीके लिअे	२४०० „ „
दूध पीनेवाले बच्चेकी माँके लिअे	३००० „ „

लेकिन दूसरे देशोंके मुक़ाबले अुन्हें मिलता कितना है? यह अेक दर्दभरी कहानी है:

देश	हर व्यक्तिको रोजाना मिलनेवाले केलोरी
अमेरिका	३२००
ग्रेटब्रिटेन	२६००
जर्मनी (लड़ाअीके बाद)	१६००
जापान (अमेरिकाके अधिकारमें)	१५७५
'दर्दनाक और खतरनाक तादाद'	१५००
हिन्दुस्तान	९६०

अिसे देखते हुअे अगर हमारे देशके बालिगों और बच्चोंकी मौतकी तादाद अितनी डरानेवाली हो, तो कोअी ताज्जुब नहीं:

(१९४२)

देश	अेक हज़ार पर मरनेवालोंकी तादाद	अेक हज़ार पैदा होनेवाले बच्चोंमें से मरनेवालोंकी तादाद
आस्ट्रेलिया	१०·५	३९
केनाडा	९·७	५४
अमेरिका	१०·४	४०
जर्मनी	१२·७ (१९४०)	६८
अिंग्लैण्ड	१२·२ (१९४०)	५४
जापान	१७·६ (१९३८)	११४ (१९३७)
हिन्दुस्तान	२२·०	१६३

हमारे देशवालोंकी औसत अुमर कितनी कम है :

देश	पैदा होते समय ज़िन्दगीकी लम्बाअीका अन्दाज़ (बरसोंमें) मर्द	औरत	
हॉलैण्ड	६५·७०	६७·२०	(१९३१–४०)
न्यू ज़ीलैण्ड	६५·४६	६८·४५	(१९३४–३८)
स्वीडन	६४·३०	६६·९२	(१९३६–४०)
अमेरिका	६३·६५	६८·६१	
डेन्मार्क	६३·५०	६५·८०	(१९३६–४०)
दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन	६१·४६	६६·८०	(१९४०)
केनाडा	६०·९०	६४·७०	(१९४०–४२)
आयरलैण्ड	५९·००	६१·००	(१९४०–४२)
अिंग्लैण्ड	६०·१८	६४·४०	(१९३७)
जर्मनी	५९·८६	६२·८०	(१९३२–३४)
अिटली	५३·७६	५६·००	(१९३०–३२)
जापान	४६·९२	४९·६३	(१९३५–३६)
हिन्दुस्तान	२६·९१	२६·५६	(१९३१)

श्री रमेशचन्द्र दत्तने बरसों पहले कहा था :

"हिन्दुस्तानके सारे अुद्योग-धन्धे कुचल डाले गये हैं, अुसकी खेती पर अनाप-शनाप और अनिश्चित लगान लगा रखा है, और अुसकी मालगुज़ारीका आधा हिस्सा हर साल देशसे बाहर निकल जाता है। अिसी दर्दनाक हालतमें दूसरे किसी भी देशको रख दीजिये और नतीजा यह होगा कि दुनियाका सबसे बढ़ा-चढ़ा देश भी जल्दी ही अकालका शिकार बन जायगा।"

हिन्दुस्तान लम्बे अरसेसे निर्दय विदेशी जूअेके नीचे दबकर कराह रहा है। मि० विन्स्टन चर्चिल और अुनके जैसे दूसरे लोग, जो हिन्दुस्तानके अल्पसंख्यकों (माअिनॉरीटीज़) को दिये हुअे अपने पवित्र वचनोंकी दुहाअी दिया करते हैं, अिन चौंकानेवाले आँकड़ोंको पढ़ें और

अपनी धूर्तता और बहानेबाज़ीसे बाज़ आयें। जब तक हमारे देशवालोंको भरपेट खाना नहीं मिलता, तब तक अच्छे मकानों, अच्छी सड़कों या तालीम और स्वास्थ्यकी योजनाओंसे अुन्हें कोअी फ़ायदा नहीं हो सकता। पूरा और अच्छा आहार मनुष्यकी पहली ज़रूरत है; और अगर हम ज़िन्दा रहना चाहते हैं, तो प्रान्तोंकी सरकारोंको अिसी ज़रूरतको पूरा करनेमें अपनी सारी ताक़त लगा देनी चाहिये।

पूना, १–८–'४६ अमृतकुँवर

हरिजनसेवक, २५–८–१९४६

ब. खेती

७७

ज्यादा आबादी या कम पैदावार

आजकल यह रिवाज-सा पड़ गया है कि अगर लोग भूखों मरते हैं, या बार-बार अकाल पड़ता है, तो कहा जाता है कि आबादीका बढ़ना ही अिस भुखमरीका कारण है। अिस सिद्धान्तका कअी बार विरोध किया गया है। निश्चित प्रमाणके साथ यह कहा जा सकता है कि भारतमें अितने ज्यादा खाद्य अुत्पादनकी संभावना है, जो आनेवाले काफी समयके लिअे अुसकी बढ़ती हुअी आबादीको खिलानेके लिअे काफीसे भी ज्यादा है। अेक पत्रलेखक खेतीके बारेमें नीचेकी बातोंकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं:

"१. सरकारी खेतोंमें प्रयोग करके यह साबित किया जा चुका है कि अगर अच्छे बीज बोये जायँ, तो २९ फीसदी ज्यादा अनाज पैदा होगा।

"२. तिलहन, खली, हड्डी वग़ैरा जो चीजें परदेश भेजी जाती हैं, अुनकी निकासी बन्द की जाय। जो सूखा गोबर जलानेके काम आता है, अुसकी जगह अींधनका अिन्तजाम किया जाय और गोबरकी खाद बनाअी जाय। अगर यह सब किया जाय, तो आज जितना अनाज पैदा होता है, अुससे दुगुना पैदा हो सकता है।

"३. नहरके पानीका अिन्तज़ाम करनेसे या नये कुअें और तालाब बनानेसे जहाँ पहले सालमें अेक ही फ़सल ली जाती थी,

वहाँ दो फ़सलें ली जा सकेंगी। आज कुल २४५ करोड़ अेकड़ ज़मीनमें से सिर्फ़ ३२ करोड़ अेकड़ ज़मीनमें दो फ़सलें पकती हैं।

"४. भारत और दूसरे देशोंमें हर अेकड़ पीछे होनेवाली अुपजका मुकाबला करनेसे यही प्रगट होता है।

चावलकी अुपजके आँकड़े प्रति अेकड़ नीचे माफ़िक हैं:

मिस्र	३४४७	रतल
जापान	३९०९	,,
अिटली	४८१०	,,
फॉरमूसा	२४०७	,,
भारत	९३९	,,

गेहूँकी प्रति अेकड़ अुपजके आँकड़े अिस प्रकार हैं:

जापान	२०१०	रतल
अिटली	१३७४	,,
केनाडा	११९७	,,
अिंग्लैण्ड	२०८५	,,
भारत	७७४	,,

"५. सरकारी बयान यह भी बतलाते हैं कि अनाजके गोदामोंका ठीक बन्दोबस्त न होनेके कारण हर साल १० लाख टन अनाज चूहे वग़ैरा खा जाते हैं।

"६. हिन्दुस्तानमें काश्तके क़ाबिल ९ करोड़ अेकड़ ज़मीन यों ही पड़ी रहती है और अुसमें कोअी भी फ़सल पैदा नहीं की जाती।

"७. आखिरमें, 'तिजारती फ़सलों' का आक्रमण आता है। सन् १९०० में तिजारती फ़सलकी काश्त १६५ लाख अेकड़ ज़मीनमें होती थी; सन् १९३० में वही २४० लाख अेकड़ तक

पहुँच गअी। अिस बीच तिलहनकी खेतीकी ज़मीन १३० लाख अेकड़से १६० लाख अेकड़ हो गअी। १९४२ में तिलहन और सनकी कुल अुपजका ३२ प्रतिशत, अल्सीका ७१ प्रतिशत और मूँगफलीका १५ प्रतिशत भाग निकासीके लिअे था। दूसरे शब्दोंमें, ज़मीनका अितना अुपजाअूपन केवल व्यापारी-लाभके लिअे दूसरे देशोंको विनिमयमें भेज दिया गया। अिसमें ज़मीनसे जो कुछ ले लिया गया था, अुसके बदले किसी भी रूपमें ज़मीनको कुछ भी वापस देनेकी संभावना न थी। अर्थात् हमेशाके लिअे अुपजाअूपनका अितना नुकसान कर दिया गया। यह खेती नहीं है, बल्कि आनेवाली पीढ़ियोंको नुकसान पहुँचाकर की गअी ज़मीनकी सरासर लूट है। अगर हम अपनी खेतीको तिजारती फ़सलोंके आक्रमणसे छुड़ा सकें, तो हमेशा होनेवाली अनाजकी कमीको मिटानेमें यह बहुत मदद देगा।"

अगर अिन सब खामियोंको दुरुस्त कर लिया जाय, तो ज़ाहिर है कि बढ़ती हुअी आबादीके बावजूद किसीको भूखों मरनेकी ज़रूरत नहीं रहेगी। यही नहीं, बल्कि मुल्कसे भुखमरी जाती रहेगी, लोगोंका ज्ञान बढ़ेगा और हमारा अर्थशास्त्र भी दुरुस्त रहेगा।

नअी दिल्ली, ७-९-'४६ प्यारेलाल

हरिजन, २२-९-१९४६

७८

अनाज, अींधन और तेल

अनाज, अींधन और घी-तेल — ये तीन चीज़ें गाँवोंकी ज़िन्दगीके लिअे आधार रूप हैं। आज तो वहाँ तीनों चीज़ोंकी कमी है। अेक दोस्तने अिस तिहरी कमीको दूर करनेके नीचे लिखे सुझाव भेजें हैं। ये सुझाव पंजाब जैसी हालतवाले हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंको भी समानरूपसे लागू होते हैं, हालाँकि वे खासकर पंजाबके लिअे ही सुझाये गये हैं:

(१) नदियों और नालोंके दोनों किनारोंकी बहुत-सी ज़मीन सेवार और सरकटकी जंगली घाससे ही ढँकी रहती है। अगर अुसे फ़ौजियोंकी मददसे साफ करवाया जा सके, तो अुसमें गेहूँ, बाजरा, चना और मसूर पैदा की जा सकती है। यह ज़मीन बड़ी अुपजाअू होती है। अुसमें बड़ी मात्रामें अनाज पैदा हो सकता है, और मवेशियोंके लिअे चारा भी खूब मिल सकता है।

(२) अिसी तरह रेल्वे लाअिनों और सड़कोंके दोनों तरफ़ बहुतसी बिना जोती ज़मीन पड़ी रहती है। अगर फ़ौजी विभाग अिस ज़मीनको साफ़ करके अुसे पानी देनेका काम खुद हाथमें ले, या पम्प और तेलसे चलनेवाली भारी मशीनें, जिनका अिस तरहका अुपयोग किया जा सकता है, सिंचाअीके लिअे लोगोंको दे दे, तो वे अिस अूसर धरतीको सुधार कर अुसमें खेती करने लगें।

(३) पंजाबमें ज़मीनके अैसे कअी सूखे हिस्से हैं, जहाँ आज सिर्फ़ कँटीले झाड़-झंखाड़ खड़े हैं। थोड़ी मेहनतसे अुन्हें साफ़ किया जा सकता है, और वहाँ रेंडीके पेड़ लगाये जा

सकते हैं। यह बड़ा दमदार पौधा होता है और ज्यादातर हवासे ही नमी लेकर टिका रह सकता है। रेंडीका तेल साबुन बनानेका सबसे अच्छा साधन है। अिससे आज साबुन बनानेमें सरसों, मूंगफली, जिंजेली और दूसरे खाने लायक़ तेलोंकी जो खपत होती है, वह भी बन्द हो सकती है।

(४) जलाअू लकड़ीकी कमीकी वजहसे, गाँवोंमें गोबर और खलिहानोंकी दूसरी खाद जलानेके काममें ली जाती है। अिस तरह खाद न मिलनेसे ज़मीनका अुपजाअूपन दिन-दिन घटता जाता है। अिसलिअे सड़कोंके दोनों तरफ और नहरके किनारों पर अैसे पेड़ लगानेकी बाक़ायदा कोशिश की जानी चाहिये, जो लोगोंको जलाअू और अिमारती लकड़ी मुहैया करनेके काम आ सकें।

अुनके दूसरे सुझावोंमें नहरोंके दोनों तरफ अींट और सीमेन्टकी क्यारियाँ बना देनेका भी सुझाव है, जिससे अुस हजारों अेकड़ ज़मीनको फिरसे काममें लिया जा सके, जो लगातार पानीके भरे रहनेसे और सीलसे पैदा होनेवाले ज़रूरतसे ज्यादा खारेपनसे अपना अुपजाअूपन खो बैठी है। अुन्होंने यह भी सुझाया है कि ज़मीनके छोटे-छोटे टुकड़े करनेकी बुराअी रोकी जाय। अिससे अनाजकी पैदावार घटती है। अुनका यह भी कहना है कि ज़मीनके जिन टुकड़ोंमें खेती करनेसे कोअी आर्थिक लाभ न हो, अुन्हें मिलाकर अेक कर देना चाहिये। अखीरमें अुन्होंने बताया है कि खेतोंको पानी देनेके लिअे मशीनोंका अुपयोग किया जाना चाहिये।

सोदपुर, ३०–१०–'४६ प्यारेलाल

हरिजनसेवक, १७–११–१९४६

७९

पैसा नहीं, पैदावार

कहा जाता है कि हिन्दुस्तान खेती-प्रधान देश है। अिसका यह मतलब नहीं कि हिन्दुस्तानके पास बहुत ज्यादा खेती है। अिसका अेक मतलब यह हो सकता है कि हिन्दुस्तानके गाँवों और लोगोंके दिलोंकी बनावट खेतीके अनुकूल है। अिसके अलावा दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि हिन्दुस्तानके पास खेतीके सिवा और कोअी खास रोजगार-धन्धा बच नहीं गया है। वैसे, अिस खेती-प्रधान देशमें फी आदमी पौन अेकड़की ही खेती होती है।

जिसके पास खेती बहुत कम है, अुसे अेक दूसरे अर्थमें भी खेती-प्रधान कहा जा सकता है। अुसे अपनी खेतीको सुधारनेकी तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिये, खेती बराबर शास्त्रीय ढंगसे करनी चाहिये और अुसमें अपनी सारी अक्ल लड़ा देनी चाहिये, नहीं तो जीना मुश्किल हो जायगा। अिन मानोंमें भी आज हिन्दुस्तान खेती-प्रधान बन गया है।

वैसे देखा जाय, तो हरअेक देशको हमेशा खेती-प्रधान होना चाहिये। यानी आदमीको दूसरे धन्धोंके मुकाबले खेतीपर ही ज्यादा ध्यान देना चाहिये। क्योंकि खेतीसे मनुष्यको अन्न मिलता है और अन्न ही अुसकी खास ज़रूरत है।

अुपनिषदोंके बारेमें यह मशहूर ही है कि अुनमें जीवनकी बहुत गहरी चर्चा की गअी है। अुन्होंने तो यह हुक्म ही दिया है कि भरपूर अनाज पैदा किया जाय। लोग अिसे अपना व्रत समझें — "अन्नं बहु कुर्वीत तद् व्रतम्।" लड़ाअीके दिनोंमें हमारी सरकार अिस भाषामें बोलने लगी थी। लेकिन वह ज्यादा अनाज पैदा नहीं कर सकी। अुल्टे

अुसने अनाजके बदले पैसा ही ज्यादा पैदा किया। नतीजा यह हुआ कि तीस लाख आदमी भूखों मर गये।

आखिर अपनी अिस टूटती दुकानको अंग्रेज सरकारने हम लोगोंके हवाले किया। आज सभी प्रान्तोंमें लोगोंकी अपनी सरकारें काम कर रही हैं। टूटती दुकानकी बिगड़ी हुअी साखका खयाल न कर हमने अुसे अपने हाथमें लिया। अिसलिअे और कुछ करनेसे पहले लोगोंको जिलानेका सवाल हल करनेका काम ज़रूरी बन गया है।

हिसाबी लोग कहते हैं कि आज हिन्दुस्तानको खेती पुसाती ही नहीं। अिसका यही मतलब होता है कि जहाँ खेती नहीं पुसाती, वहाँ जीना भी नहीं पुसाता। अिसके लिअे कुदरत जिम्मेदार नहीं, नकली जिन्दगी जिम्मेदार है। पैसा अिस नकली या बनावटी जिन्दगीकी निशानी है। पैसेकी अिज्ज़त जीवनके लिअे घातक बन गअी है।

हिन्दुस्तानके लोग देहातमें रहते हैं। अगर देहातमें पैसेकी अिज्ज़त घटा दी जा सके, तो हिन्दुस्तानकी खेतीमें सुधार हुअे बिना न रहे। आखिर पैसेकी अितनी जरूरत क्यों है कि अुसके लिअे तमाकू बोअी जाय और अुसीके लिअे ज़रूरतसे ज्यादा कपास बोअी जाय? अिस-लिअे कि दूसरी सब ज़रूरी चीज़ें पैसा देकर खरीदनी पड़ती हैं। कपड़ा खरीदना पड़ता है, खली खरीदनी पड़ती है। अिनके लिअे पैसेकी ज़रूरत है। और पैसेके लिअे गैर-ज़रूरी चीज़ोंकी खेती करनी पड़ती है। अिसी कारणसे अनाज कम पैदा होता है — अुसकी तंगी रहती है। अिसका मतलब यह हुआ कि गाँवोंमें अुद्योग-धन्धे नहीं रहे, और अुनके न रहनेसे अनाजकी खेती कम हो गअी।

अिसमें शक नहीं कि खेतीमें सुधार करनेकी बहुत गुंजाअिश है। और यह ज़ाहिर है कि सुधरी हुअी खेतीकी पैदावार बढ़ जायगी। लेकिन यह बहुत मेहनतका काम है। अिसे हाथमें लेनेकी ज़रूरत है, पर अिसमें कअी बरस लग जायँगे। और फिर भी काम तो होगा नहीं; क्योंकि आबादी बढ़ती जा रही है। अिसलिअे अब हमें अपने किसानकी व्याख्या

ही बदल देनी होगी — किसान यानी सिर्फ़ काश्तकार या खेती करनेवाला आदमी नहीं, बल्कि वह आदमी, जो खेती तो करे ही, पर साथ ही खेतीसे पैदा होनेवाले कच्चे मालसे अपनी ज़रूरतका पक्का माल भी बना ले। खादी और ग्रामोद्योगके आन्दोलनकी यही मन्शा है। ग़रीबोंकी मुसीबतें मिटानेके लिअे आज खादी और देहाती दस्तकारीको छोड़कर दूसरा कोअी ज़रिया नहीं।

आज सरकार अिस अुधेड़-बुनमें पड़ी है कि आजकल हिन्दुस्तानको हर साल जितने अनाजकी तंगी रहती है, अुतना अनाज किस तरह पैदा किया जाय। हक़ीक़त यह है कि अनाज अिस तरह हिसाब लगाते बैठनेसे पैदा नहीं हो सकता। अनाज तो बेहिसाब पैदा करना होगा। अुसके बारेमें अितनी बेफ़िकरी पैदा करनी होगी कि वह सारे साल चलकर अगले साल भी चले। जिस तरह हवाकी कमी नहीं है, पानीकी कमी नहीं है, अुसी तरह अनाजकी भी कमी न रहनी चाहिये। लेकिन यह तभी हो सकता है, जब खेती सुधरे। अनाजके अलावा भी खानेकी दूसरी चीज़ें खूब अुगानी चाहियें। अिसके लिअे ज़मीनकी अुतनी कमी नहीं है, जितनी पानीकी। ज़मीनके पेटमें भरपूर पानी पड़ा है। अुसे बाहर निकालना होगा। अुसकी मददसे साग-सब्जी, कन्द-मूल और फल-फूल पैदा करने होंगे। लेकिन यहाँ भी पैसेकी अिज्ज़त न बढ़नी चाहिये। वरना अिनके लिअे बाजार तलाश करनेकी फ़िकर सवार हो जायगी। ये सब चीज़ें किसानोंको खुद खानी चाहियें। बची-खुची भले बेच डाली जायँ। अिनके खास खरीदार किसान खुद बनें। यही स्व-राज्यकी दृष्टि है। "आपुले केले आपण खाय, तुका वंदी त्याचे पाय" (जो अपना पकाया खुद खाता है, तुकाराम अुसके पैर छूता है।) अगर हम अपने बेटेको बाज़ारमें बेचें, तो अुसकी क्या क़ीमत आयेगी? और क्या वह हमें पुसायेगी? गाँवोंमें दूध-घी होता है, लेकिन गाँववालोंको अुसका खाना पुसाता नहीं। ढेरों साग-तरकारी और फल-फूल अुगानेपर भी वे देहातवालोंको पुसायेंगे नहीं। क्यों? अिसलिअे कि देहातमें कोअी रोज़गार-

धन्धा नहीं, कोअी दस्तकारी नहीं। चूँकि मेरी अक़ल अेक तरफ़ ही काम करती रहती है — अेक ही विचारसे घिरी रहती है — सम्भव है कि असलिअे मुझे अैसा मालूम होता हो। लेकिन जब तक दूसरा कोअी जवाब नहीं मिलता, तब तक अपने अिसी जवाब पर डटे रहना लाज़िमी है।

पवनार, १३-१-'४७ विनोबा

हरिजनसेवक, २६-१-१९४७

८०

अनाजकी तंगी

दिल्लीमें खुराकसे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकारियोंकी जो कान्फरेन्स हुअी, अुसमें यह कहा गया था कि चावलकी अगली फसल सिर्फ ८३ फीसदीके करीब होगी। यह कमी बहुत ज्यादा है, हालाँकि देशके जिन हिस्सोंमें अच्छी बरसात हुअी है, वहाँकी हालतमें सुधार हो सकता है। हर हालतमें देशमें आज अनाजकी जो कमी है, अुस पर काफ़ी ध्यान देनेकी ज़रूरत है। हिन्दुस्तान हजारों टन अनाज विदेशोंसे मँगाता है। यह अेक खेती-प्रधान देशके लिअे बदनामीकी बात है। अब हिन्दुस्तान ब्रिटिश हुकूमतसे आज़ाद हो गया है और अुसे जल्दी ही स्वराज पानेकी आशा है, जब केन्द्रकी सरकार आम लोगोंकी अिच्छाके मुताबिक काम करेगी। आज़ाद रहनेका ध्येय रखनेवाला कोअी भी देश तब तक आज़ाद नहीं रह सकता, जब तक वह अपनी बुनियादी ज़रूरतोंके लिअे दूसरे देशोंका मुहताज रहता है। अिसीलिअे खुराकके मामलेमें हिन्दुस्तानको स्वावलम्बी बनानेके वास्ते हमें अच्छीसे अच्छी कोशिश करनी चाहिये।

अितनी बड़ी बेचैनी और दुःख-दर्दके बाद युरोपके राष्ट्र यह समझने लगे हैं कि अनाज और दूसरी खुराकके लिअे दूरके देशों पर निर्भर करना खतरनाक बात है। आज अिंग्लैण्ड भी, जो अपनी खुराककी

ज़रूरत पूरी करनेके लिअे अभी तक बाहरी मदद पर निर्भर करता रहा है, यह महसूस करता है कि अगर हमें आज़ाद बने रहना है, तो खुराकके लिअे विदेशों पर निर्भर करना बेकार है। अिससे देशकी आज़ादी खतरेमें पड़ जायगी। अिस मकसदको ध्यानमें रखकर अिंग्लैण्डके लोग अपनी खेतीकी पैदावार बढ़ानेके लिअे नअी ज़मीनमें खेती करनेका प्रोग्राम शुरू कर रहे हैं।

अिंग्लैण्ड जैसा बढ़े-चढ़े अुद्योग-धन्धोंवाला देश अगर बाहरसे अनाज मँगानेके लिअे अपने मालकी जावक पर निर्भर करता है, तो अिसे हम समझ सकते हैं। अिस मामलेमें भी ग्रेट-ब्रिटेन रोजाना काममें आनेवाली अैसी चीज़ोंकी आवकमें काट-छाँट कर रहा है, जिनके बिना काम चल सकता है — यह काट-छाँट प्रजाके भलेके लिअे ही की जाती है। साथ ही, अिंग्लैण्ड घरमें तंगी रहनेपर भी अपने यहाँ बना सूती, अूनी और दूसरी तरहका माल बाहर भेजना चाहता है। अैसा वह अिसलिअे करता है कि अुसकी अनाजकी आवक बराबर बनी रहे। अिस दिशामें ब्रिटेनके मंत्री जो ठोस काम कर रहे हैं, अुसमें और हमारी हिन्दुस्तानी सरकारके 'ज्यादा अनाज पैदा करो' के प्रचारमें कितना बड़ा फर्क है? अुद्योग-धन्धोंकी दृष्टिसे हिन्दुस्तान और ग्रेट ब्रिटेनमें कोअी बराबरी नहीं हो सकती। अितने कम अुद्योग-धन्धोंके होते हुअे भी हमें विदेशोंसे मँगाये जानेवाले अनाज पर निर्भर करना पड़ रहा है। अगर अूँची जगहोंमें काम करनेवाले कुछ दोस्तोंकी सुझाअी नीतिके मुताबिक हम अपने अुद्योग-धन्धे बढ़ायें, तो अुनका हमारी अनाजकी पैदावार पर कितना भयानक असर पड़ेगा, यह हम भली-भाँति सोच सकते हैं।

आज ब्रिटेनके शहरों और गाँवोंमें जहाँ कहीं भी शाक-भाजी पैदा करने लायक़ ज़मीन होती है, वहाँ शाक-भाजीके पौदे लहलहाते दिखाअी पड़ते हैं। यह चीज़ आज ब्रिटेनकी अेक विशेषता बन गअी है। साथ ही, वहाँके लोग हजारों अेकड़ नअी ज़मीनमें खेती करनेकी आशा रखते हैं। क्या हमारे देशमें खुराक-महकमेके मंत्री अिस अच्छी

मिसाल पर चलकर अुद्योग-धन्धोंके लिअे पैदा की जानेवाली कपास, गन्ना वगैरा जैसी तिजारती फसलोंपर रोक नहीं लगा सकते? आज जिन ज़मीनोंका अुद्योग-धन्धोंके लिअे शोषण किया जाता है, अुन ज़मीनोंमें क्या वे सबसे पहले खुराकी फसलें नहीं पैदा करा सकते? यह तभी हो सकता है, जब देशकी प्रजाको अुसीकी कोशिशोंसे भरपेट अन्न देनेकी मंत्रियोंकी अिच्छा हो। अिसके लिअे ज़मीनके अुपयोग पर पाबन्दी लगानेकी और अुसमें खास-खास फसलें पैदा करनेके लायसेन्स देनेकी भी ज़रूरत हो सकती है। जो किसान अुद्योग-धन्धोंके काममें आनेवाली फसलें पैदा करना चाहें, अुनके लिअे काफी फीस देकर लायसेन्स निकालना ज़रूरी कर दिया जाय। अिस तरह आज जिस ज़मीनका अुपयोग थोड़ेसे लोगोंकी बैंकमें रखी हुअी रक़मोंको बढ़ानेके लिअे किया जाता है, अुसका अुपयोग राष्ट्रकी प्रजाके भलेके लिअे किया जा सकता है। अिसके लिअे खुराक-महकमे और अुद्योग-महकमेके मंत्रियोंको पूरे सहयोगसे काम करना होगा। हमें विश्वास है कि राष्ट्रकी तन्दुरुस्तीको बनाये रखनेके लिअे अैसा सहयोग ज़रूर किया जायगा।

जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक, २८-९-१९४७

८१

आखिर सही कदम अुठाया गया

कम-से-कम अेक प्रान्तकी सरकारने तो देशमें फैली हुअी अनाजकी तंगीको दूर करनेके अमली कदमके रूपमें खुराककी फसलोंको बढ़ावा देने और अुनकी खेतीकी ज़मीनको बढ़ानेके महत्त्वको आखिर समझा! यह अक़ल सूझी है मद्रास-सरकारको। अिसलिअे सरकारने खुराकी फसलकी खेती करनेवाले लोगोंको बीज और खादकी मददके रूपमें सुभीते देनेका वचन दिया है।

व्यापारी मालकी खेतीकी ज़मीनमें होनेवाली बढ़तीको रोकनेके लिअे सरकार अबसे अैसी फसलोंके लिअे रासायनिक और दूसरी तरहकी खाद नहीं देगी।

अिसके अलावा, अगर कोअी किसान अपनी धानकी ज़मीनमें तमाखू, कपास, मूँगफली, गन्ना वग़ैरा व्यापारी फ़सल पैदा करेंगे, तो अुन्हें सरकारकी तरफसे किसी तरहकी मदद या सुभीते नहीं दिये जायँगे।

हालाँकि मद्रास-सरकारके ये कदम रुकते-रुकते अुठाये गये मालूम होते हैं और अधूरे हैं, फिर भी वे सही दिशामें अुठाये गये हैं। अिसलिअे हम अुनका स्वागत करते हैं। क्या हम आशा करें कि स्वावलम्बनके ध्येय पर रची हुअी आर्थिक व्यवस्थावाले खेती-प्रधान देशके लिअे यह आशाके प्रभातकी झाँकी है।

जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक, २१-१२-१९४७

८२

सरकार ध्यान दे

चित्तूरसे अेक भाअी अपने पत्रमें गांधीजीको लिखते हैं :

"'लेण्ड अिम्प्रुवमेंट लोन्स अेक्ट' (ज़मीन सुधारनेके लिअे कर्ज़का क़ायदा) तथा 'अेग्रिकल्चरल अिम्प्रुवमेंट लोन्स अेक्ट' (खेती-सुधारके लिअे कर्ज़का क़ायदा) के मुताबिक किसानोंको दिये जानेवाले कर्ज़ पर सरकार फिलहाल साढ़े पाँच प्रतिशत ब्याज लेती है, जब कि सरकारको प्रजासे खुले बाज़ारमें दो से पौने तीन प्रतिशत तक ब्याजकी दरसे कर्ज़ मिल जाता है। यह विषय केन्द्रीय सरकारके हाथमें है। भारत सरकार किसानोंको बग़ैर ब्याजके अथवा अधिक-से-अधिक ढाअी प्रतिशत ब्याजकी दरसे आवश्यक कर्ज़ दे सकती है।"

मसूरी, ७–६–'४६

बंजर और खेतीके लायक जमीन

बम्बअीसे श्री वी० अेन० खानोल्कर लिखते हैं :

"भारत सरकारकी ओरसे सन् १९४५ में प्रकाशित सन् १९४१–४२ के सालके खेती सम्बन्धी आँकड़े हमारे मंत्रियोंको विचारने लायक़ काफी मसाला देते हैं, जो कि आज अन्नकी भीषण समस्याको हल करमेंमें जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं।

"'ज्यादा अनाज पैदा करो' आन्दोलनके कारण आज जो परिस्थिति है, अुसमें बहुत फेरफार होनेकी सम्भावना नहीं है और यह मान लिया जा सकता है कि नीचे दिये गये आँकड़े आज देशकी परिस्थितिको ठीक रूपमें प्रकट कर रहे हैं।

"अिस वर्ष कुल ४,७१,५०,००० अेकड़ ज़मीन बिना जोती रही, जब कि कुल २१,३२,९०,००० अेकड़ ज़मीन जोती गअी। ब्रिटिश भारतमें बिना जोती ज़मीन, जोती गअी कुल ज़मीनकी २२ प्रतिशत है। भिन्न-भिन्न प्रान्तोंका यह प्रतिशत अिस प्रकार है:

अजमेर-मेरवाड़ा	६५%	दिल्ली	९%
आसाम	३०%	मद्रास	३१%
बंगाल	१८%	सीमाप्रान्त	१९%
बिहार	३८%	अुड़ीसा	३०%
बम्बअी	१७%	पंजाब	११%
मध्यप्रान्त और बरार	१४%	सिन्ध	१११%
कुर्ग	१००%	युक्तप्रान्त	८%

"निष्णातोंका यह मत है कि काफी प्रणाममें खाद और पानीका प्रबन्ध किया जाय, तो ज़मीन पड़ती रखना ज़रूरी नहीं है। युक्तप्रान्तके आँकड़े अिसका सबूत देते हैं।

"'खेतीके लायक़ ज़मीन' शीर्षकमें नीचेके दिल्चस्प आँकड़े दिये गये हैं:

बंगाल	८,६२,७८८	अेकड़
बम्बअी	२,०७,३०१	,,
मध्यप्रान्त और बरार	५१,९४,७२८	,,
पंजाब	४२,३२,२८६	,,
कुल	१,०४,९७,१०३	अेकड़

"'लॉ अेण्ड अिट्स प्रोबलेम्स' नामकी पुस्तकमें (पृष्ठ ४ पर) सर विजयराघवाचार्य कहते हैं:

'सरकारी आँकड़ोंमें बाकीकी ९ करोड़ ७० लाख अेकड़ ज़मीनका वर्गीकरण 'बिना जोती ज़मीन' के तौर पर किया गया है। अन्न-अुत्पादन और खेती करनेवाले लोगोंको कॉलोनीके रूपमें बसानेके सम्बन्धकी चर्चामें अिस ज़मीनका सामान्य तौर पर खेतीको

बढ़ानेके काममें आनेवाली ज़मीनके रूपमें अुल्लेख किया गया है। अुचित खर्च करनेपर अिसमेंसे कितनी ज़मीन खेतीके काममें ली जा सकती है, अिस दृष्टिसे अिस ज़मीनकी कोअी व्यवस्थित रूपसे जाँच नहीं हुअी है। प्रांतीय सरकारोंकी ओरसे की गअी जाँच परसे यह मालूम हुआ है कि अिसमेंसे अेक करोड़ अेकड़ ज़मीन अैसी है, जो निश्चित रूपसे खेतीके काममें आ सकती है।'

"अिसके बाद रिपोर्टके नीचे लिखे विषय दिलचस्प मालूम होंगे। नीचे बताअी गअी चीज़ोंके अुत्पादनमें कितनी ज़मीन रुकती है, यह बात अिन आँकड़ोंसे स्पष्ट हो जायगी:

१. सन तथा रेशेवाली अन्य वनस्पति	२९,५२,०००	अेकड़
२. चाय और कॉफी	८,४१,०००	,,
३. तमाखू	११,९६,०००	,,
४. अफ़ीम	१८,०००	,,
५. दूसरी नशीली चीज़ें	१,९४,०००	,,
	कुल ५२,०१,०००	अेकड़

"सन बहुत बड़ी मात्रामें विदेशोंमें भेजा जाता है। चायके बगीचोंके मालिकोंने हजारों अेकड़ अच्छी ज़मीन भविष्यमें चायकी खेती बढ़ानेके लिअे अलग रख छोड़ी है।

"खुराककी बहुत बड़ी कमीकी दृष्टिसे ३, ४ और ५ में बताअी गअी ज़मीन अन्न पैदा करनेकी ज़मीनके रूपमें बदल दी जानी चाहिये।"

यह बात लोकप्रिय मंत्रि-मण्डलोंके लिअे तुरन्त ही हाथमें लेने जैसी है। अिसके लिअे अुन्हें केन्द्रमें राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाकी राह देखनेकी ज़रूरत नहीं!

नअी दिल्ली, १५-६-'४६ प्यारेलाल

हरिजन, २३-६-१९४६

८३

रैयत या किसान

कभी प्रान्तोंकी लोकप्रिय सरकारें ज़मींदार और किसानके बीचके सम्बन्धको क़ानूनके ज़रिये व्यवस्थित करनेकी कोशिश कर रही हैं। आज देखा जाय तो ज़मींदार ज़मीनके अैसे मालिक हैं, जिन्हें सिर्फ़ किसानोंसे लगान वसूल करनेसे मतलब है। ज़मीनसे अुनका कोअी सीधा सम्बन्ध नहीं होता, और न अुन्हें अिस बातकी परवाह ही होती है कि अुन ज़मीनोंमें क्या बोया जाता है। खेती करनेवाले किसानको ज़मीनका मालिक बना देनेके लिअे जो तरीके काममें लाये जाते हैं, अुनके मुताबिक या तो सरकार ज़मींदारको हरजाना देकर वह ज़मीन खरीद लेती है और अुसे खेती करनेवाले किसानको दे देती है, या फिर बड़ी रियासतोंको ज़ब्त करके सरकार अुसके कअी छोटे-छोटे टुकड़े कर देती है और अुन्हें किसानोंकी मालिकीमें छोड़ देती है।

हमें लगता है कि पहले तो ज़मीनको ज़ब्त करनेकी कोअी ज़रूरत ही नहीं है, न यही ज़रूरी है कि ज़मींदारको हरजाना दिया जाय। अिस मामलेमें अपनाने लायक़ तरीक़ा यह है कि गाँवकी सारी खेती करने लायक़ ज़मीनमें, फिर वह चाहे जिसकी हो, 'समतोल खेती' के तरीके पर खेती की जाय, जिससे गाँववालेंके युक्ताहारकी ज़रूरतका अनाज और दूसरी बुनियादी चीज़ें ज़रूरी मात्रामें पैदा की जा सकें। अिस स्कीमके मुताबिक अुस जमीनमें अितनी और अैसी चीज़ें बोनेका लाअिसेन्स दिया जाय, जिनसे ५० हज़ारकी आबादीवाले गाँवोंके अेक समूहकी ज़रूरतें पूरी हो सकें। लाअिसेन्स देनेके बाद अैसी ज़मीनोंमें अुनके मालिकोंसे ही खेती कराअी जाय। अगर अैसी कोअी लाअिसेन्स वाली ज़मीन बिना किसी अुचित कारणके दो या तीन बरस तक बिना जोती पड़ी रहे, तो अुस ज़मीन पर सरकार अधिकार कर ले और गाँवके जो लोग 'समतोल खेती' की योजनाके मुताबिक अुस ज़मीनको जोतनेके लिअे तैयार हों, अुनमें अुसे बाँट दे।

अिस तरीक़ेसे काम करनेपर कोअी ज़मीनें बिना जोती नहीं रह सकेंगी और साथ ही अुनसे सीधा सम्बन्ध न रखनेवाले ज़मींदारोंके हाथसे निकलकर वे किसानोंके हाथमें आ जायेंगी। नतीजा यह होगा कि गाँववालोंको ज़रूरतकी चीज़ें पानेके बारेमें बेफिकरी हो जायगी और ज़मीन सिर्फ़ अिसलिअे बिना जोती नहीं पड़ी रहेगी कि ज़मींदार साहब खुद अुसको नहीं जोतते।

मेरा खयाल है कि ज़मींदारोंकी ज़मीनें ज़ब्त करनेमें जितना विरोध खड़ा होगा, अुतना अिस तरहका क़ानून बनानेमें नहीं होगा। पहले तरीक़ेमें हिंसाकी बू है, जब कि दूसरा तरीका अहिंसक है। जो प्रान्त पैदावार बढ़ाकर ज़रूरी चीज़ोंकी कमी पूरी करनेके लिअे अुत्सुक हैं, अुनसे हम अिस सुझावपर अमल करनेकी सिफ़ारिश करते हैं।

जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक, ११-५-१९४७

८४

ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय?

१

कभी-कभी काम सिर्फ़ अिसलिअे हाथमें नहीं लिये जाते कि वे बहुत मामूली जान पड़ते हैं। 'ज्यादा अनाज पैदा करो' अेक अैसा ही काम है। अिसमें बहुत बड़ी मुश्किल ज्यादा अनाज पैदा करनेकी नहीं है, बल्कि लोगोंके दिल और दिमाग़ अुसकी तरफ़ खींचनेकी है।

क्या गांधीजीने बार-बार हमसे यह नहीं कहा है कि अपने देशमें अपनी ही कोशिशोंसे हिन्दुस्तानकी अनाजकी कमीको पूरा करना हमारे लिअे संभव है और अिस मामलेमें मददके लिअे दूसरे देशोंकी तरफ़ ताकना गलत है? हमें अिस तरह बिना कुछ किये गाफ़िल बने बैठे रहनेमें और परदेशोंसे हिन्दुस्तान आनेवाले अनाजके जहाज़ोंकी खबरें

अखबारोंमें पढ़कर सन्तोष कर लेनेमें शर्म मालूम होनी चाहिये। ये परदेशी अनाजके जहाज़ मुफ्तमें यहाँ आकर अनाज जमा नहीं कर जाते! अिसके लिअे पहलेसे ही खर्चके बोझसे लदे हुअे हिन्दुस्तानके सरकारी बजटमें सब तरफ़से काट-कसर करके देशको करोड़ों रुपये बाहर भेजने पड़ते हैं और हम चुपचाप बैठे देखते रहते हैं! हमारी हाल ही में प्राप्त की हुअी आज़ादीको मज़बूत करनेका क्या यही तरीक़ा है?

हम सबको अिस पतनसे बचनेकी हिम्मतके साथ कोशिश करनी चाहिये। अिस काममें अेक मामूली आदमीसे लगाकर बड़े भारी सरकारी तंत्र तक सभी मदद कर सकते हैं:

१. जिन लोगोंके पास अेक अिंच ज़मीन भी नहीं है, वे पुराने टूटे हुअे बर्तन, तसले और पेटियाँ अिकट्ठी करके अुनमें थोड़ी मिट्टी रखकर साग-भाजी पैदा कर सकते हैं।

२. जिन लोगोंके पास बंगले और मकान हैं, वे हिन्दुस्तान-भरमें शहरों और कस्बोंके बाजारोंको अुचित कीमत पर हरी भाजियाँ, कंद, प्याज, आलू, लौकी, कद्दू और अैसी ही दूसरी चीज़ें मुहैया कर सकते हैं।

३. म्युनिसिपेलिटियाँ सार्वजनिक बगीचोंमें ये चीज़ें बो कर देशमें साग-भाजीका स्टॉक बढ़ा सकती हैं। जहाँ काफी ज़मीन हो, वहाँ वे अनाज भी पैदा कर सकती हैं।

४. जिस ज़मीनमें पहलेसे ही खेती हो रही है, अुसको ज्यादा अुपजाअू बनानेमें सरकार गाँववालोंको आजकी अपेक्षा बहुत ज्यादा मदद दे सकती है।

ये कोअी नये सुझाव नहीं हैं। मगर कुछ अिने-गिने लोगोंको छोड़कर सभी अिनकी तरफ़से आँख-कान बन्द करके बैठे हैं, जब कि देशमें अनाजकी तंगीकी हालत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है।

हैं, मगर अुन्हें अमलमें नहीं लाते। बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, मगर नहीं करते। जो कुछ मैंने अूपर सुझाया है, अुसके लिअे बड़े भारी या साज-सामानकी ज़रूरत नहीं है। अुसके लिअे मनुष्यका साथ काम करना ज़रूरी है। कोअी भी योजना तब तक रह कामयाब नहीं होगी, जब तक कि अुसके पीछे यह ज़रूरी न हो, फिर अुसमें कितना ही ज्यादा रुपया क्यों न लगाया गया और अिस शक्तिके रहनेपर अगर आर्थिक मदद न भी मिले, तो स योजनामें बहुत बड़ी सफलता मिलेगी।

ज़रा देखिये कि अगर अिन्सानकी क्रियात्मक रुचिको जगाया जाय, ह काम कितना आसान हो जाता है :

१. अिन सुझावोंपर अमल करनेसे वे लोग, जिनके पास नामको भी ज़मीन नहीं है, थोड़े ही दिनोंमें हरी साग-भाजी अुगा सकेंगे और खा सकेंगे और कुछ ही हफ़्तोंमें अुनके बरामदे और मकानकी छतें झालरकी तरह लटकती हुअी व आँखोंको भली लगनेवाली साग-भाजीसे लदी बेलों और पौधोंसे भर जायँगी।

२. बंगलोंके मालिक अिस मामलेमें अपने मालियों और मुकामी खेती-विभागके अफसरोंसे चर्चा करें। फिर वे अपने मालियोंको ज़रूरी बीज और खाद दें और खुद भी फुर्सतके वक्त अपने बगीचोंमें काम करें। (बगीचेकी ताज़ी हवामें शारीरिक मेहनत करनेसे जो तन्दुरुस्ती बढ़ेगी, वह अेक अतिरिक्त फ़ायदा होगा।) बीज और खाद खरीदनेमें जो पैसा खर्च होगा, अुससे कअी गुनी ज्यादा कीमतकी अुपज बगीचेमें हो जायगी।

३. म्युनिसिपेलिटियाँ अपने मालियोंको फूल अुगाने और दूबके मैदान तैयार करनेके बजाय अनाज पैदा करनेके काममें लगायें। वे शहरकी जनतामें से अपनी मरजीसे काम करनेवाले लोगोंके अैसे जत्थे खड़े करें, जो म्युनिसिपल बगीचोंकी ज़मीनमें

काम करके साफ़ हवा और कसरतका फायदा अुठायें। अपने शहरकी ज़मीनमें खेती करनेमें खुद मदद देकर शहरके लोग गौरव महसूस करें। यहाँ भी पैदावार खर्चसे ज्यादा ही होगी। मज़दूरी ही पैदावारकी कीमत बढ़ाती है, लेकिन अिस हालतमें तो मजदूरोंको मज़दूरी देनेका सवाल ही नहीं अुठेगा। माली वहाँ पहलेसे ही मौजूद हैं, जो अैसे काममें अपना समय बिताते हैं जिससे कोअी फायदा नहीं होता। बाकीके लोग खुद अपनी मरजीसे अनाजकी पैदावार बढ़ानेमें मदद करेंगे।

४. गाँववालोंको सरकारी मदद देनेका काम बहुत बड़ा है। लेकिन जब अेक बार सरकारी महकमोंके कर्मचारियोंमें वह ज़रूरी ताक़त — मनुष्यकी क्रियात्मक दिलचस्पी — पैदा कर दी जायगी, तो पैसेकी बहुत बड़ी मददके बिना भी अिस दिशामें काफ़ी अुन्नति की जा सकती है। आज तो कचहरियोंमें बैठनेवाले सरकारी महकमोंके सेक्रेटरियोंसे लेकर खेतोंमें काम करनेवाले छोटे-से-छोटे अफ़सरों तकका काम करनेका तरीक़ा और दृष्टिकोण गलत होता है। शासन-तंत्रका साराका सारा ढाँचा कुछ अिस तरहका है कि अगर कोअी भला आदमी अुसमें पहुँच जाय, तो या तो अुसे दूसरोंके साथ खुद भी गिरना होगा, या फिर वहाँसे बाहर निकल आना होगा। कोअी अच्छा आदमी वहाँ काम कर ही नहीं सकता। बड़े अफ़सरोंको बहुत ज्यादा पैसा दिया जाता है और छोटे अफ़सरोंको बहुत कम पैसा दिया जाता है, लेकिन सबको जीवन और कपड़ोंका बनावटी स्टैण्डर्ड तो कायम रखना ही पड़ता है। दफ़्तरी घिस-घिससे बढ़नेवाली सुस्ती, अुदासी, अयोग्यता, बेअीमानी और आम लोगोंके साथ जीते-जागते सम्बन्धका अभाव, ये सब बुराअियाँ सरकारी तंत्र अपने कर्मचारियोंमें लाज़िमी तौरपर पैदा कर देता है। अिसलिअे सरकार द्वारा 'ज्यादा अनाज पैदा करो' की किसी योजनाको सफल बनानेकी पहली शर्त यह है कि

सारे सरकारी तंत्रको साफ़-सुथरा बनाकर बिलकुल नये सिरेसे अुसकी रचना की जाय। सवाल यह नहीं है कि अिसके लिअे सरकार ज्यादा खर्च करे, बल्कि यह है कि आज सरकारके विकास-महकमे अिसमें जो पैसा खर्च कर रहे हैं, अुसे आजकी देरी, बरबादी और गलत दृष्टिकोणको खतम करके सही ढंगसे खर्च किया जाय। केन्द्र और प्रान्तोंमें विकासकी जो योजनायें बनाअी जा रही हैं, वह काम करनेका अुलटा ढंग है। सबसे पहले हमारी सरकारोंको जिस योजनाके बारेमें सोचना और जिसपर अमल करना चाहिये, वह है अैसे शासन-तंत्रको जन्म देना, जो अिन विकासकी योजनाओंपर सफलतासे अमल कर सके। आज सरकारी हलक़ोंमें हर जगह यह बात कबूल की जाती है कि सरकारी तंत्र अूपरसे नीचे तक बिगड़ा हुआ है। लेकिन चूँकि यह सवाल बड़ा मुश्किल है, अिसलिअे हर आदमी अिस सचाअीसे भागनेकी कोशिश करता है कि तंत्रमें क्रान्तिकारी फेरफार करनेकी ज़रूरत है। खुले तौर पर अिस सचाअीका सामना किये बिना बड़ी-बड़ी योजनाओंकी बातें करना जनताको सरासर धोखा देना है।

अिसलिअे मैं कहती हूँ कि सरकारी कर्मचारियोंके जरिये देशके अनाज पैदा करनेके साधनोंको बढ़ानेके लिअे हमें शासन-तंत्रमें अेकदम पूरी तरह फेरफार करना होगा। अगर हमने यह काम कर लिया, तो दूसरी सारी बातें कम खर्च और ज्यादा पैदावारके साथ विकास करेंगी और फलेंगी-फूलेंगी।

नअी दिल्ली, २३-१०-'४७ मीराबहन

हरिजनसेवक, २-११-१९४७

८५

ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय ?

२

पिछले हफ्तेकी मेरी लिखी बातोंमें जिन्होंने दिलचस्पी ली है, अुनके लिअे मैं अिस हफ्तेमें कुछ अमली सुझाव यहाँ देती हूँ। मौसम सिरपर आ गया है और थोड़ा भी समय बरबाद नहीं किया जाना चाहिये। अिसलिअे आपमें से जो लोग सचमुच काम करना चाहते हैं, अुन्हें ज़मीन खोदना शुरू कर देना चाहिये। पहले मैं खानगी लोगोंसे कुछ कहना चाहती हूँ। ज़मीन खुद जानेके बाद (जिस ज़मीनमें कुछ पैदा किया जा चुका है, अुसे अेक बार खोदा जाय और नअी ज़मीनको दो बार — अेक बार अिस तरफ़से, दूसरी बार अुस तरफ़से — खोदा जाय) मिट्टीके ढेलोंको तोड़कर मुलायम न बनाया जाय। अुसे ढेलोंके रूपमें ही छोड़ दिया जाय, ताकि ज़मीनकी तहमें सूरज और हवा प्रवेश कर सकें। लगभग अेक हफ़्ते तक अुसे अिसी हालतमें रहने दिया जाय। अगर समय कम न रह गया होता, तो मिट्टीको ३ या ४ हफ़्ते तक खुला रहने दिया जा सकता था और अुससे फ़ायदा होता। अिसी बीच अगर अच्छी तरह सड़ी हुअी खाद मिल जाय, तो अुसे अिकट्ठा करके अुम्दा भूसा बना लिया जाय। हफ़्तेके आखिरमें खादको खुदी हुअी ज़मीनपर अेक-सा फैला दिया जाय। फिर मिट्टीके ढेलोंको फोड़कर खादको अच्छी तरह अुनके साथ मिला दिया जाय। अिसके बाद अुसे पानीसे अच्छी तरह सींचा जाय और तब तक छोड़ दिया जाय, जब तक अुसमें थोड़ा गीलापन तो कायम रहे, लेकिन चिपचिपाहट बिल्कुल न रहे। अब आप ज़मीनमें बीज बोनेके लिअे क्यारियाँ बना सकते हैं। हर क्यारी करीब ५ × ६ फुटकी ठीक होगी। लेकिन मौका देखकर क्यारियोंकी

लम्बाओी-चौड़ाओीमें फेरफार किया जा सकता है।
तरफ़ करीब ५ अिंच चौड़ा और ४ अिंच ऊँचा पाल
जगहके हिसाबसे आप अेक क्यारीके बाद दूसरी क्य
अगर आपके पास पंप या नल या पानी सींचनेका दू
हो, तो आप क्यारियोंकी सतहसे कुछ ऊँचाओीपर क्य
बहनेवाली पानीकी छोटी-सी नाली बना लें, ताकि जब अ
पालबन्दको खोलें और पानीकी नालीको आगेसे बन्द
सहज ही तरकारीकी क्यारीमें बहने लगे।

अिस हफ्ते हम सर्दीकी चार अुम्दा भाजियोंकी
करेंगे: १. गाजर, २. शलजम, ३. मूली, और ४. प

१. गाजर: अूपर बताये हुअे तरीकेसे क्या
मिट्टीको मिलाकर ज़मीनकी सतहको मुलायम बना
गाजरके बीज क्यारीमें चारों तरफ फैला दीजिये
बीजोंको अेकसे बिखेरनेकी सावधानी रखिये। बी
पास-पास न बोये जायँ, लेकिन साथ ही क्यारीमें
न रह जायँ। बोनेके बाद बीजोंपर हाथसे या
ब्रशसे बहुत हलकी मिट्टी फैला दी जाय। तब
अुम्दा बरतनसे क्यारीमें बहुत हलका पानी दिया
बीजोंके अंकुर न फूटें और वे ज़मीनमें पक्की
तब तक सिंचाओीकी नालियोंका अुपयोग न किया ज
निचले सिरेपर बहुत घने पौधे अुगेंगे और जहाँ
है वहाँ, अूपरके सिरेपर, कोओी पौधा नहीं अुगेग
थोड़े समयसे ज़मीनमें हलका पानी दिया जाय,
गीली बनी रहे। जब पौधे बड़े हो जायँ, तो

वर्ना अुनकी जड़ोंको पूरी तरह फैलने और आज़ादीसे बढ़नेका मौका नहीं मिलेगा।

२. शलजम: गाजरकी तरह अिनकी क्यारियाँ भी तैयार की जा सकती हैं। लेकिन बीजोंको चारों तरफ़ फैलाकर बोनेके बजाय अुन्हें अेक दूसरेसे पाँच-पाँच अिंचकी दूरीपर, ज़मीनसे करीब अेक अिंच नीचे, धीरेसे रखकर अूपरसे मिट्टीसे ढँक दिया जाय (मिट्टीको नीचे दबाया न जाय)। अुन्हें पानी अुसी तरह दिया जाय, जैसे गाजरको दिया जाता है। लेकिन पौधे घने न अुगनेके कारण अुनमेंसे किसीको अुखाड़नेकी ज़रूरत नहीं।

३. मूली: अिन्हें भी शलजमकी तरह ही बोया जाय। लेकिन अुन्हें मिट्टीके अुठे हुअे टीलोंपर बोना सबसे अच्छा होता है। अिसलिअे जिन क्यारियोंमें दूसरी तरकारियाँ बोअी जायँ, अुनके अुठे हुअे पालबन्दको अिस काममें लाया जाय। अिन पालबन्दोंको भी पानी देनेके बरतनसे ही सावधानीसे सींचा जाय और जब पानी भरकर सिंचाअी की जाय, तो अितना पानी भरा जाय कि वे पूरी तरह भीग जायँ।

४. पालक: अिसके बीजोंको गाजरकी तरह चारों तरफ फैलाकर बोया जाय। बीज भरसक अेकसे और गाजरके बनिस्बत ज्यादा पास-पास बोये जायँ। वे कितने भी घने क्यों न अुगें, अुनमेंसे किसीको अुखाड़नेकी ज़रूरत नहीं। पालकको हमेशा अच्छा पानी दिया जाय। अेक ही फसलसे तीन या चार बार पालक काटा जा सकता है।

अिन सब बातोंसे आपको डरना नहीं चाहिये। यह कोअी बहुत कठिन काम नहीं है। अुलटे, अिसमें सबसे ज्यादा आकर्षण है। अिन तरकारियोंको पैदा करनेका काम आफिसमें बैठने या कारखानेमें काम करनेसे ज्यादा आकर्षक और ज्यादा तन्दुरुस्ती देनेवाला है। जब हम कुदरतसे अपना सम्बन्ध कायम करते हैं, तब जीवन कितना ज्यादा सुखी

और आकर्षक बन जाता है? अगर हम प्यार और ममतासे कुदरतके पास जायें, तो हम अुसे अपने स्वागत और सेवाके लिअे हमेशा तैयार पायेंगे। यहाँ तक कि पुरानी थालीमें आधा अिंच मिट्टी फैलाकर भी अगर हम बीज बोयें, तो कुछ ही दिनोंमें वह हमें सलाद खानेको दे देगी।

मैं अिस चीज़को ज्यादा विस्तारसे समझाअूँगी :

कोअी भी चौड़ा और अुथला बरतन — थाली या ट्रे — लीजिये और अुसमें अच्छी तरह भूसा की हुअी आधा अिंच मिट्टी फैला दीजिये। अिसके बाद अुसे पानीसे भर दीजिये और धीरे-धीरे बरतनको हिलाअिये, ताकि पानी मिली हुअी मिट्टी बरतनके पेंदेमें अच्छी तरह अेकसी बैठ जाय। तुरंत अुसमें सरसों या राअी बो दीजिये। बीज अितने घने बोअिये कि वे अेक-दूसरेसे सटे हों, लेकिन अेक-दूसरेके अूपर न हों। बरतनको अैसी जगह रखिये जो न ज्यादा गरम हो न ज्यादा ठण्डी। अिससे मिट्टी जल्दी नहीं सूखेगी। लेकिन साथ ही, वहाँ अितनी गरमी भी हो कि बीजोंमें अंकुर फूट सकें। मिट्टीको कभी सूखने न दिया जाय। जब अुसका गीलापन मिटने लगे, तभी अुसपर धीरे-धीरे पानी छिड़क दिया जाय, ताकि मिट्टीके अन्दरके बीज अिधर-अुधर हटें नहीं। अब बरतनको पानीसे भरा न जाय। सिर्फ़ हाथसे हलका पानी समय-समयपर छिड़का जाय, जिससे मिट्टी हमेशा थोड़ी गीली बनी रहे। सरसों या राअीके बीज दो या तीन दिनमें फूट निकलते हैं और १० दिनके भीतर तो वे अेकसे डेढ़ अिंच तक बढ़ जाते हैं और काटने लायक हो जाते हैं। पौधोंका विकास मौसमके हिसाबसे कम ज्यादा होता है। बरतनको मकानके भीतर सायादार जगहमें रखना चाहिये। लेकिन दिनमें अेक बार अुसे आधे या पौन घण्टेके लिअे धूपमें भी रखा जा सकता है। अिससे पत्तोंका रंग ज्यादा गहरा होगा। बरतनको धूपमें से भीतर लाते समय हमेशा मिट्टीको छूकर अच्छी तरह देख लीजिये कि वह सूखी तो नहीं।

'काहू' नामका अेक दूसरा पौधा होता है, जिसे अिसी तरह बोया और बढ़ाया जा सकता है। लेकिन राअी या सरसोंके बीज हर जगह मिल सकते हैं, जब कि 'काहू' के बीज बगीचोंमें बोये जानेवाले बीजोंके बड़े व्यापारियोंके यहाँ मिल सकते हैं। आपमें से जो अुन्हें पा सकते हैं, अुन्हें ज़रूर लाना चाहिये। राअी और काहूको दो अलग-अलग बरतनोंमें बोअिये और काटते समय दोनोंका थोड़ा-थोड़ा हिस्सा मिलाकर सलाद बनाअिये।

आप कह सकते हैं कि "थोड़ेसे सलादके लिअे अितनी बड़ी तकलीफ़ अुठानेसे क्या फ़ायदा? सलादसे क्या पोषण मिलता है?" आपको याद रखना चाहिये कि काफी खाना खा लेना ही सब कुछ नहीं है। अुसे सन्तुलित भी रखना चाहिये। रोटी और दालके साथ थोड़ा सलाद जोड़ देनेसे खानेको समतोल बनानेमें बड़ी मदद मिलती है। वह हाजमा बढ़ाता है और अुसकी मददसे शरीर गेहूँ और दालोंमें से ज्यादा पोषण खींचता है। चार रोटियाँ खानेवाला आदमी अगर तीन रोटियोंके साथ थोड़ा कच्चा सलाद या पकाअी हुअी हरी भाजी खायगा, तो अुसे ज्यादा पोषण मिलेगा और अुसकी तन्दुरुस्ती ज्यादा अच्छी रहेगी। अिसलिअे थालियों और दूसरे बरतनों या बक्सोंमें भी सलाद या तरकारियाँ पैदा करनेसे गेहूँ या दालोंसे हमें जो पोषण मिलता है, अुसमें सच्ची बढ़ती होती है।

म्युनिसिपैलिटियोंसे मैं यह कहूँगी :

आपने अभी तक मीटिंग बुलाकर यह चर्चा की या नहीं कि कौनसी ज़मीनमें खेती की जाय? आपको यह फैसला करनेमें देर नहीं करनी चाहिये, क्योंकि ज़मीनकी खुदाअी अेकदम शुरू हो जानी चाहिये। आपको अपने नागरिकोंकी बैठक भी बुलानी चाहिये और अुनसे अिस जरूरी राष्ट्रीय काममें मदद देनेकी अपील करनी चाहिये।

सरकारोंसे मैं कहूँगी :

हालाँकि सारे शासन-तंत्रको पूरी तरह बदलकर नअी रचना करना बहुत ज़रूरी है, फिर भी मौजूदा कर्मचारियोंसे ज्यादा अच्छा काम लेनेकी रोज-रोज कोशिश की जानी चाहिये। बीजके सरकारी गोदामोंको ताला लगाकर बन्द रखना चाहिये। अिन्स्पेक्टरोंको अकसर और अचानक गोदामोंका दौरा करके बीजकी जाँच करनी चाहिये, और हर तरहसे यह देखनेकी कोशिश करनी चाहिये कि गोदामोंसे दिया जानेवाला बीज किसानोंकी ज़रूरतका हो, अच्छी किस्मका हो और बाँटनेके पहले पूरी तरह जाँच लिया गया हो। मुझे अिन गोदामोंका बड़ा बुरा अनुभव हुआ है। अिसके अलावा, सारे देशमें खाद बनानेका प्रचार करना चाहिये। आज गाँवके चारों तरफ़ गोबर और कूड़े-करकटके ढेर अिधर-अुधर बिखरे पड़े रहते हैं और गाँवके रास्तोंपर भी कूड़ा-करकट फैला रहता है। अगर सरकारोंके खेती-महकमे संगठित आन्दोलन करके गाँववालोंको अिस सारे कूड़े-करकटको कीमती खादके रूपमें बदलनेकी तालीम दें, तो अिससे सिर्फ़ फसलोंमें ही काफ़ी बढ़ती नहीं होगी, बल्कि गाँव भी साफ़-सुथरे बनेंगे और बीमारियाँ कम होंगी।

मैंने यू० पी० के किसानोंसे खाद बनानेके बारेमें अेक छोटे परचेके रूपमें जो अपील की थी, अुसे मैं नीचे दे रही हूँ :

"किसान भाअियो,

"हम धरती माताके साथ अच्छा बरताव नहीं करते। वह हम सबको अन्न देनेकी अच्छी-से-अच्छी कोशिश करती है। लेकिन बदलेमें हम अुसे अुसकी खुराक नहीं देते। जिस तरह अपना फ़र्ज़ अदा करनेवाले बच्चोंको अपनी प्यारी और आदरणीय माँ की सेवा करनी चाहिये, वैसे ही हम भी धरती माताकी सेवा न करें, तो वह हमें — अपने बच्चोंको — कैसे खाना दे सकती है और पाल सकती है? हम हर साल खेतोंको हलते, अुनमें बीज बोते

और फसलें पैदा करते हैं, लेकिन ज़मीनमें खाद हम कभी-कभी ही देते हैं। जो कुछ देते हैं वह भी आम तौर पर आधा सड़ा कूड़ा-करकट ही होता है। जैसे हमें ठीक तरह पके हुअे खानेकी ज़रूरत होती है, अुसी तरह ज़मीनको अच्छी तरह तैयार की हुअी खादकी ज़रूरत होती है।

"दुर्भाग्यसे मवेशियोंका आधा गोबर तो हमारे गाँवोंमें जला डाला जाता है। खेतोंमें दी जा सकनेवाली खादकी अिस तरह जो कमी होती है, अुसे रोकनेके लिअे हमें ज्यादा पेड़ अुगाने पड़ेंगे। हममेंसे हरअेकको अपनी ज़मीनमें अुगनेवाले बबूल और दूसरे पौधोंको बचाना चाहिये। बबूल फसलको नुकसान नहीं पहुँचाता। सच पूछा जाय तो बबूलके नीचे अकसर फसल ज्यादा बढ़ती है। अगर बारिशके बाद ध्यानसे खेतोंमें देखें, तो हम अपने आप अुगनेवाले पौधोंको आसानीसे चुन सकते हैं, अुनके आस-पासकी ज़मीन साफ़ कर सकते हैं और अुनके चारों तरफ काँटे लगाकर अुन्हें नुकसानसे बचा सकते हैं। अेक बार काफ़ी पेड़ हो गये कि हम खादके लिअे बहुत-सा गोबर बचा सकेंगे।

"अब मैं यह बताअूँगी कि घरकी ज़रूरतोंसे बचे हुअे गोबरका अच्छे-से-अच्छा अुपयोग कैसे किया जा सकता है। हमें चरागाहों पर पड़ा हुआ और घरोंमें मवेशियोंके पैरों तले पड़ा हुआ सारा गोबर अिकट्ठा कर लेना चाहिये। वह बड़ी कीमती चीज़ है। अुसका थोड़ा हिस्सा भी बरबाद न किया जाय। हमें गाँवके रास्तोंपर बिखरा हुआ और घरोंके अहातोंमें फैला हुआ सारा पुराना घास, भूसा और दूसरा कचरा भी अिकट्ठा करना चाहिये। हमें यह अिरादा कर लेना चाहिये कि हम अब गोबरकी टोकरियाँ भर-भरकर कचरेके ढेरोंपर नहीं फेंकेंगे, बल्कि १० फुट चौड़ा, २० फुट लम्बा और ३ फुट गहरा अेक गड्ढा खोदेंगे। हर रोज़ गड्ढेके किनारेपर दो ढेर अिकट्ठे करेंगे। अेक

गोबरका और दूसरा कचरेका । जब सब अिकट्ठा हो जायगा, तब हम रोज अुसे गड़हेमें फैलायेंगे — अुसके अेक सिरेपर ४ फुट ज़मीन खाली रखेंगे । पहले कचरेकी अेक पतली तह (करीब ३ अिंच) फैलायेंगे और अुसपर दूसरी पतली तह (करीब १ अिंच) गोबरकी, और फिर गोबरको धूप और हवासे बचानेके लिअे अुसपर कचरेकी तह फैला देंगे । हर तीसरे दिन हम अिन तहोंको पानीसे भिगायेंगे । जब अिस तरह आधा गड़हा सिरे तक भर जायगा, तो हम अुसे अूपरसे ३ या ४ अिंच मिट्टीसे ढक देंगे और ७ या ८ हफ्ते तक वैसा ही पड़ा रहने देंगे । अब पहले गड़हेके पास दूसरा गड़हा खोदेंगे । अिसका आधा हिस्सा भी हम अिसी तरह भरना शुरू करेंगे । अगर यह आधा हिस्सा ७ हफ्तेसे कम समयमें भर जाय, तो हम तीसरा गड़हा खोदेंगे और अुसे भी अिसी तरह भरना शुरू करेंगे । जब पहले गड़हेकी मिट्टीसे ढँकी खादको पड़े-पड़े ७ या ८ हफ्ते हो जायँगे, तो हम फावड़े लेकर चार फुटके खुले हिस्सेमें अुतरेंगे और खादको अुलीचकर अिस हिस्सेमें भर देंगे । अिस तरह अन्तमें वह हिस्सा खुल जायगा, जहाँ पहले खाद जमा थी । यह काम करते हुअे हम गोबर, कचरे वगैराकी तहोंको पूरी तरह मिलाने और ठोस ढेलोंको फोड़नेका ध्यान रखेंगे । अिसके बाद अुसपर खूब पानी डालकर अुसे फिर मिट्टीसे ढँक देंगे और दूसरे ७ या ८ हफ्ते तक वैसा ही पड़ा रहने देंगे । अितने समयके बाद जब हम अुसे खोलेंगे, तो हमें अच्छी तरह मिली हुअी और पूरी तरह सड़ी हुअी खाद मिलेगी । अिसे 'कम्पोस्ट' का खास नाम दिया जाता है । अिसके बनानेके कअी तरीके हैं । अुनमेंसे ज्यादातर बड़े पेचीदे हैं । जो तरीका मैंने अूपर बताया है, वह किसान-आश्रममें काममें लाया जाता है । यह काम बहुत सादा है और हममेंसे हरअेक अिसे कर सकता है । मैंने अिसे 'किसान-कम्पोस्ट' का नाम दिया है ।

"अूपरके बयानसे आप देख सकते हैं कि किसान-कम्पोस्टको अेक ही बार पलटनेकी ज़रूरत होती है और अुसे पूरी तरह पकनेमें या सड़नेमें ३ से ४ महीने ही लगते हैं। ज़रूरत पड़नेपर गड्ढोंकी लम्बाअी और चौड़ाअी बढ़ाअी भी जा सकती है। अगर नअी तहें फैलाते समय बीच-बीचमें थोड़ा पुराना कम्पोस्ट भी फैला दिया जाय, तो खाद जल्दी सड़ती है। अच्छी तरह फैलाअी हुअी राख भी अिसमें मददगार साबित होती है। बाजरीके डंठल, गन्नेकी छाल वगैरा जैसी कड़ी चीज़ें सीधे कम्पोस्टमें नहीं मिलानी चाहियें। या तो सड़ने तक अुन्हें पानीमें भिगोया जाय या फिर जलाकर अुनकी राख बना ली जाय। अगर खेतोंमें ज़रूरत पड़नेके पहले ही गड्ढोंमें कम्पोस्ट तैयार हो जाय, तो अुसे गड्ढेसे हटाकर ज़मीनपर अिकट्ठा कर दिया जाय और ३ या ४ अिंच मिट्टीसे ढँक दिया जाय। ज़रूरी हो, तो अुसे धूप और हवाके असरसे बचानेके लिअे हल्के प्लास्टरसे भी ढाँका जा सकता है।

"अगर हम जितना भी गोबर और कचरा मिले, अुसे अिकट्ठा करनेकी तकलीफ़ अुठायें और मेरे कहे मुताबिक खाद तैयार करें, तो हम अपनी गरीब भूखों मरनेवाली धरती माताको खुराक दे सकेंगे और वह बदलेमें खूब फसल देकर हमारा और हमारे भूखों मरनेवाले मवेशियोंका पालन-पोषण करेगी।"

यह किसान-कम्पोस्ट खानगी बगीचोंमें छोटे पैमाने पर तैयार किया जा सकता है। गड्ढोंका अच्छा नाप अिस तरह होना चाहिये :

१. १४ फुट लम्बा, ७ फुट चौड़ा और ३ फुट गहरा।
२. १० फुट लम्बा, ५ फुट चौड़ा और ३ फुट गहरा।
३. ८ फुट लम्बा, ४ फुट चौड़ा और २॥ फुट गहरा।

अगर बगीचेके अहातेमें गोबर न मिले, तो थोड़ा गोबर शायद बाहरसे — किसी गोशाला या चरागाहसे — मिल सकता

है ! कम्पोस्ट बनानेके कामको भरसक जारी रखनेके लिअे अिस गोबरको अेक बाल्टीमें पानीके साथ घोलकर कचरेपर छिड़का जाय।

हर प्रान्तके खेती-महकमे हर मौसमकी तरकारियोंके बीजोंकी सूचीवाले और अुनके बोने और बढ़ानेकी दिशा बतानेवाले छोटे परचे छपवाकर तरकारियाँ पैदा करनेकी अिच्छा रखनेवाले खानगी लोगोंको भी मदद दे सकते हैं। साथ ही, महकमोंके मुकामी कर्मचारी शहरों और क़स्बोंकी जनताको अिसके बारेमें सलाह देकर रास्ता बतायें और यह समझकर पहले पहल मुफ्त बीज भी बाँटें कि आअिन्दा लोग अपने बगीचोंमें से ज़रूरतके बीज खुद बचायेंगे। कहीं-कहीं अिस तरहकी कोशिश की गअी है, लेकिन आजके संकटमें जिस तरहकी मिली-जुली और संगठित कोशिशकी ज़रूरत है, वैसी नहीं की गअी।

नअी दिल्ली, ३-११-'४७ **मीराबहन**

हरिजनसेवक, २३-११-१९४७

८६

ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय ?

३

जब तक यह लेख आपके पास पहुँचेगा — मैं खानगी तौर पर साग-भाजी वग़ैरा बोनेवालोंसे कह रही हूँ — आप साग-भाजियोंके बीज ज़मीनमें बो चुके होंगे और हर दिन आप अिस बातके लिअे अुत्सुक होंगे कि अुनमें अंकुर फूटनेके कोअी लक्षण दिखाअी पड़ते हैं या नहीं। आपको अिसका बड़ा लालच होता होगा कि मिट्टीको हटा कर ज़रा देखा जाय कि धरतीके नीचे बीज कैसी शकल ले रहे हैं; मगर अिस लालचको रोकिये। अिससे बीज बिगड़ जाते हैं। कम-से-कम दस-पन्द्रह दिन तक धीरज धरिये। अिसके बाद भी अगर अंकुर नहीं

फूटें, तो अेक जगहकी मिट्टी हटाकर सावधानीसे जाँच करिये। अगर आप देखें कि मिट्टीमें बीज नहीं जमे हैं, तो ज़मीनको खोदकर अुसमें फिरसे बीज बोये जायँ। अंकुर न जमनेका कारण यह हो सकता है कि या तो बीज खराब हैं या ज़मीन ठीक तरहसे तैयार नहीं की गअी है या फिर अुसमें ज़रूरतसे कम या ज्यादा पानी दिया गया है। जैसा कि मैंने पिछले हफ़्ते समझाया था, ज़मीनको कभी हड्डीकी तरह सूखी न बनने दी जाय और न अुसे लगातार बहुत गीली रखी जाय। अंकुर न फूटनेका दूसरा कारण ज़मीनकी स्थिति हो सकती है। साग-भाजीका प्लॉट काँटोंकी बाड़के बिलकुल नज़दीक न हो, न अुसे घनी झाड़ियोंसे घेरा जाय। अिन जंगली झाड़ियोंकी मज़बूत जड़ें ज़मीनसे पोषक तत्त्व खींच लेती हैं। बड़े छाँहदार पेड़ोंके नीचे कुछ खास तरहकी भाजियोंके सिवा, दूसरी भाजियोंका बोना भी अुनके पौधोंको बढ़ने नहीं देता।

जब बीजोंमें पहली बार अंकुर फूटते हैं, तब अुनमें दो छोटी-छोटी गोल और रसभरी कोंपलें निकलती हैं, जिन्हें अुनके "दूधके दाँत" कहा जाता है। कुछ दिनों बाद अिन कोंपलोंके बीचमें दो पत्ते और निकलेंगे और पुरानी कोंपलें धीरे-धीरे सूखकर झड़ जायँगी। नये पत्ते आगे होनेवाले पौधेकी शकल लेंगे। पालक और गाजरके पौधे अैसे ही होते हैं। अुनमें पहले नन्हीं और लम्बी कोंपलें फूटती हैं। मैं यहाँ पर यह बतला दूँ कि थालीमें जो राअी बोअी जाती है (गये हफ्तेमें मैंने जिसका वर्णन किया है), अुसे "दूधके दाँत" निकलनेकी स्टेजमें ही काटा जाता है और अिसलिअे वह खानेमें बहुत रसीली होती है।

जब आपकी तरकारियाँ थोड़ी बड़ी हो जायँ और मिट्टीमें अच्छी जड़ जमा लें, तो आपको क्यारियोंकी निराअीकी तरफ़ ध्यान देना चाहिये। क्यारियोंमें अुगनेवाला सारा घास-पात और दूसरे बेकार पौधे जड़से अुखाड़कर बाहर फेंक दिये जायँ। पानी देनेके बाद तुरन्त यह काम मत कीजिये, क्योंकि तब ज़मीन गीली होगी और बहुत-सी मिट्टी अुखाड़े हुअे पौधोंके साथ अूपर आ जायगी। अिससे तरकारियोंके

कोमल पौधोंकी जड़ोंको नुकसान पहुँचेगा। पौधोंकी बाढ़ अगर बहुत घनी हो, तो अिस समय कुछ पौधे अुखाड़ दिये जायँ।

तरकारियोंके विकासका दूसरा दरजा तब आता है, जब पौधे काफी बड़े होने लगते हैं। अब पौधोंके चारों तरफ़की मिट्टी खुरपीसे मामूली खोदकर ढेलोंको फोड़ दिया जाय; लेकिन अिस बातका बहुत ध्यान रखा जाय कि अैसा करनेमें पौधोंकी जड़ें न कटें या वे अपनी जगहसे हिलने न पावें। यह काम दो सिंचाअियोंके बीच किया जाना चाहिये। यानी मिट्टी गीली न रहे, और जब अुसे खोदकर मुलायम कर दिया जाय, तो अगली सिंचाअीके पहले अुसे अेक या दो दिनके लिअे वैसी ही छोड़ दी जाय, ताकि धूप और हवा ज़मीनके भीतर पहुँच सकें।

अगर आपके पास काफ़ी ज़मीन हो, तो आप दूसरी क्यारियोंमें भी गाजर, शलजम और पालक बो सकते हैं। मूली तो आप जनवरीके अन्त तक थोड़ी-थोड़ी मात्रामें हर दसवें दिन बो सकते हैं।

मुझे आशा है कि आपमें से जिन लोगोंके बगीचोंमें जगह है, अुन्होंने कम्पोस्ट तैयार करनेके लिअे गड्ढे बना लिये होंगे और अुन्हें मेरे बताये मुताबिक भरना शुरू कर दिया होगा। यह याद रखिये कि कम्पोस्टके गड़्हेमें जो भी चीज़ डाली जाय, अुसे अच्छी तरह फैलायी जाय। गड्हेमें किसी चीज़को ढेलों या ढेरके रूपमें न पड़ा रहने दिया जाय। अिसका मतलब यह हुआ कि हम गड्हेमें गोबर या कचरेको अेक साथ डालकर ढेरके रूपमें पड़े रहने देनेके अपने आलसीपनको छोड़ दें। अगर हम थोड़ी भी तकलीफ अुठायें, तो अुम्दा कम्पोस्ट तैयार हो सकता है।

अगले लेखमें सारे मौसमोंकी अुपयोगी तरकारियोंकी पूरी सूची देकर मैं अपनी यह लेखमाला खतम कर दूँगी।

नअी दिल्ली, ८-११-'४७ **मीराबहन**

हरिजनसेवक, ३०-११-१९४७

८७

ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय?

८

क्या आपके छोटे-छोटे पौधे अच्छी तरहसे बढ़ रहे हैं? आप लोगोंमेंसे जिनके पास जमीन बिलकुल नहीं है, क्या वे राअी और काहूकी भाजियाँ बो रहे हैं और अुन्हें खाकर अपनी तन्दुरुस्ती बढ़ा रहे हैं? मेरे दिमागमें ये विचार अुठते रहते हैं और यह बड़ा सवाल भी हमेशा सामने बना रहता है कि आप लोगोंमें से कितने सचमुच यह काम कर रहे हैं? भगवान आपको शक्ति और श्रद्धा दे!

अपने पिछले लेखमें मैंने तरकारियोंकी सूची देनेका वचन दिया था। अुसे यहाँ दे रही हूँ। चूँकि यह बहुत जगह घेरती है, अिसलिअे गर्मीके मौसमकी सूची 'हरिजन'के अगले अंकमें दी जायगी।

नअी दिल्ली, १५-११-'४७ **मीराबहन**

[मीराबहनका सवाल बिलकुल ठीक है। यह जानना अेक दिलचस्प बात होगी कि कितने लोग अुनके सुझावोंसे फायदा अुठा रहे हैं। क्या अैसे भाअी, सम्पादक, 'हरिजन', अहमदाबादके पास अपने नाम भेजेंगे?

नअी दिल्ली, १७-११-'४७ **— मो० क० गांधी**]

ठण्डके मौसमकी शाक-भाजी

तरकारीका नाम	फ़ी अेकड़ बीज	बोनेका वक्त (मै.-मैदान प.-पहाड़ी)	बोनेकी गहराअी	अंकुर फूटनेका समय	बोने, छाँटने या जगह बदलनेके बादका अन्तर: कतारें	पौधे	मैदानोंमें तरकारियाँ मिलनेका समय
सेम या लोबिया	६० पौंड	मै. आधे अक्तूबरसे आधे नवम्बर तक; प. मार्चसे मअी आखिर तक	३ अिंच	२० दिन	२ फुट	१·५ फुट	फरवरीसे मार्च

नोट — बीजको २ फुट चौड़ी, ३ अिंच गहरी और अेक दूसरीसे ५ फुटकी दूरी पर बनी हुअी नालियोंमें बोया जाय। हरअेक नालीमें दो कतारोंमें, जिनका अन्तर १ फुटका हो, बीज बोये जायँ। हर बीजको ३ अिंच गहरा और अेक दूसरेसे ५ से ६ अिंच दूर बोया जाता है। अच्छे अंकुर फूटनेके लिअे नालीको पानीसे भर दीजिये। जब पौधे १५ अिंच ऊँचे हों, तब नालियाँ भरकर बराबर कर दीजिये। जब पौधोंमें फूल खिलें, तब बढ़नेवाले सिरोंको काट डालिये।

सेम (फ्रेंच)	(अ) ऊँची ६० पौंड (आ) छोटी ४० पौंड	मै. आधे अगस्तसे आधे अक्तूबर तक प. अप्रैलसे आधे जून तक	१·५ अिंच	१२ दिन	१·५ फुट	१·५ फुट	फरवरीसे मार्च

नोट — मैदानोंकी बजाय यह पौधा पहाड़ियोंपर ज्यादा अच्छी तरह बढ़ता है। मैदानोंमें जो जगह अिसके बोनेके लिअे चुनी जाय, वहाँ कुंजोंकी छाया हो। अिसका बीज ढालू टीलेपर या समतल ज़मीनपर अेक दूसरीसे १·५ फुटकी दूरीपर बनी हुअी कतारोंमें बोया जाता है।

चुकन्दर	४ से ६ पौंड	मै. अगस्तसे अक्तू. आखिर तक प. मार्चसे मअी आखिर तक	·२५ अिंच	१२ दिन	१५ अिंच	४ से ६ अिंच	नवम्बरसे मार्च

नोट — अिसका बीज १५ अिंचकी दूरीपर बनी हुअी कतारोंमें घना बोया जाता है। बादमें पौधोंको ४ अिंचसे ६ अिंचकी दूरी तक छाँट दिया जाता है। अंकुर फूटनेके लिअे अिसके बीजको लगातार नमीकी ज़रूरत होती है।

ब्रसेल्स स्प्राअुट्स (गोभी)	१२ औंस	मै. सितम्बरसे अक्तू. आखिर तक प. मार्चसे आधे मअी तक	१/८ अिंच	६ दिन	३ फुट	१·५ फुट	फरवरी

नोट — बीजोंको खुले मैदानमें बनी हुअी क्यारियोंमें फैलाकर बोया जाता है। पौधे जब ४ से ५ अिंच अूँचे हो जाते हैं, तब अुनकी जगह बदल दी जाती है।

बन्दगोभी	८ औंस	मै. आधे अगस्तसे अक्तू. आखिर तक प. मार्चसे जुलाअी आखिर तक	१/८ अिंच	६ दिन	२·५ फुट	२·५ फुट	जनवरीसे मार्च

नोट — खेतमें २० टन फ़ी अेकड़के हिसाबसे अच्छी तरह सड़ी हुअी खलिहानकी खाद दी जाय और दो मन फ़ी अेकड़के हिसाबसे अेमोनियम सल्फेट अुसके अूपर छिड़का जाय। 'ब्रसेल्स स्प्राअुट' की तरह अिसके पौधोंको बढ़ाया जाय और जब वे ४ से ५ अिंच अूँचे हो जायँ, तब अुनकी जगह बदल दी जाय।

गाजर	६-८ पौंड	मै. आधे अगस्तसे नवम्बर आखिर तक प. मार्चसे मअी तक	·५ अिंच	१५-२० दिन	१·५ फुट	२ से ३ अिंच	दिसम्बरसे मार्च

नोट — देशी बीजोंको शरद ऋतुमें जल्दी बोया जा सकता है और विदेशी बीजोंको देरसे। खलिहानकी अच्छी तरहसे सड़ी हुअी खाद फ़ी अेकड़ १० टनके हिसाबसे दी जाय। गाजरके बीज बहुत कम जमते हैं, अिसलिअे अुन्हें घने बोना चाहिये। जब वे ४ से ५ अिंच अूँचे हो जायँ, तब अुनकी जगह बदल देनी चाहिये।

फूलगोभी	८ औंस	मै. आधे जूनसे अक्तू. आखिर तक प. मार्चसे अप्रैल आखिर तक	·५ अिंच	७ दिन	२·५ फुट	१·५ फुट	अक्तूबरसे मार्च

नोट — जल्दी पैदा होनेवाले बीजोंको आधे जूनसे अगस्तके आखिर तक बो दीजिये। देरसे पैदा होनेवाले बीजोंको अक्तूबरमें बोया जाता है। दिनके बहुत गरम हिस्सेमें क्यारियोंपर छाँह रखी जाय। जब पौधे ४ से ५ अिंच अूँचे हो जायँ, तब अुनकी जगह बदल दी जाय।

धनिया २० पौंड मैं. सितम्बरसे नवम्बर तक ५ मार्चसे मअी आखिर तक ·५ अिंच १० दिन १ फुट १ फुट बीज जूनमें, पत्ते सालभर

नोट — बोनेके पहले बीजको रगड़कर अच्छी तरहसे फोड़ दिया जाय। बीजोंके लिअे पौधोंकी छँटाअी ज़रूरी है। पत्तोंके लिअे अिसे सालभर बोया जा सकता है।

बैंगन ८ से १० औंस मै. १. आखिर फरवरी २. जून ३. आखिर अक्तू. १/८ अिंच ६ दिन २·५ फुट १·५ फुट मार्चसे दिसम्बर

नोट — पौधा-घर या नर्सरीमें बैंगनके बीज हर मार्लामें १·५ या २ औंसके हिसाबसे चारों तरफ फैलाकर बोये जाते हैं। पहली और दूसरी बार बोये हुअे बीजोंके छोटे-छोटे कोमल पौधोंपर आम तौर पर हड्डा नामके कीड़ों, भौंरों और अण्डेनुमा कीड़ों द्वारा हमला किया जाता है। ये सब अुठते हुअे पौधोंको खा जाते हैं। तीसरी बारके पौधोंको पालेसे बचाअिये और जब पालेका डर दूर हो जाय, तो अुन्हें क्यारियोंमें ले जाकर रोप दीजिये। ज्यादातर लोग तीसरी फसल ही लेते हैं।

लहसन ६-७ मन गाँठें मैं. अक्तूबर ५. फरवरीसे मार्च तक ·५ अिंच ७-१२ दिन १ फुट ३ से ४ अिंच मअीके बाद

नोट — जब मअीके शुरूमें पत्तोंके सिरे पीले होने लगें, तो पौधे अुखाड़कर सुखा लिये जाते हैं और आगेके अुपयोगके लिअे जमा कर दिये जाते हैं।

सलाद	१·५ पौंड	मै. अक्तूबरसे नवम्बर तक प. मार्चसे आधे जून तक	१/८ अिंच	६ से ८ दिन	१५ अिंच	१२ अिंच	जनवरीसे फरवरी

नोट — अगर बीज सीधे खेतमें बोने हों, तो अुन्हें करीब दो फुट चौड़ी अुठी हुअी क्यारियोंके दोनों तरफ बोया जाय। और दो क्यारियोंके बीच सिंचाअीके लिअे नालियाँ रखी जायँ। ये नालियाँ १८ अिंच चौड़ी और ९ अिंच गहरी होनी चाहियें। बीज बोनेके बाद तुरंत क्यारियोंकी सिंचाअी कीजिये। बीजों तक पानी मिट्टीके जरिये सिर्फ सोखकर पहुँचाया जाय।

फूलगोभी	१ पौंड	मै. आधे अगस्तसे अक्तू. आखिर तक प. फरवरीसे मअी आखिर तक	·५ अिंच	४६ से दिन	१·५ फुट	९ अिंच	दिसम्बरसे मार्च

नोट — जब पौधोंके शलजम जैसे डंठल लगभग २ से ३ अिंचके घेरेवाले हो जायँ, तब फूलगोभी काटिये।

प्याज	७ से ९ पौंड	मै. आधे अक्तू.से आधे नवम्बर तक प. मार्चसे मअी आखिर तक	५ अिंच	१५ से २० दिन	१२ अिंच	३ से ४ अिंच	मअीके बाद

नोट — जब तक पौधे अच्छी तरह जम न जायँ, तब तक बीज बोनेकी क्यारियोंमें पानी दिया जाय। पौधोंको अुखाड़कर दूसरी जगह रोपनेके बाद तुरंत अुनकी सिंचाअी कीजिये और अुसके बाद हर १२ से १५ दिनके बाद तब तक सिंचाअी कीजिये, जब तक अुनके सिरे नीचे न गिरें। बादमें सिरोंको काट दीजिये और फर्शपर प्याजोंको फैला दीजिये।

मटर	४० पौंड	मै. अक्तूबरसे आधे नवम्बर तक प. मार्चसे मअी आखिर तक	१ अिंच	७ दिन	३ से ४ फुट चौड़ी अुठी हुअी क्यारियाँ	२ अिंच	फरवरीसे मार्च

नोट — पाला पौधोंपर कोअी असर नहीं करता, लेकिन वह फूलों और कलियोंको मार देता है। पौधोंके विकासके मुताबिक अुठी हुअी क्यारियोंकी चौड़ाअी ३ से ५ फुट होनी चाहिये। बीज बोनेके बाद ही सिंचाअी की जाती है। जब पौधे ५ से ६ अिंच अूँचे हो जायँ, तब हर क्यारीके बीचमें डंडोंकी अेक कतार गाड़ दी जाती है।

आलू	८ से १२ मन	मै. आधे सितम्बरसे आधे अक्तूबर तक प. आधे फरवरीसे आधे अप्रैल तक	३ अिंच	७ से १० दिन	२.५ फुट	९ से १२ अिंच	दिसम्बर से मार्च

नोट — नअी गाँठों या आलुओंको बोनेके पहले दो महीने तक रखनेकी ज़रूरत है। गाँठ बनना शुरू होनेके पहले पौधे अुखाड़कर दूसरी जगह रोपे जाते हैं। नहरकी सिंचाअीके लिअे आलूके पौधे ६ से ९ अिंच अूँची पालोंपर बोये जाते हैं और कुअेंकी सिंचाअीके लिअे ४ से ५ अिंच अूँची पालोंपर। गाँठोंको सड़नेसे बचानेके लिअे पौधे रोपनेके बाद तुरंत पानी दिया जाय। पानी देते समय पालोंको पानीमें डुबोया न जाय। फसल पकने तक ८ से १० बार सिंचाअी की जानी चाहिये।

मूली	३ से ४ पौंड	मै. आधे अगस्तसे जनवरी आखिर अक प. मार्चसे अगस्त आखिर तक	१ अिंच	३ से ६ दिन	१५ अिंच	२ से ४ अिंच	सितम्बरसे फरवरी

नोट — अगर बीज गर्मीके मौसममें बोये जायँ, तो मूलीकी जड़ें बहुत कड़ी और तीखे स्वादवाली होती हैं। अेक दूसरीसे डेढ़ फुट फासलेवाली और ९ अिंच अूँची पालोंपर मूली बोअिये और तुरंत ही

सिंचाअी कीजिये। हर १५-२० दिनके फासलेपर बीज बोअिये, ताकि आपको हर समय नरम मूली खानेको मिलती रहे।

पालक	२०-२५ पौंड	मै. अक्तूबरसे नवम्बर तक प. मार्चसे अप्रैल आखिर तक	·५ अिंच	५ से ७ दिन	. . .	२ से ३ अिंच	नवम्बरसे फरवरी

नोट — अिसके बीज चारों तरफ फैलाकर बोये जाते हैं और फावड़ेसे थोड़ी मिट्टीसे ढँक दिये जाते हैं। बोनेके बाद ही पानी दीजिये और बादमें हर ८-१० दिनके बाद पानी देते रहिये। बसन्तमें बीजके डंठल बढ़ने शुरू हों, अुसके पहले ३-४ बार पालक काटा जाता है।

शलजम	१-२ पौंड	मै. देशी बीज सितम्बरमें विदेशी सितम्बरसे नवम्बर तक प. फरवरीसे आधा जून	·५ अिंच	७ दिन	१·५ फुट	४ से ५ अिंच	अक्तूबरसे मार्च

नोट — जड़ोंको अच्छी तरह बढ़ने देनेके खयालसे अूँची पालोंपर बोना ही ज्यादा अच्छा है। अिसकी पालें मूलीकी पालोंकी तरह बनाअी जाती हैं। जब पौधे २ से ३ अिंच अूँचे हो जायँ, तो अुनकी छँटाअी कर दी जाय।

टमाटर	१. जल्दी आनेवाली फसल ८ औंस २. खास फसल ४ से ५ औंस	मै. १. आधे जुलाअीसे आधा अगस्त २. आधे अगस्तसे आधा सितम्बर ३. आधे अक्तूबरसे आधा नवम्बर (खास फसल) प. आधे मार्चमें मअी आखिर तक	·२५ अिंच	७ से १० दिन	३ फुट	२·५ अिंच	१. अक्तूबरसे नवम्बर २. दिसम्बरसे मार्च ३. मअीसे जुलाअी

भिण्डी जल्दीकी फसलके लिये १६–२० पौंड और देरकी फसलके लिये ८–१० पौंड	मै. मार्चसे जुलाअी आखिर तक प. अप्रैलसे जून बीच तक	.५ अिंच	५–६ दिन	२.५ फुट	१ फुट	अप्रैलसे दिसम्बर तक

नोट — भिण्डी नरम हो तभी तोड़ी जाय, क्योंकि वही अच्छी तरह सिझती है। अुसे हर दूसरे या तीसरे दिन तोड़ना चाहिये। अगर भिण्डीको पेड़पर पकने दिया जाय, तो फिर पेड़को फल नहीं लगते।

खरबूजा ३–४ पौंड	मै. जनवरी बीचसे मार्च आखिर तक	.५ अिंच	५–६ दिन	५ फुट	३ फुट	मअीसे जून तक

नोट — खरबूजेके पकनेके समय गरम और सूखी हवाकी ज़रूरत होती है। तभी अुसमें अुम्दा खुशबू और अूँचे प्रमाणमें शक्करकी मात्रा बढ़ती है। मामूली पाला पड़नेसे भी अिसका पौधा मर जाता है। अूँची क्यारियोंके साथ-साथ बनाअी हुअी नालीके दोनों तरफ अेक-अेक जगह ४–५ बीज बोये जाते हैं। पौधा और फल दोनों सूखी ज़मीन पर रहने चाहियें। पके हुअे फलोंको सुबहमें तोड़िये। सपाट ज़मीनमें पौधे बोये गये हों, तो अुन्हें शामको पानी देना चाहिये।

ककड़ी या खीरा ३–४ पौंड	मै. फरवरी बीचसे अप्रैल आखिर तक	.५ अिंच	५–६ दिन	५ फुट	३ फुट	मअीसे जून तक

नोट — खरबूजेके बनिस्बत ककड़ीकी फसल बिना किसी नुकसानके खुलेमें अुग सकती है। वह कच्ची ही खाअी जाती है। जब फल नरम और मुलायम होता है, तब वह छोटे-छोटे रुओंसे ढँका रहता है और हरे रंगका होता है।

तरबूज ३–४ पौंड	मै. जनवरी बीचसे मार्च आखिर तक	.५ अिंच	५–६ दिन	५ फुट	३ फुट	जूनसे जुलाअी तक

नोट — तरबूजकी पहली फसल आम तौर पर नदीकी सूखी तगअीमें होती है। वहाँ तरबूज बड़े और अच्छी जातके होते हैं।

टिण्डा	३-४ पौंड	मै. १. फरवरी बीचसे अप्रैल तक २. जून-जुलाअी	·५ अिंच	६-१२ दिन	५ फुट	३ फुट	१ जून-जुलाअी २. अक्तूबर

नोट — अिसकी अच्छी फ़सलके लिअे सूखी और गरम हवाकी ज़रूरत होती है। जल्दीकी फसल ५ फुट चौड़ी अुठी हुअी क्यारियोंमें बोअी जाती है। अिन क्यारियोंको २ फुट चौड़ी सिंचाअीकी नालियोंसे अलग किया जाता है। बीज बोनेके बाद तुरन्त सिंचाअी की जाय और हर ८-१० दिन पर पौधोंको पानी दिया जाय। दूसरी फसल आम तौर पर बीजोंको चारों तरफ फैलाकर बोअी जाती है। बेलें ठीक तरहसे अुगकर बड़ी हो जायँ, तब तक पानी दिया जाता है।

विलायती कद्दू	४-५ पौंड	मै. फरवरीसे अप्रैल बीच तक प. मार्च बीचसे जून बीच तक	·५ अिंच	६-१२ दिन	३ फुट	३ फुट	मअीसे जुलाअी तक

नोट — चारसे पाँच फुट चौड़ी ज़मीनकी सतहसे अुठी हुअी क्यारियोंमें तीन-तीन फुटके फासले पर बीज बोये जाते हैं। आम तौर पर हर जगह ३ से ४ तक बीज बोये जाते हैं। लेकिन जब पौधे ३-४ अिंच अूँचे हो जाते हैं, तब अेक पौधेको रखकर दूसरे पौधे अुखाड़ दिये जाते हैं। अुन्हें हर ४-५ दिनके फासले पर पानी दिया जाता है।

शकरकन्द	अिसकी बेलें रोपी जाती हैं। अेक अेकड़में दो से चार 'मारला'की बेलें काफी होती हैं।	मै. अप्रैलसे जून आखिर तक	बेलके टुकड़े अितने बड़े किये जाते हैं, जिनमें ३-४ आँखें आ जायँ, और अुनका बीचका भाग ज़मीनमें गाड़ दिया जाता है।	६-८ दिन	२·५ फुट	१ फुट	नवम्बरसे जनवरी तक

नोट — बेलोंके टुकड़े रोपनेके लिअे २ से २½ फुटके फासले पर पालें बनाअी जाती हैं।

कुल्फा-शाक	३–४ पौंड	मे. मार्च बीचसे जून आखिर तक	·२५-·५ अिंच	६–८ दिन	२·५ फुट	१ फुट	जूनसे अक्तूबर तक

नोट — यह भाजी गमलोंमें अुगाअी जा सकती है। अिसके पत्ते दलदार होते हैं। बीज फैलाकर घने बोये जाते हैं और बादमें बारीक मिट्टीसे ढँक दिये जाते हैं।

नअी दिल्ली, २२–११–'४७ मीराबहन

हरिजनसेवक, ११–१–१९४८

८९

अनाज, घास और खेती

१. खेतीकी अुन्नती

भारतमें खेतीकी अुन्नति करनेके खास तौरसे नीचे लिखे अुपाय हैं:

(१) ज़मीनके छोटे-छोटे टुकड़े न होने देना और आर्थिक दृष्टिसे फायदेमंद खेतोंको तय करना; (२) देशभरमें पानीके स्रोतोंको खोजना और अुन्हें काममें लेना; (३) खाद, बीज, फ़सलकी बीमारियों, ज़मीनको बेकस होनेसे रोकने आदिके कुदरती व वैज्ञानिक तरीकोंसे ज़मीनको सुधारना और अुसके अुपजाअूपनको बढ़ाना; (४) सहकारी प्रयत्न; (५) राज्यकी मदद और संरक्षण, और (६) देशकी भीतरी और समुद्र व खाड़ियोंके किनारोंकी बंजर ज़मीनको खेतीके लायक बनाना।

अिनमेंसे हर विषयपर अैसे अनुभवी आदमियों द्वारा बार-बार बारीकीसे चर्चा की जा चुकी है, जिन्होंने अपना सारा जीवन अिनके अध्ययनमें लगा दिया है। पर अभी तक अपने सुझावों व हलोंको

व्यवहारमें लानेका अुन्हें कोअी मौका नहीं मिला। अिसलिअे यद्यपि वे महत्त्वपूर्ण व ज़रूरी हैं, फिर भी मैं अुन्हें यहाँ गिना भर देता हूँ।

२. ढोर, घास और दूध

बोझा ढोने और हल चलानेवाले जानवरोंके पालनको, जो भारतीय खेतीका मुख्य आधार हैं, वैज्ञानिक तरीकेसे बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित करना चाहिये। भारतीय किसानोंके पास आज जो अिस तरहके ढोर हैं, अुनसे आर्थिक दृष्टिसे कोअी लाभ नहीं होता; वे सचमुच बोझ रूप हैं। ढोरोंकी मनमानी पैदाअिशका निषेध कर देना चाहिये। केवल जिन बछड़ोंको वेटरीनरी विभाग साँड़ बनाने लायक माने, अुनको छोड़कर सभी नर बछड़ोंका बधियाना कानूनन अनिवार्य कर दिया जाय, जैसे कि बच्चोंके लिअे टीका लगवाना अनिवार्य कर दिया गया है। बहुतसे लोगोंके लिअे यह अेक नअी खबर होगी कि खेतीकी दिशामें काफ़ी आगे बढ़े हुअे बंबअी प्रान्तमें भी व्यक्तिगत मालिकीकी ज़मीनोंके विश्वास न होने लायक बड़े-बड़े प्रदेश बंजर पड़े हुअे हैं। सूरत ज़िलेमें, जो अपने फलोंके अुद्यान व बगीचोंके लिअे प्रसिद्ध है, दस तहसीलोंमें से दो तहसीलों (पारडी और बलसाड़) में ही क्रमशः ८० हजार और ६४ हजार अेकड़ व्यक्तिगत मालिकीकी ज़मीनें बेकार पड़ी हैं। अुनमें घास, बबूल या कँटीली झाड़ियोंके अलावा कुछ नहीं अुगता। यहाँ यह भी बता दूँ कि अिन तहसीलोंमें वार्षिक ७५ अिंच तक बरसात होता है। साथ ही हर ५ या ७ मील पर बहुत अच्छी-अच्छी नदियाँ बहती हैं, जो हर साल करोड़ों गैलन ताजा पानी अरब सागरमें डालती हैं।

कुछ दिन पहले अेक सरकारी जाँच अफसरको मालूम हुआ कि पासके ही अेक गाँवमें कुल १२०० अेकड़ ज़मीनमें से केवल ३५० अेकड़ ज़मीनमें ही खेती होती थी, जब कि ८५१ अेकड़में केवल घास अुगी हुअी थी। ये घासकी ज़मीनें गाँवकी गोचर भूमि नहीं हैं — जहाँ गाँवके सब ढोर चर सकें। वे ज्यादातर अैसे साहूकारों या मालिकोंकी हैं, जो खुद खेती नहीं करते। वे घास कटवाते हैं, और अुसका तिनका-तिनका

गाँठोंमें बँधवा कर बंबअी आदिके तबेलोंके लिअे ले जाते हैं। सरकारी और दूसरी सार्वजनिक संस्थाओंके 'अधिक अन्न अुपजाओ' आन्दोलनके बावजूद भी ये ज़मींदार सफलतापूर्वक सचमुच ही हरे घासको सुखाकर संग्रहके लायक बनाते हैं, जब कि गाँवके लोग भूखों मरते हैं और अमेरिका व दूसरी जगहोंसे आयात किये हुअे बेकस (कम ताकत वाले) खाद्यान्नोंको खाकर जीते हैं। वे अपने किसानोंको अिन खेतोंमें अनाज नहीं अुगाने देते, यद्यपि अुससे भी ढोरोंके लिअे ज्यादा नहीं तो अुतना ही चारा तो अवश्य हो जाता है। क्योंकि तब अुन्हें अुस अुपजमें से किसानोंको हिस्सा देना पड़ेगा और फसल काटनेके समय चोरीको रोकनेके लिअे देखरेख रखनी पड़ेगी। हमारे देशमें करोड़ों अेकड़ ज़मीन अिसी रूपमें अनुपजाअू पड़ी है और वह अैसे मालिकोंके हाथमें है, जो 'न खाना, न खाने देना' की नीतिके अनुसार चलते हैं। अिन मालिकोंसे बेज़मीन किसानोंको आसान शर्तों पर खाद्यान्न, शाक-तरकारी आदि अुगानेके लिअे ज़मीन दिलवाअी जानी चाहिये और सरकार द्वारा सिंचाअीकी सहूलियतें दी जानी चाहियें। घास और तमाखूके अूँचे भावोंके कारण ही गुजरातके ज़िलोंके बहुतसे ज़मींदार सरकारकी आँख बचानेको ललचाते हैं। अिसी वजहसे अुन्होंने अनाज पैदा करनेके सरकारी प्रचारके बावजूद भी काफी प्रमाणमें अनाज अुगानेवाली ज़मीनको घास व तमाखू अुगानेवाले प्रदेशोंमें बदल डाला है। अिसे ज़रा भी देर किये बिना असरकारक ढंगसे रोकना चाहिये।

जब हमारे प्रांतमें अैसे घासवाले बड़े-बड़े प्रदेश हैं, तब भी बंबअी जैसे शहरोंके बीचों बीच दूधका अुत्पादन होता है और वह रुपये सेर या अुससे भी महँगा बिकता है। बंबअी, अहमदाबाद, पूना, शोलापुर, हुबली आदि सभी शहरोंके और अुनके आसपासके अुपनगरोंमें रहे हुअे सभी तबेलोंको हटा देना चाहिये, और अुनपर कानूनन रोक लगा दी जानी चाहिये। सिर्फ ग्राम्य प्रदेशों और कुदरती वातावरणमें ही ढोरोंको रखने और पालने देना चाहिये। वहाँ पर सरकारको चराने, तबेले रखने, अुधार रुपया देने और यातायातकी सुविधाअें देनी चाहियें। यह काम सरकार अैसे

कामोंको करनेवाले पिंजरापोल, गोशालायें वगैरा धार्मिक ट्रस्ट व संस्थाओंके सभी साधनोंको अेकत्र करके जनताकी मददसे कर सकती है।

३. किनारोंकी ज़मीनको खेतीके लायक बनाना

समुद्रके किनारेवाले सूरत, थाना और कोंकणके ज़िलोंमें हजारों अेकड़ खारी ज़मीन खाड़ियोंके किनारे पड़ी हुअी है। ये ज़मीनें धुल गअी हैं और अब अनुपजाअू हो गअी हैं, पर सरकारी प्रोत्साहन और मददसे बाँध बाँधनेके तरीके द्वारा खेतीके लायक बनाअी जा सकती हैं। अिनमें 'नमकीन धान' कहा जानेवाला हजारों टन मोटा धान पैदा होगा। मेरे खयालसे कुछ साल पहले सरकार द्वारा नियुक्त अेक खास अफसरने थाना जिलेका अिसी दृष्टिसे सर्वे किया था।

मुझे कुछ साल पहलेका अेक अुदाहरण याद है। थाना जिलेके अेक नमक बनानेवाले गाँवमें सारे बालिग मज़दूरों और मालिकोंके बीच झगड़ा पैदा हो गया। अिस जबरन बेकारीके दिनोंमें अुस गाँवके सभी बालिग लोग हिल-मिलकर अेक पुराने बाँधको फिरसे बाँधनेके रचनात्मक काममें जुट गये। अिस तरह बहुत बड़े प्रदेशको फिरसे खेतीके लायक बनानेमें अुन्होंने सफलता पाअी। यह प्रदेश खाड़ी द्वारा धुल चुका था और करीब अेक पीढ़ीसे अुस गाँवके लिअे खो-सा गया था। संगठन करने-वालोंको यह डर था कि कहीं कुछ आलसी हड़ताली दंगा-फसाद न करें। यह पहले दर्जेका रचनात्मक काम अुस डरके खिलाफ अेक गारण्टी साबित हुआ। दूसरे, यह काम सारे गाँवके लिअे सचमुच अेक वरदान साबित हुआ। क्योंकि अिससे हरअेक कुटुम्बको अेक स्थायी फायदा यह हुआ कि अुस गाँवमें सैकड़ों खांडी* 'नमकीन धान' हर साल ज्यादा पैदा होने लगा।

अितने बड़े प्रदेशोंको खेतीके लायक बनानेकी समस्या किसी खानगी संस्था या मंडलके बूतेसे बाहरकी बात हो सकती है, लेकिन अिस दिशामें राज्यकी ओरसे शुरुआत की जाने पर काफी काम हो सकता है।

---

* अेक खांडी = १० मन

४. शाक-भाजी अुगाना

हमारे लोगोंकी खुराक बहुत ज्यादा हलकी और संतुलन रहित है, क्योंकि अुसमें चिकने पदार्थ, प्रोटीन तथा दूसरे पोषक तत्त्व बहुत ही कम रहते हैं। अूपर बताअी हुअी घास अुगानेवाली ज़मीनोंमें अुम्दा ताजी तरकारियाँ बहुतायतसे हो सकती हैं। गरीब लोग कुछ मौसमोंमें ज्यादातर अिन तरकारियों पर निर्भर रह सकते हैं। अुदाहरणके तौरपर पंचमहालमें वे 'महुँअे' के फूलों पर या कोकणके कुछ हिस्सोंमें फणस पर निर्भर रहते हैं। आजकल ताजा शाक तो सिर्फ अच्छे वर्गोंके भोजनमें पाअी जानेवाली अैश-आरामकी वस्तु बन गया है। शाक अुगानेवाले अपनी सारी पैदावार कस्बों और शहरोंको भेज देते हैं, जहाँ वह ४ से लेकर १२ आने पौंड तक बिकती है। तब भी अुगानेवालेको तो मुश्किलसे १ या २ आने ही मिलते हैं, क्योंकि अुसका बहुत बड़ा हिस्सा तो रेलें और शहरी दलाल ही ले लेते हैं। कअी साल पहले मैंने अिस प्रान्तके अेक प्रसिद्ध बगीचेके मालिककी किताबोंसे कुछ आँकड़े 'हरिजन' में पेश किये थे। अुसकी बिक्रीसे होनेवाली आमदनी और खर्च परसे पता चलता था कि अुसे अपनी आमदनीका ८७½ प्रतिशत रेलों और दलालोंमें ही बाँट देना पड़ा था और अिससे वह सचमुच ही बरबाद हो गया था। केवल दो ही साल पहले वर्धाके पास बसी हुअी फौजी छावनियोंने ग्रामीण किसानोंको फौजियोंके लिअे बहुत बड़ी मात्रामें ताजी शाक-भाजी अुगानेके लिअे मजबूर किया। यकायक वे किसी दूरके मोर्चे पर भेज दिये गये और अिससे वह सारा ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक बरबादीमें डूब गया। मैंने खुद अपनी आँखोंसे यह देखा कि पूरे मौसम भर लुभावने गोभीके फूलोंकी गाड़ियोंकी गाड़ियाँ दो पैसे सेरके हिसाबसे बेची गअीं और बैलोंको मनों अैसे टमाटर खिलाये गये थे, जिनका मुकाबला आसानीसे अमेरिकन पत्रोंमें आनेवाले रंगीन विज्ञापनोंमें दिखाये गये टमाटरोंसे किया जा सकता था। कुछ ही दिन पहले मैं अपने पड़ोसके अेक व्यापारीसे मिला था, जो बहुत बड़ी मात्रामें ताजी

शाक-भाजी पैदा करता था। वह रोज हज़ारों पौंड ताजे शाक फौजी छावनियों और केम्पोंमें और बादमें बम्बअीकी सरकारी रेशनकी दुकानोंको देता था। लेकिन अब अुसे बहुत बड़ी मुसीबतका सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि नीतिके बदल जानेसे सरकारी खरीदी अेकाअेक बंद हो गअी; और अुसके साथ ही दूसरे ११ गाँववाले छोटे व्यापारी भी अैसी ही हालतमें हैं, जिन्हें अुसने शाक अुगानेको प्रोत्साहित किया था।

अिस तरहकी सारी अव्यवस्था बन्द हो जानी चाहिये और बुद्धिमानीपूर्वक योजना बनाअी जानी चाहिये, जिससे शाक अुगानेवालोंको अैसी आफतोंसे बचाया जा सके। अगर गाँववाले बड़े और दूरके शहरोंके लिअे शाक-भाजी अुगायें, तो अुन्हें रोकना चाहिये। लेकिन अपने जिलेकी स्थानीय ज़रूरतें पूरी करनेमें अुनकी मदद करना चाहिये। और चूँकि वे निश्चित और सीमित हिस्सोंके लिअे ही शाक-भाजी अुगानेका जिम्मा लेते हैं, दूधकी तरह अुनकी पैदावारके भी कमसे कम भाव नियत करके अुन्हें अुचित आमदनीका विश्वास दिलाना चाहिये।

५. गंदे पानीका अुपयोग

बंबअी, अहमदाबाद आदि बड़े शहरोंमें शाक-तरकारी अुगाने और शहरी तबेलोंके लिअे हरा चारा अुगानेके लिअे गंदे पानी और मैलेका अुपयोग करनेके बारेमें लाभदायक योजना बन सकती है। यदि शहरोंमें पीनेका पानी दूर-दूरके प्रदेशोंसे लाया जा सकता है, तो दूरके अुपनगरोंके बड़े-बड़े क्षेत्रोंको खाद देने व सींचनेके लिअे शहरी नालियोंको भी आसानीसे मोड़ा जा सकता है। यहाँ यह कहना अुपयोगी होगा कि अहमदाबाद म्युनिसिपेलिटी कअी सालोंसे अपनी नालियोंके कुछ पानीको अिसी तरीकेसे काममें ला रही है और अुससे अुसे काफी अच्छी आमदनी होती है। मेरे खयालसे दिल्ली, अिलाहाबाद, कराची और दूसरी जगहोंमें कमोबेश रूपमें यही किया जाता है।

स्वामी आनन्द

हरिजन, २-२-१९४७

९०

अुपयोगी सूचनाअें

[नीचेके हिस्से प्रो० कुमारप्पाके लेखमें से लिये गये हैं।
—मो० क० गांधी]

सहकारी संस्थाअें

सहकारी संस्थाअें न केवल ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे बल्कि ग्रामवासियोंमें सामूहिक प्रयत्नकी भावना पैदा करनेके लिअे भी आदर्श अुपयोगी संस्थाअें हैं। मल्टी-परपज़ विलेज सोसाअिटी अर्थात् अनेक कार्य करनेके लिअे बनाअी हुअी ग्राम-सहकारी संस्था कअी अुपयोगी कामोंको कअी तरीकोंसे कर सकती है, जैसे कि :—

१. अुद्योगोंके लिअे आवश्यक कच्चा माल और गाँववालोंकी ज़रूरतका अनाज संग्रह कर सकती है;

२. गाँवमें पैदा की हुअी चीज़ोंको बेचने और गाँववालोंकी ज़रूरतकी चीज़ें लाकर अुनमें बाँटनेका प्रबन्ध कर सकती है;

३. बीज, सुधरे हुअे औज़ार तथा हड्डी, मांस, मछली, खली और वनस्पति आदिकी खाद गाँववालोंको बाँट सकती है;

४. अुस प्रदेशके लिअे साँड़ रख सकती है;

५. टैक्स अिकट्ठा करने और चुकानेके लिअे गाँववालों और सरकारके बीच मध्यस्थ बन सकती है।

अनाजको अेक जगहसे दूसरी जगह लाने ले जाने व अुसे अुठाने-धरनेमें जो बहुतसा नुकसान होता है और खाद्य वस्तुओंको पहले अेक केन्द्रीय स्थान पर अिकट्ठा करने व वापस ग्रामवासियोंमें बाँटनेमें जो खर्च होता है, वह सब अेक सहकारी संस्थाके मारफत काम करनेसे बचाया जा सकता है। सरकार और जनता दोनोंकी दृष्टिसे सहकारी संस्था

अेक विश्वासपात्र साधन है। यदि अनाज गाँवोंमें सहकारी संस्थाओं द्वारा अिकट्ठा करके रखा जा सके, तो गाँवके नौकरोंके वेतनका कुछ भाग आसानीसे अनाजके रूपमें दिया जा सकता है। अिससे अनाजके रूपमें लगान वसूल करनेकी अेक वांछनीय पद्धतिको आसानीसे अमलमें लाया जा सकेगा।

खेती

फसलकी पैदावार पर निम्न दो बातोंको ध्यानमें रखते हुअे कुछ अंकुश रखना चाहिये: (१) हरअेक गाँवको कपास-तमाखू जैसी सिर्फ पैसे देनेवाली फसलोंके बदले अपनी ज़रूरतका अनाज और जीवनकी प्राथमिक ज़रूरतोंके लिअे अुपयोगी कच्चा माल अुपजानेकी कोशिश करनी चाहिये। (२) अुसे कारखानोंके लिअे अुपयोगी मालके बदले ग्रामोद्योगोंके लिअे अुपयोगी कच्चा माल पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अुदाहरणके तौर पर कारखानोंके लिअे ज़रूरी सख्त और मोटे छिलकेका गन्ना या लम्बे रेशेवाली कपास पैदा करनेके बदले गाँवके कोल्हूमें आसानीसे पीला जा सकने वाला नरम छिलकेका गन्ना और हाथसे काती जा सकनेवाली छोटे रेशेवाली कपास पैदा करनी चाहिये। बची हुअी ज़मीन आसपासके ज़िलोंके लिअे अनाजकी कमी पूरी करनेके अुपयोगमें लाअी जा सकती है। कारखानेके लिअे अुपयोगी गन्ना, तमाखू, सन और अैसी ही अन्य व्यापारिक फसलें बन्द कर देनी चाहियें या अुनको घटाकर कमसे कम कर देना चाहिये। किसान यह नीति अपनायें, अिसके लिअे अैसी व्यापारिक फसलोंपर भारी कर लगाना या अधिक लगान लेना चाहिये; और यह भी वे सरकारसे लाअिसेन्स लेकर ही कर सकें, अैसी व्यवस्था होनी चाहिये। अैसा करनेसे किसानोंमें व्यापारिक फसलोंको तरज़ीह देनेका अुत्साह नहीं रहेगा। कुल मिलाकर अैसा होना चाहिये कि खेतीसे पैदा होनेवाली चीज़ोंकी कीमतें औद्योगिक पैदावारकी कीमतोंके मुकाबले कुछ ज्यादा ही रहें।

व्यापारिक फसलें, जैसे तमाखू, सन, गन्ना, आदि दोहरी हानि-कारक हैं। वे मनुष्योंकी खाद्य सामग्री तो कम करती ही हैं, पशुओंके लिअे चारा भी पैदा नहीं होने देतीं, जो कि अन्नकी अच्छी फसलोंसे अपने आप पैदा हो जाता है।

कारखानोंके लिअे अुपयोगी गन्नेकी पैदावार घटनेसे गुड़की पैदावार कम होगी। अिस कमीकी पूर्ति खजूर या ताड़के पेड़ोंसे, जिनसे आजकल ताड़ी अुत्पन्न की जाती है और जो अूसर ज़मीनमें पैदा होते हैं या अपनी ज़रूरतके मुताबिक पैदा किये जा सकते हैं, गुड़ पैदा करके की जा सकती है। गन्नेकी खेतीके लिअे जो सबसे अच्छी ज़मीन काममें लाअी जाती है, अुसमें अनाज, फल व शाक-तरकारियाँ, जिनकी आज भारतको बहुत ज़रूरत है, पैदा किये जा सकते हैं।

सिंचाअी

हर गाँवके लिअे सिंचाअीकी व्यवस्था करने पर जितना ज़ोर दिया जाय कम है। खेतीकी अुन्नतिके लिअे यह अेक बुनियादी चीज़ है। अिसी पर खेतीकी अुन्नति निर्भर रहती है। अन्यथा खेती जुअेके खेलके समान है। कुअें खुदवाने, छोटे तालाबोंको बड़े बनवाने या मिट्टी निकाल कर साफ करने और नहरें खुदवानेके लिअे अेक आंदोलन शुरू करना चाहिये। आटे और चावलकी मिलोंमें काम आनेवाले अेंजिनोंको सरकार कुओं (Tube Wells) में से पानी खींचनेके लिअे ले सकती है। पानीकी ज़रूरी सहूलियतके बिना खाद भी अच्छी तरह नहीं दी जा सकती, क्योंकि पानीके अभावमें खाद नुकसान पहुँचाती है।

हरिजन, १२-५-१९४६

९१
खलिहानकी खाद

नीचेका अवतरण, जो अुसी मेमोरेन्डमसे* लिया गया है, र
खादके बजाय खलिहानकी खादकी श्रेष्ठता बताता है, खासकर ि
लोगोंके दो मुख्य अनाजों — गेहूँ और बाजरा — की खेतीके स

"अभीतक मेरी छानबीन गेहूँ और बाजरेके पोषक
कुछ खादोंके होनेवाले असरके प्रयोगात्मक अध्ययनसे अ
बढ़ी है। दुर्भाग्यसे वह बहुत कठिन है और कुल मिलाकर
काम अेक ही छानबीन करनेवालेकी सीमाओंसे सीमित ह
तब भी अभी तक आये हुअे नतीजे काफी दिलचस्प हैं
(मिलेट) के सम्बन्धमें — वह अनाज जो दक्षिण भारतमें अ
होता है — यह पाया गया है कि बरसोंसे खाद न दी
जिस ज़मीनमें वह बार-बार अुगाया जाता है, वहाँ जे
अुगता है अुसकी पोषक शक्ति अितनी कम होती है
अुसके अुपयोग करनेवालेको नुकसान पहुँचाता है। अैसा
कि अुस अनाजमें जहरीला असर आ जाता है। साथ ही
दिखाया जा चुका है कि जिस ज़मीनमें ढोरोंकी यानी ख
खाद दी जाती है, अुसमें अुगाये हुअे बाजरेमें जो पोष
और विटेमिन रहते हैं, वे अुसी ज़मीनमें पूर्ण रासायनिक
देकर अुगाये हुअे बाजरेके तत्त्वों और विटेमिनोंसे कहीं
अच्छे होते हैं। गेहूँके बारेमें यह पाया गया है कि
खलिहानकी खाद दी जानेवाली ज़मीनमें अुगाया जाता

---

* लेफ्टिनेण्ट कर्नल आर० मॅक् केरिसनके मेमोरेन्डम (१९२६) से, जि
गया है कि हिन्दुस्तानके आम लोगोंकी शारीरिक कमजोरी और बीमारी
अुनका पोषणहीन भोजन है।

अुसकी पोषक शक्ति अुस गेहूँकी शक्तिसे करीबन १७ प्रतिशत ज्यादा होती है, जो पूरी तरह रासायनिक खाद दी हुअी ज़मीनमें अुगाया जाता है। रासायनिक खादवाली ज़मीनमें अुगानेसे गेहूँमें पोषक तत्त्वोंकी जो कमियाँ रहती हैं, वे मुख्यतया विटेमिन अे के कम प्रमाणके कारण होती हैं। विटेमिन अे वह तत्त्व है, जो आदमी व अुसके पालतू जानवरोंकी छूतसे लगनेवाली बीमारियोंका मुकाबला करनेके लिअे बहुत ज़रूरी है।"

'अेक अुम्दा खुराक'

लेफ्टिनेण्ट कर्नल मॅक् केरिसन द्वारा दी गअी निम्न राय पाठकोंका ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रह सकती:

"चाहे जितना कमजोर हो, तो भी पूरा गेहूँ बहुत अुम्दा पोषक खुराक है; वह मछलीके तेल और मारमाअिटको मिलाकर खानेसे भी बेहतर है।"

सी० अेस०

हरिजन, ५-१०-१९३५

९२

ज़मीनकी खुराक बनाम अुत्तेजक दवाअियाँ

लोग मनुष्यकी खुराकके बारेमें खास खुराक और अुत्तेजक दवाअियोंका भेद जानते हैं। अक्सर बुनियादी खुराक बड़ी मात्रामें खाअी जाती है। अुसमें वे सारे तत्त्व सही या क़रीब-क़रीब सही प्रमाणमें मौजूद रहते हैं, जो मनुष्यके शरीरके लिअे ज़रूरी होते हैं। मिसालके तौर पर, दूधमें दूसरे कअी तत्त्वोंके साथ-साथ चरबी, प्रोटीन, केलशियम और विटामिन अे मौजूद रहते हैं। लेकिन अगर किसी शारीरिक बिगाड़के कारण बीमारको दूधमें रहनेवाले विटामिन अे से ज्यादाकी ज़रूरत हो, तो अिस ज़रूरतको पूरी करनेके लिअे अुसे शार्क

लिवर आअिल या काड लिवर आअिल जैसी प्राणियोंके कलेजेसे तैयार की हुअी चीज़ोंके रूपमें विटामिन अे दिया जाता है। अिसलिअे हम यह समझते हैं कि शक्ति बढ़ानेवाली मामूली खुराक और दवाअियोंमें फ़र्क़ होता है। दवाअियाँ किसी बीमारकी हालत और अुसकी ज़रूरतके मुताबिक़ थोड़ी मात्राओंमें दी जाती हैं। अेक बूढ़े आदमी और अधेड़ अुमरवालेको दी जानेवाली दवाअीकी खुराकमें फ़र्क़ हो सकता है, और अधेड़ अुमरवाले लोगोंको बच्चोंसे अलग खुराककी ज़रूरत होती है।

अिसके अलावा जब कोअी व्यक्ति रात-क्लबोंके नाच-गान या दूसरे राग-रंगमें डूब जानेके लिअे कुदरती ताक़तके बाहर जाना चाहते हैं, तो वे अुत्तेजक या कुछ समयके लिअे ज्यादा ताक़त पैदा करनेवाली दवाअियोंका अुपयोग करते हैं। अैसे लोग ज़रूरतसे ज्यादा ताक़तकी माँगको पूरी करनेके लिअे मारफिया और दूसरी अिसी तरहकी दवाअियोंके अिन्जेक्शन लेकर अपने शरीरको अुत्तेजित बनाते हैं। थोड़े समयके लिअे वे ताक़त, कूवत और जोशसे भरे दिखाअी देते हैं, लेकिन अेक अरसेके बाद वे अुत्तेजक दवाअियोंके बादके असरसे नुक़सान अुठाते हैं। अिसलिअे जो लोग अपनी नसों और पट्ठों पर ज़रूरतसे ज्यादा ज़ोर न डालकर साधारण जीवन बिताना चाहते हैं, वे मामूली खुराकसे पैदा होनेवाली ताक़त व कूवतका अच्छा अुपयोग करके संतोष मानेंगे।

सादी दवाअियाँ बीमारीकी हालतमें ही दी जाती हैं, और वे रोगीको फ़ायदा पहुँचाती हैं। लेकिन अुत्तेजित करनेवाली दवाअियोंसे शरीरको नुक़सान पहुँचता है, क्योंकि वे शरीर पर ज़रूरतसे ज्यादा ज़ोर डालती हैं और अुसे थका देती हैं। अिस तरह बुनियादी खुराक, दवाअियों और अुकसानेवाले पदार्थोंकी अपनी–अपनी जगह है और अुनमेंसे कोअी दूसरेकी जगह नहीं ले सकता। तन्दुरुस्त आदमीके लिअे खाना, बीमारके लिअे दवाअी और भोग-विलासमें या दूसरे कामोंमें डूबने-वालेके लिअे अुत्तेजक या नशीली चीज़ें।

अिसी तरह वनस्पति या पौदोंके जीवनमें भी ये तीन दरजे होते हैं। पौदोंको भी जानवरोंकी तरह खुराककी ज़रूरत होती है। यह खुराक वे हवासे और पानीके जरिये मिट्टीसे लेते हैं। अगर पौदोंकी मामूली खुराकमें किसी तरहकी कमी हो, तो वह कमी ठीक-ठीक निदान और नुसखेसे पूरी की जा सकती है। मनुष्योंकी तरह पौदोंको भी अुत्तेजक दवाअियाँ देकर अुकसाया जा सकता है। लेकिन अैसा करना गैर-कुदरती होगा। पौदोंको जिन नमकीन पदार्थोंकी ज़रूरत होती है, वे सब कुदरती तौर पर अुन्हें ज़मीनके अन्दरके बहुत छोटे कीटाणुओंके ज़रिये हज़म हो सकनेवाले रूपमें मिल जाते हैं। ये कीटाणु वनस्पति और दूसरे जीवोंसे पैदा हुअी चीज़ोंको अैसी शकलमें पेश करते हैं, जिन्हें पौदे आसानीसे पचा लेते हैं। आम तौरपर जानवर पौदोंसे खुराक लेते हैं और ताक़त व विकासके लिअे अुसके ज़रूरी हिस्सेको पचानेके बाद बाकी ज़मीनको वापस दे देते हैं। और ये छोटे-छोटे कीटाणु अैसी चीज़को ज़मीनके अन्दर पौदोंकी खुराकके रूपमें बदल देते हैं। कुदरतमें यही चक्र हमेशा चलता रहता है। कुदरतके अिस प्रबन्धमें मनुष्यकी दस्तन्दाज़ीको किसी खास हालतमें ही ठीक माना जा सकता है।

सारे पौदोंकी कुदरती बुनियादी खुराक फार्मोंमें तैयार की हुअी गोबरकी खाद और दूसरी वनस्पति और जीवोंसे पैदा हुअी चीज़ें होती हैं। अिस तरहकी खादमें 'ऑक्ज़िन' नामके तत्त्व होते हैं। ये जानवरोंको आसानीसे खुराक पचानेमें अुसी तरह मदद करते हैं, जिस तरह मनुष्यकी खुराकके विटामिन 'बायो-केमिकल' प्रक्रियामें मदद पहुँचाते हैं। जैसे मनुष्यके लिअे विटामिन लाज़िमी हैं, अुसी तरह पौदोंके लिअे 'ऑक्ज़िन' नामके तत्त्व बहुत ज़रूरी हैं। अुनके बिना पौदे टिक नहीं सकते। फार्मोंकी खाद और दूसरे जैव पदार्थोंमें 'ऑक्ज़िन' खूब होते हैं।

बाढ़में कुछ खास क्षारोंके धुल जानेके कारण ज़मीनमें जब क्षार कम हो जाते हैं, तो रासायनिक पदार्थोंके ज़रिये अुस कमीको पूरा करना ज़रूरी हो जाता है। लेकिन यह काम मनुष्यको दवाअी देने जैसा ही

। जिस तरह अेक होशियार डॉक्टर सावधानीसे बीम
और रोगीकी हालतके मुताबिक नुसखा बना कर ही रोगी
अुसी तरह ज़मीनकी सावधानीसे छानबीन करने औ
जानेवाले पौदोंकी ज़रूरतोंको समझनेके बाद ही ज़मीनमं
दी जानी चाहिये । ज़मीनकी परख करनेवाले किसी यो
नुसखेके बिना रासायनिक खादोंका मनमाना अुपयोग
आदमीके बीमारको दवाअी देने जैसा ही बेवकूफ़ीका
अिसकी तरह अुसका नतीजा भी बुरा ही होगा । ि
खाद पौदोंकी खुराक नहीं, बल्कि ज़मीनके रोगोंकी दव

जिस तरह मनुष्यके शरीरकी कुदरती ताक़तको
अुत्तेजक दवाअियोंके ज़रिये बढ़ाया जा सकता है, अु
औषधियोंके अुपयोगसे पौदोंकी बाढ़ और पैदावार भी
है, हालाँकि आखिरमें अिससे नुक़सान ही होता है ।
यह असर पैदा कर सकती है, लेकिन यह नुक़सानदेह,
बग़ैर दूरन्देशीका काम है ।

अगर मनुष्यको खुराक देनेवाली फ़सलोंको हमा
पूरी करनी हों, तो हमें खुराक देनेवाले पौदे भी स्वस्थ
पूरी खुराक पानेवाले होने चाहियें । पौदोंको दी जानेवा
खाद या बनावटी खुराक कुदरती तौर पर हमारी खुराक
क्योंकि हमारे देशमें हम ज्यादातर पौदों या वनस्पतिये
लिअे निर्भर करते हैं । अिसलिअे यह ज़रूरी हो जात
पौदोंको दी जानेवाली खुराक, दवाअियों और अुत्तेज
रखें । अगर किसी भी समय अुन्हें गलत डोज़ दिया
हमारी तन्दुरुस्तीपर अुसका बुरा असर पड़ेगा ।

न्यूज़ीलैण्ड अपनी ज्यादातर खुराकी फसलें अैसी
है, जिसमें रासायनिक खाद दी जाती है । और यह
न्यूज़ीलैण्डके लोग ज़ुकाम, अिन्फ्लुअेन्ज़ा, टॉन्सिल अ

शिकार होते हैं। अिसलिअे न्यूज़ीलैण्डकी 'फिज़ीकल अेण्ड मेण्टल वेल्फेअर सोसायटी' के डॉक्टर चेपमैनने माअुण्ट अेल्बर्ट ग्रामर स्कूलके होस्टलमें कुछ प्रयोग किये और ६० लड़कों, मास्टरों और दूसरे काम करनेवालोंको 'रासायनिक खादोंसे पैदा होनेवाले' फलों, सलाद और शाक-भाजियोंके बजाय गोबरकी खादसे पैदा हुअी चीज़ें खिलाअीं। अुन्होंने कहा है — "खुराककी अिस तब्दीलीसे लोग काफ़ी तगड़े हो गये हैं और कअी आम दर्दोंसे अुन्हें छुटकारा मिल गया है। अुनके दाँतोंकी हालत भी बहुत सुधर गअी है।" यह बात ध्यान देने लायक है कि पिछली लड़ाअीमें जब सेनामें भरती करनेके लिअे न्यूज़ीलैण्डके नौजवानोंकी जाँच की गअी, तो अुनमेंसे ४० फ़ीसदी लोगोंको दाँतके रोगोंके कारण अयोग्य ठहरा दिया गया। अूपरका प्रयोग हमें अिस बातकी चेतावनी देता है कि अगर हमें हिन्दुस्तानके लोगोंको पूरी तरह तन्दुरुस्त बनाना है, तो हमें बनावटी खादोंसे सावधान रहना चाहिये। यह सिर्फ़ अपनी खुराकके खातिर ही हमें करना चाहिये।

ज़मीनकी ज़रूरतोंको ध्यानमें रखकर अिस पर विचार करनेसे पता चलेगा कि रासायनिक या बनावटी खाद ज़मीनमें रहनेवाले क्षारको बढ़ाती हैं। बंगाल और बिहारके कुछ हिस्से अिससे नुकसान अुठा चुके हैं। खादको पुरअसर बनानेके लिअे यह ज़रूरी है कि ज़मीनको अुचित गहराअी तक खोदनेके बाद वहाँ अुसे फैलाया जाय। ज़मीनकी अूपरी सतह पर अुसे बिखेर देनेसे काम नहीं चलेगा। कुछ गहराअीमें खाद देनेका मतलब यह है कि ज़मीनको गहरा हला जाय और अुसमें काफ़ी सिंचाअी की जाय। हमारे देशकी ज्यादातर ज़मीनको बरसाती हवाकी लहर पर निर्भर रहना पड़ता है। अिसलिअे अुसको गहराअी तक हल्ना और अुसमें क़ीमती खाद डाल्ना जुआ खेल्ने जैसा काम होगा; क्योंकि यह तो हमें कभी भी देखनेको मिल सकता है कि पूरे मौसम भर बरसात नहीं हुअी। हमारे किसानोंकी आर्थिक स्थिति अितनी अच्छी नहीं है कि वे अिस तरहके खतरे मोल ले सकें।

जैसा कि हम पहलेसे ही बता चुके हैं, किसी ज़मीनमें बनावटी खाद देनेसे पहले अुसकी मिट्टीकी पूरी तरह जाँच करके अुसकी ज़रूरतोंको जान लेना चाहिये। अिसके लिअे अैसे अनुभवी, तालीम पाये हुअे और होशियार 'ज़मीनके डॉक्टरों' की ज़रूरत है, जो मिट्टीकी खराबियाँ और अुन्हें सुधारनेके तरीक़े जानते हों। जब तक हमें अैसे लोग अितनी तादादमें नहीं मिल जाते कि अुन्हें हर अेक खेतीके लायक़ ज़मीनकी देखरेख पर रखा जा सके, तब तक किसानोंके हाथमें बनावटी खाद देना निरा पागलपन होगा। यह तो अेक अैसी बात होगी कि नासमझ बीमारोंके हाथमें मारफिया और अफ़ीम जैसे ज़हर दे दिये जायँ और अुन्हें यह न बताया जाय कि वे किस तरह और कितनी मात्रामें अुनका अुपयोग करें। अिसलिअे, अगर हम ज़मीनके लिअे बनावटी खादका दवाअीकी तरह अुपयोग करना भी चाहें, तो अुससे पहले यह निहायत ज़रूरी है कि हम अिस कामके लिअे बड़ी तादादमें 'ज़मीनके डॉक्टरों' को तैयार करें। हमारे देशमें मनुष्योंके अिलाजके लिअे ही काफ़ी तादादमें डॉक्टर नहीं मिलते, तब फिर ज़मीनकी बीमारियोंको जाननेवाले अितने डॉक्टर हमें कहाँसे मिल सकते हैं?

अिन सच्चाअियोंको नज़रमें रखकर हमें अफ़सोसके साथ कहना पड़ता है कि गलत सलाह पाअी हुअी हमारी केन्द्रीय सरकार बनावटी खादकी फैक्टरियोंको फैलाने और अुन्हें बढ़ावा देनेका काम ज़ोरोंसे कर रही है। बिहारके सिन्द्री नामक स्थानमें बनावटी खादकी फैक्टरियोंकी योजना अमलमें लाअी जा रही है, जिनमें क़रीब १२ करोड़की क़ीमतकी विदेशी मशीनें लगेंगी और क़रीब १० करोड़ रुपया मकानों और दूसरी ज़रूरी चीज़ों पर खर्च होगा। हम अुम्मीद करते हैं कि बेहतर सलाह मानकर सरकार अिन आत्म-घाती योजनाओंको छोड़ देगी और ज्यादा फ़ायदेमन्द दिशाओंमें खोज-बीन करावेगी, जिससे आज फ़िज़ूल बरबाद होनेवाले अैसे रासायनिक पदार्थ काफ़ी मात्रामें मिल सकें, जिनकी खाद हमारे खेतोंके लिअे अुपयोगी साबित हो। यही अेक तरीका है जिससे हमें तन्दुरुस्ती

बढ़ानेवाला भोजन मिल सकेगा और हम अुन बेरहम शोषकोंसे बच सकेंगे, जिन्होंने जनताको होनेवाले नुक़सानकी कोअी परवाह किये बिना धन अिकट्ठा करनेको ही अपनी ज़िन्दगीका अेकमात्र ध्येय बना लिया है।

जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक, २-३-१९४७

९३

ज्यादा पैदावार, कम पोषण

[दिसंबर १९४६ के 'वेजिटेरियन मेसेंजर' में अेक संपादकीय टिप्पणी छपी हुअी है, जिसका सार नीचे दिया जाता है। —**बा० गो० दे०**]

न्यूज़ीलैंडकी स्पिनज (पालक)को लेकर मिसूरीके खेती-विभागने यह जाननेके लिअे कुछ प्रयोग किये हैं कि अुसमें पोषक गुण कितना होता है और ज्यादा पैदावार व पोषक गुणके बीच क्या सम्बन्ध है। मामूली स्पिनजमें आक्ज़ैलिक अेसिड बहुत होता है, अिसलिअे अुसमें मौजूद केलशियमका फ़ायदा नहीं मिलता। छानबीनके नतीजोंसे मालूम हुआ है कि न्यूज़ीलैंडकी १०० ग्राम ताज़ा स्पिनजमें २१ से ३० मिलिग्राम, मामूलीमें ४० से १०० मिलिग्राम और गाँठगोभी, फूलगोभी व शलजममें ७५ से २०० मिलिग्राम तक विटामिन 'सी' होता है। सब्ज़ीके हरेपनसे अैसा कोअी ठीक पैमाना मालूम नहीं होता, जिसके मुताबिक़ अुसके विटामिन या धातु-द्रव्योंका अन्दाज़ लगाया जा सके।

जाँचसे मालूम हुआ है कि जब नाअिट्रोजन मिली हुअी दवाओंसे न्यूज़ीलैंडमें स्पिनजकी पैदावार बढ़ाअी गअी, तो अुसमें विटामिन 'सी' कम हो गया। अिसपर आस्ट्रेलियाके अेक डॉक्टरी पत्रने लिखा था— "ज्यादा पैदावारके लिअे लगातार की जानेवाली खोज पोषक तत्त्वोंके खयालसे नुक़सानदेह साबित हो सकती है।" अिस देशमें अिस नतीजेको

साबित करनेके लिअे शायद अभी काफ़ी मसाला अिकट्ठा नहीं हुआ है। फिर भी अितना तय है कि जहाँ सब्ज़ियोंकी खेतीमें बहुत ज्यादा दवाअियोंकी खाद काममें लाअी गअी है, वहाँ सब्ज़ीकी मात्रा तो बढ़ी है, मगर अुसकी लज़्ज़त बहुत खराब हो गअी है। मौसमके शुरूमें ग़ैर-कुदरती कोशिश करके जल्दी पैदा की हुअी सब्ज़ियाँ भी वैसी ही बेलज़्ज़त होती हैं। हम अुनकी कुदरती बढ़तीमें अेक हदसे ज्यादा जितनी दस्तंदाज़ी करेंगे, अुतना हमें अुनसे कम पोषण मिलेगा। अिसी तरह खानेकी दूसरी चीज़ोंमें भी होगा।

हरिजनसेवक, २३-३-१९४७

९४

अन्न संकट और जमीनका अुपजाअूपन

आजका अन्न संकट हिन्दुस्तानकी ज़मीनके कम अुपजाअूपनके कारण नहीं है। अिस अनाजकी तंगीके बहुतसे कारण हैं। लेकिन सरकार ज़मीनको खाद देकर अुसकी पैदावारको बढ़ानेके क़दम अुठा कर देशको सचमुच अिस संकटसे बचा सकती थी। दुःख है कि वह अैसा करनेमें असफल रही। अब वह समय आ गया है, जब राष्ट्रीय सरकारको अनाजकी पैदावार बढ़ानेके प्रयत्नमें लग जाना चाहिये। अगर हिन्दुस्तान ज्यादा धान, गेहूँ, जवार, बाजरा वगैरा अनाज, जो कि हिन्दुस्तानकी जनताके भोजनका मुख्य अंग है, पैदा कर सके, तो अकाल या अन्न संकटका डर बहुत कम हो जायगा। चावल पर निर्भर करनेवाले देशके बहुतसे हिस्सोंको बर्मा, श्याम और दूसरे देशोंके चावलसे हमेशा बहुत बड़ी मदद मिलती रही है। त्रावणकोर राज्यमें हर साल ३,६७,००० टन चावल बाहरसे मँगाया जाता है और अुसकी सालाना पैदावार २,५०,००० टन है। बंगाल और मद्रासको भी बहुत कुछ बाहरके चावल पर निर्भर करना

पड़ता है। अिसलिअे यहाँ अैसे अनाजोंकी पैदावार बढ़ानेकी काफी गुंजाअिश है, जो नाअिट्रोजन मिले पदार्थोंकी मददसे अच्छी मात्रामें पैदा किये जा सकते हों।

यह सवाल बार-बार पूछा गया है कि क्या हिन्दुस्तानकी ज़मीनका अुपजाअूपन बिलकुल खतम हो गया है? लेकिन अभी तक अिसका सन्तोषप्रद अुत्तर नहीं दिया गया है। डॉ० वोल्करने अपनी पुस्तक 'अिम्प्रूवमेण्ट ऑफ अिंडियन अेग्रिकल्चर' में रॉथेमस्टेड (अिंग्लैण्ड) के नतीजोंके नीचे लिखे आँकड़े दिये हैं, जहाँ लगातार ५० सालसे खाद न दी हुअी ज़मीनमें गेहूँ पैदा किया जाता रहा है:

	प्रति अेकड़ गेहूँ पैदा हुआ
८ साल (१८४४–५१)	१७ बुशल
२० साल (१८५२–७१)	१३·९ ,,
२० साल (१८७२–९१)	११·१ ,, (१ बुशल = ३० सेर)

ये नतीजे बताते हैं कि रॉथेमस्टेडमें बिना खादवाले खेतोंकी पैदावार बहुत धीरे धीरे घट रही है। डॉ० वोल्करने अन्तमें कहा है कि आज हिन्दुस्तानमें जिन हालतोंमें खेती की जाती है, अुससे देशकी ज़मीन धीरे-धीरे ज़रूर कम अुपजाअू हो जायगी।

दूसरी तरफ हॉवर्ड और वॉडने अपनी पुस्तक 'वेस्ट प्रॉडक्ट्स ऑफ अेग्रिकल्चर' में यह लिखा है:

"बिना खाद दिये की जानेवाली खेतीका अच्छा अुदाहरण यू० पी० (हिन्दुस्तान) की कछारी ज़मीनोंमें देखनेको मिलता है। वहाँके खेतोंका १० सदीका रेकार्ड यह साबित करता है कि ज़मीन हर साल अच्छी फसलें देती है और अुसके अुपजाअूपनमें कमी नहीं आती। ज़मीनमें पैदा होनेवाली फसलोंकी खाद सम्बन्धी ज़रूरतों और अुपजाअूपनकी कमीको पूरी करनेवाली कुदरती प्रक्रियाओंके बीच वहाँ पूरा सन्तुलन हो गया है।"

जी० क्लार्क (यू० पी० के भूतपूर्व खेतीके डायरेक्टर) ने अिंडियन सायन्स कांग्रेसके कृषि-विभागके सामने दिये हुअे अपने सभापति पदके भाषणमें नीचेकी बात कही है:

"जब हम हकीकतोंकी जाँच करते हैं, तो जहाँ तक अुपजाअूपनके शक्तिशाली तत्त्व — नाअिट्रोजन — से लाभ अुठानेका सम्बन्ध है, हमें अुत्तरी हिन्दुस्तानके किसानको दुनियाका सबसे ज्यादा किफायतशारी वाला और सावधान किसान कहना चाहिये। अिस सम्बन्धमें वह कनाडाके किसानसे ज्यादा होशियार है। वह रासायनिक खादोंके जरिये ज़मीनमें बहुत ज्यादा नाअिट्रोजन नहीं दे सकता। कुदरत हर साल जो कुछ पौंड नाअिट्रोजन ज़मीनको देती है, अुसीका फायदा अुठाकर वह यू० पी० की सिंचाअीकी ज़मीनमें गेहूँकी फसल पैदा करता है, जिसका औसत कनाडाके औसतसे बहुत कम नहीं होता। वह थोड़ेसे नाअिट्रोजनसे जितना लाभ अुठाता है, अुतना शायद ही कहींका किसान अुठाता हो। हमें यू० पी० की ज़मीनके बारेमें यह चिन्ता नहीं रखनी चाहिये कि अुसका अुपजाअूपन घट जायगा। अुसका आजका अुपजाअूपन अनिश्चित समयके लिअे क़ायम रखा जा सकता है।... हिन्दुस्तानमें हम जो फसलें पैदा करते हैं, अुनके लिअे ज़रूरी नाअिट्रोजनमें और ज़मीनके अुपजाअूपनको क़ायम रखनेकी कुदरती प्रक्रियामें पूरा सन्तुलन है।"

सब कोअी जानते हैं कि किसी भी फसलको काटते समय अुसका आधा हिस्सा यानी नीचेके डंठल और जड़ें ज़मीनमें ही रह जाती हैं, जो मिट्टीको 'सेल्युलोस' (पौधोंकी बढ़तीके लिअे ज़रूरी पदार्थ) और कार्बनवाले पदार्थ देते हैं। हमारे प्रयोग यह बतलाते हैं कि जब 'सेल्युलोस' वाले और दूसरे शक्ति देनेवाले पदार्थ ज़मीनमें मिलाये जाते हैं, तो अुसमें नाअिट्रोजनकी मात्रा काफी बढ़ती है। अिससे हम यह नतीजा निकाल सकते हैं कि 'सेल्युलोस' वाले और दूसरे जैव पदार्थोंके

ऑक्सीकरण (oxidation) से ज़मीनकी सतह पर जो नाअिट्रोजन जमता है, वह पौधोंकी ज़रूरत पूरी करता है। अुष्ण कटिबन्ध वाले देशोंमें फसलोंके लिअे ज़रूरी नाअिट्रोजनकी पूर्ति अुस नाअिट्रोजनसे हो सकती है, जो फसल काटनेके बाद खेतमें रही हुअी 'सेल्युलोस' वाली चीज़ोंके ऑक्सीकरणसे छोड़ी हुअी शक्तिके कारण हवामें से मिलता है। अिसके अलावा, अुष्ण कटिबन्धके देशोंमें बरसातके पानीसे जो नाअिट्रोजन मिलता है, वह समशीतोष्ण देशोंमें मिलनेवाले नाअिट्रोजनसे बहुत ज्यादा होता है। ठण्डे देशोंमें, खासकर ज़मीनके नीचे तापमान और धूपकी कमीके कारण पैदा हुअी नाअिट्रोजन जीवाणुओंकी अक्रियताकी वजहसे ज़मीनमें मिलाये जानेवाले पौधोंके बचे हुअे भागों, 'सेल्युलोस' वाले और दूसरे शक्तिवाले पदार्थोंका आक्सीकरण अुतनी जल्दी नहीं होता, जितना कि अुष्ण कटिबन्ध वाले देशोंकी ज़मीनमें होता है। अिसलिअे समशीतोष्ण देशोंकी ज़मीनमें बहुत ज्यादा नाअिट्रोजन संयोजन नहीं हो सकता। अिससे यह समझमें आ जाता है कि अूपर रॉथेमस्टेडके जिन खाद न दिये जानेवाले खेतोंका जिक्र किया गया है, अुनकी पैदावार धीरे-धीरे क्यों घटती है। अूपरकी बातोंसे यह मालूम होता है कि अुष्ण कटिबन्धके देशोंमें फसल कटनेके बाद ज़मीनमें छोड़े या जोड़े हुअे पौधोंके डंठलों और जड़ोंके ऑक्सीकरणसे पैदा होनेवाली शक्तिके कारण हवामें पाया जानेवाला नाअिट्रोजन ज़मीनको मिलते रहनेके कारण वहाँके खेतोंमें लगातार अेकसी फसल आना संभव है। अलबत्ता, बिना खादवाले खेतोंमें वह पैदावार अूँची नहीं रहती। अुष्ण कटिबन्धकी ज़मीनमें अिस तरह जो नाअिट्रोजन मिलता है, वह आम तौर पर कुल नाअिट्रोजनके १० फी सदीसे ज्यादा होता है, जब कि समशीतोष्ण आबहवा वाले देशोंमें अिस तरह मिलनेवाले नाअिट्रोजनकी मात्रा कुल नाअिट्रोजनके १ से २ फी सदीके बीच होती है। अिसलिअे यह साफ है कि अुष्ण कटिबन्धकी ज़मीनोंमें पौधोंके विकासके लिअे मिलनेवाले अेमोनियम और नाअिट्रेट आयन (ion) की मात्रा ठंढे देशोंसे कहीं बड़ी

होती है, हालाँकि ठंडे देशोंका कुल नाअिट्रोजन अुष्ण कटिबन्धके देशोंके कुल नाअिट्रोजनसे दुगुना या तिगुना हो सकता है।

खाद देनेका नया और पुराना तरीका

खाद दो तरहसे दी जा सकती है: अेक, नाअिट्रेट, अेमोनियम सल्फेट वग़ैरा जैसे काफ़ी नाअिट्रोजन वाले पदार्थ खेतमें डालकर; दूसरे, कार्बनवाले पदार्थ जोड़कर, जो हवामें मिलनेवाले नाअिट्रोजनके संयोजनमें मदद कर सकते हैं। ज़मीनके अुपजाअूपनका कारण अेमोनिया और नाअिट्रेटके रूपमें मिलनेवाला नाअिट्रोजन है। और अिस नाअिट्रोजनकी मात्राको बढ़ाकर ही ज़मीनका अुपजाअूपन बढ़ाया जा सकता है।

जहाँ तक अजैव (inorganic) खादोंका सम्बन्ध है, अेमोनियम सल्फेट, अेमोनियम नाअिट्रेट वग़ैरा जैसी रासायनिक खादें, जो संभवतः भारतमें बनाअी जायँगी, न तो स्थायी रूपसे ज़मीनको समृद्ध बनाती हैं और न अुसका अुपजाअूपन बढ़ाती हैं। अिनमें से ज़्यादातर खाद नाअिट्रोजन गैसके रूपमें नष्ट हो जाती हैं और ज़मीनको कोअी नाअिट्रोजन नहीं देतीं। अिसलिअे जिन ज़मीनोंमें अैसी खाद दी जाती है, अुनकी पैदावार कुछ समयके लिअे चाहे बढ़ जाय, लेकिन आम तौर पर वे बिगड़ जाती हैं और संभवतः अुनके नाअिट्रोजनकी मात्रा घट जाती है। दूसरी तरफ़, गोबर, खलिहानोंमें तैयार की हुअी खाद, राब वग़ैरा जैसी जैव (organic) खाद न सिर्फ़ खेतोंके नाअिट्रोजनको बढ़ाती है, बल्कि हवामें मिलनेवाले नाअिट्रोजनके संयोजनसे ज़मीन भी समृद्ध बनती है। गोबर या राबकी कीमत अुसकी नाअिट्रोजन संयोजनकी शक्ति पर निर्भर करती है। रॉथेमस्टेडमें रासायनिक खादोंका कोअी भी मिश्रण सालाना फ़सलको अेकसी बनाये रखनेमें खलिहानकी खाद जैसा असरकारक साबित नहीं हुआ। और जब लगातार ६० बरस तक खलिहानकी खाद दी गअी, तो ज़मीनका नाअिट्रोजन पहलेसे करीब तीन गुना बढ़ गया। लेकिन अेमोनियम सल्फेट और सोडा नाअिट्रेटसे ज़मीनका नाअिट्रोजन धीरे-धीरे घटने लगा। अिसी

तरह जब अिलाहाबादमें रासायनिक खादोंकी जगह गोबर, राब, पौधोंके पत्तों वगैरा जैसी सजीव खाद दी गअी, तो ज्यादा अच्छे नतीजे आये। जब ज़मीनमें सजीव खाद डाली जाती है, तो धूप ज़मीनका नाअिट्रोजन बढ़ानेमें मददगार साबित होती है। अिलाहाबादके प्रयोगोंसे यह बात सिद्ध हो चुकी है कि नाअिट्रोजन संयोजनकी प्रक्रिया बगैर जीवाणुओं (bacteria) के भी हो सकती है; और वह जीवाणुओंके पूर्ण अभावमें भी तुरन्त हो सकती है, अलबत्ता अुसका वेग कम रहेगा।

सजीव खादोंके समर्थनमें डॉ० जी० रुशमन कहते हैं:

"आजके सारे वैज्ञानिक और व्यावहारिक प्रयत्नोंका ध्येय ज़मीनका अुपजाअूपन बढ़ाना है, लेकिन वह रासायनिक खादोंसे नहीं बढ़ाया जा सकता। अिनके कारणसे ज़मीनका ह्यूमस ज्यादा तेजीसे नष्ट होता है; अिसलिअे वे दरअसल नुकसानदेह हैं। ज़मीनके गुण बढ़ाकर पैदावार बढ़ाना और अुसमें पौधोंकी खुराक डालकर ज्यादा पैदावार लेना, दोनों अलग चीज़ें हैं। अक्सर अिन दोनोंको गलतीसे अेक समझ लिया जाता है। दूसरा काम रासायनिक खादोंकी मददसे किया जा सकता है, जो तुरंत काम करती हैं। दूसरी तरफ, ज़मीनको अच्छी बनानेमें लम्बा समय लगता है। खास तौर पर खनिजोंसे भरी ज़मीनमें ज़रूरी ह्यूमस पैदा करनेके बनिस्बत ह्यूमससे समृद्ध ज़मीनके अुपजाअूपनको टिकाये रखना ज्यादा आसान है। . . . प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सारे पौधा-जगत और प्राणी-जगतका जीवन ज़मीनके ह्यूमससे ही संभव होता है। अिसलिअे आज जो जैव पदार्थ बरबाद किये जाते हैं, अुनका ज़मीनका ह्यूमस बढ़ानेमें व्यवस्थित रूपसे अुपयोग करना चाहिये। मनुष्य और पशु-जगतके बेकार समझकर फेंके हुअे चर्बीवाले या नाअिट्रोजनवाले अवशिष्ट पदार्थोंकी तरफ ज्यादासे ज्यादा ध्यान देना चाहिये।"

हिन्दुस्तान जैसे गरीब और गरम देशके लिअे तो खलिहानकी खाद (गोबर) या राब, पत्ते, पौधोंके बचे हुअे हिस्से वगैरा जैसे कार्बनके मिश्रणोंसे समृद्ध पदार्थ ही सबसे अच्छी खाद हो सकते हैं। जब ये चीज़ें बड़ी मात्रामें न मिलें, तो अुन्हें हिन्दुस्तानमें तैयार किये गये अेमोनियम सल्फेट, अेमोनियम नाअिट्रेट या यूरिया (स्तनपायी प्राणियोंके पेशाबमें पाया जानेवाला यौगिक पदार्थ) के साथ मिलाया जा सकता है। विदेशोंसे रासायनिक खाद खरीदना महँगा पड़ेगा और देशके गरीब किसान अिस स्थितिमें नहीं हैं कि वह खाद खरीद सकें।

गोबर जलाना गुनाह है

जैसा कि अूपर समझाया गया है, ज़मीनके गुण बढ़ाने और अुसकी पैदावार अेकसी बनाये रखनेके लिअे गोबर या खलिहानकी खाद निश्चित रूपसे सबसे अच्छी है। अगर अुसका ठीकसे अुपयोग किया जाय, तो वह हिन्दुस्तानके गरीब किसानके लिअे सचमुच वरदान साबित हो सकती है, क्योंकि अुससे कम पैसेमें काफी अच्छी मात्रामें अेकसी फसल मिल सकती है। यह बड़े दुःखकी बात है कि गोबरकी खाद सबसे सस्ती और फायदेमन्द होते हुअे भी भारतीय किसान अुसे जला डालता है। वह नहीं जानता कि अैसा करके वह अपना पैसा ही जला रहा है। लेकिन यह सवाल पैदा होता है कि वह अींधनके रूपमें गोबरके सिवा और क्या जलाये? दुर्भाग्यसे गोबर ही अुसे सस्ता अींधन मिल सकता है। पहलेकी सरकारने अिस महत्त्वपूर्ण समस्याकी सर्वथा अुपेक्षा की है और आजकी सरकारके पास अिसकी कोअी योजना नहीं है। राष्ट्रीय सरकारको, जो हिन्दुस्तानकी खेतीको सुधारनेके लिअे बीसों योजनायें हाथमें लेना चाहती है, कोअी दूसरा अींधन प्राप्त करके और गोबरको खादके ही लिअे रखकर भारतीय किसानकी हालत सुधारनेके लिअे कोअी कदम अुठाना चाहिये। वृक्षारोपणको बढ़ावा देना अिस दिशामें अुपयोगी हो सकता है, या जहाँ संभव हो वहाँ कोयला जलानेके लिअे दिया जा सकता है।

यह सुझाया गया है कि खेतोंमें डालनेके लिअे कम्पोस्ट (मिश्र खाद) तैयार करनेसे बड़ा फायदा होगा। लेकिन सारी दुनियाके किसानोंका यह अनुभव है कि कम्पोस्ट बनानेका तरीका सख्त मेहनतवाला और थकानेवाला होता है। अिसलिअे वे अुसे बनानेमें सच्चा अुत्साह नहीं दिखाते। खेतोंकी मिट्टीमें हरे और सूखे पत्ते, कागज, घास, कूड़ा-करकट वगैरा डालकर नाअिट्रोजन संयोजनके प्रयोग करनेसे हमारी यह राय बनी है कि कम्पोस्ट बनानेके पहले ही पौधोंके बचे हुअे भागोंको खेतोंमें खादके रूपमें डालना ज्यादा फायदेमन्द है। जब ये बचे हुअे हिस्से खेतोंमें डाले जाते हैं और बरसातके पहले हलसे मिट्टीमें मिला दिये जाते हैं, तो तीन महीनेके भीतर वे काफी सड़ जाते हैं और नाअिट्रोजन संयोजनके लिअे ज़रूरी शक्ति छोड़नेके साथ ही साथ अिन चीज़ोंके कार्बनका ज़मीनकी सतह पर ऑक्सीकरण भी हो जाता है। अिसलिअे पौधोंके बचे हुअे हिस्से (डंठल, जड़ें वगैरा) जब सीधे ज़मीनमें मिलाये जाते हैं, तो वे न सिर्फ अपनेमें रहा हुआ नाअिट्रोजन, पोटाश वगैरा ही देते हैं, बल्कि ज़मीनकी सतह पर काफी मात्रामें नाअिट्रोजन संयोजन करके अुसे समृद्ध भी बना सकते हैं। अगर पौधोंके बचे हुअे ये भाग ज़रूरतसे बहुत ज्यादा न हों, तो वे मिट्टीमें मिलानेके तीन महीनेके अन्दर ही काफी सड़ जाते हैं और अुनका ऑक्सीकरण हो जाता है; और मिट्टीके कार्बन-नाअिट्रोजनका अनुपात सामान्य हो जाता है। ह्यूमस, अणुसमूह दशामें रहनेवाला (colloidal) पदार्थ और नाअिट्रोजनकी मात्रा — सब बढ़ जाते हैं। ज़मीनकी जुताअी, नमी कायम रखनेकी शक्ति और नाअिट्रोजनको सुरक्षित रखनेकी शक्तिमें काफी सुधार हो जाता है। मिश्र खाद बनानेका ध्येय होता है पौधोंके बचे हुअे भागोंमें मूल रूपसे रहे हुअे कुल नाअिट्रोजनकी रक्षा करना और अुसे मिश्र खादके कार्बनके साथ ज़मीनमें जोड़ना। हमारे तरीकेसे पौधोंके बचे हुअे हिस्सोंको सीधे ज़मीनमें मिलानेसे न सिर्फ मूल चीज़ोंमें रहा नाअिट्रोजन ज़मीनमें जुड़ता है, बल्कि वायु-नाअिट्रोजनके संयोजनके कारण ज़मीनमें नाअिट्रोजनकी

मात्रा भी काफी बढ़ती है। अिससे यह मालूम होता है कि पौधोंके बचे हुअे हिस्सोंकी मिश्र खाद बनानेके बजाय अुन्हें सीधे ज़मीनमें मिलाना ज्यादा फायदेमन्द है, क्योंकि अुष्ण कटिबन्धके देशोंका अूँचा तापमान और धूप अिसमें मदद करते हैं।

सच पूछा जाय, तो अजैव या रासायनिक खाद ज़मीनके गुणोंको बढ़ानेमें कोअी मदद नहीं करती। हाँ, ज़रूरत पड़ने पर वह ज्यादा अच्छी फसल पानेमें अुपयोगी साबित हो सकती है। यह जानकर खुशी होती है कि हिन्दुस्तानमें भी खादके कारखाने खुलनेवाले हैं। लेकिन सरकारको यह हकीकत मालूम होनी चाहिये कि जब तक हम चीन और जापानके साथ खाद तैयार करनेमें होड़ नहीं लगा सकते, तब तक यहाँ तैयार की हुअी खादका नतीजा कुछ साल पहले हुअे गुड़ (शकर) के नतीजेसे बेहतर नहीं हो सकता। यह आर्थिक दृष्टिसे लाभ और बुद्धिमानीकी बात नहीं होगी कि बिहारमें कारखाना खोला जाय और अुसके लिअे कच्चा माल (जिप्सम) लगभग ८०० मील दूर राजपूतानासे लाया जाय।

हिन्दुस्तानमें यूरिया, अेमोनियम नाअिट्रेट, अेमोनियम सल्फेट वगैरा खादें तैयार की जा सकती हैं।

अूसर ज़मीनको अुपजाअू बनाना

क्षारवाली ज़मीनके खास दोष ये हैं:

१. खारापन। हमने बुरी अूसर ज़मीनके कअी नमूनोंकी जाँच की है। अुससे पता चला है कि अुसमें क्षारकी मात्रा बहुत ज्यादा होती है।

२. मामूली मिट्टियोंके बजाय क्षारवाली मिट्टीमें केल्शियमके यौगिकों (compounds) की मात्रा कम होती है। मामूली मिट्टियोंके बजाय अिस मिट्टीमें अेक दूसरेसे बदले जानेवाले क्षारोंकी मात्रा कम होती है।

३. अिसमें नाअिट्रोजनकी मात्रा बहुत थोड़ी होती है। जो बहुतसे नमूने हमने जाँचे, अुनमें कुल नाअिट्रोजन ०·००८

फी सदीसे लेकर ०·०२ फी सदी तक था। अुष्ण कटिबन्धवाले देशोंकी मामूली मिट्टियोंमें लगभग ०·०५३ फी सदी नाअिट्रोजन रहता है।

४. अुस मिट्टीमें पानी बहुत मुश्किलसे प्रवेश कर पाता है। यानी वह फोसरी नहीं होती।

५. जब अिस मिट्टीके कणोंको पानीमें हिलाया जाता है, तो वे तुरन्त नीचे नहीं बैठते।

६. अुसमें जीवाणुओंकी क्रियाका अभाव रहता है।

यह अंदाज़ लगाया गया है कि सिर्फ संयुक्त प्रान्तमें ही अैसी अूसर ज़मीनका क्षेत्रफल ४० लाख अेकड़से ज़्यादा है। पंजाब (लायलपुर, मान्टगुमरी और दूसरी जगहोंमें), बिहार, मैसूर, सिन्ध और बम्बअी प्रान्तमें अैसी अनुपजाअू ज़मीनके बड़े-बड़े हिस्से हैं। स्वभावतः अिन अूसर ज़मीनोंको खेतीके लायक बनानेकी समस्या हिन्दुस्तानके लिअे बड़ा महत्त्व रखती है। जो क्षार अिन ज़मीनोंको अूसर बनाते हैं, वे हैं: कार्बोनेट, बाअिकार्बोनेट, सल्फेट और सोडियम क्लोराअिड। सोडियम कार्बोनेट अैसी ज़मीनोंको अूसर बनानेके लिअे खास तौर पर जिम्मेदार है। ये सामान्यतः भारी मिट्टीवाली होती हैं और अकसर पड़ती ज़मीनें कही जाती हैं। सिन्धमें और देशके दूसरे भागोंमें साधारण (normal) ज़मीनें सिंचाअीके पानीसे अूसर ज़मीनोंमें बदलती जा रही हैं। अिसके अलावा, बंगाल, अुड़ीसा, गुजरात, बम्बअी और मद्रास प्रान्तोंमें समुद्रके पानीसे बिगड़ी हुअी ज़मीनोंके बड़े-बड़े हिस्से हैं। अूपर बताये गये विभिन्न कारणोंसे हिन्दुस्तानमें अूसर ज़मीनकी मात्रा बढ़ती जा रही है।

स्वर्गीय डॉ० जे० डब्ल्यु० लेदरने संयुक्त प्रान्तके विभिन्न हिस्सोंमें अूसर ज़मीनोंको खेतीके लायक बनानेके प्रयोग किये थे। वे अिन नतीजों पर पहुँचे थे:

१. जो अेकमात्र प्रयोग सचमुच अूसर ज़मीनको खेतीके लायक बनानेका दावा कर सकता है, वह है जिप्सम (केल्शियम

सल्फेट नामक खड़ियाका प्रचलित नाम) के अुपयोगका। अुसमें अूसर ज़मीनको अुपजाअू बनाने लायक जिप्समकी मात्रा डालनेका खर्च बहुत ज्यादा आया था — अेक अेकड़के पीछे लगभग ७०० से ८०० रुपये तक। साफ़ है कि अिसका अुपयोग बहुत महँगा पड़ता है। अगर जिप्समकी कीमत घटाकर आधी की जा सके और यदि अिस ज़मीनको अुपजाअू बनानेके लिअे अुसका जितनी मात्रामें अुपयोग करना पड़ा, अुतनी ही मात्राकी जरूरत हो, तो भी वह बहुत महँगा पड़ेगा।

२. अिस ज़मीनमें गहरी और अच्छी जुताअीका सचमुच वह नतीजा नहीं हुआ, जो हमारी आँखोंको दिखाअी देता है या जिसकी आशा की जा सकती है। ज़मीनकी अूपरी सतह तो जाहिरा तौर पर खेतीके लायक हो गअी है, पर अिसके नीचेकी ज़मीन वैसी ही अूसर बनी हुअी है।

३. क्षारोंको खुरचकर निकाल देना व्यावहारिक दृष्टिसे बेकार है। हालमें ही डॉ० दलीपसिंह और मि० अेस० डी० निझावानने लायलपुर, लालकाकु, माण्टगुमरी और बारा फार्मकी ज़मीनको जिप्सम और केल्शियम क्लोराअिडके मिश्रणका अुपयोग करके अुपजाअू बनानेकी कोशिश की है, और अुन्हें अिस काममें थोड़ी सफलता भी मिली है। अुन्होंने कहा है कि अिस मिश्रणके अुपयोगके चार साल बाद ज़मीनका फोसरापन काफी बढ़ता है और ज़मीनके खेतीके लायक बननेकी प्रक्रियामें चार साल लगते हैं। यही समय जिप्सम या सल्फरका पाअुडर अिस्तेमाल करनेके बाद भी ज़रूरी होता है।

अिसके लिअे गुड़की राब भी काममें ली जा सकती है। कानपुर और अिलाहाबादके पास और मैसूर रियासतमें अेक अेकड़ पीछे १ से १० टन तक राबका अुपयोग करके अूसर धरतीको कामयाबीके साथ खेतीके लायक बनाया गया है। और अिन हिस्सोंमें, जहाँ पहले कोअी वनस्पति

नहीं अुगती थी, चावलकी अच्छी फसल पैदा की गअी है। हमने सोराअूँ (अिलाहाबादके पास) और अुन्नावके सरकारी फार्ममें अेक अेकड़ पीछे २ से ५ टन तक राबका अुपयोग करके बहुत बढ़िया चावलकी फसल ली है। मैसूर सरकारने अैसी अूसर धरतीमें, जहाँ पहले कोअी फसल नहीं अुगती थी, अेक अेकड़ पीछे अेक टन राबका अुपयोग करके १२०० से १८०० पौण्ड चावल पैदा किया है।

अिलाहाबाद, बंगलोर, जावा, हवाअी और दूसरे शकर पैदा करनेवाले देशोंमें जो खोज की गअी है, अुससे मालूम होता है कि जब राब कार्बोनिक अेसिडके साथ ज़मीनमें मिलाअी जाती है, तो अुसके सड़नेके शुरूके दर्जोंमें और अुसमें (राबमें) रहे हुअे कार्बोहाअिड्रेटके आंशिक ऑक्सीकरणके दरमियान अेसेटिक, प्रोपायोनिक, बटाअिरिक, लेक्टिक वगैरा जैसे जैव अेसिड पैदा होते हैं। फलस्वरूप राबमें रहे हुअे अेसिड और अुसके सड़ने तथा अुसमें रहे हुअे कार्बोहाअिड्रेटके आंशिक ऑक्सीकरणसे पैदा होनेवाले अेसिड अूसर भूमिके क्षारोंको बेकार बना सकते हैं। अिसके अलावा, सड़ने और कार्बोहाअिड्रेटके आंशिक ऑक्सीकरणसे बड़ी मात्रामें जो कार्बोलिक अेसिड पैदा होता है, वह सोडियम कार्बोनेटको बाअिकार्बोनेटमें बदल सकता है। साथ ही राब मिली हुअी ज़मीनमें से कार्बोनिक अेसिडके निकलनेकी प्रक्रियामें ज़मीन फोसरी बनती है और अुसकी जुताअीमें अुन्नति होती है। अिलाहाबादकी छान-बीन निश्चित रूपसे यह बताती है कि राब मिली मिट्टीमें नमीकी मात्रा अुस मिट्टीसे काफी ज्यादा होती है, जिसमें राब नहीं मिलाअी जाती। राबके साथ जो चूना ज़मीनमें मिलाया जाता है, वह राबसे बने जैव अेसिडोंकी मददसे घुलने लायक बना दिया जाता है और सोडियम वाली मिट्टीको केल्शियमवाली मिट्टी बनानेमें मदद पहुँचाता है। अिसके अलावा, राबमें थोड़ी मात्रामें जो सल्फरिक अेसिड रहता है, वह मिट्टीके केल्शियम कार्बोनेटको केल्शियम सल्फेटमें बदल देता है, जिसकी क्षारोंके साथ प्रतिक्रिया होती है और अूसर ज़मीन खेतीके लायक बनती है।

शकरके कारखानोंमें असावधानीसे ढुलनेवाले रस, राब वगैराके कारण जो कीचड़ होता है, वह भी अूसर ज़मीनको खेतीके लायक बनानेमें बड़ा अुपयोगी साबित होता है। अिसमें बहुत बड़ी मात्रामें कार्बोहाअिड्रेट और केल्शियमके यौगिक रहते हैं। हर अेकड़के पीछे आधेसे अेक टन तक तिल, मूँगफली वगैराकी खलीका अुपयोग करके अूसर ज़मीनोंको कामयाबीसे चावलकी फसल पैदा करने लायक बनाया गया है।

डॉ० अेन० आर० धर

[अिस लेखमें जो सुझाव पेश किये गये हैं, वे ध्यान देने और अमल करने लायक हैं। अिसमें कोअी शक नहीं कि अगर ज़मीनमें अुचित ढंगसे खाद दी जाय और समझके साथ ज़मीनका अुपयोग किया जाय, तो अनाजकी कमीका सारा डर दूर हो जाना चाहिये।

— मो० क० गांधी]

हरिजन, १७-८-१९४७

९५

कचरेमें से सोना

गाँववालोंके सवालोंको समझनेके लिअे जबसे मैंने किसानोंकी-सी ज़िन्दगी बितानी शुरू की है, तबसे मैं अेक ही दृढ़ निश्चय पर पहुँची हूँ। गाँवके जिन अनेक सवालोंका हल हमें खोज निकालना है, अुनमें खाद तैयार करनेका सवाल सबसे महत्त्वपूर्ण है। मामूली किसान खाद तैयार करनेकी कोअी कोशिश नहीं करता। आम तौर पर गोबर और कूड़े-करकटके छोटे-मोटे ढेर अिकट्ठे कर दिये जाते हैं, जिनको मिलानेकी कभी मेहनत नहीं की जाती। ये ढेर या तो गड्ढोंमें होते हैं या समतल ज़मीन पर। बरसातके दिनोंमें वे खुले पड़े रहते हैं, अिसलिअे वे कुछ हद तक सड़ते हैं और बादमें अुन्हें खेतोंमें कहीं कम, कहीं ज्यादा, फैला दिया जाता है। अिस तरह जो खाद किसानोंके पास अिकट्ठी होती है,

अुसका वे कम-से-कम फ़ायदा अुठाते हैं। हिन्दुस्तानके गाँवोंमें खादकी कमीका सबसे बड़ा कारण यह बताया जाता है कि गाँववाले गोबरका बहुत बड़ा भाग अींधनके काममें ले लेते हैं। लेकिन अिस अींधनको किसी प्रकार कम किये बिना भी आज खादके लिअे जितना गोबर अिकट्ठा किया जाता है, अुससे दुगुना तो किया ही जा सकता है। अिसमें से बहुत-सा तो बँधे हुअे ढोरोंके पाँव तले रौंदा जानेसे बरबाद हो जाता है। अिससे भी ज्यादा चरागाहोंमें पड़ा रह जाता है। अगर अिस तरह बरबाद होनेवाले सारे गोबरको बचाया जाय और घरके बाड़ों और गाँवकी गलियोंमें हमेशा पड़े रहनेवाले कचरेको नियमित रूपसे अिकट्ठा करके दोनोंको ठीक तौरसे मिला दिया जाय, तो आज जितनी खाद तैयार की जाती है, अुससे दुगुनी की जा सकती है। अिस तरहकी खादसे फ़ायदा भी कअी गुना ज्यादा होगा।

कृत्रिम या बनावटी खादोंको तैयार करनेके लिअे बड़े-बड़े कारखाने खोलनेके बजाय बाड़ोंमें खाद तैयार करनेके सवालको हल करना ज्यादा ज़रूरी है। बनावटी खाद तैयार करनेके लिअे बहुत बड़ी पूँजी, बड़ी-बड़ी मशीनों और कअी निष्णातोंकी ज़रूरत होती है। और अिस तरह तैयार की हुअी बनावटी खाद अेक अरसे तक तो सात लाख गाँवोंमें से कुछ ही गाँवों तक पहुँच सकेगी। अिस खादको बरतनेमें भी बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। लेकिन जो खाद बाड़ोंमें तैयार की जाती है अुसके लिअे न तो भारी पूँजीकी ज़रूरत है, न बड़े-बड़े कल-कारखानों या निष्णातोंकी। अिसकी सारी सामग्री, अिकट्ठा करनेवालेका रास्ता देखती हुअी गाँवोंमें ही बिखरी पड़ी रहती है। किसान अपने मामूली औज़ारोंसे ही यह सारा काम पूरा कर सकता है। सीधे-सादे तरीक़ोंसे बनाअी जानेवाली यह बाड़ोंकी खाद सारी दुनियामें सब खादोंसे अच्छी और सबसे कम नुक़सानदेह मानी जाती है।

किसान-आश्रममें मैंने सादे-से-सादे तरीक़ोंसे खाद तैयार करनेके प्रयोग शुरू किये हैं। यह काम अभी प्रारम्भिक अवस्थामें है, अिसलिअे अिसके

बारेमें कोअी ठीक आँकड़ों या ठीक समयका विवरण तो मैं नहीं दे सकती, लेकिन जो तरीका आज मैं काममें ले रही हूँ अुसका ब्यौरा अिस तरह है: २ फुट गहरा, २२ फुट लम्बा और १० फुट चौड़ा अेक खड्डा खोदा जाता है। (हर रोज़ जितना गोबर और कचरा काममें लिया जाय, अुस हिसाबसे खड्डेकी लम्बाअी-चौड़ाअीमें फ़रक़ किया जा सकता है)। हर रोज़ घास-पत्तियाँ और दूसरी तरहका मामूली कचरा अिकट्ठा किया जाता है और खड्डेके किनारे पर अुसका ढेर लगा दिया जाता है। अिस कचरेके पास ही अलगसे गोबर और घोड़ेकी लीदका ढेर लगा दिया जाता है। दिनके अखीरमें कचरेकी पतली तह खड्डेके आधेसे ज्यादा हिस्सेमें फैला दी जाती है और अुसके अूपर तोड़े हुअे गोबरकी पतली तह हाथसे फैला दी जाती है। अिस तरह रोज़-रोज जितना गोबर और कचरा अिकट्ठा किया जाता है, अुसी हिसाबसे अुसकी अेक तह पर दूसरी तह बिछा दी जाती है। गोबर और लीदको धूप और हवाके बुरे असरसे बचानेके लिअे सबसे अूपरकी तह हमेशा कचरेकी रखी जाती है। हर तीसरे दिन अिन तहों पर अितना पानी छिड़का जाता है कि वे गीली हो जायँ। जब आधा खड्डा भर जाता है, तो खाद मिट्टीकी पतली तहसे ढँक दी जाती है और ६ से ८ हफ़्तों तक पड़ी रहने दी जाती है। अिसके बाद अुसे खड्डेके दूसरे आधे हिस्सेमें खींच लिया जाता है। खींचते वक़्त यह खयाल रखा जाता है कि जमी हुअी तहोंके पतले और खड़े टुकड़े किये जायँ। अिस तरह जब खाद खड्डेके दूसरे आधे हिस्सेमें फैला दी जाती है, तो अुसे फिरसे पानीसे तर किया जाता है और मिट्टीसे ढँक दिया जाता है। फिर दूसरे ६ से ८ हफ़्ते बीत जानेके बाद अुस खादकी जाँच की जाती है और अगर वह काफ़ी मात्रामें अलग-अलग हो जाती है, तो वह खड्डेसे बाहर निकालकर ज़मीन पर अिकट्ठी कर दी जाती है और मिट्टीसे ढँक दी जाती है। अब वह ज़रूरतके मुताबिक कभी भी काममें लाअी जा सकती है। अगर खादके दानोंके अलग-अलग हो जानेमें किसी तरहकी कसर रह जाती है,

तो अूपर बताये गये तरीकेसे अेक बार फिर अुसे खड्डेके दूसरे आधे हिस्सेमें खींच लिया जाता है। बरसातमें अिस खड्डे पर छप्पर डाल देना ज़रूरी है।

किसानकी आजकी अशिक्षित मानसिक स्थितिमें अुससे अितना करा लेना भी बड़ा कठिन काम होगा। अिससे ज्यादा बारीक तरीका तो शायद असफल ही साबित हो। मगर मेरा यह तरीक़ा पूरी तरह कारगर साबित होगा।

अिस तरहके कामके पूरे-पूरे आँकड़े पानेके लिअे खाद तैयार करनेके अलग-अलग तरीक़ोंका प्रयोग किया जाना चाहिये और दो या तीन सालकी फ़सलोंके नतीजेकी जाँच की जानी चाहिये। लेकिन मैंने अिस विषयके ठीक आँकड़े दिखानेका अिन्तज़ार किये बिना ही यह बात अिसलिअे सामने रख दी है कि हम सब, जो अिस तरहके काममें दिलचस्पी लेते हैं, अपने विचारों और प्राप्त किये गये परिणामोंकी रिपोर्टोंके आदान-प्रदानसे अेक दूसरेकी कोशिशोंमें सहयोग दे सकें। नअी प्रान्तीय सरकारें ज्योंही काम करने लगें, त्योंही अुनके कृषि-विभागोंको यह काम बिना किसी देरीके हाथमें लेना चाहिये। और हमारा फ़र्ज़ होगा कि हम अपने अिन सरल और व्यावहारिक तरीक़ोंसे अिस काममें प्रान्तीय सरकारोंकी मदद करें।

किताबोंमें चीनके खाद तैयार करनेके सरल देशी तरीक़ोंका वर्णन मिलता है। वहाँके लोग बड़े पुराने ज़मानेसे अिस कलाका अुपयोग करते आये हैं। यह भी सुना जाता है कि चीनी किसान हिन्दुस्तानी किसानसे चौगुनी फ़सल लेता है। अिसके साथ ही चीनके गाँव भी खूब साफ़-सुथरे रहते हैं, क्योंकि वहाँका सारा कूड़ा-कचरा खादके गड्ढोंमें अिकट्ठा करके डाल दिया जाता है। हिन्दुस्तानके हमारे गाँवोंमें सालके शुरूसे आखिर तक कूड़ा-करकट छितरा पड़ा रहता है। अगर हम अुसे ठीक ढंगसे काममें लें, तो यह सारा कचरा सोना बनाया जा सकता है।

मीराबहन

हरिजनसेवक, १४-४-१९४६

९६

कचरेसे कंचन*

मदुराके सहकारी बिक्री मंडलने १९३७–३८ में मदुरा म्युनिसिपल कौंसिलसे रु० २५,००० में मैले और कचरेको अुठानेका ठेका लिया। अिससे पहले अैसे ठेके अलग अलग व्यक्तियों द्वारा लिये जाते थे, जो मैले और कचरेको आसपासके गाँवोंके किसानोंको अपनी शर्तों पर देते थे और अुस कचरेकी वैज्ञानिक ढंगसे खाद बनानेका कोअी प्रयत्न नहीं करते थे। वे मैलेका ढाअी रुपया और कचरेका १२ आने प्रति गाड़ी किसानोंसे लेते थे। काम करनेमें लगनेवाले खर्चका अन्दाज़िया हिसाब लगाकर बिक्री संस्थाने कीमतको अेकदम घटाकर मैलेके रु० १–१२–० और कचरेके ९ आने प्रति गाड़ी कर दिये। कचरेकी गाड़ीके दाम बादमें और भी घटाकर ७ आने कर दिये गये थे, और अनुभवसे यह मालूम हुआ था कि ये कीमतें और भी घटाअी जा सकती थीं। पर दुर्भाग्यसे अैसा न किया जा सका; क्योंकि ठेका १९३८–३९ के लिअे फिरसे बिक्री मंडलको नहीं दिया गया। कीमतमें यह कमी करनेके बावजूद भी सालके आखिरमें बिक्री मंडलके पास रु० १०,८९६ का खालिस नफा बच रहा था। अिससे पता चलता है कि व्यक्तिगत ठेकेदार पहले गाँववालोंका कितना ज्यादा शोषण करते थे। बिक्री मंडलका यह नफा भी अुसके सदस्य बननेवाले किसानोंको, जिनकी संख्या २७६ थी, अुनके द्वारा की गअी खरीदीके अनुपातसे बाँट दिया

---

* 'मद्रास जर्नल ऑफ कोऑपरेशन', जिल्द ३०, नम्बर १ में प्रकाशित श्री जी० जी० स्पिटलर, डिप्युटी रजिस्ट्रार, कोऑपरेटिव सोसाअिटीज़, मदुराके "मदुरामें म्युनिसिपेलिटीके कचरेको सहकारी पद्धतिसे देना" लेखके आधार पर।

जायगा। अिस तरह नफा बाँटनेका मतलब यह हुआ कि चुकाअी हुअी कीमतके हर रुपयेमें दो आनेकी और कमी हुअी।

कचरेकी कीमतमें कमी करना ही बिक्री मंडलकी मुख्य कामयाबी नहीं है। अुसने यह जाँच करना शुरू किया कि वह अुस कचरेका अच्छेसे अच्छा अुपयोग कैसे करे, ताकि किसानोंको सस्ती खाद दे सके और वह भी कमसे कम खतरनाक और बदबूवाले रूपमें। अुसने 'अिन्दौर पद्धति' को काममें लिया और अुसे सादा पाया। वह तरीका अैसा था। अेक चौड़ी लेकिन छिछली खाअीकी सतह पर मैले और कचरेकी अेकके बाद अेक परत अिस तरह बिछा दी जाती थी कि कचरेकी चार परतोंके बीच मैलेकी तीन परतें आ जायँ। अिस तरह करनेके दो दिन बाद सारा मिश्रण अुलट दिया जाता था। अिस तरीकेको दो हफ्तों तक दोहराया जाता था और बीच बीचमें अूपरी सतह पर, यदि वह बहुत सूख जाती, तो पानी छिड़क दिया जाता था। करीब चार हफ्तोंके बाद यह मिला हुआ पदार्थ खादके रूपमें काममें लेने लायक हो जाता था। दो गाड़ी कचरे और अेक गाड़ी मैलेसे सादी मिश्र खाद तैयार की जाती थी। यद्यपि यह खाद बुरी बदबू नहीं देती थी और बाड़ेमें होनेवाली खादके बराबर ही गुणवाली होती थी, तब भी अिसकी कीमत बहुत ज्यादा होती थी, यानी वह बाड़ेमें होनेवाली खादसे दुगुनी महँगी पड़ती थी। मद्रास सरकारके खेती सम्बन्धी रसायन शास्त्रीकी मददसे बिक्री मंडलने कअी तरहके प्रयोग किये और आखिरमें कचरे और मैलेको ४ : १ के अनुपातमें मिलानेका तय किया। अिससे खाअियाँ खोदनेका खर्च बच गया और ढेर लगानेके तरीकेसे ही मिश्र खाद बनने लगी। अिस तरह अेक गाड़ी खादकी लागत कीमत ढाअी रुपयेसे रु० १–१०–० पर आ गअी। ये प्रयोग न केवल प्रयोगशालामें ही किये गये, बल्कि बिक्री मंडलने किसानोंको ये प्रयोग अपने खेतोंमें करनेके लिअे तैयार किया और अिस तरह विज्ञानके ज्ञान व अनुभवको ग्रामीण क्षेत्रोंमें फैलानेमें मदद दी। दूसरी मुख्य सेवा खतरनाक और बदबूदार मैलेको फायदेमन्द

खादके रूपमें बदलनेकी थी। यदि यह सोचा जाय कि व्यक्तिगत ठेकेकी पद्धतिमें गाँवोंमें जिस जगह खाद अेकत्र की जाती थी, अुसके आसपासकी सारी जगह बहुत ज्यादा गन्दी व बदबू भरी हो जाती थी, तो यह सेवा कोअी मामूली नहीं लगेगी। अिस तरह कचरेके अुपयोगका ठीक बन्दोबस्त करके विकी मंडलने सफाअी और आरोग्यको बढ़ाने और जन-स्वास्थ्यकी रक्षा करनेका अेक पदार्थपाठ दिया।

वी० अेल० मेहता

हरिजन, २०-८-१९३८

९७

नौकरशाही योजनाओंके ख़िलाफ़ चेतावनी

१

पिछले सितम्बर महीनेमें रूटरने अमेरिकासे तारसे खबर भेजी थी कि ४ करोड़ डॉलर या १३ करोड़ रुपयोंके खर्चसे ३५ लाख टन अेमोनियम सल्फेट पैदा करनेके लिअे अेक कारखाना खोलेनेकी योजना हिन्दुस्तानकी मौजूदा ग़ैर ज़िम्मेदार सरकारने तैयार की है। और अिस योजनाके सम्बन्धमें 'सर' का खिताब रखनेवाले अेक अंग्रेज़के नेतृत्वमें कुछ लोगोंका अेक डेपुटेशन अिंग्लैण्डमें '५ महीने वितानेके बाद' अमेरिकाकी मुलाक़ातको आ रहा है।

लेकिन हिन्दुस्तानियोंके सिर अिससे बड़ी आफ़त शायद दूसरी कोअी नहीं आ सकती कि अुनकी ज़मीनको बनावटी खादके ज़रिये ज़हरीली बना दिया जाय। खेतीके ब्रिटिश निष्णातोंने खुद ही बनावटी खादके अुपयोगको बुरा बताया है और अुसकी निन्दा की है।

ज़मीनमें से हम जितना लेते हैं, अुतना अुसे वापस लौटा देना चाहिये। फ़सल काटनेसे ज़मीनकी ताक़त कम होती है। खेतोंमें गोबरकी खाद देकर और घास-फूसको हल द्वारा मिट्टीमें मिला कर यह कमी पूरी

कर देनी चाहिये। आदमीके शरीर पर दवाओंका जैसा असर होता है, वैसा ही असर रासायनिक खादोंका ज़मीन पर होता है। यह सच है कि थोड़े समयके लिअे अिन खादोंसे बहुत ज्यादा फ़सल पैदा होती है, लेकिन बादमें अुसकी अुलटी क्रिया शुरू हो जाती है। बनावटी खादोंका अुपयोग करके बहुत ज़्यादा फ़सल ली जा सकती है। लेकिन ये खाद ज़मीनमें नअी बीमारियाँ और नअी कमियाँ पैदा कर देती हैं। 'लिविंग सॉअिल' (ज़िन्दा ज़मीन) नामकी किताबमें सर अल्बर्ट हॉवर्डकी भेजी गश्ती चिट्ठीसे बॉल्फ़ूरने नीचेका हिस्सा दिया है :

"दक्षिणी फ्रान्समें अंगूरकी खेती ज़्यादातर बनावटी खादकी मददसे की जाती है और ज़हरीले रसायनोंकी पिंचकारियाँ लगा कर अंगूरकी बेलोंको लगनेवाली बीमारियोंका सामना करना पड़ता है।

"अिसके खिलाफ़ बलूचिस्तानमें अंगूरकी बेलोंको हमेशा घूरोंकी यानी मवेशी वग़ैराके गोबरसे बनी सजीव खाद दी जाती है। अंगूरकी फ़सलको नुक़सान पहुँचानेवाली फफूँदी या जन्तुओंका नाश करनेके लिअे वहाँ रासायनिक ज़हरोंकी पिचकारी लगानेकी ज़रूरत नहीं पड़ती; क्योंकि वहाँ वैसी बीमारियाँ होती ही नहीं।"

ब्रिटेनके लेखकोंका खयाल है कि अिंग्लैण्डमें फ़सलको लगनेवाली जो बीमारियाँ बढ़ गअी हैं, अुसका कारण ये बनावटी खादें ही हैं। जेम्सने लॉर्ड लिमिंग्टनके लेखोंसे नीचेका अेक अवतरण दिया है :

"२० साल पहले आलूकी फ़सल पर सालमें अेक या दो बार कॉपर सल्फेट यानी नीले थूथेका घोल छिड़कना पड़ता था। लेकिन आजकल फ़सलके मौसिममें १२ से १५ बार छिड़कना पड़ता है। बहुत करके अिस सबकी वजह यह है कि ज़मीनको सजीव खाद नहीं मिलती और खेतीके अुचित सन्तुलनको क़ायम नहीं रखा जाता।" ('फैमिन अिन अिंग्लैण्ड'— अिंग्लैण्डमें अकाल)

रासायनिक पदार्थोंकी पिचकारी फ़सल पर बुरा असर डालती है, और ज़मीनकी अुम्र काफ़ी घटा देती है।

लॉर्ड लिमिंग्टनकी राय है कि बनावटी खाद बहुत नुक़सानदेह है:

"जीवनकी प्रक्रियाका आधार जितना वनस्पतिके बढ़ने पर है, अुतना ही अुसके सड़ने पर है। जैव और वनस्पतिजन्य पदार्थ अच्छी तरह सड़कर 'ह्यूमस' के रूपमें बदल जाते हैं, तभी नीरोग फसल पैदा हो सकती है और 'ह्यूमस' तभी पैदा होती है, जब ज़मीनके अन्दर रहे हुअे जीवाणु (बैक्टीरिया) अपना काम करते हों। सल्फेट ऑफ अेमोनिया, नाअिट्रो-चॉक, पोटाश और दूसरे क्षारोंका अविचारपूर्ण अुपयोग अिन जीवाणुओंका नाश करता है और जब ज़मीनमें 'ह्यूमस' नहीं होती, तो पौधे नीरोग नहीं रह सकते।"

पशुओंकी और आदमियोंकी बीमारीकी तरह खेतीकी फ़सलके रोग भी बनावटी अिलाजोंकी वजहसे ही होते हैं! अिंग्लैण्डमें फ़ी आदमी दवाका सालाना खर्च ६ पौण्ड है, और किसानको ढोरोंसे होनेवाली आमदनीका १० वाँ हिस्सा अुनकी दवादारूमें खर्च होता है।

अिंग्लैण्डमें ढोरोंको मुँह और पैरकी बीमारियाँ होती हैं और बीमार ढोरोंको कसाअीखानोंमें भेज दिया जाता है। जिन हिस्सोंमें बीमारीका ज़ोर होता है, वहाँसे १५ मीलके घेरेमें ढोरोंकी आमद-रफ़्त बन्द कर दी जाती है। लेकिन हॉवर्डने यह साबित किया है कि सजीव खाद डालकर पैदा की गअी खुराक पर जीनेवाले अुनके बैलोंको बीमार ढोरके साथ 'नाक घिसने' पर भी अुस ढोरके रोगकी छूत नहीं लगती थी।

बॉल्फरने अपने नाम आये अेक पत्रमें से नीचेका हिस्सा दिया है:

"नाअिट्रेट और फॉस्फेट डालकर अुगाअी जानेवाली बन्दगोभीका रंग अेक अजीब तरहका 'झूठा' रंग होता है। अगर खरगोशको खुराकके तौर पर दी जानेवाली सब्ज़ीमें से ५० फ़ी

सदी अिस तरहकी हो, तो वह मर जाता है। अगर फॉस्फेट अेक हदसे ज़्यादा दिया जाता है, तो खेत अस्वाभाविक रूपसे हरे रंगका हो जाता है और जंगली खरगोश अुसे छोड़कर भाग जाते हैं।" फॉस्फेट वेचनेवाले अिसको अेक अच्छाअी समझकर बतौर सिफ़ारिशके अिसका अुपयोग करते हैं। वे कहते हैं: "हमारे घुल जानेवाले फॉस्फेटकी खादका अुपयोग करो और खरगोशोंको भगा दो।" या "अगर आप पूरी मिक़दारमें नाअिट्रो-चॉकका अुपयोग करेंगे, तो आपका खेत अिस तरह हरा हो अुठेगा कि खरगोश शायद ही अुसे छुअेंगे और अगर छुआ तो मर जायँगे।"

अैसा मालूम हुआ है कि बनावटी खाद दिये गये खेतमें ढोर नहीं चरते।

वॉल्फरने अेक अैसे स्कूलकी भी मिसाल दी है, जिसने पहले बनावटी खादोंसे और बादमें सजीव खादसे साग-सब्ज़ीकी खेती की थी। अुस स्कूलके हेडमास्टरने बताया कि पहले स्कूलके बहुत-से लड़कोंको ज़ुकाम होता था, फोड़े-फुन्सी निकलते थे और 'स्कार्लेट फीवर' के नामसे मशहूर अेक छूत फैलानेवाला बुखार आता था। लेकिन बादमें अैसा अेकाध ही केस होता था, और सो भी बाहरकी छूत लगनेकी वजहसे ही। साग-सब्ज़ीके स्वाद और गुणमें भी निश्चित सुधार हुआ था।

जिन दिनों डॉक्टर मैक्केरिसनके हाथमें हिन्दुस्तानमें 'पोषणकी कमीके कारण होनेवाली बीमारियों' की जाँचका काम था, तब अुन्हें यह पता चला था कि सजीव यानी घूरेकी खाद डालकर तैयार की गअी ज़मीनमें पके हुअे गेहूँकी पौष्टिकता रासायनिक खाद डालकर तैयार की गअी ज़मीनमें पके हुअे गेहूँकी पौष्टिकतासे १७ फ़ीसदी ज़्यादा थी। दूसरे तरीक़ेसे यानी रासायनिक खादोंकी मददसे पैदा किये गये गेहूँमें 'अे' विटामिनकी मात्रा कम थी। छूतवाले रोगोंसे टक्कर लेनेके लिअे मनुष्य और अुसके आश्रित पशु दोनोंके लिअे यह विटामिन महत्त्वका होता है।

डॉ० मैक्केरिसनको यह भी पता चला कि ढोरोंकी खादसे पैदा हुअे बाजरेमें अगर 'बी' विटामिनकी मात्रा १ मानें, तो रासायनिक खादसे पैदा किये गये बाजरेमें अुसकी मात्रा करीब ·६६ होती है।

वालजी गोविन्दजी देसाओी

हरिजनसेवक, ५-५-१९४६

९८

नौकरशाही योजनाओंके खिलाफ़ चेतावनी

२

नौकरशाही योजनाओंमें दूसरी अेक योजना हमारी खेतीके तरीक़ेमें मशीनें दाखिल करनेकी यानी खेतीका यंत्रीकरण करने की है। लेकिन लार्ड नॉर्थबोर्नने अपनी 'लुक टु दि लैण्ड' ('ज़मीनकी दशा देखो': प्रकाशक, डेण्ट) नामकी किताबमें चेतावनी दी है: "यंत्रीकरणसे ज़मीनका अितना ज़्यादा शोषण होता है कि अुसकी वजहसे खेतीकी ज़मीनके बड़े-बड़े भागोंके रस और कस से खाली होकर लम्बे-चौड़े रेगिस्तान बन जानेका अँदेशा रहता है। यह अेक अैसी हालत है, जो पहले कभी पैदा नहीं हुअी थी। अिसीलिअे खेतीके साधनोंका यंत्रीकरण हमको भुलावेमें डालनेवाला भयानक जाल-सा बन जाता है।"

अपने खेतोंमें मशीनोंका अुपयोग करनेवाले अंग्रेज़ किसानोंसे हमें अिस बारेमें बहुत-कुछ सीखना है और हमारा यह फ़र्ज़ है कि जिन मामलोंमें वे खुद अपनी गलती क़बूल करते हैं, अुनसे सबक़ लेकर हम अुनके जैसी नुक़सानीसे बचें।

अुनका अेक अनुभव यह है कि बहुत वज़नदार होनेकी वजहसे मशीनोंके नीचे ज़मीनकी बनावट नीरोग नहीं रह पाती। हरी घासवाले खेतों पर 'मोटर लॉन-मोअर' (घास काटनेकी मोटर) का अुपयोग होता है, तो ज़मीनका कस अुतर जाता है।

कअी तसलोंवाला यांत्रिक हल ज़रूरतसे ज़्यादा तेज़ीके साथ ज़मीनको जोत डालता है, जब कि बैल या घोड़ेके अेक तसलेवाले हलसे किसी बड़े खेतको जोतनेमें कअी दिन लग जाते थे। ज़मीन जोतते समय अन्दरसे जो जीव-जन्तु बाहर निकल आते हैं, अुनको या अुनके अण्डों और छोटी अिल्लोंको गटक जानेके लिअे तैयार बैठे पक्षियोंके झुण्ड-के-झुण्ड अुस हलके पीछे अुड़ा करते थे। पहले जिस कामको बहुत दिन लगते थे, वह अब यांत्रिक हलसे अेक ही दिनमें खतम हो जाता है और पक्षियोंको ज़मीन साफ़ करनेका मौक़ा ही नहीं मिलता। अिसलिअे अंग्रेज़ किसान अब अिस बातकी बहुत शिकायत करते हैं कि अुनके खेतोंमें धानकी जड़को कुरेद कर खा जानेवाली अिल्लें और दूसरे जन्तु बेशुमार बढ़ गये हैं।

लेकिन बात यहीं आकर नहीं रुक जाती। अिस तरह ज़मीन तो साफ़ होती ही नहीं; साथ ही, प्राणिज या वनस्पतिज पदार्थोंके सड़नेसे तैयार होनेवाला जो तत्त्व ज़मीनमें है और रेतमें नहीं है, वह मशीनसे खेती करनेके कारण नष्ट होता जा रहा है। यह अेक दूसरी ही क्रिया है। जब घोड़े या बैल हल खींचते हुअे खेतोंमें घूमते थे, तो अपनी लीद या गोबरसे ज़मीनके कसको बढ़ाते थे। मोटरसे चलनेवाला ट्रैक्टर बात-की-बातमें सारे खेत पर चक्कर लगा डालता है और अपनी तरफ़से ज़मीनको कुछ नहीं देता। पिछले २० बरसोंमें ब्रिटिश फ़ौजों और ब्रिटिश शहरोंसे ५ लाख घोड़े कम हो गये हैं। नतीजा यह हुआ है कि ब्रिटेनकी १० लाख अेकड़ ज़मीनको लीदकी खादसे जो पोषण मिला करता था, वह अब नहीं मिलता और अुस हद तक वहाँकी ज़मीन कमज़ोर हो गअी है।

वनस्पति, प्राणी और मनुष्य — अिन तीनका कृषि-चक्र विलायतमें अनेक तरहसे खण्डित हुआ है और हरअेक जगह अुसका फल बुरा निकला है। माअिकेल ग्रेहाम अपनी 'सॉअिल अेण्ड सेन्स' ('ज़मीन और समझदारी': प्रकाशक, फेबर) नामकी किताबमें लिखता है कि ब्रिटेनकी गृहिणियाँ अपने परिवारको छोटा बनाना सीख गअी हैं,

जिससे गडरिये बेकार हुअे हैं और किसान कंगाल बनने लगे हैं। हर साल भेड़ोंकी तादादमें १० लाखकी कमी होती जाती है और अिसकी वजहसे ब्रिटेनको गेहूँकी तंगीका सामना करना पड़ता है। अितना होते हुअे भी गेहूँके खेतोंमें खादके लिअे जितनी भेड़ोंको बैठानेकी ज़रूरत होती है, अुतनी तादादमें भेड़ें आज नहीं मिलतीं।

सच पूछा जाय तो सारी दुनियाका यह अनुभव भी है कि वैज्ञानिक कही जानेवाली खेती ज़मीनके कस का नाश करती है, अुसे कंगाल बनाती है, और आखिर अुसके सारे रसको चूस लेती है। जैसा कि मिस्रमें हुआ — "जिस हिसाबसे वहाँ खेतीका ज़्यादा और ज़्यादा वैज्ञानिक तरीक़ा दाखिल किया गया, अुसी हिसाबसे ज़मीन भी बराबर अेक-सी अुतरती गअी।" ('रेप ऑफ दि अर्थ' — पृथ्वी पर अत्याचार)

जबसे विलायतमें मशीनोंसे खेती होने लगी है, तबसे खेतोंके आसपास हरी बागुड़ें भी चुन-चुन कर साफ़ कर दी गअी हैं। अी०बी० बॉल्फरकी रायमें अिसकी वजहसे खेतोंमें जीव-जन्तुओं और अिल्लोंका त्रास बहुत ही बढ़ गया है, क्योंकि "बागुड़ोंके निकल जानेसे जीवजन्तु-ओंका शिकार करनेवाले पक्षियोंके बैठनेकी जगह भी खतम हो गअी है। अुनके लिअे कोअी आसरा न रहा।" पहले विलायतमें छोटे-छोटे खेत थे। अिनके सिवा बागुड़ोंमें हरियाली खूब रहती थी। थोड़े-थोड़े फ़ासले पर पेड़ भी बहुतसे थे। अिसकी वजहसे ब्रिटेनमें, जहाँ ज़ोरोंकी आँधियाँ अुठा करती हैं, "ज़मीनकी गठन क़ायम रहती थी और अुसकी पैदावारमें वृद्धि होती थी।" लेकिन अब नये ढंगकी खेतीकी मशीनोंका अुपयोग करनेके खयालसे खेतोंका क़द बहुत बढ़ा दिया गया है।

ब्रिटिश किसानोंके अिन अनुभवों पर विचार करते हैं, तो यह चीज़ अेक छिपा वरदान ही मालूम होती है कि अमेरिका हमको ५ सौ ट्रैक्टर भी नहीं दे सकेगा, जब कि वह रूसको ५० हज़ार और फ्रान्सको दूसरे २० हज़ार ट्रैक्टर देनेवाला है।

जॉर्ज रसेलको, जो अपने अे०ओ० अुपनामसे मशहूर थे, अुनकी मृत्युसे २ साल पहले अमेरिकाके संयुक्त राज्योंकी सरकारने अपने यहाँ बुलाया था और अुनसे प्रार्थना की थी कि वे बतायें कि अमेरिकाकी खेतीके तरीक़ेमें क्या खामी है। साधन-सामग्री सब बिल्कुल अच्छी तरह तैयार की गअी थी, फिर भी काम करनेवाले किसान काम करनेसे आनाकानी करते थे। अे०ओ०ने यह सब देखकर राय दी कि आप लोगोंके ज़रूरतसे कहीं ज़्यादा संगठनकी वजहसे असल चीज़में से आत्मा अुड़ गअी है; मनुष्य, ज़मीन और मनुष्यके साथी घोड़े या बैल, अिन तीनोंके बीच मशीनोंने कुछ अैसा दखल दिया है कि आदमीके लिअे अपना काम आनन्दरूप होनेके बदले बेगारकी तरह असह्य हो गया है।

लॉर्ड नॉर्थबोर्नके नीचे लिखे कथनको हम याद रखें:

"क्या खेतीमें और क्या दूसरे हुनरोंमें, हरअेक अच्छी-से-अच्छी चीज़ आदमीको अपने हाथों द्वारा ही मिलती है, और अिसमें शक नहीं कि जो बढ़िया नहीं है या अुससे थोड़ी भी घटिया है, अुससे काम नहीं चल सकता।"

वालजी गोविन्दजी देसाअी

हरिजनसेवक, ५-५-१९४६

९९
खेतीमें कृत्रिम चीज़ोंका अुपयोग

अब तो यह बात आम तौरसे मान ली गअी है कि तन्दुरुस्ती बनाये रखनेके लिअे सिर्फ़ अच्छी दीखनेवाली खुराककी नहीं, बल्कि तन्दुरुस्तीके नियमोंका खयाल रखकर पैदा की गअी खुराककी ज़रूरत है। यह चीज़ ज़मीनकी अच्छाअी पर निर्भर है। जिस तरह अेक अिन्सानके शरीर पर चढ़े हुअे मांससे अुसकी तन्दुरुस्तीका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, अुसी तरह फ़सलकी मात्रा या अनाजके दानोंकी मोटाअीसे अुसकी पोषण शक्तिका अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। बनावटी खादोंके अुपयोगसे बड़े-बड़े दानोंवाली ज्यादा-से-ज्यादा फ़सल पैदा की जा सकती है, लेकिन अिस तरह पैदा किये गये अनाजमें कुछ खास पोषक तत्त्वोंकी कमी रहती है; और जिन जानवरोंको वह खुराक खिलाअी जाती है, वे बीमार और कमज़ोर हो जाते हैं। कुदरती और बनावटी खादके प्रश्न पर विल्टशायरके अेक बड़े सफल किसान फ्रेण्ड साअिकसने 'ह्यूमस अेण्ड फार्मर' (जमीनकी गठन और किसान) नामके अखबारमें अेक बहुत अुपयोगी लेख लिखा है।

दो साल पहले साअिकसने गायें, सूअर और घुड़दौड़के घोड़े पालना शुरू किया। घोड़ोंने देशमें खूब नाम कमाया। लेकिन लम्बे अरसेकी यह कामयाबी अखीरमें नुक़सानदेह साबित हुअी।

> 'न्यूज रिव्यू' में लिखा है: "जानवर पालनेवाले दूसरे लोगोंको रास्ता दिखानेके लिअे साअिकसके अच्छे-से-अच्छे काले और सफेद ढोरोंकी तपेदिकके अिलाजके नये-से-नये तरीक़ोंसे जाँच कराअी गअी। अुनमेंसे दो-तिहाअी मवेशी तपेदिकके शिकार पाये गये, हालाँकि वे काफ़ी दूध देते थे। जब अुसे अिस बातका भरोसा हो गया कि कुदरती खादसे पैदा की गअी खुराकके बजाय

बनावटी खादसे पैदा की गअी खुराक और खली वगैरा खिलानेसे ही अुसके मवेशियोंकी यह हालत हुअी है, तो अुसने सबको बेच डाला।

"साअिकसने सन् १९३६ में सेलिस्बरीके समतल मैदानके पूरबी हिस्सेमें चेप्टरीका अूँचे-से-अूँचा खेत खरीदा और वहाँ नये 'कुदरती' ढंगसे खेती शुरू की। अेक दोस्तने अुसके छोटे, सँकरे, हल्के और खरगोशसे भरे खेतको देखकर कहा — "यह भी कोअी खेत है? यह तो मकानके बाहरका अेक अूसर मैदानभर है!" लेकिन १० सालके पहले ही अुस काली निचली जमीनने बढ़िया-से-बढ़िया फ़सलें और अच्छे-से-अच्छे मवेशी दिये।

"साअिकसने यह नियम बना दिया था कि न तो ढोरोंको मशीनोंसे तैयार की गअी खुराक खिलाअी जाय और न खेतमें बनावटी खाद डाली जाय। ज़मीनकी शुरूकी खराबियोंको गहरी जुताअी करके दूर किया गया और अुससे तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाली फ़सलें पैदा होने लगीं। ज़मीनको दो फुट खोदनेसे गहरी जड़ोंवाले पौधोंके साथ क़ीमती खारोंवाली मिट्टी अूपर निकल आअी। घास और फ़सल पैदा करनेके नये तरीक़ोंसे घासमें सुधार हुआ और मवेशियों पर अुसका बहुत अच्छा असर हुआ।

"सबसे महत्त्वकी बात यह है कि फ्रेण्ड साअिकसने अपने खेतमें 'ह्यूमस' (वैज्ञानिक तरीक़ेसे सड़ाये गये जानवरोंके मल और तरकारियोंके सड़े-गले हिस्से) की खाद दी और रासायनिक पदार्थोंके अुपयोगसे जहरीली बननेके बजाय ज़मीन अुपजाअूपनको बढ़ानेवाले कअी तरहके कीड़ोंसे भर गअी।"

साअिकस कहता है: "आज यह जो अेक फैशन बन गअी है कि हम ज़मीनको अुपजाअू बनानेके बारेमें वनस्पतिशास्त्रके बजाय रसायनशास्त्रके अुसूलों पर सोचते हैं, सो गलत है। रासायनिक कारखानोंके मालिकोंने अपने मालकी खपत बढ़ानेके लिअे लगातार सौ बरसों तक जो प्रचार किया है, अुससे बनावटी

खादोंके अुपयोगको बढ़ावा मिला।" अुसकी रायमें बनावटी खादसे अैसी फ़सल पैदा होती है, "जो शक्तिको अितना घटा देती है कि खानेवालोंमें बीमारीको रोकनेकी ताक़त दिन-दिन कम होती जाती है।"

अुसका कहना है कि "दिन-दिन हम अेक अैसी बड़ी-से-बड़ी खराबीकी तरफ़ बढ़ रहे हैं, जो क़रीब-क़रीब सभी मुल्कोंमें ज़मीनके अुपजाअूपनको पुराने जमानेका अेक किस्सा बना देगी।"

दूसरे बनावटी तरीकोंके बारेमें, जो हमें धीरे-धीरे भावी खतरेकी तरफ़ ले जा रहे हैं, साअिकसके विचार ये हैं —

"जिसे वैज्ञानिक खेती कहा जाता है, अुसमें जो बनावटी तरीक़े काममें लाये जा रहे हैं, अुनमें ग़ैर-क़ुदरती तौर पर जानवर पैदा करनेका तरीक़ा शायद सबसे ज्यादा नुक़सानदेह साबित होगा।

"मैलेको समुद्रमें बहानेका तरीक़ा बहुत खराब और भयंकर बरबादीका तरीक़ा है। मैलेको तो फिर ज़मीनमें ही गाड़ना चाहिये।

"ग़ैर-क़ुदरती तौर पर बुवाये गये अनाजकी रोटी अकसर अच्छी नहीं बनती। सफेद मैदेकी रोटीका रिवाज शुरू होते ही औरतोंमें बाँझपन बढ़ने लगा है। आज ज़रूरत अिस बातकी है कि हम फिर जल्दी-से-जल्दी पूरे गेहूँकी यानी चोकरवाले आटेकी रोटी खाना शुरू कर दें।

"फ़सलके खड़े डठलोंको हलकर फिरसे ज़मीनमें मिलानेके बजाय अुन्हें जला देना किसानके लिअे सबसे बड़ा गुनाह है।

"कअी किसान सालमें पाँच महीने गायोंको पास-पास बाँधकर घरके भीतर ही रखते हैं, और अुन्हें खली वग़ैरा अैसी बनावटी खुराक खिलाते हैं, जिसे वे आसानीसे पचा नहीं सकतीं, और फिर अुम्मीद करते हैं कि वे तन्दुरुस्त बनी रहें!"

नअी दिल्ली, १४-१०-'४६ **प्यारेलाल**

हरिजनसेवक १०-११-१९४६

१००

फोर्ड ट्रैक्टर बनाम हल

दक्षिण अफ्रीकासे 'कारापारा' जहाज पूर्वी अफ्रीकाके तमाम बन्दरगाहों पर होता हुआ, मत्तगयन्द गतिसे सागरकी गर्वीली लहरोंको चीरता हुआ चला जा रहा था। लोरेंजो मारक्विस बन्दर पर अेक अमेरिकन व्यापारी जहाज पर सवार हुआ। अुसे बादको हिन्दुस्तान आना था, पर अभी तो केनिया और युगाण्डामें फोर्ड कम्पनीके ट्रैक्टर बेचनेके लिअे अुसे मोम्बासा बन्दर पर अुतर जाना था।

वहाँसे अुसका विचार बम्बअी जाने और फिर देशके दूसरे छोर कलकत्ते जाकर वहाँ फोर्डके ट्रैक्टर बेचनेका था।

बेरा और मोंजाबीकके दरमियान हम लोगोंमें यों ही कुछ बातचीत छिड़ गअी, और जहाजके मोम्बासा पहुँचने तक तो बड़े मजेकी बातें हुअीं।

मैंने अुससे पूछा: "क्यों भाअी, आप कलकत्तेमें अपने ट्रैक्टर किस कीमत पर बेचेंगे?"

वह मुझसे कुछ गर्वके साथ कहने लगा कि "बैलोंसे चलनेवाले मामूली हलको जितनी ज़मीन जोतनेमें अेक हफ्ता लगता है, अुतनी ज़मीनको हमारा ट्रैक्टर आधे दिनमें जोत सकता है।"

मैंने कहा: "ठीक, मुझे यह सब मालूम है। मुझे खुद अेक बार बाढ़वाले हिस्सेमें ज़मीनकी जुताअी करनेके लिअे आपके फोर्ड ट्रैक्टरसे काम लेना पड़ा था। वहाँके ढोर या तो करीब करीब सब डूब गये थे या मर-मरा गये थे और ज़मीन सूर्यकी प्रचंड धूपसे कड़क होती जाती थी।"

यह सुनकर अुस अमेरिकन व्यापारीको बड़ी खुशी हुअी। "वह जगह कहाँ है" — यह अुसने मुझसे बड़ी अधीरतासे पूछा। अुसे अैसी आशा थी कि वहाँ जाकर अुसे ट्रैक्टरोंके कुछ आर्डर मिल सकते हैं।

अुत्तरी बंगालके अुस गाँवका नाम तो मैंने अुसे बता दिया। पर साथ ही वह सारा किस्सा भी अुसे बतला दिया कि अुस मौके पर वहाँकी जमीनको ट्रैक्टरसे क्यों जोतना पड़ा। संतहार और पातीसरके बीचमें यह जगह लगभग १५०० वर्गमील थी। वहाँ मैं काम करता था। कहीं वह ज़मीन और भी पत्थरसी कड़ी न हो जाय, अिसलिअे अुसे तुरन्त जोत डालनेकी ज़रूरत थी। अेक दिन सवेरे, थोड़ा पानी बरस जानेके बाद, मैं बाहर निकला। ज़मीन अब जोतने लायक हो गअी थी। अेक अूँचीसी जगह पर जाकर मैंने आसपास मीलों तक जब नजर फैलाअी, तो मैं देखता क्या हूँ कि वहाँ तो कुल जमा ६ हल ही चल रहे हैं!

लोगोंसे मैंने पूछा: "यह क्या बात है?" तो अुन्होंने कहा, "बाढ़से हमारा अितना नुकसान हुआ है कि कुछ पूछिये नहीं, अिने-गिने ये थोड़ेसे ही बैल बचे हैं।"

यह स्थिति मुझे निराशाजनक मालूम हुअी। तेज धूपमें ज़मीनका यह हाल था कि वह कड़क होती ही जा रही थी। अिसलिअे जुताअीका काम जितनी जल्दी हो जाये अुतना अच्छा था।

अिसलिअे हमने कलकत्तेसे अेक फोर्ड ट्रैक्टर मँगाया, और हलके बजाय अुसे वहाँ चलवाने लगे। अुसने अूपरकी अुस कड़ी काली मिट्टीको — सतहसे बहुत नीचे जानेकी ज़रूरत नहीं पड़ी — अेक ही झपाटेमें काट कूटकर तोड़ दिया। देखते देखते पचासों बीघे ज़मीन जुत गअी। अिस नये ट्रैक्टर-दैत्यकी यह भीषण लीला देखनेके लिअे वहाँ झुण्डके झुण्ड लोग जमा हो गये। पर खुद अुनके करनेके लिअे तो अब कोअी काम वहाँ नहीं था, क्योंकि ट्रैक्टर चलानेमें तो सिर्फ दो ही आदमियोंकी ज़रूरत थी।

फोर्ड ट्रैक्टरके अिस प्रचंड पराक्रमकी कथा सुनकर अुस व्यापारीकी आँखें चमक अुठीं। अुसने मेरा अंतिम वाक्य शायद ही ध्यानसे सुना हो।

लेकिन जब मैंने अुसे अिसके बादकी कहानी सुनाअी, तो वह अुसे बहुत ध्यान देकर सुनने लगा और कुछ विचारमें पड़ गया। मैंने

अुससे कहा कि अुस ज़िलेके ज़मींदार मुझसे कहने लगे कि अिस ट्रैक्टरको आप हमारे पास छोड़ जावें। अिसे कलकत्ता वापस भेजनेकी ज़रूरत नहीं। हम लोग अिसे काममें लायेंगे।

मैंने कहा: "नहीं जी, यह नहीं हो सकता। अिसका अुपयोग तो बस बाढ़की आफतके समयके ही लिअे था। मगर जब तुम्हारे बैल फिरसे जुट जायँगे और समय अच्छा आ जायगा, तब . . ."

"तब क्या?" व्यापारीने अधीर होकर पूछा।

मैंने कहा: "फिर क्या काम? **फोर्ड ट्रैक्टरका मेरे लिअे फिर काम ही क्या रह जाता है?** आपके जो कुटुम्ब खेती-बाड़ीका काम कर रहे हैं, अुनमेंसे कम-से-कम ५० तो बेकार हो ही जायँगे और अुन्हें कलकत्ते जाकर जूटकी मिलोंमें मज़दूरी करनी पड़ेगी। अिससे भी बुरी दशाकी क्या आप कल्पना कर सकते हैं?"

यह अंतिम प्रश्न जब मैंने अुस व्यापारीसे पूछा, तब अकेले हमीं दोनों लोग डेक पर बैठे हुअे थे। वह अुस प्रशान्त नीलवर्ण समुद्रकी ओर देख रहा था, जिसके वक्षस्थल पर धीरे-धीरे हमारा जहाज चला जा रहा था। जहाजके चलनेसे पानीमें जो शब्द होता था, अुसके अतिरिक्त चारों ओर वहाँ शान्ति ही शान्ति थी। यह समय भरोसेके साथ खुले दिलसे बातें करनेका था, अिसलिअे अुसने मेरी तरफ़ मुड़कर कहा:

"जी, नहीं! मेरे भी हृदय है। और मुझे आपके सामने यह कबूल करना चाहिये कि अभी कुछ ही दिन हुअे कि मैं चीनमें यांग-टिसीक्यांग नदीकी घाटीकी तरफ़ गया था। वहाँ मैंने चीनके ग्राम-वासियोंको जब धान बोते हुअे देखा, तब मुझे यह लगा कि यहाँ तो फोर्ड ट्रैक्टर लाना अेक तरहका गुनाह है।"

मैंने कहा: "गंगाके किनारे भी, भाअी, यांगटिसीक्यांगकी घाटीकी ही तरह खूब घनी आबादी है। तब आप क्या वहाँ अपने ट्रैक्टर दाखिल करनेको तैयार हैं?"

अुसने कहा : "नहीं, आपने मुझे कायल कर दिया है। आपकी बात मेरे गले अुतर गअी है। मैं रूसमें व्यापारके सिलसिलेमें काफ़ी घूम फिर आया हूँ, ठीक साअिबेरिया तक गया था। वहाँकी बात ही अलग है। वहाँ आबादी अितनी कम है कि ज़मीन या तो अधजुती पड़ी रहती है या बिलकुल ही नहीं जुतती। पर चीन और हिन्दुस्तानकी नदियोंके किनारों पर हाथसे जो खेती होती है, अुसका जोड़ तो दुनियामें कहीं है ही नहीं। जो लोग सदियोंसे खेती करते हुअे अपनी गुज़र करते चले आ रहे हैं, अुन्हें अुनके कार्यक्षेत्रसे निकाल बाहर कर देना सचमुच अेक भारी गुनाह है।"

सी० अेफ़० अेन्ड्रूज़

हरिजन, ४-१-१९३५

१०१

जमीनका अूसर बनना

मिसीसिपी और ओहियोकी घाटियोंमें जो भयंकर बाढ़ आअी है, अुससे अमेरिकाको लगभग १०० करोड़ पौंडका नुकसान हुआ होगा। यदि खेतीकी बड़ी बड़ी मशीनोंसे वहाँकी ज़मीनका बेरहमीसे शोषण न किया जाता और काग़ज़की मिलोंके लिअे लकड़ीका 'माबा' पूरा करनेके लिअे जंगली पेड़ोंको अुतनी ही बेरहमीसे काटा नहीं जाता, तो यह भयंकर बाढ़ रोकी जा सकती थी। आधुनिक सभ्यताने अितने बड़े पैमाने पर विध्वंस (vandalism) चलाया है कि अुसके सामने पुराने ज़मानेमें बर्बर लोगोंकी फौजों द्वारा किया हुआ विध्वंस (जिससे vandal — विध्वंसक शब्द निकला है) बिलकुल फीका पड़ जाता है। अिस बड़ी बातका महत्त्व बहुत धीरे-धीरे ही लोगोंकी समझमें आ रहा है। यदि दीर्घ दृष्टिसे देखें तो हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रममें जिन राजनैतिक

और सामाजिक कामोंको हम पहला स्थान देते हैं, अुनमें कअियोंसे अिसका महत्त्व बहुत ज्यादा है।

यह सत्य मेरी समझमें अेक महान कष्टके अनुभवके बाद आया, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। अुस कष्टका कारण था महानदीके डेल्टामें आनेवाली बाढ़, जिसने सारे अुड़ीसाको अुजाड़ दिया था। अुस समयकी हमारी हरअेक जाँच अुस भयंकर नुकसानकी तरफ ही अिशारा करती थी, जो महानदी और अुसकी सहायक नदियोंके अूपरी हिस्सोंमें ज़मीनको ढँके रहनेवाले जंगली पेड़ोंको काटनेसे हुआ था। ये जंगली पेड़ ज़रूरतसे ज्यादा पानीको तब तक रोके रहते थे, जब तक वह ज़मीनमें नहीं अुतर जाता था। अिससे मैंने अेक हमेशा याद रहनेवाला यह सबक सीखा है कि भविष्यकी सभी बाढ़ोंको रोकनेका अेकमात्र सच्चा अिलाज यह है कि अेक कंज़र्वेशन बोर्ड महानदीके पुराने बहावके आसपासके जंगलोंकी रक्षा करे। वह सिर्फ नदीके डेल्टाके बहावके ही नहीं, बल्कि अुसके अूपरी हिस्सेके बहावके आसपासवाले जंगलोंको भी अुनकी जगह बनाये रखनेकी कोशिश करे।

मि० जी० वी० जेक्स १८ फरवरीके 'दि स्पेक्टेटर' में छपे अपने बहुत महत्त्वपूर्ण लेखमें कहते हैं कि ज़मीनकी बेकस होकर अूसर बननेकी क्रिया, जो बड़ी बड़ी बाढ़ोंको जन्म देती है, सिर्फ अमेरिकामें ही नहीं बल्कि दक्षिण और पूर्व अफ्रीका, हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलियामें भी हो रही है। वे अिसे आधुनिक सभ्यताके खिलाफ प्रकृतिका विद्रोह कहते हैं। या तो आखिरमें प्रकृतिकी पूर्ण विजय होगी और धरतीका बहुत बड़ा भाग अूसर बन जायगा, या फिर आदमी अपनी बरबादीकी आदतोंको सुधारना और दबाना सीख जायगा। वे लिखते हैं: "ज़मीनके अूसर बननेकी क्रिया मनुष्यको धोखेमें डालनेवाली होती है। अक्सर वह ज़मीनके अितने ज्यादा बिगड़ जाने पर ही ध्यानमें आती है, जब अुसे सुधारकर फिरसे खेतीके लायक बनाना असंभव हो जाता है।" ज़मीनके बिगड़नेसे जो तबाही होती है, अुसे देखे बिना विश्वास नहीं हो सकता।

जिन देशोंकी ज़मीन सबसे ज्यादा बिगड़ी है, अुनके लिअे अेक यही रास्ता है कि वे ज़मीनको अिस बरबादीसे छुड़ानेवाली अेक संपूर्ण वैज्ञानिक योजना बनावें।" वे भारतको अैसा ही अेक देश मानते हैं। वे आगे कहते हैं: "मनुष्यने अुस समृद्धिके सपने देखे हैं, जिसमें अूँचे अुड़नेवाले विमानों, स्वास्थ्यप्रद और साफ कपड़ों और गगनचुम्बी अिमारतोंका बोलबाला हो। लेकिन वर्तमान लक्षण यह बताते हैं कि सबसे पहली सच्ची वैज्ञानिक सभ्यताका आधार ज्यादा सादी चीज़ें होंगी, जैसे छोटे-छोटे मकान, अुगाये हुअे जंगल, नदियोंके बाँध और सबसे ज्यादा घास-चारेकी सँभाल और सुधार।

शान्तिनिकेतनमें यह देखकर हमें बड़ी चिन्ता हुअी है कि ज़मीनका यह बिगाड़ तेज़ीसे हमारे आश्रमके पास पहुँच रहा है। पिछले नवम्बरमें जब मैं रोज वर्धासे सेवाग्रामकी यात्रा करता था, तब वहाँके खुले मैदानमें भी अिस बिगाड़का असर साफ दिखाअी दिया था। जाहिर है कि बरसातका हर मौसम अच्छी ज़मीनको धो कर अुसे बिगाड़ देता है। सचमुच भारतमें यह खोजबीनका अेक अुपयोगी क्षेत्र है, जो ज़मीनकी पूरी खोजबीन करनेमें प्रेम रखने वालेका रास्ता देख रहा है। अिस बारेमें सबसे पहला और शायद सबसे बड़ा सबक यही होगा कि सादे जीवनकी तरफ लौटने और हमारे रोजके भोजनके लिअे ज़मीनसे लिये जानेवाले रासायनिक पदार्थोंको वापस ज़मीनमें डालनेसे ही हम प्रकृतिके साथ समन्वय कायम करके रह सकते हैं और अुसके लाभदायक काममें रुकावट डालनेके बजाय मदद दे सकते हैं।

सी० अेफ० अेन्ड्रूज़

हरिजन, २७-३-१९३७

१०२
खाद और ढोरोंकी खुराकके रूपमें नमक

नमक-करकी वजहसे जिस तरह मनुष्योंके खानेमें नमककी मात्रा कम हो गअी, अुसी तरह खेतीके लिअे खादके रूपमें बरते जानेवाले नमककी मात्रा भी बहुत ही घट गअी ।

सरकारने मि० रॉबर्टसनको कोयम्बतूरमें खेतीकी हालतकी छान-बीन करके अुसपर अपनी रिपोर्ट देनेका काम सौंपा था । वे अपनी रिपोर्टमें कहते हैं :

> "पेड़-पौधोंके विकासके लिअे नमकका पुराने ज़मानेसे अुपयोग होता आ रहा है । देशके भीतरी हिस्सोंमें खादकी शकलमें नमक बहुत बेश क़ीमती चीज़ है . . . . प्रत्यक्ष प्रयोगों द्वारा यह बात साबित हो चुकी है कि कुछ समुद्रतटोंकी ज़मीनोंको हर साल फ़ी अेकड़ ३०० पौण्ड नमक हवाके ज़रिये मिल जाता है । चूनेकी या दूसरी खादोंके साथ नमक मददगार खादके रूपमें आम तौर पर बरता जाता है । विलायतमें 'मैंगोल्ड सर्जेल' नामक चुकन्दरकी जातकी वनस्पतिकी खेतीके लिअे तैयार की जानेवाली ज़मीनमें दूसरी खादोंके साथ अेकड़ पीछे ६०० पौण्ड तक नमक डाला जाता है और चरागाह वाली ज़मीन पर १०० पौण्ड नाअिट्रेट ऑफ सोडाके साथ २०० पौण्ड नमक अूपर बुरकनेके लिअे बरता जाता है । चरागाहवाली ज़मीनकी घासको सुधारनेके लिअे और अुसको नुक़सान पहुँचानेवाले कीड़ोंको मारनेके लिअे कभी-कभी काफी बड़ी मात्रामें नमक छिड़का जाता है ।"

अिंग्लैण्डकी नमक-महसूल सिलेक्ट कमेटीके सामने गवाही देते हुअे सन् १८८८ में बैरोनेट् सर थॉमस बरनार्डने अिस चीज़की ताअीद की थी । चेस्टर परगनेके मि० वेबिनके अेक पत्रका हवाला देते हुअे अुन्होंने

बताया है कि अेक खेतमें, जिसके अन्दर फ़सलको नुकसान पहुँचानेवाली 'कोल्टफुट' नामकी और वैसी दूसरी जंगली घास बहुत बढ़ गअी थी, नमकके कारखानेकी राख छिड़कनेका प्रयोग किया गया गया था। अुसका जो नतीजा हुआ अुसके बारेमें लिखते हुअे वे कहते हैं:

> "अिस प्रयोगकी वजहसे खेतके अन्दरकी जंगली घास तो बिलकुल साफ़ हो ही गअी, साथ ही अनाजकी फ़सल पर भी अिसका बहुत बड़ा असर पड़ा। खेतके जिस हिस्सेमें यह खाद डाली गअी थी, अुसमें मामूलीसे करीब तिगुनी फ़सल पैदा हुअी और दाना भी बहुत बढ़िया पड़ा। सच मानिये कि मैंने अिसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं की है।"

नीचे खेतीके लिअे दिये गये हल्की जातके नमकके कुछ आँकड़े दिये जाते हैं, जिनसे पता चलेगा कि किस तरह हमारी खेतीको अिस ज़रूरी खादसे वंचित रखा जाता है:

१९१४–१९१५	२,६४४ मन
१९१५–१९१६	२,६५५ मन
१९१८–१९१९	कमीकी वजहसे नहीं दिया गया
१९१९–१९२०	१७५ मन
१९२०–१९२१	४०२ मन
१९२२–१९२३	७७२ मन
१९२५–१९२६	२,४०७ मन

मवेशियोंमें नमककी भूख कभी-कभी अितनी ज़्यादा पाअी जाती है कि अुनको अकसर राहमें पड़ा हुआ अिन्सानों या जानवरोंका मैला खाना पड़ता है।

नमक पर लिखी गअी अपनी छोटी-सी किताबमें मि० रैटन लिखते हैं: "मवेशियोंकी अिस गैरमामूली भूखको देखकर मुझको बड़ा अचम्भा हुआ, लेकिन बादमें जब मुझे पता चला कि अिन मवेशियोंको हल्की जातकी घास पर निभना पड़ता है और न तो अुन्हें अपनी कुदरती खुराकमें

कोअी नमक मिलता है और न मामूली नमक ही खानेको मिल पाता है, तो मेरा अचम्भा मिट गया। क्योंकि अिस तरहके मैलेमें नमक काफ़ी मिक़दारमें होता है और कुछमें तो बहुत ज्यादा पाया जाता है। लेकिन मवेशियोंकी अिस आदतके नतीजे बहुत ही खतरनाक होते हैं।"

आगे चलकर मि० रैटनने बताया है कि अिस तरह अिसकी वजहसे मवेशियोंमें 'हाअिटिड' नामकी बीमारी पैदा होती है। अुन्होंने यह भी लिखा है कि अिस बीमारीसे मरनेवाले सैकड़ों ढोरोंको किस तरह काफ़ी मात्रामें नमक खिलाकर बचाया गया है। "अिसका यह मतलब नहीं है कि नमक अपने आपमें कोअी दवा है, लेकिन अुसमें बीमारीको रोकनेकी ताकत है।"

सन् १८३६ में ब्रिटिश हिन्दुस्तानकी नमक पर बैठाअी गअी सिलेक्ट कमेटीके सामने गवाही देते हुअे बंगाल मेडिकल सर्विसके मि० जॉन क्रॉफर्डने कहा था कि देशमें नमककी यह कमी नमक-करकी वजहसे ही है :

> "कस्टम्स-बोर्ड बंगालमें नमककी अधिक खपतके खिलाफ़ हमेशासे यह दलील देता आया है कि नमक शरीरके पोषणके सिवा और किसी काममें न तो बरता जाता है और न कभी बरता जायगा। असलमें यह बात बिलकुल ठीक नहीं है। आजकी हालत पर अिसे घटाने पर भी यह सही नहीं निकलेगी। बहुत-सा नमक (नाअिट्रेट ऑफ सोडा नहीं, क्योंकि अुस पर बहुत भारी कर बैठा हुआ है और अिसलिअे वह अिस काममें नहीं लाया जा सकता, लेकिन दूसरी तरहका अशुद्ध और बिना महसूल वाला नमक) घोड़ोंको खिलाया जाता है; सींगोंवाले दूसरे मवेशियों और भेड़ोंको खिलाया जाता है। अगर लोग खिला सकें तो अिसमें शक नहीं कि वे अपने मवेशियोंको शुद्ध नमक भी बहुत बड़ी मात्रामें खिलाना पसंद करेंगे।"

प्यारेलाल

हरिजनसेवक, १९-५-१९४६

१०३

बैलके हक़में

देशकी आर्थिक व्यवस्थामें नअी योजनाके नामसे जो विचार फैल रहे हैं, अुनकी वजहसे हमारी खेतीके तरीक़ोंमें और आमद-रफ़्तके जरियोंमें जहाँ-तहाँ मशीनोंको दाखिल करनेकी हवा चल पड़ी है। यानी अगर नअी योनजाओंके हिमायतियोंकी मन्शा पूरी हो सके, तो बैलोंका देशमें नाम-निशान भी न रह जाये। अिसलिअे यह ज़रूरी हो गया है कि हम अेक बार फिर अुन सब बातोंको सोच लें, जो हमारे यहाँ बैलके हक़में कही जा सकती हैं।

पहली बात यह है कि हमारे देशमें जितना हो सके अुतना दूध पैदा करना ज़रूरी है। अिसलिअे हमें गायोंकी ज़रूरत तो रहेगी ही। जब गायें रहेंगी, तो अुनके साथ बैल भी होंगे। बैलोंके लिअे पूरे कामकी जरूरत भी रहेगी। अुन्हें पूरा काम तभी मिल सकता है, जब हम खेतीमें हलके साथ, सवारियोंमें गाड़ीके साथ और अुद्योगमें कोल्हूके साथ बैलको जोड़े रहें। अगर हम अिन सब तरीक़ोंसे बैलका अुपयोग नहीं करेंगे, तो हमारी हालत पश्चिमी देशोंके जैसी हो जायगी। वहाँ गायोंकी नसलको बनाये रखनेके लिअे जितने साँड़ोंकी ज़रूरत होती है, सिर्फ अुतने ही बछड़ोंको पाल-पोसकर बड़ा किया जाता है और बाकी सबको कसाअीके हवाले कर देना पड़ता है।

मशीनके जरिये बड़े पैमाने पर की जानेवाली खेतीमें बरता जानेवाला ट्रैक्टर अेक मशीन है, और बैलमें यद्यपि अुसके जितनी ताकत नहीं है, तो भी वह अेक मशीन ही है। यहाँ यह याद रखना चाहिये कि बैल अेक जीती-जागती मशीन है। वह जानदार है। अुसके जैसे सीधे-सादे जानवरोंके साथ मनुष्योंके सम्बन्ध मानव सभ्यताकी कूतमें अेक खास महत्त्व रखते हैं और यह बात साबित भी हो चुकी है। पश्चिमी संस्कृतिमें

जो खास बुराअियाँ पाअी जाती हैं, अुनमें बार-बार होनेवाली खूँखार लड़ाअियाँ भी अेक हैं। हम देखते है कि अिन लड़ाअियोंके दौरानमें अिन्सान अपनी अिन्सानियतको भूलकर हैवान या जानवर बन जाता है। पश्चिम वालोंने जानदारोंकी ताक़तका अुपयोग करना छोड़कर अुनकी जगह जड़ और बेजान मशीनोंको जिस तरह कायम किया है, वही अिस सारी बुराअीकी जड़ हो, तो अिसमें अचंम्भा क्या?

यह तो अिन्सानियतकी भावना पर रची गअी दलील हुअी। लेकिन अिसे आर्थिक दलीलका सहारा देकर मज़बूत बनाना ज़रूरी है। अिसलिअे अब हम आर्थिक दलीलों पर गौर करें। अिसके लिअे हम श्री अेन० जी० आपटेकी 'थॉट्स अेन्ड वर्क अबाअुट विलेजेस' (देहातके काम और देहातके बारेमें विचार) नामकी, समर्थ भारत प्रेसके श्री सरदेसाअी द्वारा पूनासे निकाली हुअी, किताबके 'अिकॉनॉमिक्स ऑफ दि बुलक' (बैलका अर्थशास्त्र) नामवाले हिस्सेका खुलकर अुपयोग करेंगे।

बैल सिर्फ़ जानदार ट्रैक्टर ही नहीं, बल्कि खादका अेक जीता-जागता कारखाना भी है, जो हमें गोठमेंसे मिलनेवाली बेश क़ीमती खाद देता है। यह खाद ज़मीनको नाअिट्रोजन नामकी अेक चीज़ देती है, जिसकी वजहसे ज़मीनके दानों या ज़र्रोंके बीच कुछ फ़ासला रहने लगता है, और पानीको पकड़े रखनेकी अुसकी ताक़त बढ़ती है। अुसकी बदौलत ज़मीनमें नमी और हवा दोनों काफ़ी मात्रामें बनी रहती हैं। वनस्पतिके पोषण और अुसकी बाढ़के लिअे ये तीनों चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं। "ज़मीनको बढ़िया बनानेवाले अलग-अलग तत्त्वोंको अिकट्ठा करके अुनकी तेज़ खाद तैयार की जाय और वह ज़मीनमें कितनी ही क्यों न डाली जाय, तो भी अगर अुससे हवा और पानीको जज़्ब करनेकी अुसकी ताक़त नहीं बढ़ती, तो अुस खादसे कोअी फायदा नहीं होता।"

जैसा कि अिन पन्नोंमें पहले लिखा जा चुका है, बनावटी खाद बिलकुल शापरूप है। अिसके सिवा, सन जैसे दो दालोंकी जातके पौधोंको थोड़ा बढ़ने देकर अुन्हें हरे के हरे हलसे ज़मीनमें मिलाकर हरी

खाद देनेका रिवाज भी हमारे यहाँ मौजूद है। लेकिन कुल मिलाकर गोठसे मिलनेवाली खादके मुक़ाबले यह हरी खाद घटिया दरजेकी होती है। अिसकी अेक वजह यह है कि बीज बोनेके समयसे लेकर अुगे हुअे पौधोंको ज़मीनमें मिलाने और अुनके सड़ने लगने तक ज़मीनका दूसरा कोअी अुपयोग नहीं किया जा सकता; और न वह मवेशियोंको खिलानेके काम ही आती है। अिसके खिलाफ़ बैल बारहों महीने काम देते हैं और खुद जो घास वगैरा चरते हैं, अुसे गोबर वगैराके रूपमें हमको लौटा देते हैं। गोबर वगैराकी यह खाद ज़मीनमें आसानीसे घुल जाती है और अेक खास बात यह होती है कि खुराककी तरह खाअी गअी चीज़ोंको बदलनेका जो काम जानदारोंके अन्दर होता रहता है, अुसकी वजहसे सम्भव यह है कि अुसमें नाअिट्रोजन ज्यादा मात्रामें पैदा होता हो।

घासके जरिये बैल नाअिट्रोजनके जिस तत्त्वको अपने पेटमें डालता है, अुसका बहुतसा हिस्सा अुसके गोबरसे हमको वापस मिल जाता है, क्योंकि काम करते हुअे बैलके शरीरमें सिर्फ़ कारबोहाअिड्रेटवाली चीज़ोंका ही अुपयोग होता है। खादके रूपमें ये कारबोहाअिड्रेट ज्यादा काम नहीं देते, क्योंकि अुगती हुअी फ़सलके लिअे जितने कारबोहाअिड्रेटकी ज़रूरत होती है, अुतना बढ़ते हुअे पौधे हवामेंसे ले लेते हैं, अिसलिअे ज़मीनके अन्दरसे अुसे लेनेकी ज़रूरत नहीं पड़ती। हरे पौधोंको ज़मीनमें मिला देनेसे जो ताक़त बेकार खर्च होती है, अुसका बैल अपनी देहके ज़रिये पूरा-पूरा अुपयोग करता है। अिसके अलावा, गोठसे मिलनेवाली गोबर वगैराकी खाद हरी खादके मुक़ाबले ज़मीनको ज्यादा अच्छी खुराक पहुँचाती है, क्योंकि जब वह जानवरके बदनमेंसे गुज़रती है, तब घास-चारेके रूपमें वह जिन चीज़ोंको अपने अन्दर पहुँचाता है, अुनको शरीरके अन्दरके रस हाज़मेके लिअे अलग-अलग कर डालते हैं।

मशीनोंके मुक़ाबले बैल सिर्फ़ अिसीलिअे बेहतर नहीं है कि वह खेतीको अुपजाअू बनानेवाली बढ़िया खाद देता है, बल्कि हमें यह भी याद रखना चाहिये कि बैल जितने तरहके काम कर सकता है, अुन तमाम

कामोंको करनेवाली कोअी अेक मशीन बनाना असम्भव है। बैल तेज़ीसे भी काम कर सकता है और धीरे-धीरे भी। यह भी नहीं कि वह सिर्फ हलकी मददसे ज़मीन जोतनेके ही काम आता हो। वह तो दावन चलानेके यानी अनाजके दानोंको बालों या भुट्टोंसे अलग करनेके काम भी आता है और तैयार गल्लेको बाज़ार तक ढोकर ले जानेके लिअे भी वह गाड़ीमें जोता जा सकता है। अिन सब कामोंके साथ वह खली, भूसी, पुआल वगैरा अैसी चीज़ें खाता है, जिनमेंसे आदमी अपने मतलबका दाना और तेल वगैरा निकाल चुकता है। बैलकी अेक जोड़ीकी क़ीमत ज्यादा-से-ज्यादा कुछ सौ रुपये होती है, लेकिन बैल जितने काम कर सकता है अुन तमाम कामोंको मशीनोंसे करना हो, तो किसानको कमसे कम अेक ऑअिल अेन्जिन, अेक मोटर लॉरी, अेक ट्रैक्टर, मोटरसे चलनेवाले छोटे-छोटे पहटे और अैसी न जाने कितनी चीज़ें खरीदनी होंगी और अिन सबकी क़ीमत बैलकी क़ीमतसे कितनी ज्यादा होगी, भगवान ही जाने! अिसके सिवा, अपनी मशीनोंको चलानेके लिअे किसानको बतौर अींधनके क्रूड ऑअिल या पेट्रोल खरीदना होगा, जो न किसानके खेतमें पैदा होता है, न देशमें कहीं मिलता है। यह भी अेक सोचनेकी बात है।

खेतमें खास तौर पर हल चलाने, हेंगा या पहटा फेरने, और बोने वगैराके काम होते हैं। अिन सब कामोंकी वजहसे बैलको सालमें कुल तीनसे चार महीनोंका काम मिलता है। बाक़ी समयमें अुसका अुपयोग माल ढोने, लोगोंको अेक जगहसे दूसरी जगह ले जाने और तेल वगैरा पेरनेमें किया जा सकता है, और किया जाना चाहिये। बैल ये सब काम कर सकते हैं। लेकिन मशीनें, जो सिर्फ अपना ही अपना काम कर सकती हैं, खेतीका काम खतम होनेके बाद बाक़ीके लम्बे अरसे तक बेकार ही पड़ी रहती हैं।

मशीनोंसे तेल पेरनेमें अूपर अूपरसे फ़ायदा नज़र आता है, लेकिन वह दूसरे तरीक़ेसे खतम हो जाता है, क्योंकि बेकार पड़ी रहनेवाली मशीनोंसे किसानोंको और किसी तरहका कोअी बदला नहीं मिलता।

श्री आपटेकी क़ीमती और अध्ययनपूर्ण किताबसे नीचेकी पंक्तियाँ देकर हम बैलकी अपनी हिमायत पूरी करेंगे :

> "मशीनोंको हम तभी अपने अुपयोगमें लाना शुरू करें, जब अिन्सानों और जानदारोंके रूपमें जो ताक़त हमारे पास मौजूद है, अुसको पूरा-पूरा काम मिल जाय। आज हमारे यहाँ अिस ताक़तका पूरा अुपयोग नहीं होता। अिसलिअे मशीनें दाखिल करनेकी यहाँ अभी कोअी ज़रूरत नहीं।"

वालजी गोविन्दजी देसाअी

हरिजनसेवक २-६-१९४६

१०४

भारतमें द्वि-अर्थक ढोरोंका विकास

द्वि-अर्थक (dual-purpose) शब्दका साधारण मतलब ढोरोंकी अुन नसलोंसे है, जो दो अलग-अलग काम कर सकें। भारतमें ढोरोंकी वे नसलें द्वि-अर्थक जातिकी कहलाती हैं, जिनके नर हल या भार खींचने व मादायें दूध देनेके काम आती हैं।

भारतमें द्वि-अर्थक जातिके ढोरोंका विकास करनेकी कोशिश ठीक है या नहीं, अिसके बारेमें ढोरोंके पालन-पोषण करनेवालोंके बीच अलबत्ता काफ़ी विवाद चला है। अिस प्रश्न पर हमारे ढोरोंकी अुन्नतिमें दिलचस्पी रखनेवाले और अुनको पालनेवाले सक्रिय ध्यान देते रहे हैं, पर १९२८ में कृषि सम्बन्धी रॉयल कमीशनकी रिपोर्टकी प्रसिद्धिसे यह प्रश्न बहुत आगे आ गया। तबसे विचारकी दो स्पष्ट धाराओंका विकास हुआ है। अिसलिअे सारे प्रश्नको सही ढंगसे देखनेके लिअे यहाँ पर दोनों तरफ़के दृष्टिकोणोंको संक्षेपमें दोहराना अधिक फ़ायदेमंद होगा।

जो लोग यह सोचते हैं कि भारतीय ढोरोंका दो अलग-अलग कामोंके लिअे नहीं, बल्कि किसी निश्चित कामके लिअे विकास किया जाय, अुनका कहना है :

१. कुल मिलाकर भारतीय ढोरोंका पालन-पोषण बहुत पुराने समयसे खास निश्चित अर्थके लिअे होता रहा है। सामान्य नियम यह है कि सबसे तेज़ और सबसे अच्छा काम करनेवाली नसलके ढोर अच्छा दूध देनेवाले नहीं होते; और दूधकी अधिक पैदावारका तेज़ काम करनेकी शक्तिके साथ मेल नहीं बैठता। अिस तरह दूध और बोझा या हल खींचनेके दोनों काम साथ-साथ नहीं हो सकते।

२. द्वि-अर्थक ढोरोंमें किसी भी अेक गुणके विकासको समय-समय पर दूसरे गुणका खयाल करनेके कारण रोकना पड़ता है। अिसलिअे मुक़ाबलेमें दूध देने और हल या भार खींचनेके दोनों गुणोंका झुकाव हमेशा नीची सतह पर रहनेका होता है। द्वि-अर्थक जातिके विकासकी किसी भी कोशिशमें अेक गुणको बढ़ानेके लिअे दूसरे गुणका बलिदान होगा। अिससे हमारे ढोरोंका स्तर घटकर औसत दर्जेके जानवरोंका हो जायेगा। अिस तरह कोअी भी गुण अपने सबसे अच्छे रूपमें भी अपर्याप्त ही रहेगा। अिसलिअे अुत्तम गुणवाले ढोरोंके विकासके लिअे निश्चित काम देनेवाले ढोरोंका पालन करना ज़रूरी होगा।

३. यदि केवल अेक ही गुण पर लक्ष्य रखा जाय तो पालन-पोषणकी दृष्टिसे, बहुत अूँचे दर्जेके हल और भार खींचने वाले या डेरीके लायक ढोरोंके अुत्पादनमें बहुत तेज़ीसे अुन्नति होगी। वंशशास्त्रकी दृष्टिसे भी दो या अधिक गुणों वाले ढोरोंको अेक ही समयमें सफलतापूर्वक अुत्पन्न करना व बढ़ाना बहुत मुश्किल है, फिर भले ही अुन गुणोंमें आपसी विरोध न भी हो। नसलके गुणोंको स्पष्ट रूपसे तय कर देनेका नतीजा हमेशा अिच्छित गुणोंका

निश्चित रूपमें शीघ्र विकास होनेके रूपमें आया है। अेक ही मुख्य गुण पर केन्द्रित हुअे बिना अूँचे स्तरकी तरफ बढ़ना संभव नहीं है।

४. भारतमें खेती और बोझा ढोनेके लिअे सबसे ज़रूरी चीज़ है बैल। अिस जातिके ढोरोंसे ज्यादा दूध पानेकी कोशिशसे अुन गुणोंके नष्ट हो जानेका खतरा रहता है, जिनके कारण वे पहले अुम्दा काम करनेवाले माने जाते थे।

५. जो देश द्वि-अर्थक जातिके विकाससे अूँचा कोअी लक्ष्य नहीं रखते, वे अुन देशोंसे मुकाबला करनेकी कोअी आशा नहीं रख सकते, जहाँ विशेष गुणोंके विकास पर ही ज़ोर दिया जाता है। अिसलिअे खास कामके लिअे बढ़ाअी जानेवाली नसलों पर बुरा असर डाले, अैसे हरअेक कदमको अुठानेसे बचना चाहिये। दूसरी तरफ, जो लोग भारतीय ढोरोंकी द्वि-अर्थक जातिके विकासके हामी हैं, अुनकी बातका सार नीचे दिया जाता है:

१. भारतमें ढोरोंकी संख्या पहलेसे ही काफी है। यदि भिन्न-भिन्न गुणोंके लिअे अलग अलग ढोरोंके विकासकी कोशिश की गअी, तो अुनकी संख्या और ज्यादा बढ़ जायगी। अिस तरह अेक किसानको अलग-अलग कामोंके लिअे अलग-अलग जानवर रखने पड़ेंगे। जैसे खेतीके लायक 'नर' बच्चे पैदा करनेके लिअे अेक गाय और दूध आदिकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे दूसरी गाय। अिसका अर्थ यह हुआ कि आर्थिक दृष्टिसे ज़मीन पर जितने ढोर आसानीसे पल सकते हैं, अुनसे ज्यादा संख्यामें ढोर रखना ज़रूरी होगा।

२. भारतीय किसान अितना गरीब है कि अधिक ढोरोंको रखना अुसे नहीं पुसा सकता। अुसको अैसी गायकी ज़रूरत है, जो अुसके खेत पर होनेवाले खेतीके कामोंको करनेके लिअे अच्छा मज़बूत नर बच्चा पैदा कर सके और साथ साथ अुसके कुटुम्बकी ज़रूरतोंके लिअे काफी मात्रामें दूध दे सके। अिस तरह, वह ये दोनों काम कर सकनेवाला जानवर होना चाहिये।

३. औसतन, सब ढोरोंमें मिलाकर, पैदा होनेवाले आधे बछड़े नर होंगे और अुनमें से साँड़ बनने लायक तो बहुत ही थोड़े होंगे। अगर अलग अलग कामोंके लिअे अलग अलग नसलके जानवर रखे जायँ, तो दूध देनेवाली नसलोंके नर बछड़े मुकाबलेमें अुपयोगी नहीं होंगे—जैसा कि आजकल डेरीके लिअे अुत्तम मानी जानेवाली साहीवाल और लाल सिंधी (रेड सिंधी) जातिमें होता है—जबकि द्वि-अर्थक नसलके ढोरोंमें नर बछड़ोंको खेतीके लिअे पाला जा सकता है। अिस तरह भारतमें, जहाँ दूध देने और खेती करनेके दोनों गुणोंकी आवश्यकता है, मामूली किसानके लिअे द्वि-अर्थक जातिका जानवर खास कामके लिअे पाले हुअे जानवरसे अधिक फायदेमंद होता है।

अूपरके दृष्टिकोणों पर डाली हुअी सरसरी नज़र भी यह बतानेके लिअे काफी है कि दोनों तरफकी बातोंमें काफी सत्य है। सच पूछा जाय तो ये अेक ही तसवीरके दो पहलू हैं। मेरे लिअे तो यह समझना बहुत मुश्किल है कि खास कामोंके लिअे खास नसलोंके साथ साथ द्वि-अर्थक नसलें रखे बिना किसी देशमें पशुविकासका अुद्योग कैसे फल-फूल सकता है।

ग्रेट ब्रिटेन, कुल मिलाकर, अेक औद्योगिक देश है। फिर भी हमें अुस देशमें कुछ खास तरहकी नसलें और द्वि-अर्थक नसलें दोनों साथ-साथ देखनेको मिलती हैं। अैसी सभी जातियाँ साथ ही साथ पाअी जाती हैं और फलती-फूलती हैं। वहाँ खास कामोंके लिअे कुछ अुत्तमसे अुत्तम नसलें पाअी जाती हैं, और तब भी ज्यादातर नसलें द्वि-अर्थक जातिकी ही हैं—जैसे कि 'शोर्ट होर्न्स', 'डेक्सटर' और 'रेड पॉल्स'।

भारतमें दूध और खेतीके गुणोंको अेकत्रित करनेमें वे ही कठिनाअियाँ नहीं आती हैं। अिन दोनों जातियोंमें माँसपेशियाँ और शारीरिक चरबी काफी होती है और जो भोजन वे खाते और पचाते हैं, अुसे काम या दूधके रूपमें ज्यादातर वापस दे देते हैं। विलियम स्मिथने तो यहाँ तक

कहा है: "आप संभवतः सबसे अच्छा खेतीके लायक बैल सिर्फ अच्छी दूध देनेवाली गायसे ही पा सकते हैं। दूध पैदा करनेकी शक्ति ही मातृत्वका सबसे जोरदार सबूत है; और जितनी अच्छी और पूर्ण माँ होगी, अुतनी ही ताकतवर और तन्दुरुस्त अुसकी सन्तान होगी।" अलबत्ता, अिसपर चलनेमें थोड़ी सावधानी रखनेकी जरूरत है। मेरे अपने निरीक्षणोंसे मुझे लगता है कि हम अपनी कुछ खेतीके लायक नसलोंमें, अुनके काम करनेके गुणको हानि पहुँचाये बिना, काफी प्रमाणमें दूधकी मात्राको बढ़ा सकते हैं। पर हरअेक नसलके लिअे अेक सीमा है, जिससे ज्यादा किसी अेक गुणका दूसरे गुण पर बुरा असर डाले बिना हम विकास नहीं कर सकते। अिसलिअे कृषि सम्बन्धी रॉयल कमीशनने खेतीके लिअे अुपयोगी ढोर पैदा करनेके संबंधमें अेक आम नियम बताते हुअे कहा है कि "अधिक दूध देनेके गुणका विकास अितना ही करना चाहिये कि अुसका खेतीके लायक अच्छे ढोरोंमें आवश्यक गुण बनाये रखनेके साथ पूरा मेल बैठ सके।" वर्तमान नसलोंमें से हरअेक प्रदेशके लिअे अुपयोगी जाति या नसलोंका ठीक चुनाव करनेसे यह आसानीसे किया जा सकता है।

भारतमें खेतीके लायक कुछ बहुत अच्छी अच्छी नसलें हैं, जैसे कि हिसार, अमृतमहल, कांगायाम, नागोर और भगनारी। साहीवाल और लाल सिन्धी बहुत अच्छी दूध देनेवाली नसलें हैं। अिन दूध देनेवाली नसलोंके सम्बन्धमें अभी तकके किये हुअे कामसे यह दिखाया जा चुका है कि बहुत ज्यादा दूध देनेवाली देशी नसलें प्रमाणमें बहुत थोड़े सालोंमें पैदा की जा सकती हैं, जिनका दुनियाकी अच्छीसे अच्छी दूध देनेवाली नसलके साथ अच्छी तरह मुकाबला किया जा सकता है। पूसा और फीरोज़पुरकी साहीवाल नसलका काम अितना प्रसिद्ध है कि अुसे यहाँ देनेकी ज़रूरत नहीं मालूम होती। हमारे पास द्वि-अर्थक नसलें भी अच्छी अच्छी हैं, जैसे कि हरियाना, थारपारकर और गीर। हालमें ही हरियाना नसल पर किये गये प्रयोगने यह बताया है कि यद्यपि

वह मूलतः खेतीके लायक नसल है, फिर भी दूध देनेकी खास संभावनाअें भी अुसमें हैं। दूसरी तरफ यद्यपि गीर नसलकी कोअी कोअी गायें काफी अधिक मात्रामें दूध देनेकी शक्ति रखती हैं, फिर भी अुसके बैल ताकतवर और मज़बूत काम करनेवाले होते हैं। गीर बैल हरियाना बैलों जितने फुर्तीले और तेज भले ही न हों और हरियाना गायें गीर गायों जितना अधिक दूध भले ही न दे सकें, पर अिन दोनों नसलोंमें अुन दोनों विशेषताओंका मिश्रण है, जो औसत किसानके लिअे सचमुच ज़रूरी हैं। अैसे जानवरोंकी आर्थिक दृष्टिसे अेक खास कीमत है; और जिन प्रदेशोंमें वे पनप सकते हैं, वहाँ वे बहुत पसन्द किये जायँगे। अतः मेरी रायमें दूसरे सभी ढोर पालनेवाले देशोंकी तरह भारतमें भी विशेष कामकी और द्वि-अर्थक—दोनों प्रकारकी नसलोंके विकासके लिअे काफी गुंजाअिश है। जहाँ खास कामके लायक ढोरोंके विकासके लिअे चारे और दानेकी कुदरती सहूलियतें हों, वहाँके लिअे मैं खास किस्मोंकी सिफारिश करता हूँ; जब कि औसत किसानके लिअे, जो अितना गरीब है कि चारे-दानेकी कमी और सीमित साधनोंके कारण अिन विशेष जातियोंको पालनेमें असमर्थ है, द्वि-अर्थक जानवर ही सबसे ज्यादा अुपयोगी हैं।

लेख खतम करनेसे पहले मैं पाठकोंका ध्यान अिस हकीकतकी तरफ खींचना चाहता हूँ कि भारतमें गायोंकी बहुत बड़ी संख्या अैसी है जो न केवल दूध ही कम देती हैं, बल्कि अुनके बैल भी बहुत कमज़ोर होते हैं। यहाँ अुस कारणसे कोअी गलती नहीं होनी चाहिये। ये नसलें द्वि-अर्थक नहीं हैं, और अिसलिअे ढोरोंके विकासकी योजना बनाते समय द्वि-अर्थक नसलों और बिना-अर्थकी—बेकार—नसलोंमें हमेशा भेद किया जाना चाहिये। अैसे जानवरोंके लिअे खास ध्यान देनेकी आवश्यकता है और अच्छे सुधरे हुअे साँड़ोंके अुपयोगसे अुनकी जातिको सुधारनेके लिअे सभी संभवित अुपाय काममें लाये जाने चाहियें।

(सर) दातारसिंह

हरिजन, २३-६-१९४६

१०५

ट्रेक्टर बनाम बैल

ट्रेक्टरसे खेती करना अेक विवादपूर्ण प्रश्न है। कुछ लोग खेतीके यंत्रीकरणको भारतके लिअे आदर्श लक्ष्य समझते हैं, जबकि कुछ ट्रेक्टरकी तरफ देखना भी पसंद नहीं करते।

अिस विकासके अरसेमें अेक दूसरा बीचका रास्ता भी है।

अकेले संयुक्त प्रांतमें वास्तवमें खेतीके लायक ७९ लाख अेकड़ ज़मीन बंजर है। अितने बड़े क्षेत्रफलका काफी हिस्सा अूसर है, जो बहुत सख्त हो गया है और कुछ जगहों पर तो सतहके नीचेकी कंकड़वाली ज़मीनको तोड़नेके लिअे अलगसे गहरी जुताअीकी ज़रूरत है। कुछ दूसरी बंजर ज़मीन अैसी है, जिसमें लम्बी गहरी जड़ोंवाला घास फैला हुआ है और कुछ, खास करके तराअीमें, अैसी ज़मीन भी है, जहाँ झाड़ियाँ और छोटे छोटे पेड़ भी अुखाड़ने पड़ेंगे।

भारतके ढोरोंकी कअी वर्षोंसे अवनति होती जा रही है और अभी हालके अिस युद्धसे अुनमें अेकदम चौंकानेवाली कमी आ गअी है, क्योंकि युद्ध बंदियों और विदेशी (अंग्रेजी व अमेरिकन) फौजोंको खिलानेके लिअे जानवरोंका बहुत बड़ी संख्यामें कतल किया गया था। अिसका अर्थ यह है कि आज बंजर ज़मीनको बैलोंकी ताक़तसे जोतनेकी कोशिशमें अितनी देर लगेगी कि यह तरीका लगभग बेकार साबित होगा। हमारे गाँवोंको जो सड़ाँध भीतर ही भीतर नष्ट करती जा रही है, अुसे सफलता पूर्वक रोकना हो, तो हमें कअी वर्षोंकी सरकारी शासनकी बेपरवाहीको यथासंभव जल्दी दूर करना होगा।

जहाँ जहाँ अैसी बंजर ज़मीनके बड़े बड़े हिस्से हैं और दूसरी तरहसे अुपयोगी हैं, वहाँ वहाँ अुनकी जुताअी करने व खेतीके लायक बनानेके लिअे मैं ट्रेक्टरके अुपयोगकी सिफारिश करती हूँ। लेकिन जब ज़मीन

खेतीके लायक बन जाय, तब मैं अेक क्षणके लिअे भी यह नहीं चाहूँगी कि वहाँ मशीनों द्वारा हमेशा खेती की जाय। भारतीय किसानके लिअे आर्थिक दृष्टिसे बैल हर तरहसे फायदेमन्द है। ज़मीनसे होनेवाली अुपजसे ही बैलको खिलाया जाता है और बदलेमें वह कीमती गोबर देता है, जो दीवारों व फर्शको लीपनेमें, जलानेमें और खादके काममें आता है; मालको अिधर-अुधर ले जाने, पानी खींचने और अैसे ही दूसरे सब कामोंके लिअे भी बैलका अुपयोग हो सकता है, जब कि ट्रैक्टरके लिअे बाजारसे महँगा तेल खरीदना पड़ता है और वह वापस कुछ भी नहीं देता। साथ ही ट्रैक्टर अेक ही तरहका काम कर सकता है और वह है बड़े पैमाने पर खेतकी जुताअी।

जब हम अींधनके लिअे गाँवोंमें काफी झाड़ियाँ बढ़ा लेंगे, तब हम यह नहीं देखना चाहेंगे कि गाँवकी खेतीमें से बैलके हटा दिये जानेसे गोबरकी कमी हो गअी है। अुल्टे, हम भारतकी बेकस ज़मीनके लिअे बहुत ज्यादा गोबर चाहते हैं। ग्राम्य जीवनसे परिचित हरअेक आदमी जानता है कि गोबरका अुसमें कितना ज्यादा हिस्सा है। गोबरके बिना सारे गाँवका रहन-सहनका ढाँचा व आर्थिक जीवन ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा।

संक्षेपमें, अिसका अर्थ यह हुआ कि ट्रैक्टरोंको बड़े पैमाने पर बंजर भूमिकी जुताअीके काममें लेना चाहिये। और जिन वर्षोंमें ये ज़मीनें अच्छी खेती करने लायक हालतमें लाअी जायँ, प्रांतके हाल्के ढोरोंकी नसल सुधारने और अुनपर नियंत्रण करनेका हर प्रयत्न होना चाहिये; ताकि खेतीके कामके लिअे अच्छे बैलोंकी हमेशा बढ़ती रहनेवाली तादाद मिलती रहे। (अगला लेख देखिये)

अिसको पूरा करनेसे पहले मैं ट्रैक्टरोंके बारेमें अेक चेतावनी देना चाहती हूँ। अभी ट्रैक्टर बाहरसे मँगाये जाते हैं। अिसका मतलब यह हुआ कि अुसके साथ मिलनेवाले पुर्जोंके अलावा सभी अतिरिक्त पुर्जे बड़ी मुश्किलसे और बड़े महँगे मिलेंगे। साथ ही साथ भारतमें आज अुसके होशियार अिंजिनीयर व मेकेनिक मिलने भी मुश्किल हैं। अिसका अर्थ

यह होता है कि कोअी भी बड़ी योजना हाथमें लेनेसे पहले, ब
करनेके लिअे आदमियोंको अच्छी तरह ट्रेनिंग देनी होगी और जहाँ
बंजर ज़मीनको खेतीके लायक बनानेका काम शुरू किया जायगा, व
स्थानीय वर्कशॉप (पुर्जे बनानेके कारखाने) खड़े करने पड़ेंगे।

ट्रेक्टरसे खेती करनेमें अुसके औजार सबसे ज्यादा तकलीफदेह ह
हैं, क्योंकि वे बारबार टूट जाते हैं या बिगड़ जाते हैं, और अगर
औजारों और अुनके हिस्सोंके लिअे विदेशोंका मुँह ताकते रहेंगे,
ट्रेक्टरकी खेती अवश्य असफल होगी। कुछ भी हो, यदि हम ट्रेक्ट
भारतमें बन सकनेवाले औजारोंको बनानेमें असफल रहेंगे, तो प्रांतके न
यह हमारे स्वदेशीके अुत्साह पर अेक धब्बा ही होगा।

मीराबह

हरिजन, २९-९-१९४६

१०६

हमारा मवेशी धन

ज़मीनों और गाँवोंकी अुन्नतिकी कोअी स्कीम हिन्दुस्तानमें अ
समय तक कामयाब नहीं हो सकती, जब तक मवेशीका सवाल
तौरसे हल नहीं किया जाता। लड़ाअीके ज़मानेमें गायों और बैलों
तादादमें बहुत कमी हो गअी है, क्योंकि परदेशी फ़ौजों और लड़ाअ
क़ैदियोंको खिलानेके लिअे वे बेरहमीके साथ क़तल किये गये हैं। देश
मवेशियोंकी हालत पहले ही दर्दनाक थी, मगर अब तो वह बहुत
नाज़ुक बन गअी है।

मवेशी अेक दिनमें पैदा नहीं किये जा सकते। बगैर चार-पाँ
साल राह देखे, अुनसे कोअी काम नहीं लिया जा सकता। अिसलि
हमारा फ़र्ज़ हो जाता है कि हम तुरंत अिस प्रश्नको अपने हाथमें लें
लेकिन बदकिस्मतीसे देर या ढिलाअी तो आज हमारे देशकी अे
खासियत बन गअी है।

अिसलिअे सरकारी हाकिमोंका फर्ज़ है कि वे अेक नअी स्पिरिटके साथ मवेशियोंको बढ़ानेका काम अपने हाथमें लें। तभी वे कामयाब हो सकेंगे। अगर अिसमें कामयाबी न मिली, तो गाँवोंको सुधारने या अुनकी अुन्नति करनेका दूसरा सब काम बेकार हो जायगा।

केन्द्र और प्रान्तोंकी सरकारोंने अेक स्कीम मंजूर की है, जिसके खर्चेका बोझ दोनों आधा-आधा अुठायेंगी। अिस स्कीमके मुताबिक अच्छी नसलके मवेशी पैदा करनेके लिअे प्रान्तोंमें जगह-जगह गोशालायें कायम की जायँगी। अगर यह योजना ठीक तरह चलाअी गअी, तो सही दिशामें अच्छी अुन्नति की जा सकेगी।

मीराबहन

हरिजनसेवक, १५-९-१९४६

१०७

पशु-सुधार

सरदार दातारसिंहने अंग्रेज़ीमें 'पशु-सुधार' पर अेक लम्बा लेख लिखा है, जिसका सार नीचे दिया जाता है:

वे कहते हैं कि चूँकि हिन्दुस्तान अेक खेती-प्रधान देश है, अिसलिअे यहाँके पशुओंको सुधारना खेतीको सुधारनेके बराबर है। सारी दुनियाके ढोरोंमें से २९% ढोर हिन्दुस्तानमें हैं; फिर भी यहाँ फ़ी आदमी दूध बहुत कम पैदा होता है। न्यूज़ीलैण्ड और आस्ट्रेलियामें हर रोज़ हर आदमी पीछे दूधकी पैदावार क्रमशः ५६ और ४५ औंस होती है, जब कि हिन्दुस्तानमें वह सिर्फ ७ औंस ही होती है। अच्छी खुराककी दृष्टिसे हरअेक आदमीको रोज़ाना कम-से-कम २० औंससे ३० औंस तक दूध मिलना चाहिये। अिसका मतलब यह हुआ कि हमें अपने यहाँ दूधकी पैदावार तिगुनीसे भी ज़्यादा बढ़ानी होगी। हमारी अेक गाय

साल भरमें औसतन् ७५० पौंड दूध देती है। यह भी बहुत कम है। अितना कम दूध निकलनेका कारण यह है कि गायका पेट नहीं भरता। हमारे देशमें ढोरोंको खिलानेके लिअे जहाँ २,७०० लाख टन चारा और ५०० लाख टन दानेकी ज़रूरत है, वहाँ हमें सिर्फ १७५० लाख टन चारा और ३७०.५ लाख टन दाना मिलता है। अिसके अलावा, अिकट्ठा करने, सुखाने, काटने और ढोरोंके लिअे दाना-चारा वग़ैरा तैयार करनेमें बहुत-कुछ नुकसान भी होता है।

१. ढोरोंके लिअे अच्छी खुराकका अिन्तज़ाम करनेके लिअे सरदारजी नीचे लिखे सुझाव पेश करते हैं —

(क) चारेकी पैदावार बढ़ाअी जाय। काश्तकारोंको चारा अुगानेके लिअे ज़्यादा ज़मीन छोड़नेकी सलाह दी जाय। ज़्यादा-से-ज़्यादा ताक़त देनेवाला और ज़्यादा-से-ज़्यादा मात्रामें पैदा होनेवाला चारा अुगाया जाय। कुछ क़िस्मकी घास, जैसे अेलिफण्ट, गिनी, रोहडस वग़ैरा बारहों मास पैदा होती हैं। अिनके साथ-साथ थोड़ी फलियाँ भी अुगाअी जायँ।

(ख) चारा सँभालकर रखा जाय। अुसे सीलसे बिगड़ने न दिया जाय, और चारा सुखानेके तरीके सुधारे जायँ।

(ग) अच्छी और खुली चरागाहें हों। चरागाहोंकी ज़मीन बहुत कम हो गअी है, अिसलिअे जितनी ज़मीन अभी मौजूद है, अुस पर किसी-न-किसी तरहकी माप-बन्दी होनी चाहिये। नहरोंके किनारेकी, हरियालीवाली ज़मीन भी अिस काममें ली जा सकती है।

अिस सिलसिलेमें सरदारजी जंगलकी ज़मीनोंके अुपयोग पर ज़ोर देते हैं। हिसाब लगाया गया है कि देशकी १,०७० लाख अेकड़ ज़मीन जंगल खातेके हाथमें है, और ३,६२० लाख अेकड़ ज़मीनमें खेती होती है। जंगलके अिस बड़े धनसे आज तक बहुत कम फ़ायदा अुठाया गया है। मिसालके तौर पर, संयुक्त प्रांतके ३२० लाख ढोरोंमें से क़रीब दस

लाख ही अिन चरागाहोंका थोड़ा-बहुत अुपयोग करते हैं। हिन्दुस्तान भरमें ढोरोंकी तादाद ९७० लाख है। अुनमेंसे सिर्फ ८० लाख ५० हज़ार ढोरोंके बारेमें कहा जा सकता है कि वे जंगली चरागाहोंका अुपयोग करते हैं। ब्रिटिश हिन्दुस्तानमें आज जंगलोंकी जितनी ज़मीन है, अुसे दुगुनी करनेकी योजना चल रही है। यह कहना ग़लत है कि जंगल बढ़ानेसे पैदावारको नुक़सान होगा। प्रयोग करके देखा गया है कि अगर ढोरोंको ठीक तरहसे चरने दिया जाय, तो अुससे नुक़सान नहीं होता, बल्कि ज़्यादा अच्छे पौधे अुगने लगते हैं। अिसलिअे सस्ते और वैज्ञानिक तरीक़ेसे जंगलोंकी ज़मीनका चरागाहके तौर पर अुपयोग करनेकी बहुत बड़ी ज़रूरत है।

२. ढोरोंकी नसल सुधारनेका सवाल भी अेक बहुत अहम सवाल है। अिसके बारेमें सरदारजीके ये सुझाव हैं:

(क) हरअेक अिलाक़ेको अुसकी ज़रूरतके मुताबिक़ अैसे साँड़ दिये जायँ, जो अुस जगहके काबिल हों। अुनकी हिफ़ाज़तके लिअे कुछ आदमी रखे जायँ, जो शामके वक़्त साँड़ोंको अेक अहातेमें बन्द कर दें, और अुन्हें चारा-दाना वग़ैरा खिलानेके लिअे ज़िम्मेदार हों। ये हिफ़ाज़त करनेवाले तालीमयाफ़्ता हों, ताकि वे साँड़ोंका प्राथमिक अुपचार कर सकें, और ढोरोंमें छूत वग़ैराकी बीमारियोंके फैलने पर अुनका अिलाज कर सकें।

(ख) जो साँड़ अच्छे नहीं हैं, अुन्हें खस्सी कर दिया जाय।

(ग) तबेलेके साँड़ोंकी संख्या बढ़ाअी जाय। आज तो ज़रूरतके हिसाबसे वे बहुत ही कम हैं। कम-से-कम दस लाख साँड़ोंकी ज़रूरत है; और अगर अुन्हें हर चौथे साल बदला जाय, जैसा कि होना चाहिये, तो अुसका मतलब यह होगा कि हर साल अढ़ाअी लाख साँड़ोंकी ज़रूरत पड़ेगी। यानी ६ लाख गाय और १० हज़ार साँड़ अिसी कामके लिअे रखने होंगे। मगर यह आसान काम नहीं है और अिस पर खर्च भी बहुत होगा।

अिसलिअे सरदारजीकी सलाह है कि जो गोशालाअें और पिंजरापोल आज हैं, अुन्हींका अुपयोग अिस कामके लिअे किया जाय। अगर अुनका अिन्तज़ाम वगैरा सुधारा जाय, तो वे आसानीसे सालभरमें २५ हज़ार साँड़, अुतने ही बैल और साथ ही सुधरी हुअी नसलकी ५० हज़ार बछियायें पैदा कर सकेंगे।

३. छूतकी बीमारियोंको क़ाबूमें लानेकी बड़ी ज़रूरत है। रिंडापेस्ट, हैमोरेज़िक, सेप्टीसोमिया, ब्लैक क्वार्टर और अेन्थ्रेक्स जैसी बीमारियोंसे हर साल तीन करोड़से ज्यादा ढोर मरते हैं। बीमारियोंको रोकने और अुन्हें मिटानेके अिलाजों पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये। देहातियोंको सिर्फ़ ढोरोंकी सँभालके तरीक़े सिखानेसे काम नहीं चलेगा, वरन् ज़रूरतके वक़्त अुन्हें डॉक्टरी मदद पहुँचानेका भी बन्दोबस्त करना पड़ेगा।

नअी दिल्ली, २७-९-'४६ अमृतकुँवर

हरिजनसेवक, १३-१०-१९४६

१०८

वैयक्तिक या सामुदायिक?

श्री जमनालालजीने गोसेवाका महान बोझ अपने सिर अुठाया है। अिस बारेमें गोसेवा संघकी सभाके सामने अेक महत्त्वका प्रश्न यह था कि गोपालन वैयक्तिक हो या सामुदायिक? मैंने राय दी कि सामुदायिक हुअे बगैर गाय बच ही नहीं सकती और अिसलिअे भैंस भी नहीं बच सकती। हरअेक किसान अपने घरमें गाय-बैल रखकर अुनका पालन भली-भाँति और शास्त्रीय पद्धतिसे नहीं कर सकता। गोवंशके ह्रासके दूसरे अनेक कारणोंमें व्यक्तिगत गोपालन भी अेक कारण हुआ है। यह बोझ वैयक्तिक किसानकी शक्तिके बिलकुल बाहर है।

मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि आज संसार हरअेक काममें सामुदायिक रूपसे शक्तिका संगठन करनेकी ओर जा रहा है। अिस

संगठनका नाम सहयोग है । बहुतसी बातें आजकल सहयोगसे हो रही हैं । हमारे देशमें भी सहयोग आया तो है, लेकिन वह अैसे विकृत रूपमें आया है कि अुसका सही लाभ हिन्दुस्तानके गरीबोंको बिलकुल नहीं मिला ।

हमारी आबादी बढ़ती जा रही है और अुसके साथ व्यक्तिगत रूपसे किसानकी ज़मीन कम होती जा रही है । नतीजा यह हुआ है कि प्रत्येक किसानके पास जितनी चाहिये अुतनी ज़मीन नहीं है । जो है वह अुसकी अड़चनोंको बढ़ानेवाली है ।

अैसा किसान अपने घरमें या खेत पर अपने गाय-बैल नहीं रख सकता । रखता है तो अपने हाथों अपनी बरबादीको न्यौता देता है । आज हिन्दुस्तानकी यही हालत है । धर्म, दया या नीतिकी परवाह न करनेवाला अर्थशास्त्र तो पुकार पुकार कर कहता है कि आज हिन्दुस्तानमें लाखों पशु मनुष्यको खा रहे हैं । क्योंकि वे अुसे कुछ लाभ नहीं पहुँचाते, फिर भी अुन्हें खिलाना तो पड़ता ही है । अिसलिअे अुन्हें मार डालना चाहिये । लेकिन धर्म कहो, नीति कहो या दया कहो, ये हमें अिन निकम्मे पशुओंको मारनेसे रोकते हैं ।

अिस हालतमें क्या किया जाय ? यही कि जितना प्रयत्न पशुओंको ज़िन्दा रखने और अुन्हें बोझ न बनने देनेका हो सकता है अुतना किया जाय । अिस प्रयत्नमें सहयोगका बड़ा महत्त्व है ।

सहयोगसे यानी सामुदायिक पद्धतिसे पशुपालन करनेसे :

१. जगह बचेगी । किसानको अपने घरमें पशु नहीं रखने पड़ेंगे । आज तो जिस घरमें किसान रहता है, अुसीमें अुसके सारे मवेशी भी रहते हैं । अिससे हवा बिगड़ती है और घरमें गन्दगी रहती है । मनुष्य पशुके साथ अेक ही घरमें रहनेके लिअे पैदा नहीं हुआ । अैसा करनेमें न दया है, न ज्ञान है ।

२. पशुओंकी वृद्धि होने पर अेक घरमें रहना असम्भव हो जाता है । अिसलिअे किसान बछड़ेको बेच डालता है, और भैंसे

या पाडेको मार डालता है या मरनेके लिअे छोड़ देता है। यह अधमता है।

३. जब पशु बीमार होता है, तब व्यक्तिगत रूपसे किसान अुसका शास्त्रीय अिलाज नहीं करवा सकता। सहयोगसे चिकित्सा सुलभ होती है।

४. प्रत्येक किसान साड़ नहीं रख सकता। लेकिन सहयोगके आधार पर बहुतसे पशुओंके लिअे अेक अच्छा साँड़ रखना आसान है।

५. व्यक्तिशः किसान गोचर भूमि तो ठीक, पशुओंके लिअे व्यायामकी यानी हिरने-फिरनेकी भूमि भी नहीं छोड़ सकता। किन्तु सहयोग द्वारा ये दोनों सुविधायें आसानीसे मिल सकती हैं।

६. व्यक्तिशः किसानको घास अित्यादि पर बहुत खर्च करना होगा। सहयोग द्वारा कम खर्चमें काम चल जायगा।

७. व्यक्तिशः किसान अपना दूध आसानीसे नहीं बेच सकता। सहयोग द्वारा अुसे दाम भी अच्छे मिलेंगे और वह दूधमें पानी वगैरा मिलानेसे भी बच सकेगा।

८. व्यक्तिशः किसानके पशुओंकी परीक्षा असम्भव है। किन्तु गाँव भरके पशुओंकी परीक्षा आसान है, और अुनकी नसल सुधारका अुपाय भी आसान है।

९. सामुदायिक या सहकारी पद्धतिके पक्षमें अितने कारण पर्याप्त होने चाहियें। सबसे बड़ी और प्रत्यक्ष दलील यह है कि वैयक्तिक पद्धतिके कारण ही हमारी और हमारे पशुओंकी दशा आज अितनी दयनीय हो अुठी है। अुसे बदलकर ही हम बच सकते हैं, और पशुओंको बचा सकते हैं।

मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जब हम अपनी ज़मीन भी सामुदायिक पद्धतिसे जोतेंगे, तभी अुससे पूरा फायदा अुठा सकेंगे। बनिस्बत अिसके कि गाँवकी खेती अलग-अलग सौ टुकड़ोंमें बँट जाय, क्या यह बेहतर

नहीं कि सौ कुटुम्ब सारे गाँवकी खेती सहयोगसे करें और अुसकी आमदनी आपसमें बाँट लिया करें ? और जो खेतीके लिअे ठीक है, वही पशुके लिअे भी समझा जाये।

यह दूसरी बात है कि आज लोगोंको सहयोगी पद्धति पर लानेमें कठिनाअी है। कठिनाअी तो सभी सच्चे और अच्छे कामोंमें होती है। गोसेवाके सभी अंग कठिन हैं। कठिनाअियाँ दूर करनेसे ही सेवाका मार्ग सुगम बन सकता है। यहाँ तो बताना यह था कि सामुदायिक पद्धति क्या चीज़ है, और वह वैयक्तिकसे अितनी अच्छी क्यों है? यही नहीं, बल्कि वैयक्तिक पद्धति गलत है और सामुदायिक सही है। व्यक्ति अपने स्वातंत्र्यकी रक्षा भी सहयोगको स्वीकार करके ही कर सकता है। अतअेव यहाँ सामुदायिक पद्धति अहिंसात्मक है, वैयक्तिक हिंसात्मक।

सेवाग्राम, ८–२–'४२ **मोहनदास करमचंद गांधी**

हरिजनसेवक, १५–२–१९४२

सूची